KARAMAATE SAHABA (HINDI)

100 सहाबए किराम رضی اللہ تعالیٰ عنھم की करामात पर मुश्तमिल मदनी गुलदस्ता

करामाते सहाबा رضی اللہ عنہم

-: मुअल्लिफ़ :-

शैख़ुल ह़दीष ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رحمۃ اللہ علیہ

مکتبۃ المدینہ
(दा'वते इस्लामी)
SC 1286

المدینۃ العلمیۃ
(دعوتِ اسلامی)

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افۡتَحۡ عَلَیۡنَا حِکۡمَتَکَ وَانۡشُرۡ عَلَیۡنَا رَحۡمَتَکَ یَا ذَاالۡجَلَالِ وَالۡاِکۡرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

मजलिसे तराजिम (हिन्दी–गुजराती) दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" ने येह किताब "**करामाते सह़ाबा** رضی اللہ عنہم" उर्दू ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम, बरोडा (हिन्दी–गुजराती) ने इस किताब को हिन्द (INDIA) की **राष्ट्रिय भाषा** "**हिन्दी**" में रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** या'नी ज़बान (बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करते हुवे दर्जे ज़ैल मुआ़मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :–

﴾1﴿ कमो बेश दस(10) मराहि़ल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :–
(1) कम्पोज़िंग (2) सेटिंग (3) कम्पयूटर तक़ाबुल (4) तक़ाबुल बिल किताब (5) सिंगल रीडिंग (6) कम्पयूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेकिंग (8) फ़ाइनल रीडिंग (9) फ़ाइनल करेक्शन (10) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

﴾2﴿ क़रीबुस्सौत़ (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये **हिन्दी** के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का खुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाइयें।

﴾3﴿ हिन्दी पढ़ने वालों को सह़ीह़ उर्दू तलफ़्फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में ह़ासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर **अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़्फ़ुज़** के ऐन मुताबिक़ ही **हिन्दी–जोडणी** रखी गई है और बत़ौरे ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़्तूह़ (ज़बर वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के पहले डेश (–) और साकिन (जज़्म वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के नीचे खोड़ा (्) इस्ति'माल किया गया है। मषलन **उ़–लमा** (عُلَمَاء) में "**–ल**" मफ़्तूह़ और **रह़्म** (رَحْم) में "**ह़्**" साकिन है।

﴾4﴿ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं भी ऐन साकिन (عْ) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (’) इस्ति’माल किया गया है। जैसे : **दा’वत** (دَعْوَت)

﴾5﴿ अ़रबी–फ़ारसी मतन के साथ साथ अ़रबी किताबों के ह़वालाजात भी अ़रबी ही रखे गए हैं जब कि “عَزَّوَجَلَّ”, “صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم” और “رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه” वग़ैरा को भी अ़रबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी–बेशी** या **ग़–लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	’ = عْ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	– = َ	ी = ئ	ू = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा’वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद,

सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

100 सहाबए किराम رضی اللہ عنہم की करामात पर मुश्तमिल
मदनी गुलदस्ता

करामाते सहाबा رضی اللہ عنہم

-: मोअल्लिफ़ :-
शैख़ुल ह़दीष ह़ज़रते
अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى

-: पेशकश :-
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
(शो'बए तख़रीज)

-: नाशिर :-
मक्तबतुल मदीना
421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ़ मस्जिद,
देहली–110006 फ़ोन : 011-23284560

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰه

नाम किताब : करामाते सहाबा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم)

मोअल्लिफ़ : शैख़ुल हदीष हज़रते अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الغَنِی

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए तख़रीज)

सिने तबाअत : जमादिल आख़िर, सि. 1435 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली – 6

-: मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाखें :-

❁...अहमदाबाद : फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनी बाग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदाबाद, गुजरात -1, फ़ोन : 9327168200

❁... मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : 022-23454429

❁... नागपूर : सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 09373110621

❁.... अजमेर : 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नल्ला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन : (0145) 2629385

❁....हुबली : A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

❁... हैदराबाद : मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

❁... कानपूर : मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, डिपटी का पडाव, गुर्बत पार्क, कानपूर, फ़ोन : 09335272252

❁... बनारस : मक्तबतुल मदीना, अल्लू की मस्जिद, मदन पूरा, बनारस, फ़ोन : 09369023101

E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

www.dawateislami.net

मदनी इलतिजा : किसी और को येह (तख़रीज शुदा) किताब छापने की इजाज़त नहीं

फ़ेहरिस

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	11	ख़ामोशी व कलाम पर कुदरत	45
पेशे लफ़्ज़	15	दिलों को अपनी तरफ़ खींच लेना	45
तआरुफ़े मुसन्निफ़	20	ग़ैब की ख़बरें	45
शरफ़े इन्तिसाब	29	दाना पानी के बिग़ैर ज़िन्दा रहना	45
मन्क़बते सहाबए किराम رضی اللہ تعالیٰ عنہم	30	निज़ामे आलम में तसर्रुफ़ात	46
तम्हीदी तजल्लियां	31	बहुत ज़ियादा मिक़्दार में खा लेना	46
तह़क़ीक़े करामात	36	हराम ग़िज़ाओं से मह़फ़ूज़ रहना	46
करामत क्या है ?	36	दूर की चीज़ों को देख लेना	47
मो'जिज़ा और करामत	37	हैबत व दब-दबा	47
मो'जिज़ा ज़रूरी, करामत ज़रूरी नहीं	38	मुख़्तलिफ़ सूरतों में ज़ाहिर होना	47
करामत की क़िस्में ?	38	दुश्मनों के शर से बचना	49
मुर्दों को ज़िन्दा करना	39	ज़मीन के ख़ज़ानों को देख लेना	49
मुर्दों से कलाम करना	40	मुश्किलात का आसान हो जाना	49
दरयाओं पर तसर्रुफ़, इन्क़िलाबे माहिय्यत	41	मोहलिकात का असर न करना	50
ज़मीन का सिमट जाना	42	सहाबी	51
नबातात वग़ैरा से गुफ़्तगू	42	अफ़्ज़लुल औलिया	52
शिफ़ाए अमराज़	43	अशरए मुबश्शरा رضی اللہ تعالیٰ عنہم	53
जानवरों का फ़रमां बरदार हो जाना	43	करामाते सहाबा رضی اللہ تعالیٰ عنہم	55
ज़माने का मुख़्तसर हो जाना	43	(1) हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ	55
ज़माने का त़वील हो जाना	44	खाने में अज़ीम बरकत	56
मक़्बूलिय्यते दुआ	44	शिकमे मादर में क्या है ?	57

जरूरी इन्तिबाह	59	क़ब्र में बदन सलामत	82
निगाहे करामत	59	तबसेरा	82
कलिमए त़य्यिबा से क़ल्अ़ा मिसमार	62	जो कह दिया वोह हो गया	83
ख़ून में पेशाब करने वाला	62	लोगों की तक़दीर में क्या है ?	83
सलाम से दरवाज़ा खुल गया	63	तबसेरा	84
कशफ़े मुस्तक़बिल	63	दुआ़ की मक़्बूलिय्यत	85
मदफ़न के बारे में ग़ैबी आवाज़	66	﴾3﴿ ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी	88
दुश्मन ख़िन्ज़ीर व बन्दर बन गए	67	ज़िनाकार आंखें	89
दुश्मने शैख़ैन कुत्ता हो गया	69	तबसेरा	90
तबसेरा	70	हाथ में केन्सर	91
﴾2﴿ ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़	72	गुस्ताख़ी की सज़ा	93
क़ब्र वालों से गुफ़्तुगू	74	तबसेरा	94
मदीने की आवाज़ निहावन्द तक	74	ख़्वाब में पानी पी कर सैराब	95
तबसेरा	75	अपने मदफ़न की ख़बर	96
दरया के नाम ख़त़	76	तबसेरा	97
तबसेरा	77	ज़रूरी इन्तिबाह	97
चादर देख कर आग बुझ गई	78	शहादत के बा'द ग़ैबी आवाज़	98
तबसेरा	78	मदफ़न में फ़िरिश्तों का हुजूम	99
मार से ज़लज़ला ख़त्म	78	गुस्ताख़ दरिन्दे के मुंह में	99
तबसेरा	79	तबसेरा	100
दूर से पुकार का जवाब	79	﴾4﴿ ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा	101
तबसेरा	80	क़ब्र वालों से सुवाल जवाब	102
दो ग़ैबी शेर	80	तबसेरा	103
तबसेरा	81	फ़ालिज ज़दा अच्छा हो गया	103

गिरती हुई दीवार थम गई	105	﴾7﴿ हज़रते अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رضی اللہ عنہ	125
आप को झूटा कहने वाला अन्धा हो गया	106	हज़रते उषमान رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त	127
कौन कहां मरेगा ? कहां दफ़्न होगा ?	106	जन्नत में जाने वाला पहला मालदार	129
तबसेरा	107	मां के पेट ही से सईद	129
फ़िरिश्तों ने चक्की चलाई	107	﴾8﴿ हज़रते सा'द बिन अबी वक्क़ास رضی اللہ عنہ	130
तबसेरा	108	बद नसीब बुढ्ढा	131
मैं कब वफ़ात पाऊंगा ?	108	दुश्मने सहाबा का अन्जाम	133
दरे ख़ैबर का वज़्न	109	गुस्ताख़ की ज़बान कट गई	134
कटा हुवा हाथ जोड़ दिया	110	चेहरा पीठ की तरफ़ हो गया	135
शोहर, औरत का बेटा निकला	111	एक ख़ारिजी की हलाकत	135
तबसेरा	112	तबसेरा	136
ज़रा देर में कुरआने करीम ख़त्म कर लेते	112	साठ हज़ार का लश्कर दरया में	137
इशारे से दरया की तुग़यानी ख़त्म	113	तबसेरा	137
जासूस अन्धा हो गया	113	ना'रए तक्बीर से ज़लज़ला	138
तुम्हारी मौत किस तरह होगी ?	114	उम्र दराज़ हो गई	140
पथ्थर उठाया तो चश्मा निकल पड़ा	114	तबसेरा	140
﴾5﴿ हज़रते तलहा बिन उबैदुल्लाह رضی اللہ عنہ	116	﴾9﴿ हज़रते सईद बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ	141
एक क़ब्र से दूसरी क़ब्र में	118	कुंवां क़ब्र बन गया	142
तबसेरा	119	तबसेरा	143
﴾6﴿ हज़रते ज़ुबैर बिन अल अवाम رضی اللہ عنہ	120	﴾10﴿ हज़रते अबू उबैदा बिन जर्राह رضی اللہ عنہ	143
करामत वाली बरछी	121	बे मिषाल मछली	144
तबसेरा	122	तबसेरा	145
फ़त्हे फ़ुसतात़	123	﴾11﴿ हज़रते हम्ज़ा رضی اللہ عنہ	146
हज़रते ज़ुबैर की शक्ल में हज़रते जिब्राईल	124	फ़िरिश्तों ने ग़ुस्ल दिया	147

तबसेरा	147	﴾17﴿ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رضی اللہ عنہ	168
क़ब्र के अन्दर से सलाम का जवाब	148	फ़िरिश्तों ने साया किया	168
तबसेरा	149	कफ़न सलामत, बदन तरोताज़ा	169
﴾12﴿ हज़रते अ़ब्बास رضی اللہ عنہ	150	क़ब्र में तिलावत	170
इन के तुफ़ैल बारिश हुई	151	तबसेरा	171
﴾13﴿ हज़रते जा'फ़र رضی اللہ عنہ	153	﴾18﴿ हज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رضی اللہ عنہ	171
ज़ुल जनाहैन	154	मुंह से नूर निकलता था	172
तबसेरा	154	﴾19﴿ हज़रते उसैद बिन हुज़ैर رضی اللہ عنہ	172
﴾14﴿ हज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رضی اللہ عنہ	155	फ़िरिश्ते घर के ऊपर उतर पड़े	173
ज़हर ने अषर नहीं किया	156	﴾20﴿ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन हिश्शाम رضی اللہ عنہ	174
तबसेरा	157	तिजारत में बरकत	175
शराब की शहद	158	तबसेरा	175
शराब सिर्का बन गई	158	﴾21﴿ हज़रते ख़ुबैब बिन अ़दी رضی اللہ عنہ	176
तबसेरा	158	बे मौसिम का फल	177
﴾15﴿ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رضی اللہ عنہ	159	मक्का की आवाज़ मदीना पहुंची	178
शेर दुम हिलाता हुवा भागा	161	एक साल में तमाम क़ातिल हलाक	179
एक फ़िरिश्ते से मुलाक़ात	161	लाश को ज़मीन निगल गई	179
ज़ियाद कैसे हलाक हुवा ?	161	तबसेरा	180
तबसेरा	162	﴾22﴿ हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رضی اللہ عنہ	181
﴾16﴿ हज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رضی اللہ عنہ	163	क़ब्र शिफ़ा ख़ाना बन गई	182
जनाज़े में सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते	166	﴾23﴿ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन बसर رضی اللہ عنہ	183
मिट्टी मुश्क बन गई	166	रिज़्क़ में कभी तंगी पैदा नहीं हुई	183
फ़िरिश्तों से ख़ैमा भर गया	166	﴾24﴿ हज़रते अ़म्र बिन अल हमिक़ رضی اللہ عنہ	184
तबसेरा	167	अस्सी बरस की उ़म्र में सब बाल काले	184

﴾25﴿ हज़रते आसिम बिन षाबित رضی اللہ عنہ	185	﴾32﴿ हज़रते ग़ालिब बिन अ़ब्दुल्लाह लैषी رضی اللہ عنہ	204
शहद की मख्खियों का पहरा	185	ख़ुश्क नाले में नागहां सैलाब	205
समन्दर में क़ब्र	186	﴾33﴿ हज़रते अबू मूसा अश्अ़री رضی اللہ عنہ	206
तबसेरा	187	ग़ैबी आवाज़ सुनते थे	207
﴾26﴿ हज़रते उ़बैदा बिन अल हारिष رضی اللہ عنہ	188	लह़्ने दावूदी	208
क़ब्र की ख़ुश्बू दूर तक	189	﴾34﴿ हज़रते तमीम दारी رضی اللہ عنہ	208
﴾27﴿ हज़रते सा'द बिन अर्रबीअ़ رضی اللہ عنہ	190	चादर दिखा कर आग बुझा दी	209
दुन्या में जन्नत की ख़ुश्बू	191	﴾35﴿ हज़रते इमरान बिन ह़ुसीन رضی اللہ عنہ	210
तबसेरा	192	फ़िरिश्तों से सलाम व मुसाफ़ह़ा	211
﴾28﴿ हज़रते अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ	193	﴾36﴿ हज़रते सफ़ीना رضی اللہ عنہ	211
साल में दो मरतबा फलने वाला बाग़	194	शेर ने रास्ता दिखाया	212
खजूरों में मुश्क की ख़ुश्बू	195	﴾37﴿ हज़रते अबू उमामा बाहिली رضی اللہ عنہ	212
दुआ़ से बारिश	195	फ़िरिश्ते ने दूध पिलाया	213
तबसेरा	196	इमदादे ग़ैबी की अशरफ़ियां	214
﴾29﴿ हज़रते अनस बिन नज़्र رضی اللہ عنہ	197	﴾38﴿ हज़रते दह़िय्या बिन ख़लीफ़ा رضی اللہ عنہ	215
ख़ुदा عزوجل ने क़सम पूरी फ़रमा दी	198	हज़रते जिब्रील علیہ السلام इन की सूरत में	216
तबसेरा	199	﴾39﴿ हज़रते साइब बिन यज़ीद رضی اللہ عنہ	216
﴾30﴿ हज़रते ह़न्ज़ला बिन अबी आ़मिर رضی اللہ عنہ	200	चौरानवे बरस का जवान	217
ग़सीलुल मलाइका	201	﴾40﴿ हज़रते सलमान फ़ारसी رضی اللہ عنہ	217
तबसेरा	202	मलकुल मौत ने सलाम किया	220
﴾31﴿ हज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा رضی اللہ عنہ	203	ख़्वाब में अपने अन्जाम की ख़बर देना	220
लाश आस्मान तक बुलन्द हुई	204	चरन्दो परन्द ताबेए़ फ़रमान	222
तबसेरा	204	﴾41﴿ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رضی اللہ عنہ	223

सजदागाह से चश्मा उबल पड़ा	224	﴾50﴿ हज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رضی اللہ عنہ	239
क़ब्र पर अश्आ़र	225	जंगल में कफ़न	240
तबसेरा	225	फ़क़त़ ज़म ज़म पर ज़िन्दगी	241
﴾42﴿ हज़रते जुऐब बिन कलीब رضی اللہ عنہ	226	﴾51﴿ हज़रते इमामे ह़सन رضی اللہ عنہ	242
आग जला नहीं सकी	226	ख़ुश्क दरख़्त पर ताज़ा खजूरें	243
तबसेरा	227	फ़रज़न्द पैदा होने की बिशारत	244
﴾43﴿ हज़रते ह़म्ज़ा बिन अ़म्र अस्लमी رضی اللہ عنہ	228	﴾52﴿ हज़रते इमामे हु़सैन رضی اللہ عنہ	244
उंगलियां रोशन हो गईं	228	कुंवें में से पानी उबल पड़ा	245
﴾44﴿ हज़रते या'ला बिन मुर्रा رضی اللہ عنہ	229	बे अदबी करने वाला आग में	245
अ़ज़ाबे क़ब्र की आवाज़ सुन ली	229	नेज़े पर सर की तिलावत	246
﴾45﴿ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہ	229	तबसेरा	247
कफ़न में परन्द	231	﴾53﴿ हज़रते अमीरे मुआ़विय्या رضی اللہ عنہ	247
ग़ैबी आवाज़	231	कभी जंग में मग़्लूब नहीं हुवे	249
हज़रते जिब्राईल علیہ السلام का दीदार	232	दुआ़ मांगते ही बारिश	249
﴾46﴿ हज़रते षाबित बिन क़ैस رضی اللہ عنہ	232	शैत़ान ने नमाज़ के लिये जगाया	250
मौत के बा'द वसिय्यत	232	तबसेरा	251
﴾47﴿ हज़रते अ़ला बिन अल ह़ज़्रमी رضی اللہ عنہ	233	﴾54﴿ हज़रते ह़ारिषा बिन नो'मान رضی اللہ عنہ	252
पियादा और सुवार दरया के पार	234	हज़रते जिब्राईल علیہ السلام को देखा	252
चमकती ज़मीन से पानी नुमूदार हो गया	235	﴾55﴿ हज़रते ह़कीम बिन ह़िज़ाम رضی اللہ عنہ	254
लाश क़ब्र से ग़ाइब	236	तिजारत में कभी घाटा नहीं हुवा	254
﴾48﴿ हज़रते बिलाल رضی اللہ عنہ	236	﴾56﴿ हज़रते अ़म्मार बिन यासिर رضی اللہ عنہ	255
ख़्वाब में हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم का दिदार	237	कभी इन की क़सम नहीं टूटी	256
﴾49﴿ हज़रते ह़न्ज़ला बिन हुज़ैम رضی اللہ عنہ	238	तीन मरतबा शैत़ान को पछाड़ा	257
सर लगते ही मरज़ ग़ाइब	238	﴾57﴿ हज़रते शुरह़बील बिन ह़सना رضی اللہ عنہ	258

क़ल्आ ज़मीन में धंस गया	258	﴾68﴿ हज़रते मिक़्दाद बिन अल अस्वद	275
﴾58﴿ हज़रते अ़म्र बिन जमूह	259	चूहे ने सत्तरह अशरफ़ियां नज़्र कीं	277
लाश मैदाने जंग से बाहर नहीं गई	260	तबसेरा	278
तबसेरा	261	﴾69﴿ हज़रते उ़र्वा बिन अल जा'द	279
﴾59﴿ हज़रते अबू षा'लबा ख़ुशनी	261	मिट्टी भी ख़रीदते तो नफ़्अ़ उठाते	280
अपनी पसन्द की मौत	262	﴾70﴿ हज़रते अबू त़ल्ह़ा बिन जै़द	280
﴾60﴿ हज़रते क़ैस बिन ख़रशा	263	लाश ख़राब नहीं हुई	281
जान गई मगर आन नहीं गई	263	﴾71﴿ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श	282
﴾61﴿ हज़रते उबय्य बिन का'ब अन्सारी	264	अनोखी शहादत	283
हज़रते जिब्राईल की आवाज़ सुनी	265	﴾72﴿ हज़रते बरा बिन मालिक	284
बदली का रुख़ फेर दिया	266	फ़त्ह़ व शहादत एक साथ	286
बुख़ार में सदा बहार	267	﴾73﴿ हज़रते अबू हुरैरा	287
﴾62﴿ हज़रते अबूद्दरदा	268	करामत वाली थेली	288
हांडी और पियाले की तस्बीह़	268	﴾74﴿ हज़रते उ़बाद बिन बिशर	289
﴾63﴿ हज़रते अ़म्र बिन अ़बसा	269	लाठी रोशन हो गई	289
अब्र ने इन पर साया किया	270	करामत वाला ख़्वाब	290
﴾64﴿ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़	270	﴾75﴿ हज़रते उसैद बिन अबी अयास	291
मुस्तजाबुद्दा'वात	271	चेहरे से घर रोशन	292
﴾65﴿ हज़रते साइब बिन अक़्रअ़	271	﴾76﴿ हज़रते बिशर बिन मुआ़विय्या	293
तस्वीर ने ख़ज़ाना बताया	272	हर मरज़ की दवा हाथ	293
﴾66﴿ हज़रते अ़रबाज़ बिन सारियह	272	﴾77﴿ हज़रते उसामा बिन जै़द	294
फ़िरिश्ते से मुलाक़ात और गुफ़्त्गू	273	बे अदबी करने वाले काफ़िर हो गए	295
﴾67﴿ हज़रते ख़ब्बाब बिन अल अरत	274	﴾78﴿ हज़रते नाबग़ा	296
ख़ुश्क थन दूध से भर गया	274	सो बरस तक दांत सलामत	296

﴾79﴿ हज़रते अम्र बिन तुफ़ैल दोसी رضی اللہ عنہ	297
नूरानी कोड़ा	297
﴾80﴿ हज़रते अम्र बिन मुर्रा जुहनी رضی اللہ عنہ	298
दुश्मन बलाओं में गिरिफ़्तार	298
﴾81﴿ हज़रते ज़ैद बिन ख़ारिजा अन्सारी رضی اللہ عنہ	299
मौत के बा'द गुफ़्तगू	299
﴾82﴿ हज़रते राफ़ेअ़ बिन ख़दीज رضی اللہ عنہ	301
बरसों हल्क़ में तीर चुभा रहा	302
﴾83﴿ हज़रते मुहम्मद बिन षाबित رضی اللہ عنہ	302
बच्चे को दूध कैसे मिला ?	303
﴾84﴿ हज़रते क़तादा बिन मलहान رضی اللہ عنہ	304
चेहरा आईना बन गया	304
﴾85﴿ हज़रते मुआ़विय्या बिन मुक़रिन رضی اللہ عنہ	305
दो हज़ार फ़िरिश्ते नमाज़े जनाज़ा में	305
﴾86﴿ हज़रते अहबान बिन सफ़ी رضی اللہ عنہ	306
क़ब्र से कफ़न वापस	307
﴾87﴿ हज़रते नज़्ला बिन मुआ़विय्या رضی اللہ عنہ	307
हज़रते ईसा علیہ السلام के सहाबी	307
﴾88﴿ हज़रते उ़मैर बिन सा'द अन्सारी رضی اللہ عنہ	309
ज़ाहिदाना ज़िन्दगी	310
﴾89﴿ हज़रते अबू क़र साफ़ा رضی اللہ عنہ	316
सेंकड़ों मील दूर आवाज़ पहुंचती थी	318
﴾90﴿ हज़रते हस्सान बिन षाबित رضی اللہ عنہ	318
हज़रते जिब्राईल علیہ السلام मददगार	319
कुव्वते शाम्मा	320
﴾91﴿ हज़रते ज़ैद बिन हारिषा رضی اللہ عنہ	321
सातवें आस्मान का फ़िरिश्ता ज़मीन पर	321
﴾92﴿ हज़रते उ़क्बा बिन नाफ़ेअ़ फ़हरी رضی اللہ عنہ	323
एक पुकार से दरिन्दे फ़रार	324
घोड़े की टाप से चश्मा जारी	325
﴾93﴿ हज़रते अबू ज़ैद अन्सारी رضی اللہ عنہ	326
सो बरस का जवान	326
﴾94﴿ हज़रते औ़फ़ बिन मालिक رضی اللہ عنہ	326
पुकार पर मवेशी दौड़ पड़े	327
﴾95﴿ हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ عنہا	328
बरकत वाली सीनी	329
शाही दा'वत	330
﴾96﴿ हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا	333
हज़रते जिब्रील इन को सलाम करते थे	333
इन के लिहाफ़ में वह्य उतरी	334
आप رضی اللہ عنہا के तवस्सुल से बारिश	334
﴾97﴿ हज़रते उम्मे ऐमन رضی اللہ عنہا	335
कभी पियास नहीं लगी	335
﴾98﴿ हज़रते उम्मे शरीक दोसिय्या رضی اللہ عنہا	336
ग़ैबी डोल	336
ख़ाली कुप्पा घी से भर गया	337
﴾99﴿ हज़रते उम्मे साइब رضی اللہ عنہا	337
दुआ़ से मुर्दा ज़िन्दा हो गया	338
﴾100﴿ हज़रते ज़ुनैरा رضی اللہ عنہا	339
अन्धी आंखें रोशन हो गईं	339

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"हर सहाबी से हमें तो प्यार है" के एक्कीस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "21 की निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** *"अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।"* (الجامع الصغیر،ص۵۵۷،الحدیث۹۳۲۶، دارالکتب العلمية بيروت)

दो मदनी फूल :-

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़्ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾6﴿ ह़त्तल इमकान इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीषे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾12﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) याद दाश्त वाले सफ़्ह़ा पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾13﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत (या'नी ज़रूरतन) ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा। ﴾14﴿ किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते हुसूले इल्मे दीन

रोज़ाना कम अज़् कम चार सफ़्हात पढ़ कर इल्मे दीन ह़ासिल करने के षवाब का ह़क़्दार बनूंगा ﴾15﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴾16﴿ इस ह़दीषे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوا" एक दूसरे को तोह़्फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी (مؤطا امام مالک، الحدیث: ۱۷۳۱، ج۲، ص ۴۰۷) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़्फ़तन दूंगा। ﴾17﴿ जिन को दूंगा ह़त्तल इमकान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने (मषलन 41) दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ लीजिये ﴾18﴿ इस किताब के मुत़ालए़ का सारी उम्मत को ईसाले षवाब करूंगा ﴾19﴿ इस रिवायत عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है।" (حلیۃ الاولیاء، حدیث: ۱۰۷۵۰، ج۷، ص ۳۳۵، دارالکتب العلمیۃ بیروت) पर अ़मल करते हुवे इस किताब में दिये गए बुज़ुर्गाने दीन के वाक़िआ़त दूसरों को सुना कर ज़िक्रे सालिह़ीन की बरकतें लूटूंगा ﴾20﴿ हर साल एक बार येह किताब पूरी पढ़ा करूंगा ﴾21﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा।

(नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

नौ मौलूद की त़रह़ गुनाहों से पाक

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर छे दिन शव्वाल में रखे तो गुनाहों से ऐसे निकल गया जैसे आज ही मां के पेट से पैदा हुवा है।" (مجمع الزوائد، ج۳، ص ۴۲۵، حدیث ۵۱۰۲)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتھم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये **मुतअ़द्दद मजालिस** का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** भी है जो **दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** کَثَّرَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
(2) शो'बए दर्सी कुतुब
(3) शो'बए इस्लाही़ कुतुब
(4) शो'बए तराजिमे कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
(6) शो'बए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़्रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़षे ख़ैरो बरकत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम **इस्लामी भाई** और **इस्लामी बहनें** इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425

पेशे लफ़्ज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सय्यिदुल मुरसलीन, सरवरे मा'सूमीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तमाम सह़ाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم उम्मते मुस्लिमा में अफ़्ज़ल और बरतर हैं, **अल्लाह** तआ़ला ने इन को अपने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोह़बत और नुस्रत व इआ़नत के लिये पसन्दीदा और बरगुज़ीदा फ़रमाया, इन नुफ़ूसे कुदसिय्या की फ़ज़ीलत व मद्ह़ में कुरआने पाक में जा बजा आयाते मुबारका वारिद हैं जिन में इन के हुस्ने अ़मल, हुस्ने अख़्लाक़ और हुस्ने ईमान का तज़्किरा है और इन्हें दुन्या ही में मग़्फ़िरत और इन्आ़माते उख़रवी का मुज़्दा सुना दिया गया। जिन के अवसाफ़े ह़मीदा की खुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ता'रीफ़ फ़रमाए उन की अ़ज़्मत और रिफ़्अ़त का अन्दाज़ा कौन लगा सकता है? इन पाक हस्तियों के बारे में कुरआने पाक की कुछ आयात दर्जे ज़ैल हैं :

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۚ (پ ۹، الانفال: ۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येही सच्चे मुसलमान हैं इन के लिये दरजे हैं इन के रब के पास और बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी।*

सूरए तौबा में इरशाद होता है :

رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (پ ۱۱، التوبة: ۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह उन से राज़ी और वोह अल्लाह से राज़ी और उन के लिये तय्यार कर रखे हैं बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा उन में रहें येही बड़ी कामयाबी है।*

सूरतुल फ़त्ह़ की आयत नम्बर 29 का तर्जमा कन्ज़ुल ईमान में यूं है :

मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के रसूल हैं, और इन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल तू इन्हें देखेगा रुकूअ़ करते, सजदे में गिरते, **अल्लाह** का फ़ज़्ल व रिज़ा चाहते, इन की अ़लामत इन के चेहरों में हैं सजदों के निशान से।

(پ۲۶،الفتح:۲۹)

आयाते कुरआनिय्या के इलावा कुतुबे अहादीष भी फ़ज़ाइले सहाबा के ज़िक्र से माला माल हैं चुनान्चे, हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरे सहाबा की इ़ज़्ज़त करो कि वोह तुम्हारे नेक तरीन लोग हैं। (مشکاۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب الصحابۃ،الحدیث: ۶۰۱۲،ج۲،ص ۴۱۳)

एक ह़दीषे पाक में है : मेरे सहाबा رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن सितारों की मानिन्द हैं तुम इन में से जिस की भी इक़्तिदा करोगे हिदायत पा जाओगे। (مشکاۃ المصابیح، کتاب المناقب،باب مناقب الصحابۃ،الحدیث:۶۰۱۸،ج۲،ص ۴۱۴)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه इस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : سُبْحٰنَ اللّٰه कैसी नफ़ीस तशबीह है ! हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने सहाबा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہُم को हिदायत के तारे फ़रमाया और दूसरी ह़दीष में अपने अहले बैत رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہُم को कश्तिये नूह़ फ़रमाया, समन्दर का मुसाफ़िर कश्ती का भी ह़ाजत मन्द होता है और तारों की रहबरी का भी कि जहाज़ सितारों की रहनुमाई पर ही समन्दर में चलते हैं। इस त़रह़ उम्मते मुस्लिमा अपनी ईमानी ज़िन्दगी में अहले बैते अत़हार رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہُم के भी मोह़ताज हैं और सहाबए किबार رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہُم के भी ह़ाजत मन्द, उम्मत के लिये सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की इक़्तिदा में ही इहतिदा या'नी हिदायत है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. **8** स. **345**)

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार, अस्ह़ाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाव है इतरत रसूलुल्लाह की

(ह़दाइके़ बख़्शिश, हि़स्सा अव्वल, स. 111)

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द तमाम इन्सानों में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم सब से ज़ियादा ता'ज़ीम व तौक़ीर के लाइक़ हैं। येह वोह मुक़द्दस व मुबारक हस्तियां हैं जिन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दा'वत पर लब्बैक कहा, दाइरए इस्लाम में दाख़िल हुवे और तन मन धन से इस्लाम के आफ़ाक़ी और अबदी पैग़ाम को दुन्या के एक एक गोशे में पहुंचाने के लिये कमर बस्ता हो गए। तारीख़ गवाह है कि इन मुबारक हस्तियों ने कुरआनो ह़दीष की ता'लीमात को आ़म करने और परचमे इस्लाम की सरबुलन्दी के लिये ऐसी बे मिषाल कुरबानियां दी हैं कि आज के दौर में जिन का तसव्वुर भी मुश्किल है। रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रुए ज़ैबा की ज़ियारत वोह अ़ज़ीम सआ़दत है कि दुन्या जहां की कोई ने'मत इस के बराबर नहीं हो सकती और सह़ाबए किराम तो वोह हैं कि शबो रोज़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत और आप की सोह़बते फ़ैज़ से मुस्तफ़ीज़ होते रहे। कुरआन व दीन को हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़बान से सुना और बे वासित़ा **अल्लाह** तआ़ला के अवामिर व नवाही के मुख़ात़ब रहे।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जो फ़ुक़हा सह़ाबा में एक मुमताज़ मक़ाम रखते हैं आप एक मौक़अ़ पर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم की अ़ज़मत व फ़ज़ीलत पर रोशनी डालते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : जो शख़्स राहे रास्त पर चलना चाहे उसे चाहिये कि इन लोगों के रास्ते पर चले और उन की इक़्तिदा व पैरवी करे जो इस

जहां से गुज़र गए कि ज़िन्दों के बारे में येह अन्देशा मौजूद है कि वोह दीन में किसी फ़ित्ने और इब्तिला में मुब्तला हो जाएं और येह लोग रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम हैं येह ह़ज़रात उम्मत में सब से ज़ियादा अफ़्ज़ल हैं सारी उम्मत में सब से ज़ियादा इन के दिल नेकोकार, इन का इ़ल्म सब से ज़ियादा गहरा, इन के आ'माल तकल्लुफ़ से ख़ाली, येह वोह लोग हैं जिन को **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी की रफ़ाक़त व सोह़बत और इक़ामत व ख़िदमते दीन के लिये चुना तो इन का फ़ज़्लो कमाल पहचानो और इन के आषार व त़रीक़ों की पैरवी करो और ह़त्तल वस्अ़ इन के अख़्लाक़ और इन की सीरत व रविश इख़्तियार करो कि बेशक येह लोग हिदायते मुस्तक़ीम पर क़ाइम थे । (مشکاۃ المصابیح، کتاب الاعتصام بالکتاب و السنۃ، الحدیث:۱۹۳، ج ۱، ص۵۷)

इन सब आयात व रिवायात पर नज़र करते हुवे येह जज़्म व यक़ीन ह़ासिल होता है कि इन ह़ज़रात की शान बहुत आ'ला व अरफ़अ़ है, इन मुक़द्दस हस्तियों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बेह़द फ़ज़्लो करम है लिहाज़ा हमें चाहिये कि इन पाकीज़ा नुफ़ूस की मह़ब्बत दिल में बसाते हुवे इन के ह़ालात व वाक़िआ़त का गहराई के साथ मुत़ालआ़ करें और दोनों जहां में कामयाबी के लिये इन के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे ज़िन्दगी बसर करने की कोशिश करें ।

इस सिलसिले में शैख़ुल ह़दीष ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی ने सहाबए किराम के वाक़िआ़त व ह़ालात को इन्तिहाई इख़्तिसार के साथ करामात के ज़िम्न में तह़रीर फ़रमाया और इस मजमूए़ का नाम "**करामाते सहाबा**" रखा । इस किताब में उन्हों ने इन ह़ज़रात की इ़बादात व रियाज़ात, इख़्लास व तक़्वा, अ़द्ल व सिद्क़, ह़ुस्ने अख़्लाक़ और दीगर सिफ़ात का तज़्किरा फ़रमाया है, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस किताब को पढ़ते वक़्त आप अपनी दिली कैफ़िय्यात में तब्दीली मह़सूस फ़रमाएंगे ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" की मजलिस "अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" ने अकाबिरीन व बुजु़र्गाने अहले सुन्नत की माया नाज़ कुतुब को ह़त्तल मक़्दूर जदीद अन्दाज़ में शाएअ़ करने का अ़ज़्म किया है लिहाज़ा इस मदनी गुलदस्ते को भी दौरे जदीद के तक़ाज़ों को मद्दे नज़र रखते हुवे पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रही है, जिस में मदनी उ़-लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने दर्जे ज़ैल काम करने की कोशिश की है :

﴿1﴾ किताब पर काम शुरूअ़ करने से पहले इस किताब के मुख़्तलिफ़ नुस्ख़ों में ह़त्तल मक़्दूर सह़ीह़ तरीन नुस्ख़े का इन्तिख़ाब

﴿2﴾ जदीद तक़ाज़ों के मुताबिक़ कम्प्यूटर कम्पोज़िंग जिस में रुमूज़े अवक़ाफ़ (फु़ल स्टॉप, कोमाज़, कोलन्ज़ वगै़रा) का मक़्दूर भर एहतिमाम

﴿3﴾ कम्पोज़िंग शुदा मवाद का अस्ल से तक़ाबुल ताकि मह़ज़ूफ़ात व मकरूहात वगै़रा जैसी अग़लात़ न रहें

﴿4﴾ अ़रबी इ़बारात, सिने वाक़िआ़त और अस्माए मक़ामात व मज़्कूरात का अस्ल माख़ज़ से तक़ाबुल व तस्ह़ीह़

﴿5﴾ आयाते कु़रआनिया, अह़ादीषे मुबारका, रिवायात व फ़िक़्ही मसाइल वगै़रहा की अस्ल माख़ज़ से ह़त्तल मक़्दूर तख़रीज व तत़्बीक़

﴿6﴾ ह़वाला जात की तफ़्तीश ताकि अग़लात़ का इमकान कम से कम हो

﴿7﴾ इरतिबाते़ मतन व ह़वाशी या'नी ह़वालाजात वगै़रा को मतन से जुदा रखते हुवे उसी सफ़्ह़ा पर नीचे ह़ाशिये में तह़रीर किया गया है, नीज़ मुअल्लिफ़ के ह़ाशिये के साथ बतौ़रे इम्तियाज़ 12 मिन्ह लिख दिया है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे बे कस पनाह में इस्तिदआ़ है कि इस किताब को पेश करने में उ़-लमाए किराम ने जो मेह़नत व कोशिश की उसे क़बूल फ़रमा कर इन्हें बेहतरीन जज़ा दे और इन के इ़ल्म व अ़मल में बरकतें अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" और दीगर मजालिस को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلّم

शो'बए तख़रीज मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

तआरुफ़े मुसन्निफ़

हज़रते अलहाज मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा अल आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ज़िलक़ा'दा सि. **1333** हि. को अपने आबाई वत़न घोसी ज़िल्अ़ आ'ज़मगढ़ में पैदा हुवे।

शजरए नसब येह है

मुह़म्मद अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा बिन शैख़ हाफ़िज़ अ़ब्दुर्रह़ीम बिन शैख़ हाजी अ़ब्दुल वह्हाब बिन शैख़ चमन बिन शैख़ नूर मुह़म्मद बिन शैख़ मिट्ठू बाबा (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی)

आप के वालिदे गिरामी ह़ज़रते ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुर्रह़ीम साह़िब हाफ़िज़े क़ुरआन, उर्दू ख़्वां, वाक़िफ़े मसाइले दीनिय्या, मुत्तक़ी और परहेज़गार थे। गाउं के मश्हूर बुज़ुर्ग हाफ़िज़ अ़ब्दुस्सत्तार साह़िब से शरफ़े तलम्मुज़ ह़ासिल था जो ह़ज़रते अशरफ़ी मियां किछौछवी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बड़े भाई हज़रते शाह सय्यिद अशरफ़ हुसैन साह़िब क़िब्ला किछौछवी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुरीद थे चन्द साल हुवे इन्तिक़ाल फ़रमा गए।

ता'लीम

अ़ल्लामा आ'ज़मी साहिब क़ुरआने मजीद और उर्दू की इब्तिदाई ता'लीम अपने वालिदे माजिद से ह़ासिल कर के मद्रसा इस्लामिय्या घोसी में दाख़िल हुवे और उर्दू फ़ारसी की मज़ीद ता'लीम पाई। चन्द माह मद्रसा नासिरुल उ़लूम घोसी में भी ता'लीम ह़ासिल की। इस के बा'द मद्रसा मा'रूफ़िय्या मा'रूफ़ पूरा में मीज़ान से शर्हे जामी तक पढ़ा। फिर सि. **1351** हि. में मद्रसा मुह़म्मदिय्या ह़नफ़िय्या अमरोहिय्या ज़िल्अ़ मुरादाबाद (यूपी) का रुख़ किया और वहां शैख़ुल उ़-लमा ह़ज़रते मौलाना शाह उवैस ह़सन उ़र्फ़ ग़ुलाम जीलानी आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (शैख़ुल ह़दीष दारुल उ़लूम फ़ैज़ुर्रसूल बराऊं शरीफ़ मुतवफ़्फ़ा सि. **1397** हि.)

और ह़ज़रते मौलाना ह़िक्मतुल्लाह साह़िब क़िब्ला अमरोही और ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुह़म्मद ख़लील साह़िब चिश्ती काज़िमी अमरोही की ख़िदमत में एक साल रह कर इक्तिसाबे फ़ैज़ किया।

इस के बा'द सि. 1352 हि. में ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़ मौलाना ह़कीम मुह़म्मद अमजद अ़ली साह़िब आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के हमराह बरैली शरीफ़ तशरीफ़ ले गए और मद्रसा मन्ज़रे इस्लाम मह़ल्ला सौदागरान बरैली में दाख़िल हो कर ता'लीमी सिलसिला शुरूअ़ फ़रमाया। मुल्ला ह़सन, मैबज़ी वग़ैरा चन्द किताबें ह़ज़रते मुह़द्दिषे आ'ज़म पाकिस्तान मौलाना मुह़म्मद सरदार अह़मद साह़िब चिश्ती गुरदासपूरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पढ़ीं बाक़ी किताबें ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पढ़ीं।

इस दौरान ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते मौलाना शाह ह़ामिद रज़ा ख़ान साह़िब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (ख़लफ़े अक्बर सरकारे आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा قُدِّسَ سِرُّهٗ) की ख़िदमत में ह़ाज़िरी दी और शरफ़याब हुवे। मौसूफ़ आप पर बड़ा करम फ़रमाया करते थे। आ'ला ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّهٗ के बरादरे ख़ुर्द ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद रज़ा ख़ान साह़िब उ़र्फ़ नन्हे मियां رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से फ़राइज़ की मश्क़ की और ह़ुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना शाह मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान नूरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (ज़ैब सज्जादा आ़लिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या बरैली शरीफ़, ख़लफ़े असग़र ह़ुज़ूर आ'ला ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّهٗ) के दारुल इफ़्ता में भी ह़ाज़िरी दी।

बरैली शरीफ़ में दौराने त़ालिबे इ़ल्मी आप की इक्तिसादी ह़ालत अच्छी नहीं थी। मस्जिद की इमामत और ट्यूशन से अख़राजात पूरे करते थे। जब ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़ मौलाना अमजद अ़ली साह़िब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बरैली से रुख़्सत हो कर मद्रसा ह़ाफ़िज़िय्या सई़दिय्या दादूं ज़िल्अ़ अ़लीगढ़ में मन्सदे तदरीस पर जल्वा फ़रमा हुवे तो मौलाना आ'ज़मी साह़िब भी बरैली शरीफ़ न रह सके और 10 शव्वाल सि. 1355 हि. को अ़लीगढ़ ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़ की

ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और मद्रसा ह़ाफ़िज़िय्या सईदिय्या में दाख़िला लिया और इम्तिह़ानात में अच्छी पोज़ीशन से कामयाब हो कर इन्आ़मात भी ह़ासिल किये।

अ़लीगढ़ के दौराने क़ियाम ह़ज़रते मौलाना सय्यिद सुलैमान अशरफ़ बिहारी प्रोफ़ेसर दीनिय्यात मुस्लिम यूनीवर्सिटी अ़लीगढ़ (ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّہٗ) की ख़िदमत में भी ह़ाज़िरी देते और इल्मी इक्तिसाब फ़रमाते रहे।

सि. **1356** हि. में मद्रसा ह़ाफ़िज़िय्या सईदिय्या दादूं से सनदे फ़राग़ ह़ासिल किया। ह़ज़रते मौलाना सय्यिद शाह मिस्बाहुल ह़सन साहिब चिश्ती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सर पर दस्तारे फ़ज़ीलत बांधी।

बैअ़त

17 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. **1353** हि. में ह़ज़रते क़ाज़ी इब्ने अ़ब्बास साहिब अ़ब्बासी नक़्शबन्दी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पहले उ़र्स में ह़ज़रते अलह़ाज ह़ाफ़िज़ शाह अबरार ह़सन ख़ान साहिब नक़्शबन्दी शाह जहांपूरी (जो क़ाज़ी साहिब मौसूफ़ के पीर भाई थे) से मुरीद हुवे।

2 ज़ीक़ा'दा सि. **1370** हि. को ह़ज़रते शाह अबरार ह़सन साहिब नक़्शबन्दी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल हो गया तो इस के बा'द आप के ख़लीफ़ए बरह़क़ अलह़ाज क़ाज़ी मह़बूब अह़मद साहिब अ़ब्बासी नक़्शबन्दी से भी इक्तिसाबे फ़ैज़ किया।

चूंकि शुरूअ़ ही से मौसूफ़ का रुजह़ान सिलसिलए नक़्शबन्दिय्या की त़रफ़ ज़ियादा था इसी लिये इस सिलसिले में मुरीद हुवे मगर दीगर सलासिल के बुज़ुर्गों से भी इक्तिसाबे फ़ैज़ो बरकात का सिलसिला जारी रखा।

25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. **1358** हि. में उ़र्से रज़वी के मुबारक व मसऊ़द मौक़अ़ पर ह़ज़रते हुज्जतुल इस्लाम मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान साहिब (सि. **1363** हि.) ने सिलसिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या की ख़िलाफ़त व इजाज़त से सरफ़राज़ फ़रमाया।

सिलसिलए तदरीस

फ़ारिगुत्तह्सील होने के बा'द सब से पहले मद्रसा इस्हाक़िय्या जोधपूर (राजस्थान) में मुदर्रिस हुवे। दर्से निज़ामी का इफ़्तिताह फ़रमाया और मद्रसा तरक़्क़ी की राह पर चल निकला था कि अचानक जोधपूर में हिन्दू मुस्लिम फ़साद होने की वजह से बहुत से बैरूनी उ़-लमा के साथ आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को गिरिफ़्तार किया गया और बा'द में इश्तिआ़ल अंगेज़ तक़रीर करने का इलज़ाम लगा कर हुकूमत ने शहर बदर कर दिया जिस से मद्रसे को भी नुक़्सान हुवा और मौलाना मौसूफ़ को भी वहां से आना पड़ा।

सितम्बर सि. 1939 ई. में ह़ज़रते क़ाज़ी मह़बूब अह़मद साह़िब की दा'वत पर अमरोहा तशरीफ़ ले गए और वहां मद्रसए मुह़म्मदिय्या ह़नफ़िया में तदरीसी ख़िदमात अन्जाम दीं जिस का सिलसिला तीन साल तक रहा। उस वक़्त वहां पर मौलाना सय्यिद मुह़म्मद ख़लील साह़िब क़ाज़िमी अमरोही सदर मुदर्रिस थे इस दौरान भी मौसूफ़ से इस्तिफ़ादा किया। इस के बा'द सि. 1942 ई. में दारुल उ़लूम अशरफ़िय्या मुबारकपूर में तदरीसी ख़िदमात का आग़ाज़ फ़रमाया और ग्यारह साल तक यहां भी दर्स देते रहे और इस की ता'मीर व तरक़्क़ी में भरपूर ह़िस्सा लिया।

सि. 1952 ई. में आप का अह़मदाबाद गुजरात ब सिलसिलए तक़रीर दौरा हुवा। मुतअ़द्दद तक़ारीर के सबब लोग गिरवीदा हुवे और जब वहां पर एक दारुल उ़लूम का क़ियाम अ़मल में आया तो अह़मदाबाद के अ़माइदे अहले सुन्नत ने ब इसरार मुबारक पूर से बुलवा कर **दारुल उ़लूम शाहे आ़लम** में मुदर्रिस रखा। इस सिलसिले में ह़ज़रते मौलाना इब्राहीम रज़ा ख़ां साह़िब नबीरए आ'ला ह़ज़रत और हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی ने दारुल उ़लूम के क़ियाम और तरक़्क़ी में भरपूर ह़िस्सा लिया।

मौलाना ने इस दारुल उ़लूम की तरक़्क़ी और बक़ा में भरपूर और जान तोड़ कर कोशिश की और इस को उ़रूज तक पहुंचा कर दम लिया ।

बा'ज़ नागुफ़्ता बेह ह़ालात और अरकान में से बा'ज़ के दरपे आज़ार होने की वजह से इस्ति'फ़ा दे कर 17 शा'बान सि. 1378 हि. को वहां से वत़न आ गए । इस के बा'द ह़ज्जे बैतुल्लाह को रवाना हुवे । वापसी पर दारुल उ़लूम समदिय्या भीवन्डी (महाराष्ट्र) की त़लबी पर मार्च सि. 1960 ई. को त़लबा की एक जमाअ़त के साथ मद्रसए मज़्कूर में तशरीफ़ ले गए और चार बरस तक जम कर वहां तदरीसी ख़िदमात को अन्जाम दिया और मद्रसए मज़्कूर की ता'मीर में भी भरपूर कोशिश फ़रमाई, जिन के तुफ़ैल एक शानदार इमारत आज भी मौजूद व शाहिद है ।

मगर जब वहां के भी बा'ज़ ह़ज़रात से तअ़ल्लुक़ात मा'मूल पर न रहे तो ख़ात़िर बरदाश्ता हो कर सि. 1964 ई. में मुस्ता'फ़ी हो गए । इस के बा'द फ़ौरन दारुल उ़लूम मिस्कीनिय्या धोराजी गुजरात से त़लबी आ गई और मौलाना ह़कीम अ़ली मुह़म्मद साह़िब अशरफ़ी के और दूसरे लोगों के इसरार पर वहां मअ़ जमइय्यते त़लबा तशरीफ़ ले गए मगर वहां भी ज़ियादा दिनों क़ियाम न कर सके और बिल आख़िर दारुल उ़लूम मन्ज़रे ह़क़ टान्डा फ़ैज़ाबाद (यूपी) में ब ओ़हदए सदर मुदर्रिसीन व शैख़ुल ह़दीष तशरीफ़ ले गए जहां तक़रीबन दस साल से उ़लूम व मआ़रुफ़ के गोहर लुटा रहे हैं । ख़ुदा ने तफ़हीम की ख़ूब ख़ूब सलाहि़य्यत बख़्शी है । तमाम मुतदावल किताबों पर यक्सां क़ुदरत रखते हैं और पूरी महारत से दर्स देते हैं और त़लबा ख़ूब मानूस होते हैं । तदरीस की इस त़वील मुद्दत में त़लबा की एक ता'दाद तय्यार हो गई और आज मुल्क व बैरूने मुल्क आप के तलामिज़ा तदरीस व तक़रीर और मुनाज़िरा व तस्नीफ़ की ख़िदमात अन्जाम दे रहे हैं ।

इफ़्ता

तदरीस के साथ साथ फ़तवा नवेसी का काम भी करते रहे हैं। तह़रीर कर्दा फ़तवों की नक़्लें कम मह़फ़ूज़ हैं फिर भी छे सो से ज़ियादा फ़तावे मन्क़ूल हैं जो कभी शाएअ़ किये जा सकते हैं।

वा'ज़

मौला तआ़ला ने वा'ज़ व नसीह़त की भी ख़ूब सलाहि़य्यत बख़्शी है। मुल्क के गोशे गोशे में आप के मवाइज़े ह़सना की धूम मची हुई है और बहुत से मवाइज़ तो मत़बूआ़ भी हैं जिन से अ़वाम हमेशा फ़ाइदा ह़ासिल करते रहेंगे।

ज़ौक़े सुख़न

ज़मानए त़ालिबे इल्मी ही से शे'र व शाइ़री का ज़ौक़ है। ना'त शरीफ़, क़ौमी नज़्में और ग़ज़ल में भी त़ब्अ़ आज़माई फ़रमाई है। कोई मजमूअ़ए कलाम मत़बूआ़ नहीं है।

तस्नीफ़ व तालीफ़

तदरीस, इफ़्ता, वा'ज़ वग़ैरा के साथ आप ने तस्नीफ़ व तालीफ़ का भी बहुत अच्छा और ख़ूब ज़ौक़ पाया है। और इस की त़रफ़ ख़ास्सी तवज्जोह मबज़ूल फ़रमाई है। मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर आप की मत़बूआ़ उर्दू तसानीफ़ मुन्दरिजए ज़ैल हैं :

﴾1﴿ मौसिमे रह़मत (सब से पहली तस्नीफ़ जो मुतबर्रक रातों और मुबारक अय्याम के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल है)

﴾2﴿ मा'मूलातुल अबरार ब मआ़ना अल आषार (तसव्वुफ़ के बयान में)

﴾3﴿ औलियाए रिजालुल ह़दीष (औलियाए मुह़द्दिषीन की सवानेह़)

4 मशाइख़े नक़्शबन्दिय्या (नक़्शबन्दी बुज़ुर्गों का सिलसिला वार तज़्किरा)

5 रूहानी हिकायात (दो हिस्से)

6 ईमानी तक़रीरें

7 नूरानी तक़रीरें

8 हक़्क़ानी तक़रीरें

9 इरफ़ानी तक़रीरें

10 कुरआनी तक़रीरें

11 सीरतुल मुस्तफ़ा

12 नवादिरुल ह़दीष (चालीस ह़दीषों की उ़म्दा और मुफ़ीद शर्ह़)

13 करामाते सह़ाबा

14 जन्नती ज़ेवर

15 क़ियामत कब आएगी ?

तमाम किताबें मुतअ़द्दद बार त़बअ़ हो कर अहले ज़ौक़ के लिये तस्कीन का सामान बन चुकी हैं और ख़ास बात येह है कि इस वक़्त भी आप की तमाम किताबें ब आसानी मिल जाती हैं। कोई भी किताब नायाब और मुश्किलुल हुसूल नहीं, ख़ुद ही अपने एहतिमाम से त़बअ़ कराते और शाएअ़ फ़रमाते हैं। किताबत व त़बाअ़त का मे'यार भी आ़म किताबों से बेहतर है जो कि मक़्बूलिय्यत की एक ख़ास वजह है। आप की तक़रीर व तस्नीफ़ में मुफ़ीद लत़ाइफ़ की ख़ास्सी आमेज़िश होती है जो अ़वामी दिलचस्पी का बाइ़ष है।

ह़ज व ज़ियारत

सि. 1378 हि. ब मुत़ाबिक़ सि. 1959 ई. में ह़ज्जे का'बा व ज़ियारते मदीनए त़य्यिबा का अ़ज़्म किया और शाद काम हुवे और पूरी सिह़ह़त व तवानाई के साथ तमाम अरकान की अदाएगी से सरफ़राज़ हुवे। जिद्दा में आप के बरादरे त़रीक़त अलह़ाज अ़ब्दुल ह़मीद के मकान पर महफ़िले वा'ज़ का इनइक़ाद हुवा जिस में आप ने निहायत ही रिक़्क़त अंगेज़ तक़रीर फ़रमाई।

दोनों मक़ामाते मुतबर्रका में कषीर उ़-लमा व मशाइख़ से मुलाक़ात फ़रमाई और बोहतों ने आप को अपने सलासिले त़रीक़त, दलाइलुल ख़ैरात, ह़ज़्बुल बह़्र और अवरादो वज़ाइफ़ नीज़ ह़दीष की सनदें व इजाज़तें मर्ह़मत फ़रमाईं। ह़ज़रते शैख़ मुफ़्ती मुह़म्मद सा'दुल्लाह अल मक्की ने बा वुजूदे ज़ो'फ़ पीरी के आप को खुद लिख कर सनदें अ़त़ा कीं और दीगर तबर्रुकात व आषार से भी नवाज़ा मौलाना अश्शैख़ अस्सय्यिद अ़लवी अ़ब्बास अल मक्की मुफ़्ती अल मालिकिय्या व मुदर्रिसुल ह़दीष बिल ह़रम शरीफ़ से भी मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल किया।

ह़ज को जाते वक़्त मौलाना मौसूफ़ ने ह़ुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से शैख़ मज़्कूर के नाम एक तआ़रुफ़ी ख़त़ लिखवा लिया था जिस से तवज्जोहाते आ़लिय्या को मुनअ़तिफ़ कराने में मदद मिली। शैख़ की बारगाह में पहुंच कर जब आप ने ख़त़ पेश किया और शैख़ इस जुम्ले पर पहुंचे هذا تلميذ تلميذ الشيخ مولانا احمد رضا خان الهندى तो फ़रमाया : अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आप ही हैं ? आप ने अ़र्ज़ किया : हां मैं ही हूं ! फिर तो बड़ी ही गर्म जोशी से मुआ़नक़ा फ़रमाया और दुआ़एं दीं और कुछ देर तक सरकार मुर्शिदी ह़ुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का ज़िक्र करते रहे और सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का तज़्किरा फ़रमाया फिर अपने घर बुलाया।

जब आप उन के घर पहुंचे तो वोह आप के साथ बहुत ही तवज्जोह और मेहरबानी से पेश आए और अपनी तमाम तसानीफ़ की एक एक जिल्द इनायत फ़रमा कर सिह़ाहे सित्ता की सनदे ह़दीष अ़त़ा फ़रमाई।

मौलाना अश्शैख़ मुह़म्मद बिन अल अ़रबी अल जज़ाइरी के नाम भी सरकारे मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का ख़त़ ले कर ह़ाज़िर हुवे तो आप की मसर्रत की इन्तिहा न रही, बड़ी तपाक से मिले और सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ और मुअत्ता की सनदे ह़दीष अ़त़ा फ़रमाई और ह़ज़रते इमाम अह़मद रज़ा ख़ां फ़ाज़िले बरैलवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का तज़किरए जमील इन अल्फ़ाज़ में फ़रमाया :

"हिन्दुस्तान का जब कोई आ़लिम हम से मिलता है तो हम उस से **मौलाना शैख़ अह़मद रज़ा ख़ां हिन्दी** के बारे में सुवाल करते हैं अगर उस ने ता'रीफ़ की तो हम समझ लेते हैं कि येह **सुन्नी** है और अगर उस ने मज़म्मत की तो हम को यक़ीन हो जाता है कि येह शख़्स **गुमराह** और **बिदअ़ती** है हमारे नज़्दीक येही कसोटी है ।"

मौलाना अश्शैख़ ज़ियाउद्दीन मुहाजिर मदनी ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत से भी मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल किया और आप की सोह़बत से फ़ैज़याब हुवे । आप ही ने दीगर ह़ज़रात से भी मुलाक़ात कराई जिन में शैख़ुद्दलाइल ह़ज़रते सय्यिद यूसुफ़ बिन मुह़म्मद अल मदनी भी हैं ।

इन मुतअ़द्दिद शुयूख़ की असनाद की नक़्लें ह़ज़रते अ़ल्लामा आ'ज़मी साह़िब ने अपनी किताब "**मा'मूलातुल अबरार**" में नक़्ल फ़रमाई हैं जो कई सफ़ह़ात पर फैली हुई हैं ।(1)

मुह़म्मद अ़ब्दुल मुबीन नो'मानी मिस्बाह़ी

---

(1).....मज़्कूरा बाला मज़्मून मैं ने "मा'मूलातुल अबरार" के ह़िस्सए सवानेह़ और ज़ाती मा'लूमात की बुन्याद पर क़लम बन्द किया है । 12

शरफ़े इन्तिसाब

हज़राते सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के दरबारे फ़ज़ीलत में

एक नियाज़ मन्द मुसलमान का

नज़रानए महब्बत

मेरे आक़ा के जितने भी अस्हाब हैं
उस मुबारक जमाअ़त पे लाखों सलाम

ख़ाक पाए सहाबा

अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عُفِیَ عَنْہُ

करीमुद्दीन पूर, पोस्ट घोसी

ज़िलअ़ आ'ज़मगढ़

मन्क़बते सहाबए किराम (رضی اللہ تعالیٰ عنہم)

दो आ़लम न क्यूं हो निषारे सहाबा

कि है अ़र्श मन्ज़िले वक़ारे सहाबा

अमीं हैं येह क़ुरआनो दीने ख़ुदा के — मदारे हुदा ए'तिबारे सहाबा

रिसालत की मन्ज़िल में हर हर क़दम पर — नबी को रहा इन्तिज़ारे सहाबा

ख़िलाफ़त, इमामत, विलायत, करामत — हर एक फ़ज़्ल पर इक़्तिदारे सहाबा

नुमायां है इस्लाम के गुलिस्तां में — हर एक गुल पे रंगे बहारे सहाबा

कमाले सहाबा, नबी की तमन्ना — जमाले नबी है क़रारे सहाबा

येह मेहरें हैं फ़रमान ख़त्मुर्रुसुल की — है दीने ख़ुदा शाहकारे सहाबा

सहाबा हैं ताजे रिसालत के लश्कर — रसूले ख़ुदा ताजदारे सहाबा

इन्हीं में हैं सिद्दीक़ व फ़ारूक़ो उ़षमां — इन्हीं में अ़ली शहसुवारे सहाबा

इन्हीं में है बद्र व उहुद के मुजाहिद — लक़ब जिन का है जां निषारे सहाबा

इन्हीं में है अस्ह़ाबे शजरह नुमायां — जिन्हें कहते हैं राज़दारे सहाबा

इन्हीं में हुसैनो ह़सन, फ़ातिमा हैं — नबी के जो हैं गुल अज़ारे सहाबा

पसे मर्ग ऐ आ'ज़मी येह दुआ़ है

बनूं मैं गुबारे मज़ारे सहाबा

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

तम्हीदी तजल्लियां

پندہا دادیم حاصل شد فراغ

ما علینا یا اخی الا البلاغ

बुजु़र्गाने दीन की करामतों का नूरानी तज़्किरा यूं तो हर दौर में हमेशा होता रहा है और इस उ़न्वान पर तक़रीबन हर ज़बान में किताबें भी लिखी जाती रहीं मगर इस ज़माने में इस का चर्चा बहुत ज़ियादा बढ़ गया है, चुनान्चे, तजरिबा है कि अकषर वाइज़ीने किराम अपने मवाइज़ की मह़फ़िलों में और बेशतर पीराने किबार अपने मुरीदीन की मजलिसों में बुजु़र्गाने दीन के कश्फ़ व करामात ही के वलवला अंगेज़ ज़िक्रे जमील से गर्मिये मजालिस का सामान फ़राहम किया करते हैं और सामेईन एक ख़ास जज़्बए तअष्षुर के साथ सुनते और सर धुनते रहते हैं और बा'ज़ मुसन्निफ़ीन और मज़्मून निगार भी इस उ़न्वान पर अपनी क़लम कारियों के जोहर दिखा कर अ़वाम से ख़िराजे तह़सीन ह़ासिल करते रहते हैं और इस में ज़रा भी शक नहीं कि बुजु़र्गाने दीन की करामतों का तज़्किरा एक ऐसा मुअष्षिर और दिलकश मज़्मून है कि इस से रूह़ की बालीदगी, क़ल्ब में नूरे ईमान और दिलो दिमाग़ के गोशे गोशे में ईमानी तजल्लियों का सामान पैदा हो जाता है। जिस से अहले ईमान की इस्लामी रगों में एक तूफ़ानी लहर और बदन की बोटी बोटी में जोशे आ'माल का एक इरफ़ानी जज़्बा उभरता मह़सूस होता है। इस लिये मेरा नज़रिय्या है कि दौरे ह़ाज़िर में बुजु़र्गाने दीन की इ़बादतों, रियाज़तों और इन की करामतों का ज़ियादा से ज़ियादा ज़िक्र व तज़्किरा और इन का चर्चा मुसलमानों में जोशे ईमान और जज़्बए अ़मल पैदा करने का बहुत ही मुअष्षिर ज़रिआ़ और निहायत ही बेहतरीन त़रीक़ा है।

लेकिन तज़्किरए करामात के सिलसिले में मेरे नजदीक एक सानेहा बहुत ही हैरत नाक बल्कि इन्तिहाई अलमनाक है कि मुतअख़्ख़िरीन औलियाए किराम बिल ख़ुसूस मजज़ूबों और बाबाओं के कश्फ़ व करामात और ख़ास कर दौरे हाज़िर के पीरों की करामतों का तो इस क़दर चर्चा है कि हर कूचे व बाज़ार बल्कि हर मकान व दुकान, होटलों और चाए ख़ानों में, किताबों और रिसालों के अवराक़ में हर जगह इस का डंका बज रहा है और हर त़रफ़ इस की धूम मची हुई है, मगर अफ़्सोस सद हज़ार अफ़्सोस कि उम्मते मुस्लिमा का वोह त़बक़ए उ़लया जो यक़ीनन तमाम उम्मत में ''अफ़्ज़लुल औलिया'' है या'नी ''**सहाबए किराम** رضی اللہ عنہم'' । इन की विलायत व करामत कहीं भी कोई तज़्किरा और चर्चा न कोई सुनाता है न कहीं सुनने में आता है, न किताबों और रिसालों के अवराक़ में मिलता है, ह़ालांकि इन बुज़ुर्गों की विलायत व करामत अ़ज़ीम दरजा इस क़दर बुलन्दो बाला है कि अगर तमाम दुन्या के अगले और पिछले औलिया को इन के नक़्शे क़दम चूम लेने की सआ़दत नसीब हो जाए तो इन की विलायत व करामत को मे'राजे कमाल ह़ासिल हो जाए। क्यूंकि दर ह़क़ीक़त तो येही ह़ज़रात मदारे विलायत व करामत हैं कि इन के नक़्शे पा की पैरवी के बिग़ैर विलायत व करामत तो कुजा ? किसी को ईमान भी नसीब नहीं हो सकता। येह लोग बिला वासित़ा आफ़्ताबे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم से नूरे मा'रिफ़त ह़ासिल कर के आस्माने विलायत में सितारों की त़रह़ चमकते और गुलिस्ताने करामत में गुलाब के फूलों की त़रह़ महकते हैं और तमाम दुन्या के औलिया इन की विलायत के शाही मह़ल्लात की चोखट पर भिकारी बन कर नूरे मा'रिफ़त की भीक मांगते रहते हैं ।

अल्लाहु अकबर ! येह वोह फ़ज़ीलत मआब और मुक़द्दस हस्तियां हैं जो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जलाल व जमाले नबुव्वत को अपनी ईमानी नज़रों से देख कर और ह़बीबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शरफ़े सोह़बत से सरफ़राज़ हो कर ख़ुश बख़्ती और नेक नसीबी के बादशाह बल्कि शहनशाह बन गए और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के मुअ़ज़्ज़ज़ लक़ब से सर बुलन्द हो कर तमाम औलियाए उम्मत में उसी त़रह़ नज़र आ रहे हैं जिस त़रह़ टिमटिमाते हुवे चराग़ों की मह़फ़िल में हज़ारों पावर का जगमगाता हुवा बिजली का बल्ब या सितारों की बरात में चमकता हुवा चांद ।

अफ़्सोस कि न तो हमारे वाइज़ीने किराम ने अपनी तक़रीरों में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की करामतों को बयान किया न हमारे मशाइख़े इ़ज़ाम ने अपने मुरीदों को इस से आगाह किया, न हमारे उ़-लमाए अहले सुन्नत ने इस उ़न्वान पर कभी क़लम उठाने की ज़ह़मत गवारा की, ह़ालांकि राफ़ज़ियों के मुक़ाबले में ज़ियादा से ज़ियादा इस उ़न्वान पर लिखने और इस का तज़किरा और चर्चा करने की ज़रूरत थी और आज भी है क्यूंकि हमारी ग़फ़्लतों का येह नतीजा हुवा कि हमारे अ़वाम जानते ही नहीं कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم भी औलिया हैं और इन बुज़ुर्गों से भी करामतों का सुदूर व ज़ुहूर हुवा है ।

दर ह़क़ीक़त एक अ़रसए दराज़ से मेरा येह तअष्षुर मेरे दिल का कांटा बना हुवा था चुनान्चे, येही वोह जज़्बा है जिस से मुतअष्षिर हो कर मैं अपनी कोताह दस्ती और इ़ल्मी कम माईगी के बावुजूद फ़िल ह़ाल एक सो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के मुक़द्दस ह़ालात और इन के कमालात व करामात का एक मजमूआ़ ब सूरते गुलदस्ता नाज़िरीने किराम की ख़िदमत में नज़्र करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूं । जो "**करामाते सह़ाबा** رضی اللہ عنہم" के सीधे साधे नाम से मौसूम है ।

گر قبول افتد زہے عزو شرف

सच पूछिये तो दर ह़क़ीक़त मेरी नज़र में येह किताब इस क़ाबिल ही नहीं थी कि इस को मन्ज़रे आ़म पर लाऊं क्यूंकि इतने अहम उ़न्वान पर इतनी छोटी सी किताब हरगिज़ हरगिज़ अ़ज़्मते सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के शायाने शान नहीं है, मगर फिर येह सोच कर कि ह़ज़राते सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के दरबारे अ़ज़्मत में फूल न सही तो कम से कम फूल की एक पंखड़ी ही नज़्र करने की सआ़दत ह़ासिल कर लूं, इस किताब को छापने की हिम्मत कर ली है। फिर येह भी ख़याल आया कि शायद मुझ कम इ़ल्म की इस काविशे क़लम को देख कर दूसरे अहले इ़ल्म मैदाने तसनीफ़ की जौलान गाह में अपनी क़लम कारी के जोहर दिखाएं तो اَلدَّالُّ عَلَی الْخَیْرِ کَفَاعِلِہٖ (1) की सआ़दत मुझे नसीब हो जाएगी।

मैं ने इस किताब में ह़ज़राते ख़ुलफ़ाए राशिदीन व ह़ज़राते अ़शरए मुबश्शरा رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن के सिवा दूसरे सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के नामों और तज़्किरों में क़सदन किसी ख़ास तरतीब का इल्तिज़ाम नहीं किया है, बल्कि दौराने मुत़ालआ़ जिन जिन सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की करामतों पर नज़र पड़ती रही, उन को नोट करता रहा। यहां तक कि मेरी नोटबुक बढ़ते बढ़ते एक किताब बन गई क्यूंकि मेरा अस्ल मक़्सूद तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की करामतों का तज़्किरा था। ख़्वाह सग़ारे सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का ज़िक्र पहले हो या किबारे सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का इस से अस्ल मक़सद में कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता।

तदवीने किताब के बारे में अ़ज़ीज़े मोह़तरम मौलाना क़ुदरतुल्लाह साह़िब मुदर्रिस दारुल उ़लूम फ़ैज़ुर्रसूल बराऊं शरीफ़ का ममनून हो कर उन के लिये दुआ़ गो हूं कि उन्हों ने इस किताब के चन्द अजज़ा के मुसव्वदों की तबयीज़ कर के मेरे बारे क़लम को कुछ हलका कर दिया।

1 ....भलाई की त़रफ़ रहनुमाई करने वाला भलाई करने वाले की त़रह़ है।

इसी त़रह़ अपने दूसरे मुख़्लिस तलामज़ा ख़ुसूसन असदुल उ़–लमा मौलाना अलहा़ज मुफ़्ती सय्यिद अह़मद शाह बुख़ारी मुबल्लिगे़ अफ़्रिक़ा साकिन व नजहान ज़िल्अ़ कच्छ और मौलाना सय्यिद मुह़म्मद यूसुफ़ शाह ख़त़ीबे जामेअ़ मस्जिद चोक भूज ज़िल्अ़ कच्छ और मौलाना अ़ब्दुर्रह़मान साहि़ब मुदर्रिस मद्रसा अहले सुन्नत कोठारा ज़िल्अ़ कच्छ का भी बहुत बहुत शुक्र गुज़ार हूं कि इन मुख़्लिस अ़ज़ीज़ों ने हमेंशा मेरी तसानीफ़ को क़द्र की निगाहों से देखा और मेरी किताबों की इशाअ़त में काफ़ी हि़स्सा लिया।

فَجزَا هُمُ اللّٰهُ تعَالٰی اَحسَنَ الْجزَاءِ.

आख़िर में दुआ़गो हूं कि ख़ुदावन्दे करीम अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के त़ुफ़ैल में मेरी इस ह़क़ीर इल्मी व क़लमी ख़िदमत को अपने फ़ज़्लो करम से शरफ़े क़बूलिय्यत अ़त़ा फ़रमाए और इस को मेरे लिये और मेरे वालिदैन व असातिज़ा व तलामिज़ा व अह़बाब सब के लिये सामाने आख़िरत व ज़रीअ़ए मग़फ़िरत बनाए।

اٰمِين بِجَاهِ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمُ

اٰمِين يَارَبَّ الْعٰلَمِيْنَ

त़ालिबे दुआ़

अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा अल आ'ज़मी عُفِیَ عَنْہُ

दारुल उ़लूम अहले सुन्नत फ़ैज़ुर्रसूल

बराऊं शरीफ़ ज़िल्अ़ बस्ती यू.पी

25 शव्वाल सि. 1398 हि.

786/92

तह्क़ीक़े करामात

ज़मानए नबुव्वत से आज तक कभी भी इस मस्अले में अहले हक़ के दरमियान इख़्तिलाफ़ नहीं हुवा कि औलियाए किराम की करामतें हक़ हैं और हर ज़माने में अल्लाह वालों की करामतों का सुदूर व ज़ुहूर होता रहा और اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक कभी भी इस का सिलसिला मुन्क़तअ़ नहीं होगा, बल्कि हमेशा औलियाए किराम से करामात सादिर व ज़ाहिर होती ही रहेंगी।

और इस मस्अले के दलाइल में क़ुरआने मजीद की मुक़द्दस आयतें और अहादीषे करीमा नीज़ अक़्वाले सहाबा व ताबेईन का इतना बड़ा ख़ज़ाना अवराक़े कुतुब में मह़फ़ूज़ है कि अगर इन सब परागन्दा मोतियों को एक लड़ी में पिरो दिया जाए तो एक ऐसा गिरां क़द्र व बेश क़ीमत हार बन सकता है जो ता'लीम व तअ़ल्लुम के बाज़ार में निहायत ही अनमोल होगा और अगर इन मुन्तशिर अवराक़ को सफ़हाते क़िरतास पर जम्अ़ कर दिया जाए तो एक ज़ख़ीम व अ़ज़ीम दफ़्तर तय्यार हो सकता है।

करामत क्या है ?

मोमिने मुत्तक़ी से अगर कोई ऐसी नादिरुल वुजूद व तअ़ज्जुब ख़ैज़ चीज़ सादिर व ज़ाहिर हो जाए जो आम तौर पर आदतन नहीं हुवा करती तो इस को "करामत" कहते हैं। इसी क़िस्म की चीज़ें अगर अम्बिया عَلَیْھِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से ए'लाने नबुव्वत करने से पहले ज़ाहिर हों तो "इरहास" और ए'लाने नबुव्वत के बा'द हों तो "मो'जिज़ा" कहलाती हैं और अगर आम मोअमिनीन से इस क़िस्म की चीज़ों का ज़ुहूर हो तो इस को "मऊनत" कहते हैं और

किसी काफ़िर से कभी इस की ख़्वाहिश के मुताबिक़ इस क़िस्म की चीज़ ज़ाहिर हो जाए तो इस को "इस्तिदराज" कहा जाता है ।(1)

मो'जिज़ा और करामत

ऊपर ज़िक्र की हुई तफ़्सील से मा'लूम हो गया कि मो'जिज़ा और करामत दोनों की ह़क़ीक़त एक ही है । बस दोनों में फ़र्क़ सिर्फ़ इस क़दर है कि ख़िलाफ़े आ़दत व तअ़ज्जुब ख़ैज़ चीज़ें अगर किसी नबी की त़रफ़ से ज़ुहूर पज़ीर हों तो येह "**मो'जिज़ा**" कहलाएंगी और अगर इन चीज़ों का ज़ुहूर किसी वली की जानिब से हो तो इस को "**करामत**" कहा जाएगा । चुनान्चे, ह़ज़रते इमाम याफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपनी किताब "नशरुल मुह़ासिनुल ग़ालिय्या" में तह़रीर फ़रमाया है कि इमामुल ह़रमैन व अबू बक्र बाक़लानी व अबू बक्र बिन फ़ौरुक व हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली व इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी व नासिरुद्दीन बैज़ावी व मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल मलिक सुलमी व नासिरुद्दीन तूसी व ह़ाफ़िज़ुद्दीन नस्फ़ी व अबुल क़ासिम क़ुशैरी इन तमाम अकाबिर उ़-लमाए अहले सुन्नत व मुह़क़्क़िक़ीने मिल्लत ने मुत्तफ़िक़ा तौर पर येही तह़रीर फ़रमाया कि मो'जिज़ा और करामत में येही फ़र्क़ है कि ख़वारिक़े आ़दात का सुदूर व ज़ुहूर किसी नबी की त़रफ़ से हो तो इस को "**मो'जिज़ा**" कहा जाएगा और अगर किसी वली की त़रफ़ से हो तो इस को "**करामत**" के नाम से याद किया जाएगा ह़ज़रते इमाम याफ़ेई ने इन दस इमामों के नाम और इन की किताबों की इ़बारतें नक़्ल फ़रमाने के बा'द येह इरशाद फ़रमाया कि इन इमामों के इ़लावा दूसरे बुज़ुर्गाने मिल्लत ने भी येही फ़रमाया है, लेकिन इ़ल्मो फ़ज़्ल और तह़क़ीक़ व तदक़ीक़ के इन पहाड़ों के नाम ज़िक्र कर देने के बा'द मज़ीद मुह़क़्क़िक़ीन के नामों के ज़िक्र की कोई ज़रूरत नहीं ।(2) (حجۃ اللہ علی العالمین ج۲،ص۸۴۹)

---

1 ......النبراس شرح شرح العقائد ، اقسام الخوارق سبعۃ ، ص ۲۷۲ ملخصاً

2 ......حجۃ اللّٰہ علی العالمین ، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ ، المطلب الاول فی تجویز الکرامۃ للاولیاء ...الخ ، ص ۶۰۴

मो'जिज़ा ज़रूरी, करामत ज़रूरी नहीं

मो'जिज़ा और करामत में एक फ़र्क़ येह भी है कि हर वली के लिये करामत का होना ज़रूरी नहीं है, मगर हर नबी के लिये मो'जिज़े का होना ज़रूरी है, क्यूंकि वली के लिये येह लाज़िम नहीं है कि वोह अपनी विलायत का ए'लान करे या अपनी विलायत का षुबूत दे, बल्कि वली के लिये तो येह भी ज़रूरी नहीं है कि वोह ख़ुद भी जाने कि मैं वली हूं। चुनान्चे, येही वजह है कि बहुत से औलियाउल्लाह ऐसे भी हुवे कि उन को अपने बारे में येह मा'लूम ही नहीं हुवा कि वोह वली हैं। बल्कि दूसरे औलियाए किराम ने अपने कश्फ़ व करामत से उन की विलायत को जाना पहचाना और उन के वली होने का चर्चा किया, मगर नबी के लिये अपनी नबुव्वत का इषबात ज़रूरी है और चूंकि इन्सानों के सामने नबुव्वत का इषबात बिग़ैर मो'जिज़ा दिखाए हो नहीं सकता, इस लिये हर नबी के लिये मो'जिज़े का होना ज़रूरी और लाज़िमी है।

करामत की क़िस्में

औलियाए किराम से सादिर व ज़ाहिर होने वाली करामतें कितनी अक़्साम की हैं और इन की ता'दाद कितनी है ? इस बारे में अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुब्की رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी किताब "त़बक़ात" में तह़रीर फ़रमाया कि मेरे ख़याल में औलियाए किराम से जितनी क़िस्मों की करामतें सादिर हुई हैं इन क़िस्मों की ता'दाद एक सो से भी ज़ाइद है। इस के बा'द अ़ल्लामा मौसूफ़ अस्सदर ने क़दरे तफ़्सील के साथ करामत की पच्चीस क़िस्मों का बयान फ़रमाया है जिन को हम नाज़िरीन की ख़िदमत में कुछ मज़ीद तफ़्सील के साथ पेश करते हैं।

﴾1﴿ मुर्दों को ज़िन्दा करना

येह वोह करामत है कि बहुत से औलियाए किराम से इस का सुदूर हो चुका है चुनान्चे, रिवायाते सहीहा से षाबित है कि अबू उबैद बसरी जो अपने दौर के मुशाहीर औलिया में से हैं एक मरतबा जिहाद में तशरीफ़ ले गए। जब उन्हों ने वतन की तरफ़ वापसी का इरादा फ़रमाया तो नागहां उन का घोड़ा मर गया, मगर उन की दुआ से अचानक उन का मरा हुवा घोड़ा ज़िन्दा हो कर खड़ा हो गया और वोह उस पर सुवार हो कर अपने वतन "बसरा" पहुंच गए और ख़ादिम को हुक्म दिया कि इस की ज़ीन और लगाम उतार ले। ख़ादिम ने जूं ही ज़ीन और लगाम को घोड़े से जुदा किया फ़ौरन ही घोड़ा मर कर गिर पड़ा।[1]

इसी तरह हज़रते शैख़ मफ़रज जो अलाक़ा मिस्र में "सईद" के बाशिन्दे थे, उन के दस्तरख़्वान पर एक परन्दे का बच्चा भुना हुवा रखा गया तो आप ने फ़रमाया कि "तू ख़ुदा तआला के हुक्म से उड़ कर चला जा।" इन अल्फ़ाज़ का उन की ज़बान से निकलना था कि एक लम्हे में वोह परन्दे का बच्चा ज़िन्दा हो गया और उड़ कर चला गया।[2]

इसी तरह हज़रते शैख़ अहदल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी मरी हुई बिल्ली को पुकारा तो वोह दौड़ती हुई शैख़ के सामने हाज़िर हो गई।[3]

---

1 ......حجۃ اللّٰہ علی العالمین ، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء ...الخ ، المطلب الثانی فی انواع الکرامات ، ص۶۰۸

2 ......حجۃ اللّٰہ علی العالمین ، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء ...الخ ، المطلب الثانی فی انواع الکرامات ، ص۶۰۸ ملخصاً

3 ......حجۃ اللّٰہ علی العالمین ، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء ...الخ، المطلب الثانی فی انواع الکرامات ، ص۶۰۸ملخصاً

इसी त़रह़ ह़ज़रते ग़ौषे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दस्तरख़्वान पर पकी हुई मुरग़ी को तनावुल फ़रमा कर उस की हड्डियों को जम्अ़ फ़रमाया और येह इरशाद फ़रमाया कि ऐ मुरग़ी ! तू उस अल्लाह तआ़ला के हुक्म से ज़िन्दा हो कर खड़ी हो जा जो सड़ी गली हड्डियों को ज़िन्दा फ़रमाएगा। ज़बान मुबारक से इन अल्फ़ाज़ के निकलते ही मुरग़ी ज़िन्दा हो कर चलने फिरने लगी।[1]

इसी त़रह़ ह़ज़रते ज़ैनुद्दीन शाफ़ेई मद्रसए शामिय्या ने उस बच्चे को जो मद्रसे की छत से गिर कर मर गया था, ज़िन्दा कर दिया।[2] (حجۃ اللہ،ج۲،ص۸۵۶)

इसी त़रह़ आ़म तौर पर येह मश्हूर है कि बग़दाद शरीफ़ में चार बुज़ुर्ग ऐसे हुवे जो मादरज़ाद अन्धों और कोढ़ियों को ख़ुदा तआ़ला के हुक्म से शिफ़ा देते थे और अपनी दुआ़ओं से मुर्दों को ज़िन्दा कर देते थे। (1) शैख़ अबू सा'द क़ैलवी (2) शैख़ बक़ा बिन बत़ू (3) शैख़ अ़ली बिन अबी नस्र हैती (4) शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (رَحْمَۃُ اللہِ تعَالٰی عَلَیْہِم)[3] (बहजतुल अस्रार शरीफ़)

﴾2﴿ मुर्दों से कलाम करना

करामत की येह क़िस्म भी ह़ज़रते शैख़ अबू सईद ख़राज़ और ह़ज़रते ग़ौषे आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنْھُمَا वग़ैरा बहुत से औलियाए किराम से बारहा और ब कषरत मन्क़ूल है।[4] (حجۃ اللہ،ج۲،ص۸۵۶)

1 ......حجۃ اللہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ،المطلب الثانی فی انواع الکرامات،ص۶۰۹ملخصاً

2 ......حجۃ اللہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ،المطلب الثانی فی انواع الکرامات،ص۶۰۹ملخصاً

3 ......بھجۃ الاسرار،ذکر فصول من کلامہ مرصعاًبشیٔ...الخ،ص۱۲٤

4 ......حجۃ اللہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ،المطلب الثانی فی انواع الکرامات،ص۶۰۹

शैख़ अ़ली बिन अबी नस्र हैती का बयान है कि मैं शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हमराह ह़ज़रते मा'रूफ़ करख़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ारे मुबारक पर गया और उन्हों ने सलाम किया तो क़ब्रे अन्वर से आवाज़ आई कि وعليك السلام يا سيد اهل الزمان ।[1]

(बहजतुल अस्रार)

शैख़ अ़ली बिन अबी नस्र हैती और बक़ा बिन बतू, येह दोनों बुज़ुर्ग ह़ज़रते ग़ौषे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साथ ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हुवे तो नागहां ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ क़ब्र शरीफ़ से बाहर निकल आए और फ़रमाया कि ऐ अ़ब्दल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मैं इ़ल्मे शरीअ़त व त़रीक़त और इ़ल्मे क़ाल व ह़ाल में तुम्हारा मोह़ताज हूं ।[2] (बहजतुल असरार)

﴾3﴿ दरयाओं पर तसर्रुफ़

दरया का फट जाना, दरया का ख़ुश्क हो जाना और दरया पर चलना बहुत से औलियाए किराम से इन करामतों का ज़ुहूर हुवा, बिल ख़ुसूस सय्यिदुल मुतअख़्ख़िरीन ह़ज़रते तक़िय्युद्दीन बिन दक़ीक़ुल ईद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के लिये तो इन करामतों का बार बार ज़ुहूर आ़म त़ौर पर मश्हूरे ख़लाइक़ है ।[3] (حجۃ اللہ ج۲،ص۸۵۶)

﴾4﴿ इन्क़िलाबे माहिय्यत

किसी चीज़ की ह़क़ीक़त का नागहां बदल जाना येह करामत भी अकषर औलियाए किराम से मन्क़ूल है । चुनान्चे, शैख़ ईसा हतार यमनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास बत़ौरे मज़ाक़ के किसी बद बात़िन ने शराब से भरी हुई दो मश्कें तोहफ़े में भेज दीं । आप ने दोनों मश्कों का

---

1 ......بهجة الاسرار، ذكر كلمات اخبربها عن نفسه محدثا...الخ، ص ٥٣

2 ......بهجة الاسرار، ذكر علمه وتسمية بعض...الخ، ص ٢٢٦ ملخصاً

3 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ،المطلب الثانى فى انواع الكرامات،ص ٦٠٩ ملخصاً

मुंह खोल कर एक की शराब को दूसरी में उंडेल दिया। फिर हाज़िरीन से फ़रमाया कि आप लोग इस को तनावुल फ़रमाएं। हाज़िरीन ने खाया तो इतना नफ़ीस और इस क़दर उ़म्दा घी था कि उ़म्र भर लोगों ने इतना उ़म्दा घी नहीं खाया।[1] (حجۃ اللہ،ج۲،ص۸۵۶)

﴾5﴿ ज़मीन का सिमट जाना

सेंकड़ों हज़ारों मील की मसाफ़त का चन्द लम्ह़ों में तै़ होना येह करामत भी इस क़दर ज़ियादा अल्लाह वालों से मन्क़ूल है कि इस की रिवायात ह़द्दे तवातुर तक पहुंची हुई हैं। चुनान्चे, त़रसूस की जामेअ़ मस्जिद में एक वली तशरीफ़ फ़रमा थे। अचानक उन्हों ने अपना सर गिरेबान में डाला और फिर चन्द लम्ह़ों में गिरेबान से सर निकाला तो वोह एक दम ह़रमे का'बा में पहुंच गए।[2]

(حجۃ اللہ،ج۲،ص۸۵۶)

﴾6﴿ नबातात से गुफ़्त्गू

बहुत से हैवानात व नबातात और जमादात ने औलियाए किराम से गुफ़्त्गू की जिन की ह़िकायात ब कष्रत किताबों में मज़्कूर हैं चुनान्चे, ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बैतुल मुक़द्दस के रास्ते में एक छोटे से अनार के दरख़्त के साए में उतर पड़े तो उस दरख़्त ने ब आवाज़े बुलन्द कहा कि ऐ अबू इस्ह़ाक़ ! आप मुझे येह शरफ़ अ़त़ा फ़रमाइये कि मेरा एक फल खा लीजिये, उस दरख़्त का फल खट्टा था, मगर दरख़्त की तमन्ना पूरी करने के लिये आप ने उस का एक फल तोड़ कर खाया तो वोह निहायत ही मीठा हो गया। और आप की बरकत से वोह साल में दो बार फलने लगा

---

1 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثانى فى انواع الكرامات،ص٦٠٩ ملخصاً

2 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثانى فى انواع الكرامات،ص٦٠٩ ملخصاً

और वोह दरख़्त इस क़दर मश्हूर हो गया कि लोग इस को **रुम्मानतुल आ़बिदीन** (आ़बिदों का अनार) कहने लगे ।[1](حجۃ اللہ ج۲،ص۸۵۶)

﴾7﴿ शिफ़ाए अमराज़

औलियाए किराम के लिये इस करामत का षुबूत भी ब कषरत किताबों में मरक़ूम है, चुनान्चे, ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَيْه का बयान है कि एक पहाड़ पर मैं ने एक ऐसे बुज़ुर्ग से मुलाक़ात की जो अपाहजों, अन्धों और दूसरे क़िस्म क़िस्म के मरीज़ों को खुदा عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से शिफ़ायाब फ़रमाते थे ।[2] (حجۃ اللہ،ج۲،ص۸۵۷)

﴾8﴿ जानवरों का फ़रमां बरदार हो जाना

बहुत से बुज़ुर्गों ने अपनी करामत से ख़त़रनाक दरिन्दों को अपना फ़रमा बरदार बना लिया था । चुनान्चे, ह़ज़रते अबू सईद बिन अबिल ख़ैर मयहिनी رَحْمَةُ اللهِ تَعالٰی عَلَيْه ने शेरों को अपना इत़ाअ़त गुज़ार बना रखा था और दूसरे बहुत से औलिया शेरों पर सुवारी फ़रमाते थे जिन की ह़िकायात मश्हूर हैं ।[3] (حجۃ اللہ،ج۲،ص۸۵۷)

﴾9﴿ ज़माने का मुख़्तसर हो जाना

येह करामत बहुत से बुज़ुर्गों से मन्क़ूल है कि उन की सोह़बत में लोगों को ऐसा मह़सूस हुवा कि पूरा दिन इस क़दर जल्दी गुज़र गया कि गोया घन्टे दो घन्टे का वक़्त गुज़रा है ।[4] (حجۃ اللہ،ج۲،ص۸۵۷)

---

1 ......حجة اللّٰه على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ،المطلب الثانى فى انواع الكرامات،ص۶۰۹ ملخصاً

2 ......حجة اللّٰه على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ،المطلب الثانى فى انواع الكرامات،ص۶۰۹ ملخصاً

3 ......حجة اللّٰه على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ،المطلب الثانى فى انواع الكرامات،ص۶۰۹ ملخصاً

4 ......المرجع السابق ،ص ۶۱۰ ملخصاً

﴾10﴿ ज़माने का त़वील हो जाना

इस करामत का ज़ुहूर सेंकड़ों उ़-लमा व मशाइख़ से इस त़रह़ हुवा कि इन बुज़ुर्गों ने मुख़्तसर से मुख़्तसर वक़्तों में इस क़दर ज़ियादा काम कर लिया कि दुन्या वाले इतना काम महीनों बल्कि बरसों में भी नहीं कर सकते। चुनान्चे, इमाम शाफ़ेई व हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली व अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी व इमामुल ह़रमैन शैख़ मुह़्युद्दीन नववी वग़ैरहा।(1) उ़-लमाए दीन ने इस क़दर कषीर ता'दाद में किताबें तस्नीफ़ फ़रमाई हैं कि अगर इन की उ़म्रों का ह़िसाब लगाया जाए तो रोज़ाना इतने ज़ियादा अवराक़ इन बुज़ुर्गों ने तस्नीफ़ फ़रमाए हैं कि कोई इतने ज़ियादा अवराक़ को इतनी क़लील मुद्दत में नक़्ल भी नहीं कर सकता, ह़ालांकि येह अल्लाह वाले तस्नीफ़ के इ़लावा दूसरे मशाग़िल भी रखते थे और नफ़्ली इ़बादतें भी ब कषरत करते रहते थे। इसी त़रह़ मन्क़ूल है कि बा'ज़ बुज़ुर्गों ने दिन रात में आठ आठ ख़त्मे क़ुरआने मजीद की तिलावत कर ली है। ज़ाहिर है कि इन बुज़ुर्गों के अवक़ात में इस क़दर और इतनी ज़ियादा बरकत हुई है कि जिस को करामत के सिवा और क्या कहा जा सकता है ?(2) (حجۃ اللہ، ج۲،ص۸۵۷)

﴾11﴿ मक़्बूलिय्यते दुआ़

येह करामत भी बहुत ज़ियादा बुज़ुर्गों से मन्क़ूल है।(3)

---

1 ...और चौदहवीं सदी हिजरी के इमाम अह़मद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ जिन्हों ने तक़रीबन एक हज़ार कुतुब पचास उ़लूम में तस्नीफ़ फ़रमाईं। 12 मिन्ह

2 ......حجۃ اللّٰہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ،المطلب الثانی فی انواع الکرامات،ص ٦١٠ ملخصاً

3 ......حجۃ اللّٰہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ،المطلب الثانی فی انواع الکرامات،ص٦٠٩

﴾12﴿ ख़ामोशी व कलाम पर क़ुदरत

बा'ज़ बुज़ुर्गों ने बरसों तक किसी इन्सान से कलाम नहीं किया और बा'ज़ बुज़ुर्गों ने नमाज़ों और ज़रूरिय्यात के इलावा कई कई दिनों तक मुसलसल वा'ज़ फ़रमाया और दर्स दिया है।(1)

﴾13﴿ दिलों को अपनी त़रफ़ खींच लेना

सेंकड़ों औलियाए किराम से येह करामत सादिर हुई कि जिन बस्तियों या मजलिसों में लोग इन से अ़दावत व नफ़रत रखते थे। जब इन ह़ज़रात ने वहां क़दम रखा तो इन की तवज्जोहात से नागहां सब के दिल इन की मह़ब्बत से लबरैज़ हो गए और सब के सब परवानों की त़रह़ इन के क़दमों पर निषार होने लगे।(2) (حجۃ اللہ،ج۲،ص۸۵۷)

﴾14﴿ ग़ैब की ख़बरें

इस की बे शुमार मिषालें मौजूद हैं कि औलियाए किराम ने दिलों में छुपे हुवे ख़यालात व ख़त़रात को जान लिया और लोगों को ग़ैब की ख़बरें देते रहे और इन की पेश गोइयां सो फ़ीसदी सह़ीह़ होती रहीं।(3)

﴾15﴿ खाए पिये बिग़ैर ज़िन्दा रहना

ऐसे बुज़ुर्गों की फ़ेहरिस्त बहुत ही त़वील है जो एक मुद्दते दराज़ तक बिग़ैर कुछ खाए पिये ज़िन्दा रह कर इबादतों में मसरूफ़

---

1 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثانى فى انواع الكرامات،ص٦٠٩

2 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثانى فى انواع الكرامات،ص٦٠٩ ملخصاً

3 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثانى فى انواع الكرامات،ص٦٠٩ ملخصاً

रहे और इन्हें खाना या पानी छोड़ देने से ज़र्रा बराबर कोई ज़ो'फ़ भी लाहिक़ नहीं हुवा।[1]

﴾16﴿ निज़ामे आ़लम में तसर्रुफ़ात

मन्क़ूल है कि बहुत से बुज़ुर्गों ने शदीद क़ह्त़ के ज़माने में आस्मान की त़रफ़ उंगली उठा कर इशारा फ़रमाया तो नागहां आस्मान से मुसलाधार बारिश होने लगी और मश्हूर है कि ह़ज़रते शैख़ अबुल अ़ब्बास शात़िर رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तो दिरहमों के बदले बारिश फ़रोख़्त किया करते थे।[2] (حجۃ اللہ،ج۲،ص۸۵۷)

﴾17﴿ बहुत ज़ियादा मिक़्दार में खा लेना

बा'ज़ बुज़ुर्गों ने जब चाहा बिसयों आदमियों की ख़ूराक अकेले खा गए और उन्हें कोई तक्लीफ़ भी नहीं हुई।

﴾18﴿ ह़राम ग़िज़ाओं से मह़फ़ूज़

बहुत से औलियाए किराम की येह करामत मश्हूर है कि ह़राम ग़िज़ाओं से वोह एक ख़ास क़िस्म की बद बू मह़सूस करते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते शैख़ ह़ारिष मुह़ासबी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सामने जब भी कोई ह़राम ग़िज़ा लाई जाती थी तो उन्हें उस ग़िज़ा से ऐसी ना गवार बदबू मह़सूस होती थी कि वोह उस को हाथ नहीं लगा सकते थे और येह भी मन्क़ूल है कि ह़राम ग़िज़ा को देखते ही उन की एक रग फड़कने लगती थी।

---

1 ......حجة اللّٰہ علی العالمین، الخاتمة فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ،المطلب الثانی فی انواع الکرامات،ص۶۰۹

2 ......حجة اللّٰہ علی العالمین، الخاتمة فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ،المطلب الثانی فی انواع الکرامات،ص۶۰۹ ملتقطاً

चुनान्चे, मन्क़ूल है कि ह़ज़रते शैख़ अबुल अ़ब्बास मरसी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सामने लोगों ने इम्तिह़ान के त़ौर पर ह़राम खाना रख दिया तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : अगर ह़राम ग़िज़ा को देख कर ह़ारिष मुह़ासबी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की एक रग फड़कने लगती थी तो मेरा येह ह़ाल है कि ह़राम ग़िज़ा के सामने मेरी सत्तर रगें फड़कने लगती हैं।(1) (حجۃ اللہ، ج۲،ص۸۵۷)

﴾19﴿ दूर की चीज़ों को देख लेना

चुनान्चे, शैख़ अबू इस्ह़ाक़ शीराज़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की येह मश्हूर करामत है कि वोह बग़दाद शरीफ़ में बैठे हुवे का'बए मुकर्रमा को देखा करते थे। (حجۃ اللہ، ج۲،ص۸۵۷)

﴾20﴿ हैबत व दब-दबा

बा'ज़ औलियाए किराम से इस करामत का सुदूर इस त़ौर से हुवा कि इन की सूरत देख कर बा'ज़ लोगों पर इस क़दर ख़ौफ़ व हिरास त़ारी हुवा कि उन का दम निकल गया, चुनान्चे, ह़ज़रते ख़्वाजा बा यज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की हैबत से उन की मजलिस में एक शख़्स मर गया।(2) (حجۃ اللہ، ج۲،ص۸۵۷)

﴾21﴿ मुख़्तलिफ़ सूरतों में ज़ाहिर होना

इस करामत को सूफ़ियाए किराम की इस्त़िलाह़ में "ख़ुल्अ़ व लिबस" कहते हैं, या'नी एक शक्ल को छोड़ कर दूसरी शक्ल में ज़ाहिर हो जाना। ह़ज़राते सूफ़िया का क़ौल है कि आ़लमे अरवाह़ और आ़लमे अजसाम के दरमियान एक तीसरा आ़लम भी है जिस को आ़लमे मिषाल कहते हैं। इस आ़लमे मिषाल में एक ही शख़्स की

---

1 ......حجۃ اللّٰہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ،المطلب الثانی فی انواع الکرامات،ص ۶۱۰

2 ......حجۃ اللّٰہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ،المطلب الثانی فی انواع الکرامات،ص ۶۱۰

रूह मुख़्तलिफ़ जिस्मों में ज़ाहिर हो जाया करती है। चुनान्चे, इन लोगों ने कुरआने मजीद की आयते करीमा (1) فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ۝ से इस्तिदलाल किया है कि हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते बीबी मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا के सामने एक तन्दुरुस्त जवान आदमी की सूरत में ज़ाहिर हो गए थे। येह वाक़िआ़ आ़लमे मिषाल में हुवा था।

येह करामत बहुत से औलिया ने दिखाई है, चुनान्चे, हज़रते क़ज़ीबुल्लबान मौसिली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه जिन का औलिया के तृबक़ए अब्दाल में शुमार होता है, किसी ने आप पर येह तोहमत लगाई कि आप नमाज़ नहीं पढ़ते। येह सुन कर आप जलाल में आ गए और फ़ौरन ही अपने आप को उस के सामने चन्द सूरतों में ज़ाहिर किया और पूछा कि बता तू ने किस सूरत में मुझ को तर्के नमाज़ करते हुवे देखा।(2) (حجۃ اللہ ج۲،ص۸۵۸)

इसी तरह मन्क़ूल है कि हज़रते मौलाना या'क़ूब चरख़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه जो मशाइख़े नक़्शबन्दिय्या में बहुत ही मुमताज़ बुज़ुर्ग हैं। जब हज़रते ख़्वाजा उ़बैदुल्लाह अह़रार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इन की ख़िदमत में बैअ़त के लिये हाज़िर हुवे तो हज़रते ख़्वाजा मौलाना या'क़ूब चरख़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के चेहरए अक़्दस पर उन को दाग़ धब्बे नज़र आए जिस से उन के दिल में कुछ कराहत पैदा हुई तो अचानक आप उन के सामने एक ऐसी नूरानी शक्ल में ज़ाहिर हो गए कि बे इख़्तियार हज़रते ख़्वाजा उ़बैदुल्लाह अह़रार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का दिल इन की तरफ़ माइल हो गया और वोह फ़ौरन ही बैअ़त हो गए।(3) (रिशहातुल उ़यून)

1.... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह उस के सामने एक तन्दुरुस्त आदमी के रूप में ज़ाहिर हुवा। (پ۱۶،مریم:۱۷)

2.... حجۃ اللہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ،المطلب الثانی فی انواع الکرامات،ص۶۱۰ملخصاً

3.... نفحات الانس(مترجم)،ص۴۲۷

﴾22﴿ दुश्मनों के शर से बचना

ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने बा'ज़ औलियाए किराम को येह करामत भी अ़ता फ़रमाई है कि ज़ालिम उमरा व सलातीन ने जब इन के क़त्ल या ईज़ा रसानी का इरादा किया तो ग़ैब से ऐसे अस्बाब पैदा हो गए कि वोह उन के शर से मह़फ़ूज़ रहे। जैसा कि ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को ख़लीफ़ए बग़दाद हारून रशीद ने ईज़ा रसानी के ख़याल से दरबार में त़लब किया मगर जब वोह सामने गए तो ख़लीफ़ा ख़ुद ऐसी परेशानियों में मुब्तला हो गया कि उन का कुछ न बिगाड़ सका।[1] (حجۃ اللّٰہ ج۲،ص۸۵۸)

﴾23﴿ ज़मीन के ख़ज़ानों को देख लेना

बा'ज़ औलियाए किराम को येह करामत मिली है कि वोह ज़मीन के अन्दर छुपे हुवे ख़ज़ानों को देख लिया करते थे और इस को अपनी करामत से बाहर निकाल लेते थे। चुनान्चे, शैख़ अबू तुराब رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने एक ऐसे मक़ाम पर जहां पानी नायाब था ज़मीन पर एक ठोकर मार कर पानी का चश्मा जारी कर दिया।[2] (حجۃ اللّٰہ ج۲،ص۸۵۸)

﴾24﴿ मुश्किलात का आसान हो जाना

येह करामत बुज़ुर्गाने दीन से बार बार और बेशुमार मरतबा ज़ाहिर हो चुकी है जिस की सैंकड़ों मिषालें "तज़्किरतुल औलिया"[3] वग़ैरा मुस्तनद किताबों में मज़्कूर हैं।

---

1 ......حجة اللّٰه علی العالمین، الخاتمة فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ،المطلب الثانی فی انواع الکرامات،ص ۶۱۰ ملخصاً

2 ......حجة اللّٰه علی العالمین، الخاتمة فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ،المطلب الثانی فی انواع الکرامات،ص ۶۱۰ ملخصاً

3 ......کشف المحجوب، رسالہ قشیریہ، الابریز وغیرہ ۔ ۱۲ منہ

﴾25﴿ मोहलिकात का असर न करना

चुनान्चे, मश्हूर है कि एक बद बातिन बादशाह ने किसी खुदा रसीदा बुज़ुर्ग को गिरिफ़्तार किया और उन्हें मजबूर कर दिया कि वोह कोई तअज्जुब खैज़ करामत दिखाएं वरना उन्हें और उन के साथियों को क़त्ल कर दिया जाएगा।

आप ने ऊंट की मैंगनियों की तरफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि उन को उठा लाओ और देखो कि वोह क्या हैं? जब लोगों ने उन को उठा कर देखा तो वोह ख़ालिस सोने के टुकड़े थे। फिर आप ने एक ख़ाली प्याले को उठा कर घुमाया और औंधा कर के बादशाह को दिया तो वोह पानी से भरा हुवा था और औंधा होने के बा वुजूद उस में से एक क़तरा भी पानी नहीं गिरा।

येह दो करामतें देख कर येह बद अक़ीदा बादशाह कहने लगा कि येह सब नज़र बन्दी के जादू का करिश्मा है। फिर बादशाह ने आग जलाने का हुक्म दिया। जब आग के शो'ले बुलन्द हुवे तो बादशाह ने मजलिसे समाअ मुन्अक़िद कराई जब इन दुरवेशों को समाअ सुन कर जोशे वज्द में हाल आ गया तो येह सब लोग जलती हुई आग में दाख़िल हो कर रक़्स करने लगे। फिर एक दुरवेश बादशाह के बच्चे को गोद में ले कर आग में कूद पड़ा और थोड़ी देर तक बादशाह की नज़रों से ग़ाइब हो गया बादशाह अपने बच्चे के फ़िराक़ में बेचैन हो गया मगर फिर चन्द मिनटों में दुरवेश ने बादशाह के बच्चे को इस हाल में बादशाह की गोद में डाल दिया कि बच्चे के एक हाथ में सेब और दूसरे हाथ में अनार था। बादशाह ने पूछा कि बेटा! तुम कहा चले गए थे? तो उस ने कहा कि मैं एक बाग़ में था जहां से मैं येह फल लाया हूं।

येह देख कर भी ज़ालिम व बद अक़ीदा बादशाह का दिल नहीं पसीजा और उस ने उस बुज़ुर्ग को बार बार ज़हर का प्याला पिलाया

मगर हर मरतबा ज़हर के अषर से उस बुज़ुर्ग के कपड़े फटते रहे और उन की ज़ात पर ज़हर का कोई अषर नहीं हुवा।[1] (حجۃ اللہ ج۲،ص۸۵۸)

करामत की येह वोह पच्चीस क़िस्में हैं और इन की चन्द मिषालें हैं जिन को ह़ज़रते अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुबकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी किताब "त़बक़ात" में तह़रीर फ़रमाया है, वरना इस के इ़लावा करामत की बहुत सी क़िस्में हैं और इन की मिषालें इस क़दर ज़ियादा ता'दाद में हैं कि अगर इन को जम्अ़ किया जाए तो हज़ारों अवराक़ का एक ज़ख़ीम दफ़्तर तय्यार हो सकता है, मगर बत़ौरे मिषाल जिस क़दर हम ने यहां तह़रीर कर दिया वोह त़ालिबे ह़क़ की तस्कीने रूह़ व इत़्मीनाने क़ल्ब के लिये बहुत काफ़ी है। रह गए बद अ़क़ीदा मुन्किरीन तो इन की हिदायत के लिये दलाइल तो क्या ? दौरे रिसालत में इन के लिये मो'जिज़ए "**शक़्क़ुल क़मर**" भी सूदमन्द नहीं हुवा। मषल मश्हूर है कि।

फूल की पत्ती से कट सकता है हीरे का जिगर
मर्दे नादां पर कलामे नर्मो नाज़ुक बे अषर

सह़ाबी

जो मुसलमान ब हालते ईमान हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुलाक़ात से सरफ़राज़ हुवे और ईमान ही पर उन का ख़ातिमा हुवा उन खुश नसीब मुसलमानों को "**सह़ाबी**" कहते हैं। इन सह़ाबियों की ता'दाद एक लाख से ज़ियादा है। चुनान्चे, इमाम बैहक़ी की रिवायत है कि हुज्जतुल वदाअ़ में एक लाख चौदह हज़ार सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ह़ज के लिये मक्कए मुकर्रमा में जम्अ़ हुवे और बा'ज़ दूसरी रिवायात से पता चलता है कि हुज्जतुल वदाअ़ में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم की ता'दाद एक लाख चोबीस हज़ार थी। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ[2]

(زرقانی ج۳،ص۱۰۶ ومدارج ج۲،ص۳۸۷)

---

1 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ،المطلب الثانى فى انواع الكرامات،ص ۶۱۰-۶۱۱ ملخصاً

2 ......مدارج النبوت،ذكر حجة الوداع،ج ۲،ص ۳۸۷

अफ़्ज़लुल औलिया

तमाम उ़-लमाए उम्मत व अकाबिरे उम्मत का इस मस्अले पर इत्तिफ़ाक़ है कि सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم "अफ़्ज़लुल औलिया" हैं । या'नी क़ियामत तक के तमाम औलिया अगर्चे वोह दरजए विलायत की बुलन्द तरीन मन्ज़िल पर फ़ाइज़ हो जाएं मगर हरगिज़ हरगिज़ कभी भी वोह किसी सहाबी के कमालाते विलायत तक नहीं पहुंच सकते । ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शम्ए़ नबुव्वत के परवानों को मरतबए विलायत का वोह बुलन्दो बाला मक़ाम अ़ता फ़रमाया है और इन मुक़द्दस हस्तियों को ऐसी ऐसी अ़ज़ीमुश्शान करामतों से सरफ़राज़ फ़रमाया है कि दूसरे तमाम औलिया के लिये इस मे'राजे कमाल का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता । इस में शक नहीं कि ह़ज़राते सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم से इस क़दर ज़ियादा करामतों का सुदूर नहीं हुवा जिस क़दर कि दूसरे औलियाए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم से करामतें मन्क़ूल हैं लेकिन वाज़ेह रहे कि कषरते करामत अफ़्ज़लिय्यते विलायत की दलील नहीं क्यूंकि विलायत दर ह़क़ीक़त क़ुर्बे इलाही का नाम है । येह क़ुर्बे इलाही जिस को जिस क़दर ज़ियादा ह़ासिल होगा उसी क़दर उस की विलायत का दरजा बुलन्द से बुलन्द तर होगा । सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم चूंकि निगाहे नबुव्वत के अन्वार और फ़ैज़ाने रिसालत के फ़ुयूज़ो बरकात से मुस्तफ़ीज़ हैं इस लिये बारगाहे ख़ुदावन्दी में इन बुज़ुर्गों को जो क़ुर्ब व तक़र्रुब ह़ासिल है वोह दूसरे औलियाउल्लाह को ह़ासिल नहीं । इस लिये अगर्चे सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم से बहुत कम करामतें सादिर हुईं लेकिन फिर भी सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم का दरजए विलायत दूसरे औलियाए किराम से बहुत ज़ियादा अफ़्ज़ल व आ'ला और बुलन्दो बाला है ।

बहर हाल अगर्चे ता'दाद में कम सही लेकिन फिर भी बहुत से सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم से करामतों का सुदूर व ज़ुहूर हुवा है। चुनान्चे, हम अपनी इस मुख़्तसरसी किताब में बा'ज़ सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم की चन्द करामत का तज़्किरा तह़रीर करने की सआदत हासिल करते हैं ताकि अहले ईमान प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शम्ए नबुव्वत के इन परवानों की विलायत व करामत के ईमान अफ़्रोज़ तज़्किरों से अपनी दुन्याए दिल को मह़ब्बत व अ़क़ीदत के शजरातुल ख़ुल्द की जन्नत बनाएं और दुश्मनाने सहाबा या तो आफ़्ताबे रिसालत के नूर से चमकने वाले इन रोशन सितारों से हिदायत की रोशनी हासिल करें या फिर अपनी आतशे बुग़्ज़ो इनाद में जल भुन कर जहन्नम का ईंधन बन जाएं।

अ़शरए मुबश्शरा

यूं तो हुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने बहुत से सह़ाबियों رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم को मुख़्तलिफ़ अवक़ात में जन्नत की बिशारत दी और दुन्या ही में उन के जन्नती होने का ए'लान फ़रमा दिया मगर दस ऐसे जलीलुल क़द्र और ख़ुश नसीब सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم हैं जिन को आप ने मस्जिदे नबवी के मिम्बर शरीफ़ पर खड़े हो कर एक साथ इन का नाम ले कर जन्नती होने की ख़ुश ख़बरी सुनाई। तारीख़ में इन ख़ुश नसीबों का लक़ब "**अ़शरए मुबश्शरा**" है जिन की मुबारक फ़ेहरिस्त येह है :

﴾1﴿ हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ ﴾2﴿ हज़रते उमर फ़ारूक़
﴾3﴿ हज़रते उषमाने ग़नी ﴾4﴿ हज़रते अ़ली मुर्तज़ा
﴾5﴿ हज़रते त़लहा बिन उ़बैदुल्लाह ﴾6﴿ हज़रते जुबैर बिन अल अ़व्वाम
﴾7﴿ हज़रते अ़ब्दुरह़मान बिन औ़फ़ ﴾8﴿ हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास
﴾9﴿ हज़रते सई़द बिन ज़ैद ﴾10﴿ हज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ (1) (رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) (ترمذی ج۲،ص۲۱۶،مناقب عبدالرحمٰن بن عوف)

हम सब से पहले इन दस जन्नती सह़ाबियों رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की चन्द करामतों का तज़्किरा तह़रीर करते हैं। इस के बा'द दूसरे सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ की करामतें भी तह़रीर की जाएंगी और अस्ह़ाबे किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ की करामतों के साथ साथ उन चन्द मुक़द्दस ख़वातीने इस्लाम की करामात भी पेश की जाएंगी जो शरफ़े सह़ाबिय्यत से सरफ़राज़ हो कर सारी दुन्या की मोमिनाते सालिह़ात में "सह़ाबिय्यात" رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُنَّ के मुअ़ज़्ज़ज़ ख़िताब के साथ मुमताज़ हैं ताकि अहले ईमान पर इस ह़क़ीक़त का आफ़्ताबे आ़लमे ताब तुलूअ़ हो जाए कि फ़ैज़ाने नबुव्वत के अन्वार व बरकात और आफ़्ताबे रिसालत की तजल्लिय्यात से सिर्फ़ मर्दों ही का त़बक़ा मुस्तफ़ीज़ व मुस्तनीर नहीं हुवा बल्कि सनफ़े नाज़ुक की पर्दा नशीन ख़वातीन पर भी आफ़्ताबे नबुव्वत की नूरानी शुआ़एं इस त़रह़ जलवा रेज़ हुई कि वोह भी मर्दों के दोश ब दोश मज़्हरे कमालात व साहि़बे करामात हो गईं। **अल्लाहु अक्बर** ! सच है कि

ज़ुल्मत को उन के नूर ने काफ़ूर कर दिया
जिस पर निगाह डाली उसे नूर कर दिया

---

(1)......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عبد الرحمن بن عوف بن عبد عوف الزہری رضی اللّٰہ عنہ، الحدیث:۳۷۶۸،ج۵، ص۴۱۶

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡم ط

करामाते सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم

सरकारे दो आ़लम से मुलाक़ात का आ़लम
आ़लम में है मे'राज कमालात का आ़लम
येह राज़ी ख़ुदा से हैं, ख़ुदा इन से है राज़ी
क्या कहिये ? सह़ाबा की करामात का आ़लम

﴾1﴿ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ

ख़लीफ़ए अव्वल जा नशीने पैग़म्बर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ का नामे नामी "अ़ब्दुल्लाह" और "अबू बक्र" आप की कुन्यत और "सिद्दीक़ व अ़तीक़" आप का लक़ब है। आप क़ुरैशी हैं और सातवीं पुश्त में आप का शजरए नसब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ानदानी शजरे से मिल जाता है। आ़मुल फ़ील के ढाई बरस बा'द मक्कए मुकर्रमा में पैदा हुवे। आप इस क़दर जामेउ़ल कमालात और मजमउ़ल फ़ज़ाइल हैं कि अम्बिया عَلَیۡھِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द तमाम अगले और पिछले इन्सानों में सब से अफ़्ज़लो आ'ला हैं। आज़ाद मर्दों में सब से पहले इस्लाम क़बूल किया और सफ़र व वत़न के तमाम मुशाहिद व इस्लामी जिहादों में मुजाहिदाना कारनामों के साथ शामिल हुवे और सुल्ह़ व जंग के तमाम फ़ैसलों में आप शहनशाहे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वज़ीर व मुशीर बन कर मराह़िले नबुव्वत के हर हर मोड़ पर आप के रफ़ीक़ व जां निषार रहे। दो बरस तीन माह ग्यारह दिन मसनदे ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़्रोज़ रह कर 22 जुमादल उख़रा सि. 13 हि. मंगल की रात वफ़ात पाई। ह़ज़रते

उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और रौज़ए मुनव्वरा में हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलूए मुक़द्दस में दफ़्न हुवे।[1]
(اکمال وتاریخ الخلفاء)

करामात

खाने में अ़ज़ीम बरकत

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का बयान है कि एक मरतबा ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत के तीन मेहमानों को अपने घर लाए और खुद हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो गए और गुफ़्तगू में मसरूफ़ रहे यहां तक कि रात का खाना आप ने दस्तरख़्वाने नबुव्वत पर खा लिया और बहुत ज़ियादा रात गुज़र जाने के बा'द मकान पर वापस तशरीफ़ लाए। इन की बीवी ने अ़र्ज़ किया कि आप अपने घर पर मेहमानों को बुला कर कहा ग़ाइब रहे? ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि क्या अब तक तुम ने मेहमानों को खाना नहीं खिलाया? बीवी साह़िबा ने कहा कि मैं ने खाना पेश किया मगर उन लोगों ने साह़िबे ख़ाना की ग़ैर मौजूदगी में खाना खाने से इन्कार कर दिया। येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने साह़िब ज़ादे ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर बहुत ज़ियादा ख़फ़ा हुवे और वोह ख़ौफ़ व दहशत की वजह से छुप गए और आप के सामने नहीं आए फिर जब आप का गुस्सा फ़ुरू हो गया तो आप मेहमानों के साथ खाने के लिये बैठ गए और सब मेहमानों ने खूब शिकम सैर हो कर खाना खा लिया। उन मेहमानों

1......الاکمال فی اسماء الرجال،حرف الباء،فصل فی الصحابۃ،ص۵۸۷ملتقطاً
وتاریخ الخلفاء،الخلفاء الراشدون ،ابو بکر الصدیق، فصل فی انہ افضل...الخ،ص۳۴
وفصل فی مرضہ...الخ،ص۶۲

का बयान है कि जब हम खाने के बरतन में से लुक़्मा उठाते थे तो जितना खाना हाथ में आता था उस से कहीं ज़ियादा खाना बरतन में नीचे से उभर कर बढ़ जाता था और जब हम खाने से फ़ारिग़ हुवे तो खाना बजाए कम होने के बरतन में पहले से ज़ियादा हो गया। हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुतअ़ज्जिब हो कर अपनी बीवी साहिबा से फ़रमाया कि येह क्या मुआ़मला है कि बरतन में खाना पहले से कुछ ज़ाइद नज़र आता है। बीवी साहिबा ने क़सम खा कर कहा : वाक़ेई येह खाना तो पहले से तीन गुना बढ़ गया है ! फिर आप इस खाने को उठा कर बारगाहे रिसालत में ले गए। जब सुब्ह हुई तो नागहां मेहमानों का एक क़ाफ़िला दरबारे रिसालत में उतरा जिस में बारह क़बीलों के बारह सरदार थे और हर सरदार के साथ बहुत से दूसरे शुतर सुवार भी थे। इन सब लोगों ने येही खाना खाया और क़ाफ़िले के तमाम सरदार और तमाम मेहमानों का गुरौह इस खाने को शिकम सैर खा कर आसूदा हो गया लेकिन फिर भी इस बरतन में खाना ख़त्म नहीं हुवा।[1] (بخاری شریف ج۱،ص۵۰۶ مختصراً)

शिकमे मादर में क्या है ?

हज़रते उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रावी हैं कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने मरज़े वफ़ात में अपनी साहिब ज़ादी उम्मुल मोअमिनीन हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को वसिय्यत फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि मेरी प्यारी बेटी ! आज तक मेरे पास जो मेरा माल था वोह आज वारिषों का माल हो चुका है और मेरी अवलाद में तुम्हारे दोनों भाई

1 ......صحیح البخاری، کتاب المنا قب،باب علامات النبوۃ فی الاسلام، الحدیث: ۳۵۸۱، ج۲، ص۴۹۵ بـالاختـصار وحجۃ اللّٰہ علی العالمین، الخا تمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء ... الخ ، المطلب الثالث فی ذکر جملۃ جمیلۃ ...الخ ، ص۶۱۱

अ़ब्दुर्रह़मान व मुह़म्मद और तुम्हारी दोनों बहनें हैं लिहाज़ा तुम लोग मेरे माल को क़ुरआने मजीद के हुक्म के मुत़ाबिक़ तक़्सीम कर के अपना अपना ह़िस्सा ले लेना। येह सुन कर ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया कि अब्बाजान ! मेरी तो एक ही बहन ''बीबी अस्मा'' हैं। येह मेरी दूसरी बहन कौन है ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि मेरी बीवी ''बिन्ते ख़ारिजा'' जो ह़ामिला है उस के शिकम में लड़की है वोह तुम्हारी दूसरी बहन है। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि लड़की पैदा हुई जिन का नाम ''उम्मे कुलषूम'' रखा गया।(1) (تاریخ الخلفاء،ص۵۷)

इस ह़दीष के बारे में ह़ज़रते अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुबकी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तह़रीर फ़रमाया कि इस ह़दीष से अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दो करामतें षाबित होती हैं।

अव्वल : येह कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ब्ले वफ़ात येह इ़ल्म हो गया था कि मैं इसी मरज़ में दुन्या से रिह़लत करूंगा इस लिये ब वक़्ते वसिय्यत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह फ़रमाया कि ''मेरा माल आज मेरे वारिषों का माल हो चुका है।''

दुवुम : येह कि ह़ामिला के शिकम में लड़का है या लड़की और ज़ाहिर है कि इन दोनों बातों का इ़ल्म यक़ीनन ग़ैब का इ़ल्म है जो बिला शुबा व बिल यक़ीन पैग़म्बर के जानशीन ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दो अ़ज़ीमुश्शान करामतें हैं।(2) (ازالۃ الخفاء،مقصد۲،ص۲۱وحجۃ اللّٰہ ج۲،ص۸۶۰)

---

1 ......تاریخ الخلفاء، الخلفاء الراشدون، ابو بکر الصدیق، فصل فی مرضہ...الخ، ص ٦٣
وحجة اللّٰہ علی العالمین، الخاتمة فی اثبات کرامات الاولیاء ...الخ، المطلب الثالث
فی ذکر جملة جمیلة ...الخ ، ص ٦١١

2 ......حجة اللّٰہ علی العالمین، الخاتمة فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ، المطلب الثالث
فی ذکر جملة جمیلة...الخ،ص ٦١٢

ज़रूरी इन्तिबाह

हदीषे मज़्कूरा बाला और अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुबकी رَحۡمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ की तक़रीर से मा'लूम हुवा कि مَا فِی الۡاَرۡحَام (जो कुछ मां के पेट में है उस) का इ़ल्म ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को ह़ासिल हो गया था। लिहाज़ा येह बात ज़ेह्न नशीन कर लेनी चाहिये कि कुरआने मजीद की सूरए लुक़्मान में जो يَعۡلَمُ مَا فِی الۡاَرۡحَام(1) आया है या'नी ख़ुदा के सिवा कोई इस बात को नहीं जानता कि मां के पेट में क्या है? इस आयत का येह मत़लब है कि बिग़ैर ख़ुदा के बताए हुवे कोई अपनी अ़क़्लो फ़हम से नहीं जान सकता कि मां के पेट में क्या है? लेकिन ख़ुदावन्दे तआ़ला के बता देने से दूसरों को भी इस का इ़ल्म हो जाता है। चुनान्चे, ह़ज़राते अम्बिया عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام वह़्य के ज़रीए और औलियाए उम्मत कश्फ़ व करामत के त़ौर पर ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस के बता देने से येह जान लेते हैं कि मां के शिकम में लड़का है या लड़की? मगर **अल्लाह** तआ़ला का इ़ल्म ज़ाती, अज़ली व अबदी और क़दीम है और अम्बिया عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام व औलिया رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِم का इ़ल्म अ़त़ाई व फ़ानी और ह़ादिष है। **अल्लाहु अक्बर**! कहां ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस का इ़ल्म और कहां बन्दों का इ़ल्म? दोनों में बे इन्तिहा फ़र्क़ है।

निगाहे करामत

हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ह़सरत आयात के बा'द जो क़बाइले अ़रब मुर्तद हो कर इस्लाम से फिर गए थे उन में क़बीलए कन्दा भी था। चुनान्चे, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इस क़बीले वालों से भी जिहाद फ़रमाया और मुजाहिदीने इस्लाम ने इस क़बीले के सरदारे आ'ज़म या'नी अशअ़ष बिन क़ैस को गिरिफ़्तार कर लिया और लोहे की ज़न्जीरों में जकड़ कर इस को दरबारे ख़िलाफ़त में पेश किया।

1...तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जानता है जो कुछ माओं के पेट में है। (پ ۲۱،لقمٰن:۳٤)

अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने आते ही अशअ़स बिन क़ैस ने ब आवाज़े बुलन्द अपने जुर्मे इर्तिदाद का इक़रार कर लिया और फिर फ़ौरन ही तौबा कर के सिद्क़ दिल से इस्लाम क़बूल कर लिया। अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खुश हो कर इस का क़ुसूर मुआ़फ़ कर दिया और अपनी बहन ह़ज़रते "उम्मे फ़रूह" رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इस का निकाह़ कर के इस को अपनी क़िस्म क़िस्म की इनायतों और नवाज़िशों से सरफ़राज़ कर दिया। तमाम ह़ाज़िरीने दरबार ह़ैरान रह गए कि मुर्तदीन का सरदार जिस ने मुर्तद हो कर अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बग़ावत और जंग की और बहुत से मुजाहिदीने इस्लाम का ख़ूने नाह़क़ किया। ऐसे ख़ूं-ख़्वार बाग़ी और इतने बड़े ख़त़रनाक मुजरिम को अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस क़दर क्यूं नवाज़ा ? लेकिन जब ह़ज़रते अशअ़स बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सादिक़ुल इस्लाम हो कर इ़राक़ के जिहादों में अपना सर हथेली पर रख कर ऐसे ऐसे मुजाहिदाना कारनामे अन्जाम दिये कि इ़राक़ की फ़त्ह़ का सहरा इन्हीं के सर रहा और फिर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में जंगे क़ादिसिय्या और क़ल्अ़ए मदाइन व जलूला व नहावन्द की लड़ाइयों में इन्हों ने सरफ़रोशी व जांबाज़ी के जो ह़ैरतनाक मनाज़िर पेश किये उन्हें देख कर सब को येह ए'तिराफ़ करना पड़ा कि वाक़ेई अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की निगाहे करामत ने ह़ज़रते अशअ़स बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ात में छुपे हुवे कमालात के जिन अनमोल जोहरों को बरसों पहले देख लिया था वोह किसी और को नज़र नहीं आए थे। यक़ीनन येह अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक बहुत बड़ी करामत है।(1)

(ازالۃ الخفاء، مقصد۲، ص۳۹)

1 ......ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء، مقصد دوم، اما مآثر جمیلۂ صدیق اکبر، ج۳، ص۱٤٥

इसी लिये मशहूर सहाबी हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आ़म तौ़र पर येह फ़रमाया करते थे कि मेरे इ़ल्म में तीन हस्तियां ऐसी गुज़री हैं जो फ़िरासत के बुलन्द तरीन मक़ाम पर पहुंची हुई थीं।

अव्वल : अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कि इन की निगाहे करामत की नूरी फ़िरासत ने हज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के कमालात को ताड़ लिया और आप ने हज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने बा'द ख़िलाफ़त के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया जिस को तमाम दुन्या के मुअर्रिख़ीन और दानिश्वरों ने बेहतरीन क़रार दिया।

दुवुम : हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बीवी हज़रते सफ़ूरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا कि इन्हों ने हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रोशन मुस्तक़्बिल को अपनी फ़िरासत से भांप लिया और अपने वालिद हज़रते शोऐ़ब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ किया कि आप इस जवान को बतौ़रे अजीर के अपने घर पर रख लें। जब कि इन्तिहाई कस्म पुर्सी के आ़लम में फ़िरऔ़न के ज़ुल्म से बचने के लिये हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये हिजरत कर के मिस्र से "मदयन" पहुंच गए थे। चुनान्चे, हज़रते शोऐ़ब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इन को अपने घर पर रख लिया और इन की ख़ूबियों को देख कर और इन के कमालात से मुतअष्षिर हो कर अपनी साहिबज़ादी हज़रते बीबी सफ़ूरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन से निकाह़ कर दिया और इस के बा'द ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को नबुव्वत व रिसालत के शरफ़ से सरफ़राज़ फ़रमा दिया।

सिवुम : अ़ज़ीज़े मिस्र कि इन्हों ने अपनी बीवी हज़रते ज़ुलैख़ा को हुक्म दिया कि अगर्चे हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हमारे ज़र ख़रीद ग़ुलाम बन कर हमारे घर में आए हैं मगर ख़बरदार ! तुम इन के ए'ज़ाज़ व इकराम का ख़ास तौ़र पर एहतिमाम व इन्तिज़ाम

रखना क्यूंकि अज़ीज़े मिस्र ने अपनी निगाहे फ़िरासत से हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के शानदार मुस्तक़्बिल को समझ लिया था कि गोया आज ग़ुलाम हैं मगर येह एक दिन मिस्र के बादशाह होंगे।(1)

(تاریخ الخلفاء،ص۵۷وازالۃ الخفاء مقصد۲،ص۳۳)

कलिमए तय्यिबा से क़ल्आ मिसमार

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में क़ैसरे रूम से जंग के लिये मुजाहिदीने इस्लाम की एक फ़ौज रवाना फ़रमाई और हज़रते अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस फ़ौज का सिपह सालार मुक़र्रर फ़रमाया। येह इस्लामी फ़ौज क़ैसरे रूम की लश्करी ताक़त के मुक़ाबले में सफ़र के बराबर थी मगर जब इस फ़ौज ने रूमी क़ल्ए का मुहासरा किया और لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ का ना'रा मारा तो कलिमए तय्यिबा की आवाज़ से क़ैसरे रूम के क़ल्ए में ऐसा ज़लज़ला आ गया कि पूरा क़ल्आ मिसमार हो कर इस की ईंट से ईंट बज गई और दम ज़दन में क़ल्आ फ़त्ह हो गया। बिला शुबा येह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहुत ही शानदार करामत है क्यूंकि आप ने अपने दस्ते मुबारक से झन्डा बांध कर और फ़त्ह की बिशारत दे कर इस फ़ौज को जिहाद के लिये रवाना फ़रमाया था।(2) (ازالۃ الخفاء،مقصد۲،ص۴۰)

ख़ून में पेशाब करने वाला

एक शख़्स ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया कि ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मैं ने येह ख़्वाब देखा है कि मैं ख़ून में पेशाब कर रहा हूं। आप ने इन्तिहाई ग़ैज़ो ग़ज़ब और जलाल में तड़प कर फ़रमाया कि तू अपनी बीवी से हैज़ की हालत में सोहबत करता है लिहाज़ा इस गुनाह से तौबा कर और ख़बरदार ! आइन्दा हरगिज़ हरगिज़ कभी भी ऐसा मत

1 ......ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء،مقصد دوم،اما مآثر جمیلۃ صدیق اکبر،ج۳،ص۱۲۱

2 ......ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء،مقصد دوم،اما مآثر جمیلۃ صدیق اکبر،ج۳،ص۱٤۸

करना। वोह शख़्स इस अपने छुपे हुवे गुनाह पर नादिम व शर्मिन्दा हो कर हमेशा हमेशा के लिये ताइब हो गया।(1) (تاریخ الخلفاء،ص ۷۲)

सलाम से दरवाज़ा खुल गया

जब हज़रते अमीरुल मोअमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मुक़द्दस जनाज़ा ले कर लोग हुजरए मुनव्वरा के पास पहुंचे तो लोगों ने अ़र्ज़ किया कि اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ ھٰذَا اَبُوْ بَکْرٍ येह अ़र्ज़ करते ही रौज़ए मुनव्वरा का बन्द दरवाज़ा यक दम ख़ुद ब ख़ुद खुल गया और तमाम हाज़िरीन ने क़ब्रे अन्वर से येह ग़ैबी आवाज़ सुनी : اُدْخِلُوا الْحَبِیْبَ اِلَی الْحَبِیْبِ (या'नी हबीब को हबीब के दरबार में दाख़िल कर दो)(2) (तफ़्सीरे कबीर, जि.5 स. 478)

कश्फ़े मुस्तक़्बिल

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी वफ़ाते अक़्दस से सिर्फ़ चन्द दिन पहले रूमियों से जंग के लिये एक लश्कर की रवानगी का हुक्म फ़रमाया और अपनी अ़लालत ही के दौरान अपने दस्ते मुबारक से जंग का झन्डा बांधा और हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के हाथ में येह निशाने इस्लाम दे कर उन्हें इस लश्कर का सिपह सालार बनाया। अभी येह लश्कर मक़ामे "जरफ़" में ख़ैमा ज़न था और अ़साकिरे इस्लामिय्या का इजतिमाअ़ हो ही रहा था कि विसाल की ख़बर फैल गई और येह लश्कर मक़ामे "जरफ़" से मदीनए मुनव्वरा वापस आ गया। विसाल के बा'द ही बहुत से क़बाइले अ़रब मुर्तद और इस्लाम से मुन्हरिफ़ हो कर काफ़िर हो गए नीज़ मुसैलिमतुल कज़्ज़ाब ने अपनी नबुव्वत का दा'वा कर के क़बाइले अ़रब में इर्तिदाद की आग भड़का दी और बहुत से क़बाइल मुर्तद हो गए।

इस इन्तिशार के दौर में अमीरुल मोअमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तख़्ते ख़िलाफ़त पर क़दम रखते ही सब से

1 ......تاریخ الخلفاء،الخلفاء الراشدون،ابوبکرالصدیق، فصل فیما ورد...الخ ، ص ۸۳

2 ......التفسیر الکبیر للرازی ، سورۃ الکھف ، تحت الآیۃ : ۹-۱۲، ج۷ ، ص ۴۳۳

पहले येह हुक्म फ़रमाया कि "जैशे उसामा" या'नी इस्लाम का वोह लश्कर जिस को हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते उसामा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की ज़ेरे क़ियादत रवाना फ़रमाया और वोह वापस आ गया है दोबारा इस को जिहाद के लिये रवाना किया जाए। हज़राते सहाबए किराम बारगाहे ख़िलाफ़त के इस ए'लान से इन्तिहाई मुतवह्हिश हो गए और किसी त़रह़ भी येह मुआमला इन की समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसी ख़त़रनाक सूरते ह़ाल में जब कि बहुत से क़बाइल इस्लाम से मुन्ह़रिफ़ हो कर मदीनए मुनव्वरा पर ह़म्लों की तय्यारियां कर रहे हैं और झूटे मुद्दइय्याने नबुव्वत ने जज़ीरतुल अ़रब में लूटमार और बग़ावत की आग भड़का रखी है। इतनी बड़ी इस्लामी फ़ौज का जिस में बड़े बड़े नामवर और जंग आज़मा सहाबए किराम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم मौजूद हैं मुल्क से बाहर भेज देना और मदीनए मुनव्वरा को बिलकुल अ़साकिरे इस्लामिय्या से ख़ाली छोड़ कर ख़त़रात मोल लेना किसी त़रह़ भी अ़क़्ले सलीम के नज़दीक क़ाबिले क़बूल नहीं हो सकता। चुनान्चे, सहाबए किराम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم की एक मुन्तख़ब जमाअ़त जिस के एक फ़र्द हज़रते उ़मर बिन अल ख़त्ताब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه भी हैं, बारगाहे ख़िलाफ़त में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया कि ऐ जानशीने पैग़म्बर ! ऐसे मख़्दूश और पुर ख़त़र माह़ोल में जब कि मदीनए मुनव्वरा के चारों त़रफ़ मुर्तदीन ने शोरिश फैला रखी है यहां तक कि मदीनए मुनव्वरा पर ह़म्ले के ख़त़रात दरपेश हैं। आप हज़रते उसामा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के लश्कर को रवानगी से रोक दें ताकि इस फ़ौज की मदद से मुर्तदीन का मुक़ाबला किया जाए और इन का क़त्अ़ क़म्अ़ कर दिया जाए।

येह सुन कर आप ने जोशे ग़ज़ब में तड़प कर फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम ! मुझे परन्दे उचक ले जाएं येह मुझे गवारा है लेकिन मैं उस फ़ौज को रवानगी से रोक दूं जिस को अपने दस्ते मुबारक से झन्डा बांध कर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रवाना फ़रमाया

था येह हरगिज़ हरगिज़ किसी हाल में भी मेरे नज़्दीक क़ाबिले क़बूल नहीं हो सकता मैं इस लश्कर को ज़रूर रवाना करूंगा और इस में एक दिन की भी ताख़ीर बरदाश्त नहीं करूंगा। चुनान्चे, आप ने तमाम सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के मन्अ़ करने के बा वुजूद इस लश्कर को रवाना कर दिया। ख़ुदा की शान कि जब जोशे जिहाद में भरा हुवा अ़साकिरे इस्लामिय्या का समन्दर मौजें मारता हुवा रवाना हुवा तो अत्राफ़ व जवानिब के तमाम क़बाइल में शौकते इस्लाम का सिक्का बैठ गया और मुर्तद हो जाने वाले क़बाइल या वोह क़बीले जो मुर्तद होने का इरादा रखते थे, मुसलमानों का येह दल बादल लश्कर देख कर ख़ौफ़ व दहशत से लरज़ा बर अन्दाम हो गए और कहने लगे कि अगर ख़लीफ़ए वक़्त के पास बहुत बड़ी फ़ौज रेज़ रू मौजूद न होती तो वोह भला इतना बड़ा लश्कर मुल्क के बाहर किस त़रह भेज सकते थे ? इस ख़याल के आते ही उन जंग जू क़बाइल ने जिन्हों ने मुर्तद हो कर मदीनए मुनव्वरा पर ह़म्ला करने का प्लान बनाया था ख़ौफ़ व दहशत से सहम कर अपना प्रोग्राम ख़त्म कर दिया बल्कि बहुत से फिर ताइब हो कर आग़ोशे इस्लाम में आ गए और मदीनए मुनव्वरा मुर्तदीन के ह़म्लों से मह़फ़ूज़ रहा और ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का लश्कर मक़ामे ‘‘उबनी’’ में पहुंच कर रूमियों के लश्कर से मसरूफ़े पैकार हो गया और वहां बहुत ही ख़ूं रेज़ जंग के बा'द लश्करे इस्लाम फ़त्ह़याब हो गया और ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बे शुमार माले ग़नीमत ले कर चालीस दिन के बा'द फ़ातिह़ाना शानो शौकत के साथ मदीनए मुनव्वरा वापस तशरीफ़ लाए और अब तमाम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم अन्सार व मुहाजिरीन पर इस राज़ का इन्किशाफ़ हो गया कि ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लश्कर को रवाना करना ऐन मस्लेह़त के मुत़ाबिक़ था क्यूंकि इस लश्कर ने एक त़रफ़ तो

रूमियों की अस्करी ताक़त को तहस नहस कर दिया और दूसरी तरफ़ मुर्तदीन के हौस्लों को भी पस्त कर दिया।[1]

येह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक अज़ीम करामत है कि मुस्तक़्बिल में पेश आने वाले वाक़िआत आप पर क़ब्ल अज़ वक़्त मुन्कशिफ़ हो गए और आप ने इस फ़ौज कशी के मुबारक इक़्दाम को उस वक़्त अपनी निगाहे करामत से नतीजा ख़ेज़ देख लिया था जब कि वहां तक दूसरे सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم का वहमो गुमान भी नहीं पहुंच सकता था।

(تاریخ الخلفاء،ص۵۱ومدارج النبوۃ،ج۲،ص۴۰۹تا۴۱۱وغیرہ)

मदफ़न के बारे में ग़ैबी आवाज़

हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल के बा'द सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم में इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया कि आप को कहां दफ़्न किया जाए? बा'ज़ लोगों ने कहा कि इन को शुहदाए किराम के क़ब्रिस्तान में दफ़्न करना चाहिये और बा'ज़ हज़रात चाहते थे कि आप की क़ब्र शरीफ़ जन्नतुल बक़ीअ़ में बनाई जाए, लेकिन मेरी दिली ख़्वाहिश येही थी की आप मेरे इसी हुजरे में सिपुर्दे ख़ाक किये जाएं जिस में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुनव्वर है येह गुफ़्तगू हो रही थी कि अचानक मुझ पर नींद का ग़लबा हो गया और ख़्वाब में येह आवाज़ मैं ने सुनी कि कोई कहने वाला येह कह रहा है कि ضُمُّوا الْحَبِيْبَ اِلَى الْحَبِيْبِ (या'नी हबीब को हबीब से मिला दो) ख़्वाब से बेदार हो कर मैं ने लोगों से इस आवाज़ का ज़िक्र किया तो बहुत से लोगों ने कहा कि येह आवाज़ तो हम लोगों ने भी सुनी है और मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अन्दर बहुत से लोगों के कानों में येह आवाज़ आई है। इस के बा'द तमाम सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم का

[1] ......مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب یا زدھم و قصۂ مرض و وفات آنحضرت صلی اللّٰہ علیہ وسلم ، ج۲، ص۴۰۹ ، ۴۱۰ ملخصاً

इस बात पर इत्तिफ़ाक़ हो गया कि आप की क़ब्रे अत़हर रौज़ए मुनव्वरा के अन्दर बनाई जाए। इस त़रह़ आप हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पहलूए अक़्दस में मदफ़ून हो कर अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ुर्बे ख़ास से सरफ़राज़ हो गए।(1) (شواہد النبوۃ،ص۱۵۰)

दुश्मन ख़िन्ज़ीर व बन्दर बन गए

ह़ज़रते इमाम मुस्तग़फ़री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने षक़ात से नक़्ल किया है कि हम लोग तीन आदमी एक साथ यमन जा रहे थे। हमारा एक साथी जो कूफ़ी था वोह ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की शान में बद ज़बानी कर रहा था, हम लोग उस को बार बार मन्अ़ करते थे मगर वोह अपनी इस ह़रकत से बाज़ नहीं आता था, जब हम लोग यमन के क़रीब पहुंच गए और हम ने उस को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाया, तो वोह कहने लगा कि मैं ने अभी अभी येह ख़्वाब देखा है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे सिरहाने तशरीफ़ फ़रमा हुवे और मुझे फ़रमाया कि "ऐ फ़ासिक़ ! ख़ुदावन्दे तआ़ला ने तुझ को ज़लीलो ख़्वार फ़रमा दिया और तू इसी मन्ज़िल में मस्ख़ हो जाएगा।" इस के बा'द फ़ौरन ही उस के दोनों पाउं बन्दर जैसे हो गए और थोड़ी देर में उस की सूरत बिल्कुल ही बन्दर जैसी हो गई। हम लोगों ने नमाज़े फ़ज्र के बा'द उस को पकड़ कर ऊंट के पालान के ऊपर रस्सियों से जकड़ कर बांध दिया और वहां से रवाना हुवे। ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त जब हम एक जंगल में पहुंचे तो चन्द बन्दर वहां जम्अ़ थे। जब इस ने बन्दरों के ग़ोल को देखा तो रस्सी तोड़ कर येह ऊंट के पालान से कूद पड़ा और बन्दरों के ग़ोल में शामिल हो गया। हम लोग ह़ैरान हो कर थोड़ी देर वहां ठहर गए ताकि हम येह देख सकें कि बन्दरों का ग़ोल इस के साथ किस त़रह़ पेश आता है तो हम ने येह देखा कि येह बन्दरों के पास बैठा हुवा हम लोगों की त़रफ़ बड़ी ह़सरत से देखता था और इस की आंखों से आंसू

(1) شواهد النبوة، رکن سادس دربیان شواهد ودلایلی...الخ، ص ۲۰۰

जारी थे। घड़ी भर के बा'द जब सब बन्दर वहां से दूसरी त़रफ़ जाने लगे तो येह भी उन बन्दरों के साथ चला गया।(1) (شواہد النبوۃ،ص۱۵۳)

इसी त़रह ह़ज़रते इमाम मुस्तग़्फ़री رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक मर्दे सालेह़ से नक़्ल किया है कि कूफ़ा का एक शख़्स जो ह़ज़राते अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا को बुरा भला कहा करता था हर चन्द हम लोगों ने उस को मन्अ़ किया मगर वोह अपनी ज़िद पर अड़ा रहा, तंग आ कर हम लोगों ने उस को कह दिया कि तुम हमारे क़ाफ़िले से अलग हो कर सफ़र करो। चुनान्चे, वोह हम लोगों से अलग हो गया जब हम लोग मन्ज़िले मक़्सूद पर पहुंच गए और काम पूरा कर के वत़न की वापसी का क़स्द किया तो उस शख़्स का गुलाम हम लोगों से मिला, जब हम ने उस से कहा कि क्या तुम और तुम्हारा मौला हमारे क़ाफ़िले के साथ वतन जाने का इरादा रखते हो? येह सुन कर गुलाम ने कहा कि मेरे मौला का ह़ाल तो बहुत ही बुरा है, ज़रा आप लोग मेरे साथ चल कर उस का ह़ाल देख लीजिये!

गुलाम हम लोगों को साथ ले कर एक मकान में पहुंचा वोह शख़्स उदास हो कर हम लोगों से कहने लगा कि मुझ पर तो बहुत बड़ी इफ़्ताद पड़ गई। फिर उस ने अपनी आस्तीन से दोनों हाथों को निकाल कर दिखाया तो हम लोग येह देख कर ह़ैरान रह गए कि उस के दोनों हाथ ख़िन्ज़ीर के हाथों की त़रह़ हो गए थे। आख़िर हम लोगों ने उस पर तरस खा कर अपने क़ाफ़िले में शामिल कर लिया लेकिन दौराने सफ़र एक जगह चन्द ख़िन्ज़ीरों का एक झुंड नज़र आया और येह शख़्स बिल्कुल ही नागहां मस्ख़ हो कर आदमी से ख़िन्ज़ीर बन गया और ख़िन्ज़ीरों के साथ मिल कर दौड़ने भागने लगा मजबूरन हम लोग उस के गुलाम और सामान को अपने साथ कूफ़ा तक लाए।(2) (شواہد النبوۃ،ص۱۵۴)

---

1 ......شواهد النبوة، ركن سادس دربيان شواهد ودلايلى...الخ، ص٢٠٣

2 ......شواهد النبوة، ركن سادس دربيان شواهد ودلايلى...الخ، ص٢٠٤

शैख़ैन का दुश्मन कुत्ता बन गया

इसी त़रह़ ह़ज़रते इमाम मुस्तग़्फ़री رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक बुज़ुर्ग से नाक़िल है कि मैं ने मुल्के शाम में एक ऐसे इमाम के पीछे नमाज़ अदा की जिस ने नमाज़ के बा'द ह़ज़राते अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के ह़क़ में बद दुआ़ की। जब दूसरे साल मैं ने उसी मस्जिद में नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ के बा'द इमाम ने ह़ज़राते अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के ह़क़ में बेहतरीन दुआ़ मांगी, मैं ने मुसल्लियों से पूछा कि तुम्हारा पुराना इमाम का क्या हुवा ? तो लोगों ने कहा कि आप हमारे साथ चल कर उस को देख लीजिये ! मैं जब इन लोगों के साथ एक मकान में पहुंचा तो येह देख कर मुझ को बड़ी इ़ब्रत हुई कि एक कुत्ता बैठा हुवा है और उस के दोनों आंखों से आंसू जारी हैं। मैं ने उस से कहा कि तुम वोही इमाम हो जो ह़ज़राते शैख़ैन के लिये बद दुआ़ किया करता था ? तो उस ने सर हिला कर जवाब दिया कि हां ! (1) (شواہد النبوۃ، ص۱۵۶)

अल्लाहु अक्बर ! سُبْحٰنَ اللّٰہ क्या अ़ज़ीमुश्शान है शान सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की ! बिल ख़ुसूस यारे ग़ारे रसूल ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की। क्या ख़ूब कहा है किसी मद्दाह़े सह़ाबा ने

बीच में शम्अ़ थी और चारों त़रफ़ परवाने
हर कोई इस के लिये जान जलाने वाला
दा'वए उल्फ़ते अह़मद तो सभी करते हैं
कोई निकले तो ज़रा रंज उठाने वाला
काम उल्फ़त के थे वोह जिन को सह़ाबा ने किया
क्या नहीं याद तुम्हें "ग़ार" में जाने वाला

1 ......شواھد النبوۃ، رکن سادس دربیان شواھد ودلایلی...الخ، ۲۰۶

तबसेरा

किसी काम के अन्जाम और मुस्तक़्बिल के हालात को जान लेना, हर शख़्स जानता है कि यक़ीनन येह ग़ैब का इल्म है। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मज़्कूरा बाला करामात से रोज़े रोशन की तरह ज़ाहिर हो जाता है कि अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को **अल्लाह** तआला ने कश्फ़ व इल्हाम के तौर पर इन ग़ैबों का इल्म अता फ़रमा दिया था।

लिल्लाह ! इन्साफ़ कीजिये कि जब ख़लीफ़ए पैग़म्बर को **अल्लाह** तआला ने इल्हाम व कश्फ़ के ज़रीए इल्मे ग़ैब की करामत अता फ़रमाई तो क्या उस ने अपने पैग़म्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी मुक़द्दस वह्य के ज़रीए इल्मे ग़ैब का मो'जिज़ा न अता फ़रमाया होगा ? क्या مَعَاذَاللّٰہ **अल्लाह** तआला को इल्मे ग़ैब बताने की क़ुदरत नहीं ? या نَعُوْذُ بِاللّٰہ नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में इल्मे ग़ैब हासिल करने की सलाहिय्यत नहीं ? बताइये दुन्या में कौन ऐसा अहमक़ है जो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत और उस के नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सलाहिय्यत से इन्कार कर सकता है ? जब ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत मुसल्लम और नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सलाहिय्यत तस्लीम है तो फिर भला नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इल्मे ग़ैब का इन्कार किस तरह मुमकिन हो सकता है ?

मगर अफ़्सोस ! सद हज़ार अफ़्सोस ! कि वहाबी उ-लमा जो अज़्मते मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को घटाने के लिये लंगुर लंगोट कस कर बल्कि बरहना हो कर मैदान में उतर पड़े हैं येह सब कुछ जानते हुवे और सेंकड़ों आयाते बय्यिनात और दलाइल व शवाहिद को देखते हुवे भी आंख मीच कर हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इल्मे ग़ैब का चिल्ला चिल्ला कर इन्कार करते रहते हैं और अपने पैरूओं और हवा ख़्वाहों को इस दरजे गुमराह कर चुके हैं कि इन के

अ़वाम गुमराही की भूल भुलय्यों से निकल कर सिराते़ मुस्तक़ीम की शाहराह पर आने के लिये किसी त़रह़ तय्यार ही नहीं होते और मषल मश्हूर है कि सोते को जगाना बहुत आसान है मगर जागते को जगाना इन्तिहाई मुश्किल है। इस लिये अब हम इन लोगों की हिदायत से तक़रीबन मायूस हो चुके हैं क्यूंकि येह लोग जाहिल नहीं बल्कि मुतजाहिल हैं या'नी सब कुछ जानते हुवे भी जाहिल बने हुवे हैं और येह लोग त़ालिबे ह़क़ नहीं हैं बल्कि मआ़निद हैं, या'नी ह़क़ के ज़ाहिर होने के बा'द भी ह़क़ को क़बूल करने के लिये तय्यार नहीं हैं।

इस लिये हम अपने सुन्नी ह़नफ़ी भाइयों को येही मुख़्लिसाना मश्वरा बल्कि हुक्म देते हैं कि वोह नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ैब दां होने के अ़क़ीदे पर खु़द पहाड़ की त़रह़ मज़बूत़ी के साथ क़ाइम रहें और इन गुमराहों की तक़रीरों, तह़रीरों और सोह़बतों से बिल्कुल क़त़ई त़ौर पर परहेज़ करें क्यूंकि गुमराही के जराषीम बहुत जल्द अषर कर जाते हैं और हिदायत का नूर बड़ी मुश्किल और बेह़द जिद्दो जहद के बा'द मिलता है। खुदावन्दे करीम हमारे बरादराने अहले सुन्नत के ईमान व अ़क़ाइद की हि़फ़ाज़त फ़रमाए और तमाम गुमराहों, बद दीनों और बे दीनों के शर से बचाए रखे। (आमीन)

आख़िरुज़्ज़िक्र मज़्कूरा बाला तीन रिवायतों से ज़ाहिर है कि ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की मुक़द्दस शान में बद गोई और बद ज़बानी का अन्जाम कितना ख़त़रनाक व इ़ब्रतनाक है ! ज़मानए ह़ाल के तबराई रवाफ़िज़ के लिये येह रिवायात ताज़ियानए इ़ब्रत हैं कि वोह लोग अपनी तबरा बाज़ियों से बाज़ आ जाएं वरना हलाकतों और बरबादियों का सिग्नल डाऊन हो चुका है और क़रीब है कि अ़ज़ाबे इलाही की रेल गाड़ी इन ज़ालिमों को रौंद कर चूर चूर

कर डालेगी और ان شاء اللہ تعالٰی येह ख़ुबषा भी दोनों जहान की ला'नतों में गिरिफ़्तार हो कर दुन्या में मस्ख़ हो कर ख़िन्ज़ीर व बन्दर और कुत्ते बना दिये जाएंगे और आख़िरत में क़ह्‌रे क़ह्हार व ग़ज़बे जब्बार में गिरिफ़्तार हो कर अ़ज़ाबे नार पा कर ज़लीलो ख़्वार हो जाएंगे।

हज़राते अहले सुन्नत को लाज़िम है कि तमाम गुमराह फ़िर्क़ों की त़रह़ रवाफ़िज़ व ख़वारिज से भी इसी त़रह़ मुक़ात़आ़ रखें और इन से अलग थलग रहें क्यूंकि येह सब फ़िर्क़े जो शाने रिसालत व दरबारे सह़ाबिय्यत व बारगाहे अहले बैत में गुस्ताख़ियां करते हैं यक़ीनन बिला शुबा येह सब के सब जहन्नमी हैं और येह लोग जहां भी और जिस मजलिस में भी रहेंगे इन पर ख़ुदा की फिटकार पड़ती रहेगी और ज़ाहिर है कि जो इन के पास बैठेगा और इन से मेल जोल रखेगा इन पर उतरने वाली फिटकार से उस को भी ज़रूर कुछ न कुछ हिस्सा मिल जाएगा। लिहाज़ा ख़ैरिय्यत इसी में है कि आग से दूर ही रहिये वरना अगर जलने से बचेंगे तो कम अज़ कम इस की आंच से तो न बच सकेंगे। ख़ुदावन्दे करीम हज़राते अहले सुन्नत के ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाए। (आमीन)

﴾2﴿ हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ

ख़लीफ़ए दुवुम जा नशीने पैग़म्बर हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की कुन्यत "अबू ह़फ़्स" और लक़ब "फ़ारूक़े आ'ज़म" है। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ अशराफ़े क़ुरैश में अपनी ज़ाती व ख़ानदानी वजाहत के लिहाज़ से बहुत ही मुमताज़ हैं। आठवीं पुश्त में आप رضی اللہ تعالٰی عنہ का ख़ानदानी शजरा रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के शजरए नसब से मिलता है। आप वाक़िअ़ए फ़ील के तेरह बरस बा'द मक्कए मुकर्रमा में पैदा हुवे और ए'लाने

नबुव्वत के छटे साल सत्ताईस बरस की उ़म्र में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे, जब कि एक रिवायत में आप से पहले कुल उन्तालीस आदमी इस्लाम क़बूल कर चुके थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुसलमान हो जाने से मुसलमानों को बेहद ख़ुशी हुई और उन को एक बहुत बड़ा सहारा मिल गया यहां तक कि हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों की जमाअ़त के साथ ख़ानए का'बा की मस्जिद में ए'लानिया नमाज़ अदा फ़रमाई।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तमाम इस्लामी जंगो में मुजाहिदाना शान के साथ कुफ़्फ़ार से लड़ते रहे और पैग़म्बरे इस्लाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तमाम इस्लामी तह़रीकात और सुल्ह़ व जंग वग़ैरा तमाम मन्सूबा बन्दियों में हुज़ूर सुल्त़ाने मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वज़ीर व मुशीर की हैषिय्यत से वफ़ादार व रफ़ीक़े कार रहे।

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब फ़रमाया और दस बरस छे माह चार दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तख़्ते ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़्रोज़ हो कर जा नशीनिये रसूल की तमाम ज़िम्मेदारियों को ब हुस्ने वुजूह अन्जाम दिया। **26** ज़िल हिज्जा सि. **23** हि. चहार शम्बा के दिन नमाज़े फ़ज्र में अबू लूअलूह फ़ीरोज़ मजूसी काफ़िर ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को शिकम में ख़न्जर मारा और आप येह ज़ख़्म खा कर तीसरे दिन शरफ़े शहादत से सरफ़राज़ हो गए। ब वक़्ते वफ़ात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की उ़म्र शरीफ़ तिरसठ बरस की थी। ह़ज़रते सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और रौज़ए मुबारका के अन्दर ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पहलूए अन्वर में मदफ़ून हुवे।[1] (تاریخ الخلفاء وازالۃ الخفاء وغیرہ)

---

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال ، حرف العین ، فصل فی الصحابۃ ، ص ۶۰۲

करामात

क़ब्र वालों से गुफ़्तगू

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मरतबा एक नौजवान सालेह़ की क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि ऐ फ़ुलां ! अल्लाह तआ़ला ने वा'दा फ़रमाया है कि

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِۚ (1) *या'नी जो शख़्स अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डर गया उस के लिये दो जन्नतें हैं*

ऐ नौजवान ! बता तेरा क़ब्र में क्या ह़ाल है ? उस नौजवाने सालेह़ ने क़ब्र के अन्दर से आप का नाम ले कर पुकारा और ब आवाज़े बुलन्द दो मरतबा जवाब दिया कि मेरे रब ने येह दोनों जन्नतें मुझे अ़ता फ़रमा दी हैं ।(2) (حجۃ اللہ علی العالمین ج۲ص۸۶۰بحوالہ حاکم)

मदीने की आवाज़ निहावन्द तक

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सारियह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक लश्कर का सिपह सालार बना कर निहावन्द की सरज़मीन में जिहाद के लिये रवाना फ़रमा दिया । आप जिहाद में मसरूफ़ थे कि एक दिन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिदे नबवी के मिम्बर पर ख़ुत़बा पढ़ते हुवे नागहां येह इरशाद फ़रमाया कि يَاسَارِيَةُ الْجَبَلَ (या'नी ऐ सारियह ! पहाड़ की त़रफ़ अपनी पीठ कर लो) ह़ाज़िरीने मस्जिद ह़ैरान रह गए कि ह़ज़रते सारियह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो सर ज़मीने निहावन्द में मसरूफ़े जिहाद हैं और मदीनए मुनव्वरा से सेंकड़ों मील की दूरी पर हैं । आज अमीरुल मोअमिनीन ने इन्हें क्यूं कर और कैसे पुकारा ? लेकिन निहावन्द से जब ह़ज़रते सारियह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ासिद आया तो उस ने येह ख़बर दी कि मैदाने जंग में जब कुफ़्फ़ार से मुक़ाबला हुवा तो हम को शिकस्त होने लगी इतने में नागहां एक चीख़ने वाले की आवाज़ आई जो चिल्ला चिल्ला कर येह कह रहा था कि ऐ

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं । (پ۲۷،الرحمٰن:٤٦)

2....حجة اللّٰہ علی العالمین، الخاتمة فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملة جمیلة ...الخ، ص۶۱۲

सारियह ! तुम पहाड़ की त़रफ़ अपनी पीठ कर लो । ह़ज़रते सारियह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि येह तो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आवाज़ है, येह कहा और फ़ौरन ही उन्हों ने अपने लश्कर को पहाड़ की त़रफ़ पुश्त कर के सफ़बन्दी का हुक्म दिया और इस के बा'द जो हमारे लश्कर की कुफ़्फ़ार से टक्कर हुई तो एक दम अचानक जंग का पांसा ही पलट गया और दम ज़दन में इस्लामी लश्कर ने कुफ़्फ़ार की फ़ौजों को रौंद डाला और अ़साकिरे इस्लामिय्या के क़ाहिराना ह़म्लों की ताब न ला कर कुफ़्फ़ार का लश्कर मैदाने जंग छोड़ कर भाग निकला और अफ़्वाजे इस्लाम ने फ़त्ह़े मुबीन का परचम लहरा दिया ।(1) (مشکوۃ باب الکرامات، ص٥٤٦ وحجۃ اللہ ج٢، ص٨٦٠ وتاریخ الخلفاء، ص٨٥)

तबसेरा

ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस ह़दीषे करामत से चन्द बातें मा'लूम हुईं जो त़ालिबे ह़क़ के लिये रोशनी का मनारा हैं ।

﴾1﴿ येह कि ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप के सिपह सालार दोनों साह़िबे करामत हैं क्यूंकि मदीनए मुनव्वरा से सेंकड़ों मील की दूरी पर आवाज़ को पहुंचा देना येह अमीरुल मोअमिनीन की करामत है और सेंकड़ों मील की दूरी से किसी आवाज़ को सुन लेना येह ह़ज़रते सारियह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की करामत है ।

﴾2﴿ येह कि अमीरुल मोअमिनीन ने मदीनए त़य्यिबा से सेंकड़ों मील की दूरी पर निहावन्द के मैदाने जंग और इस के अह़वाल व कैफ़िय्यात को देख लिया और फिर अ़साकिरे इस्लामिय्या की मुश्किलात का ह़ल भी मिम्बर पर खड़े खड़े लश्कर के सिपह सालार को बता दिया ।

इस से मा'लूम हुवा कि औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم के कान और आंख और उन की सम्अ़ व बसर की त़ाक़तों को अ़ाम इन्सानों के कान व आंख और उन की कुव्वतों पर हरगिज़ हरगिज़ क़ियास

---

(1)......تاریخ الخلفاء، الخلفاء الراشدون، عمر الفاروق، فصل فی کراماته، ص ۹۹ ملتقطاً وحجة اللّٰه علی العالمین، الخاتمة فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملة جمیلة...الخ، ص ٦١٢ ملخصاً

नहीं करना चाहिये बल्कि येह ईमान रखना चाहिये कि अल्लाह तआ़ला ने अपने मह़बूब बन्दों के कान और आंख को आ़म इन्सानों से बहुत ही ज़ियादा त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई है और इन की आंखों, कानों और दूसरे आ'ज़ा की त़ाक़त इस क़दर बे मिष्ल और बे मिषाल है और उन से ऐसे ऐसे कारहाए नुमायां अन्जाम पाते हैं कि जिन को देख कर करामत के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

﴾3﴿ ह़दीषे मज़्कूरए बाला से येह भी षाबित होता है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हुकूमत हवा पर भी थी और हवा भी इन के कन्ट्रोल में थी इस लिये कि आवाज़ों को दूसरों के कानों तक पहुंचाना दर ह़क़ीक़त हवा का काम है कि हवा के तमूज ही से आवाज़ें लोगों के कानों के पर्दों से टकरा कर सुनाई दिया करती हैं। ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब चाहा अपने क़रीब वालों को अपनी आवाज़ सुना दी और जब चाहा तो सेंकड़ों मील दूर वालों को भी सुना दी, इस लिये कि हवा आप के ज़ेरे फ़रमान थी, जहां तक आप ने चाहा हवा से आवाज़ पहुंचाने का काम ले लिया।

سُبْحٰنَ اللّٰہ सच फ़रमाया हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कि مَنْ کَانَ لِلّٰہِ کَانَ اللّٰہُ لَہٗ(1) (या'नी जो खुदा का बन्दा फ़रमां बरदार बन जाता है तो खुदा उस का कारसाज़ व मददगार बन जाता है) इसी मज़्मून की त़रफ़ इशारा करते हुवे ह़ज़रते शैख़ सा'दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने क्या ख़ूब फ़रमाया है

تو ہم گردن از حکمِ داور مپیچ   کہ گردن نہ پیچد زِ حکم تو ہیچ

(या'नी तू खुदा के हुक्म से सरताबी न कर, ताकि तेरे हुक्म से दुन्या की कोई चीज़ रू गर्दानी न करे)

दरया के नाम ख़त़

रिवायत है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में एक मरतबा मिस्र का दरयाए नील खुश्क हो गया। मिस्री बाशिन्दों ने मिस्र के गवर्नर अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रयाद की और येह कहा कि मिस्र की तमाम तर पैदावार का दारोमदार इसी दरयाए नील के पानी पर है। ऐ अमीर !

(1)......تفسیر روح البیان،سورۃ لقمان،تحت الآیۃ:٤،ج٧،ص٦٤

अब तक हमारा येह दस्तूर रहा है कि जब कभी भी येह दरया सूख जाता था तो हम लोग एक ख़ूब सूरत कंवारी लड़की को इस दरया में ज़िन्दा दफ़्न कर के दरया की भेंट चढ़ाया करते थे तो येह दरया जारी हो जाया करता था अब हम क्या करें ? गवर्नर ने जवाब दिया कि अरह़मर्राह़िमीन और रह़मतुल्लिल आ़लमीन का रह़मत भरा दीन हमारा इस्लाम हरगिज़ हरगिज़ कभी भी इस बे रह़्मी और ज़ालिमाना फ़े'ल की इजाज़त नहीं दे सकता लिहाज़ा तुम लोग इन्तिज़ार करो मैं दरबारे ख़िलाफ़त में ख़त़ लिख कर दरयाफ़्त करता हूं वहां से जो हुक्म मिलेगा हम उस पर अ़मल करेंगे चुनान्चे, एक क़ासिद गवर्नर का ख़त़ ले कर मदीनए मुनव्वरा दरबारे ख़िलाफ़त में ह़ाज़िर हुवा अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने गवर्नर का ख़त़ पढ़ कर दरयाए नील के नाम एक ख़त़ तह़रीर फ़रमाया जिस का मज़्मून येह था कि "ऐ दरयाए नील ! अगर तू ख़ुद ब ख़ुद जारी हुवा करता था तो हम को तेरी कोई ज़रूरत नहीं है और अगर तू **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से जारी होता था तो फिर **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से जारी हो जा ।"

अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस ख़त़ को क़ासिद के ह़वाले फ़रमाया और हुक्म दिया कि मेरे इस ख़त़ को दरयाए नील में दफ़्न कर दिया जाए । चुनान्चे, आप के फ़रमान के मुत़ाबिक़ गवर्नरे मिस्र ने इस ख़त़ को दरयाए नील की ख़ुश्क रैत में दफ़्न कर दिया, ख़ुदा की शान कि जैसे ही अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़त़ दरया में दफ़्न किया गया फ़ौरन ही दरया जारी हो गया और इस के बा'द फिर कभी ख़ुश्क नहीं हुवा ।(1) (حجۃ اللہ ج۲،ص۸۶۱ وازالۃ الخفاء، مقصد۲،ص۱۶۶)

तबसेरा

इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि जिस त़रह़ हवा पर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हुकूमत थी इसी त़रह़ दरयाओं के पानियों पर भी आप की हुक्मरानी का परचम लहरा रहा था और दरयाओं की रवानी भी आप की फ़रमां बरदार व ख़िदमत गुज़ार थी ।

---

1 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة...الخ،ص ٦١٢ ملخصاً

चादर देख कर आग बुझ गई

रिवायत में है आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िलाफ़त के दौर में एक मरतबा नागहां एक पहाड़ के ग़ार से एक बहुत ही ख़तरनाक आग नुमूदार हुई जिस ने आस–पास की तमाम चीज़ों को जला कर राख का ढेर बना दिया, जब लोगों ने दरबारे ख़िलाफ़त में फ़रयाद की तो अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते तमीम दारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अपनी चादर मुबारक अ़त़ा फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि तुम मेरी येह चादर ले कर आग के पास चले जाओ। चुनान्चे, ह़ज़रते तमीम दारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उस मुक़द्दस चादर को ले कर रवाना हो गए और जैसे ही आग के क़रीब पहुंचे यका–यक वोह आग बुझने और पीछे हटने लगी यहां तक कि वोह ग़ार के अन्दर चली गई और जब येह चादर ले कर ग़ार के अन्दर दाख़िल हो गए तो वोह आग बिल्कुल ही बुझ गई और फिर कभी भी ज़ाहिर नहीं हुई।(1) (ازالۃ الخفاء،مقصد۲،ص۱۷۲)

तबसेरा

इस रिवायत से पता चलता है कि हवा और पानी की त़रह़ आग पर भी अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की हुक्मरानी थी और आग भी आप के ताबेए़ फ़रमान थी।

मार से ज़लज़ला ख़त्म

इमामुल ह़रमैन ने अपनी किताब "अश्शामिल" में तह़रीर फ़रमाया है कि एक मरतबा मदीनए मुनव्वरा में ज़लज़ला आ गया और ज़मीन ज़ोरों के साथ कांपने और हिलने लगी। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जलाल में भर कर ज़मीन पर एक दुर्रा मारा और बुलन्द आवाज़ से तड़प कर फ़रमाया قِرِّیْ اَلَمْ اَعْدِلْ عَلَيْكِ (ऐ ज़मीन ! साकिन हो जा क्या मैं ने तेरे ऊपर अ़द्ल नहीं किया है ?) आप का फ़रमाने जलालत निशान सुनते ही ज़मीन साकिन हो गई और ज़लज़ला ख़त्म हो गया।(2) (حجۃ اللہ ج۲،ص۸۶۱وازالۃ الخفاء،مقصد۲،ص۱۷۲)

---

1 ......حجة اللّٰه على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ،المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة...الخ،ص٦٢١ وازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، الفصل الرابع،ج٤،ص١٠٩

2 ......حجة اللّٰه على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة ...الخ،ص٦١٢

तबसेरा

इस रिवायत से येह षाबित होता है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हुकूमत जिस त़रह़ हवा, पानी और आग पर थी इसी त़रह़ ज़मीन पर भी आप के फ़रमाने शाही का सिक्का चलता था। मज़्कूरा बाला चारों करामतों से मा'लूम हुवा कि औलियाउल्लाह की हुकूमत हवा, आग, पानी और मिट्टी (ज़मीन) सभी पर है और चूंकि येह चारों अरबए़ अ़नासिर कहलाते हैं या'नी इन्हीं चारों से तमाम काइनाते आ़लम के मुरक्कबात बनाए गए हैं, तो जब इन चारों अ़नासिर पर औलियाए किराम की हुकूमत षाबित हो गई तो जो जो चीज़ें इन चारों अ़नासिर से मुरक्कब हुई हैं ज़ाहिर है कि इन पर बत़रीक़े ऊला औलियाए किराम की हुकूमत होगी।

दूर से पुकार का जवाब

हज़रते अमीरुल मोअमिनीन फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सर ज़मीने रूम में मुजाहिदीने इस्लाम का एक लश्कर भेजा। फिर कुछ दिनों के बा'द बिल्कुल ही अचानक मदीनए मुनव्वरा में निहायत ही बुलन्द आवाज़ से आप ने दो मरतबा येह फ़रमाया : يَالَبَّيْكَاهُ! يَالَبَّيْكَاهُ (या'नी ऐ शख़्स ! मैं तेरी पुकार पर ह़ाज़िर हूं) अहले मदीना ह़ैरान रह गए और इन की समझ में कुछ भी न आया कि अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किस फ़रयाद करने वाले की पुकार का जवाब दे रहे हैं ? लेकिन जब कुछ दिनों के बा'द वोह लश्कर मदीनए मुनव्वरा वापस आया और उस लश्कर का सिपह सालार अपनी फ़ुतूह़ात और अपने जंगी कारनामों का ज़िक्र करने लगा तो अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि इन बातों को छोड़ दो ! पहले येह बताओ कि जिस मुजाहिद को तुम ने ज़बरदस्ती दरया में उतारा था और उस ने يَا عُمَرَاهُ! يَاعُمَرَاهُ (ऐ मेरे उ़मर ! मेरी ख़बर लीजिये) पुकारा था उस का क्या वाक़िआ़ था।

सिपह सालार ने फ़ारूक़ी जलाल से सहम कर कांपते हुवे अ़र्ज़ किया कि अमीरल मोअमिनीन ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझे अपनी फ़ौज को

दरया के पार उतारना था इस लिये मैं ने पानी की गहराई का अन्दाज़ा करने के लिये उस को दरया में उतरने का हुक्म दिया, चूंकि मोसिम बहुत ही सर्द था और ज़ोरदार हवाएं चल रही थीं इस लिये उस को सर्दी लग गई और उस ने दो मरतबा ज़ोर ज़ोर से يَا عُمَرَاهُ! يَاعُمَرَاهُ कह कर आप को पुकारा, फिर यका-यक उस की रूह परवाज़ कर गई। ख़ुदा गवाह है कि मैं ने हरगिज़ हरगिज़ उस को हलाक करने के इरादे से दरया में उतरने का हुक्म नहीं दिया था। जब अहले मदीना ने सिपह सालार की ज़बानी येह क़िस्सा सुना तो इन लोगों की समझ में आ गया कि अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक दिन जो दो मरतबा يَالَبَّيْكَاهُ! يَالَبَّيْكَاهُ फ़रमाया था दर हक़ीक़त येह उसी मज़लूम मुजाहिद की फ़रयाद व पुकार का जवाब था। अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सिपह सालार का बयान सुन कर ग़ैज़ो ग़ज़ब में भर गए और फ़रमाया कि सर्द मोसिम और ठन्डी हवाओं के झोंकों में उस मुजाहिद को दरया की गहराई में उतारना येह क़त्ले ख़ता के हुक्म में है, लिहाज़ा तुम अपने माल में से इस के वारिषों को इस का ख़ून बहा अदा करो और ख़बर दार ! ख़बरदार ! आइन्दा किसी सिपाही से हरगिज़ हरगिज़ कभी कोई ऐसा काम न लेना जिस में उस की हलाकत का अन्देशा हो क्यूंकि मेरे नज़्दीक एक मुसलमान का हलाक हो जाना बड़ी से बडी हलाकतों से भी कहीं बढ़ चढ़ कर हलाकत है।[1] (ازالۃ الخفاء،مقصد۲،ص۱۷۲)

तबसेरा

अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस वफ़ात पाने वाले सिपाही की फ़रयाद और पुकार को सेंकड़ों मील की दूरी से सुन लिया और उस का जवाब भी दिया। इस रिवायत से ज़ाहिर होता है कि औलियाए किराम दूर की आवाज़ों को सुन लेते हैं और उन का जवाब भी देते हैं।

दो ग़ैबी शेर

रिवायत है कि बादशाहे रूम का भेजा हुवा एक अ़जमी काफ़िर मदीनए मुनव्वरा आया और लोगों से हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

1 ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء، مقصد دوم،الفصل الرابع،ج٤،ص١٠٩

का पता पूछा, लोगों ने बता दिया कि वोह दोपहर को खजूर के बाग़ों में शहर से कुछ दूर क़ैलूला फ़रमाते हुवे तुम को मिलेंगे। येह अ़जमी काफ़िर ढूंडते ढूंडते आप के पास पहुंच गया और येह देखा कि आप अपना चमड़े का दुर्रा अपने सर के नीचे रख कर ज़मीन पर गहरी नींद सो रहे हैं। अ़जमी काफ़िर इस इरादे से तल्वार को नियाम से निकाल कर आगे बढ़ा कि अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़त्ल कर के भाग जाए मगर वोह जैसे ही आगे बढ़ा बिल्कुल ही अचानक उस ने येह देखा कि दो शेर मुंह फाड़े हुवे उस पर ह़म्ला करने वाले हैं। येह ख़ौफ़नाक मन्ज़र देख कर वोह ख़ौफ़ व दहशत से बिलबिला कर चीख़ पड़ा और उस की चीख़ की आवाज़ से अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बेदार हो गए और येह देखा कि अ़जमी काफ़िर नंगी तल्वार हाथ में लिये हुवे थर थर कांप रहा है। आप ने उस की चीख़ और दहशत का सबब दरयाफ़्त फ़रमाया तो उस ने सच मुच सारा वाक़िआ़ बयान कर दिया और फिर बुलन्द आवाज़ से कलिमा पढ़ कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गया और अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के साथ निहायत ही मुशफ़िक़ाना बरताव फ़रमा कर उस के कुसूर को मुआ़फ़ कर दिया।[1] (ازالۃ الخفاء، مقصد۲، ص۱۷۲ وتفسیر کبیر ج۵، ص۴۷۸)

तबसेरा

येह रिवायत बता रही है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने ख़ास बन्दों की ह़िफ़ाज़त के लिये ग़ैब से ऐसा सामान फ़राहम फ़रमा देता है कि जो किसी के वहम व गुमान में भी नहीं आ सकता और येही ग़ैबी सामान औलियाउल्लाह की करामत कहलाते हैं। ह़ज़रते शैख़ सा'दी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इसी मज़्मून की त़रफ़ इशारा फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया :

محال است چوں دوست دارد ترا   کہ در دست دشمن گزارد ترا

या'नी **अल्लाह** तआ़ला जब तुम को अपना मह़बूब बन्दा बना ले तो फिर येह मुह़ाल है कि वोह तुम को तुम्हारे दुश्मन के हाथ में कस्म पुर्सी के आ़लम में छोड़ दे बल्कि उस की किब्रियाई ज़रूर

1 ......ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء، مقصد دوم، الفصل الرابع، ج٤، ص١٠٩

दुश्मनों से हिफ़ाज़त के लिये अपने महबूब बन्दों की ग़ैबी तौर पर इमदाद व नुसरत का सामान पैदा फ़रमा देती है और येही नुसरते ईमानी फ़ज़्ले रब्बानी बन कर इस तरह महबूबाने इलाही की दुश्मनों से हिफ़ाज़त करती है जिस को देख कर बे इख़्तियार येह कहना पड़ता है कि "دشمن اگر قوی است نگھبان قوی تَر است"

क़ब्र में बदन सलामत

वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक उमवी के दौरे हुकूमत में जब रौज़ए मुनव्वरा की दीवार गिर पड़ी और बादशाह के हुक्म से ता'मीरे जदीद के लिये बुन्याद खोदी गई तो नागहां बुन्याद में एक पाउं नज़र आया, लोग घबरा गए और सब ने येही ख़याल किया कि येह हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पाए अक़्दस है लेकिन जब उ़र्वा बिन ज़ुबैर सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने देखा और पहचाना फिर क़सम खा कर येह फ़रमाया कि येह हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुक़द्दस पाउं नहीं है बल्कि येह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़दम शरीफ़ है तो लोगों की घबराहट और बे चैनी में क़दरे सुकून हुवा।(1) (بخاری شریف ج١،ص١٨٦)

तबसेरा

बुख़ारी शरीफ़ की येह रिवायत इस बात की ज़बरदस्त शहादत है कि बा'ज़ औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِم के मुक़द्दस जिस्मों को क़ब्र की मिट्टी बरसों गुज़र जाने के बा'द भी नहीं खा सकती। बदन तो बदन इन के कफ़न को भी मिट्टी मैला नहीं करती। जब औलियाए किराम का येह ह़ाल है तो भला हज़राते अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का क्या ह़ाल होगा। फिर हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया ख़ातिमुन्नबिय्यीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1 ......صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی قبرالنبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم وابی بکر و عمر رضی اللّٰہ عنہما، الحدیث:١٣٩٠، ج١، ص٤٦٩

के जिस्मे अत़हर का क्या कहना ? जब कि वोह अपनी क़ब्रे मुनव्वर में जिस्मानी लवाज़िमे ह़यात के साथ ज़िन्दा हैं जैसा की ह़दीष शरीफ़ में आया है : فَنَبِیُّ اللّٰہِ حَیٌّ یُّرْزَقُ[1] (या'नी अल्लाह तआ़ला के नबी ज़िन्दा हैं और उन को रोज़ी भी दी जाती है)

जो कह दिया वोह हो गया

रबीआ़ बिन उमय्या बिन ख़लफ़ ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अपना येह ख़्वाब बयान किया कि मैं ने येह ख़्वाब देखा है कि मैं एक हरे भरे मैदान में हूं फिर मैं उस से निकल कर एक ऐसे चटियल मैदान में आ गया जिस में कहीं दूर दूर तक घास या दरख़्त का नामो निशान भी नहीं था और जब मैं नींद से बेदार हुवा तो वाक़ेई मैं एक बन्जर मैदान में था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि तू ईमान लाएगा, फिर इस के बा'द काफ़िर हो जाएगा और कुफ़्र ही की ह़ालत में मरेगा। अपने ख़्वाब की ता'बीर सुन कर वोह कहने लगा कि मैं ने कोई ख़्वाब नहीं देखा है, मैं ने तो यूं ही झूट मूट आप से येह कह दिया है ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह फ़रमाया कि तू ने ख़्वाब देखा हो या न देखा हो मगर मैं ने जो ता'बीर दी है वोह अब पूरी हो कर रहेगी। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि मुसलमान होने के बा'द उस ने शराब पी और अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस को दुर्रा मार कर सज़ा दी और उस को शहर बदर कर के ख़ैबर भेज दिया। वोह ज़ालिम वहां से भाग कर रूम की सर ज़मीन में चला गया और वहां जा कर वोह मर्दूद नस्रानी हो गया और मुर्तद हो कर कुफ़्र ही की ह़ालत में मर गया।[2] (ازالۃ الخفاء، مقصد۲،ص۱۷۰)

लोगों की तक़्दीर में क्या है ?

अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा कहते हैं कि हमारे क़बीले का एक वफ़्द अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाहे

1 ......سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز،باب ذکر وفاتہ ...الخ،الحدیث:۱۶۳۷،ج۲،ص۲۹۱

2 ......ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء، مقصد دوم، الفصل الرابع،ج٤،ص۱۰۱

ख़िलाफ़त में आया तो उस जमाअ़त में इश्तर नाम का एक शख़्स भी था । अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उस को सर से पैर तक बार बार गर्म गर्म निगाहों से देखते रहे फिर मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया कि क्या येह शख़्स तुम्हारे ही क़बीले का है ? मैं ने कहा की "जी हां" उस वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ इस को ग़ारत करे और इस के शर व फ़साद से इस उम्मत को महफ़ूज़ रखे । अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस दुआ़ के बीस बरस बा'द जब बाग़ियों ने हज़रते उ़ष्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद किया तो येही "इश्तर" उस बाग़ी गुरौह का एक बहुत बड़ा लीडर था ।

इसी त़रह़ एक मरतबा ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुल्के शाम के कुफ़्फ़ार से जिहाद करने के लिये लश्कर भरती फ़रमा रहे थे । नागहां एक टोली आप के सामने आई तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्तिहाई कराहत के साथ उन लोगों की त़रफ़ से मुंह फेर लिया । फिर दोबारा येह लोग आप के रू बरू आए तो आप ने मुंह फेर कर उन लोगों को इस्लामी फ़ौज में भरती करने से इन्कार फ़रमा दिया । लोग आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस त़र्ज़े अ़मल से इन्तिहाई ह़ैरान थे लेकिन आख़िर में येह राज़ खुला कि उस टोली में "असूद तजीबी" भी था जिस ने इस वाक़िए से बीस बरस बा'द ह़ज़रते उ़ष्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी तल्वार से शहीद किया और उस टोली में अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुलजिम मुरादी भी था जिस ने इस वाक़िए से तक़रीबन छब्बीस बरस के बा'द ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी तल्वार से शहीद कर डाला ।(1) (ازالۃ الخفاء، مقصد۲،ص۱۶۹و۱۷۲)

तबसेरा

मज़कूरा बाला करामतों में आप ने रबीआ़ बिन उमय्या बिन ख़लफ़ के ख़ातिमे के बारे में बरसों पहले येह ख़बर दे दी कि वोह काफ़िर हो कर मरेगा और बीस बरस पहले आप ने "इश्तर" के शरो

(1) ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء، مقصد دوم، الفصل الرابع، ج٤، ص١٠٩،٩٧

फ़साद से उम्मत के मुहफ़ूज़ रहने की दुआ मांगी और "असूद तजीबी" से इस बिना पर मुंह फेर लिया और इस्लामी लश्कर में इस को भरती करने से इन्कार कर दिया कि येह दोनों हज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़ातिलों में से थे और छब्बीस बरस पहले आप ने अ़ब्दुर्रहमान बिन मुलजिम मुरादी को ब नज़रे करामत देखा और इस्लामी लश्कर में इस बिना पर भरती नहीं फ़रमाया कि वोह हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ातिल था।

इन मुस्तनद रिवायतों से येह षाबित होता है कि औलियाए किराम को ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस के बता देने से आदमियों की तक़दीरों का ह़ाल मा'लूम हो जाता है। इसी लिये हज़रते मौलाना जलालुद्दीन रूमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी मषनवी शरीफ़ में फ़रमाया

لوح محفوظ است پیش اولیاء   از چہ محفوظ است محفوظ از خطاء

या'नी लोहे महफ़ूज़ औलियाए किराम के पेशे नज़र रहती है जिस को देख कर वोह इन्सानों की तक़दीरों में क्या लिखा है? इस को जान लेते हैं। **लौहे महफ़ूज़** को इस लिये **लोहे महफ़ूज़** कहते हैं कि वोह ग़लतियों और ख़ताओं से **महफ़ूज़** है।

दुआ़ की मक़्बूलिय्यत

अबू हदबा हमसी का बयान है कि जब अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह ख़बर मिली कि इराक़ के लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के गवर्नर को उस के मुंह पर कंकरियां मार कर और ज़लीलो रुस्वा कर के शहर से बाहर निकाल दिया है तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस ख़बर से इन्तिहाई रंजो क़लक़ हुवा और आप बेइन्तिहा ग़ज़बनाक हो कर मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में तशरीफ़ ले गए और इसी ग़ैज़ो ग़ज़ब की हालत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़ शुरूअ़ कर दी लेकिन चूंकि आप फ़र्ते ग़ज़ब से मुज़तरिब थे इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नमाज़ में सह्व हो गया और आप इस रंजो ग़म से और भी ज़ियादा बे ताब हो गए और इन्तिहाई रंजो

ग़म की ह़ालत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह दुआ़ मांगी कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़बीला षक़ीफ़ के लौंडे (ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी) को उन लोगों पर मुसल्लत़ फ़रमा दे जो ज़मानए जाहिलिय्यत का हुक्म चला कर इन इराक़ियों के नेक व बद किसी को भी न बख़्शे। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की येह दुआ़ क़बूल हो गई और अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान उमवी के दौरे हुकूमत में ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी इराक़ का गवर्नर बना और इस ने इराक़ के बाशिन्दों पर ज़ुल्मो सितम का ऐसा पहाड़ तोड़ा कि इराक़ की ज़मीन बिलबिला उठी। ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी इतना बड़ा ज़ालिम था कि इस ने जिन लोगों को रस्सी में बांध कर अपनी तल्वार से क़त्ल किया उन मक़्तूलों की ता'दाद एक लाख या इस से कुछ ज़ाइद ही है और जो लोग इस के हुक्म से क़त्ल किये गए उन की गिनती का तो शुमार ही नहीं हो सकता।

ह़ज़रते इब्ने लहीआ़ मुह़द्दिष ने फ़रमाया है कि जिस वक़्त अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह दुआ़ मांगी थी उस वक़्त ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी पैदा भी नही हुवा था।(1) (ازالۃ الخفاء، مقصد۲، ص۱۷۲)

तबसेरा

इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला अपने औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم को ग़ैब की बातों का भी इल्म अ़त़ा फ़रमाता है। चुनान्चे, रिवायते मज़्कूरए बाला में आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमा लिया कि अभी ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी पैदा भी नहीं हुवा था लेकिन अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को येह मा'लूम हो गया था कि ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी नामी एक बच्चा पैदा होगा जो बड़ा हो कर गवर्नर बनेगा और इन्तिहाई ज़ालिम होगा।

---

(1) ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، الفصل الرابع، ج٤، ص١٠٨

ज़ाहिर है कि क़ब्ल अज़् वक़्त इन बातों का मा'लूम हो जाना यक़ीनन ग़ैब का इ़ल्म है। अब येह मस्अला आफ़्ताबे आ़लम ताब से भी ज़ियादा रोशन हो गया कि जब **अल्लाह** तआ़ला अपने औलिया को ग़ैब का इ़ल्म अ़ता फ़रमाता है तो फिर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ख़ुसूसन हु़ज़ूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी **अल्लाह** तआ़ला ने यक़ीनन उ़लूमे ग़ैबिय्या का ख़ज़ाना अ़ता फ़रमाया है और येह ह़ज़रात बे शुमार ग़ैब की बातों को ख़ुदा तआ़ला के बता देने से जानते हैं और दूसरों को भी बताते हैं। चुनान्चे, अहले ह़क़ ह़ज़रात (उ़-लमाए अहले सुन्नत) का येही अ़क़ीदा है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बिल ख़ुसूस हु़ज़ूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बेशुमार उ़लूमे ग़ैबिय्या के ख़ज़ाने अ़ता फ़रमाए हैं और येही अ़क़ीदा ह़ज़राते ताबेई़न व ह़ज़राते सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का भी था। चुनान्चे, मवाहिबुल्लदुन्या शरीफ़ में है कि

(1) قَدِ اشْتَهَرَ وَانْتَشَرَ اَمْرُ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ اَصْحَابِهٖ بِالْاِطِّلَاعِ عَلَى الْغُيُوْبِ

(जनाबे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुयूब पर मुत्तलअ़ हैं येह बात सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم में आ़म तौ़र पर मश्हूर और ज़बाने ज़द ख़ासो आ़म थी)

इसी त़रह़ मवाहिबुल्लदुन्या की शर्ह़ में अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुल बाक़ी ज़ुरक़ानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने तह़रीर फ़रमाया है :

(2) وَاَصْحَابُهٗ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَازِمُوْنَ بِاِطِّلَاعِهٖ عَلَى الْغَيْبِ

(या'नी सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم का येह पुख़्ता अ़क़ीदा था कि हु़ज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ग़ैब की बातों पर मुत्तलअ़ हैं)

---

1 ......المواهب اللدنية بالمنح المحمدية، المقصد الثامن فى طبه...الخ، الفصل الثالث فى انبائه بالانباء المغيبات، ج٣، ص ٩١

2 ......شرح الزرقانى على المواهب اللدنية، النوع الثالث فى طبه...الخ، الفصل الثالث فى انبائه...الخ، ج١٠، ص ١١٣

इन दो बुज़ुर्गों के इलावा दूसरे बहुत से अइम्मए किराम ने भी अपनी अपनी किताबों में इस तसरीह़ को बयान फ़रमाया है। तफ़्सील के लिये देखो हमारी किताब **"क़ुरआनी तक़रीरें"** और **"क़ियामत कब आएगी ?"**

﴾3﴿ ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ख़लीफ़ए सिवुम अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़षमान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत "अबू अ़म्र" और लक़ब "ज़ुन्नूरैन" (दो नूर वाले) है। आप क़ुरैशी हैं और आप का नसब नामा येह है : उ़षमान बिन अ़फ़्फ़ान बिन अबिल आ़स बिन उमय्या बिन अ़ब्दे शम्स बिन अ़ब्दे मनाफ़। आप का ख़ानदानी शजरा "अ़ब्दे मनाफ़" पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब नामे से मिल जाता है। आप ने आग़ाज़े इस्लाम ही में इस्लाम क़बूल कर लिया था और आप को आप के चचा और और दूसरे ख़ानदानी काफ़िरों ने मुसलमान हो जाने की वजह से बेह़द सताया। आप ने पहले ह़बशा की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई फिर मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई इस लिये आप "साहि़बुल हिजरतैन" (दो हिजरतों वाले) कहलाते हैं और चूंकि हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दो साहि़ब ज़ादियां यके बा'द दीगरे आप के निकाह़ में आईं इस लिये आप का लक़ब "ज़ुन्नूरैन" है। आप जंगे बद्र के इलावा दूसरे तमाम इस्लामी जिहादों में कुफ़्फ़ार से जंग फ़रमाते रहे। चूंकि जंगे बद्र के मौक़अ़ पर आप की ज़ौजए मोह़तरमा जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की साहि़बज़ादी थीं, सख़्त अ़लील हो गई थीं इस लिये हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को जंगे बद्र में जाने से मन्अ़ फ़रमा दिया लेकिन आप को मुजाहिदीन बद्र में शुमार फ़रमा कर माले ग़नीमत में से मुजाहिदीन के बराबर ह़िस्सा दिया और अज्रो षवाब की बिशारत भी दी। ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बा'द आप ख़लीफ़ा मुन्तख़ब हुवे और बारह बरस तक तख़्ते ख़िलाफ़त को सरफ़राज़ फ़रमाते रहे।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में इस्लामी हुकूमत की हुदूद में बहुत ज़ियादा तौसीअ़ हुई और अफ़्रीक़ा वग़ैरा बहुत से मुमालिक मफ़्तूह़ हो कर ख़िलाफ़ते राशिदा के ज़ेरे नगीं हुवे। बयासी बरस की उ़म्र में मिस्र के बाग़ियों ने आप के मकान का मुह़ासरा कर लिया और बारह ज़िल हिज्जा या अठ्ठारह ज़िल हिज्जा सि. 35 हि. जुमुआ़ के दिन इन बाग़ियों में से एक बद नसीब ने आप को रात के वक़्त इस ह़ाल में शहीद कर दिया कि आप क़ुरआने पाक की तिलावत फ़रमा रहे थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ून के चन्द क़त़रात क़ुरआन शरीफ़ की आयत فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللّٰهُ (1) पर पड़े। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जनाज़े की नमाज़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फूफी ज़ाद भाई ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़ाई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हैं।(2) (تاریخ الخلفاء وازالۃ الخفاء وغیرہ)

करामात

ज़िनाकार आंखें

अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुबकी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी किताब "त़बक़ात" में तह़रीर फ़रमाया है कि एक शख़्स ने रास्ता चलते हुवे एक अजनबी औ़रत को घूर घूर कर ग़लत़ निगाहों से देखा। इस के बा'द येह शख़्स अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा। उस शख़्स को देख कर ह़ज़रते

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो ऐ मह़बूब अ़न क़रीब **अल्लाह** उन की त़रफ़ से तुम्हें किफ़ायत करेगा। (پ۱، البقرۃ:۱۳۷)

2......تاریخ الخلفاء، الخلفاء الراشدون، عثمان بن عفان رضی اللہ عنہ، ص۱۱۸، فصل فی خلافتہ، ص۱۲۲،۱۲۷۔۱۲۹ ملتقطاً و الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابۃ، ص۶۰۲ وازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء، مقصد دوم، اما مآثر امیرالمؤمنین عثمان بن عفان، ج۴، ص۳۶۷

अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निहायत ही पुर जलाल लहजे में फ़रमाया कि तुम लोग ऐसी ह़ालत में मेरे सामने आते हो कि तुम्हारी आंखों में ज़िना के अषरात होते हैं। शख़्से मज़्कूर ने (जल भुन कर) कहा कि क्या रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द आप पर वह़्य उतरने लगी है? आप को येह कैसे मा'लूम हो गया कि मेरी आंखों में ज़िना के अषरात हैं।

अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया कि मेरे ऊपर वह़्य तो नहीं नाज़िल होती लेकिन मैं ने जो कुछ कहा है येह बिल्कुल ही क़ौले ह़क़ और सच्ची बात है और ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने मुझे एक ऐसी फ़िरासत (नूरानी बसीरत) अ़त़ा फ़रमाई है जिस से मैं लोगों के दिलों के ह़ालात व ख़यालात को मा'लूम कर लिया करता हूं।(1) (حجۃ اللّٰہ علی العالمین ج۲،ص۸۶۲ وازالۃ الخفاء،مقصد۲،ص۲۲۷)

तबसेरा

क़ुरआने मजीद में ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस का इरशाद है कि كَلَّا بَلْ سكته رَانَ عَلٰی قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ(2) या'नी आदमी जब कोई गुनाह करता है तो उस का येह अषर होता है कि उस के क़ल्ब पर एक सियाह दाग़ और बद नुमा धब्बा पड़ जाता है और चूंकि क़ल्ब पूरे जिस्म का बादशाह है इस लिये क़ल्ब पर जब कोई अषर पड़ता है तो पूरा बदन उस से मुतअष्षिर हो जाता है तो ख़ासाने ख़ुदा जिन की आंखों में नूरे बसारत के साथ साथ नूरे बसीरत भी हुवा करता है वोह बदन के हर हर हिस्से में इन अषरात को अपने नूरे फ़िरासत और निगाहे करामत से देख लिया करते हैं। अमीरुल मोअमिनीन

1 ......حجۃ اللّٰہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملۃ جمیلۃ ...الخ،ص۶۱۳

2 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने। (پ۳۰،المطففین:۱۴)

हज़रते उ़षमाने गनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि अहले बसीरत और साहिबे बात़िन थे इस लिये इन्हों ने अपनी निगाहे करामत से शख़्से मज़्कूर की आंखों में उस के गुनाह के अषरात को देख लिया और उस की आंखों को इस लिये ज़िनाकार कहा कि ह़दीष शरीफ़ में आया है कि "زنا العينين النظر"(1) या'नी किसी अजनबी औ़रत को बुरी निय्यत से देखना येह आंखों का ज़िना है। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم

हाथ में केन्सर

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रावी हैं कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिदे नबवी शरीफ़ के मिम्बरे अक़्दस पर ख़ुत़बा पढ़ रहे थे कि बिलकुल ही अचानक एक बद नसीब और ख़बीषुन्नफ़्स इन्सान जिस का नाम **"जहजाह गिफ़ारी"**(2) था खड़ा हो गया और आप के दस्ते मुबारक से अ़सा छीन कर उस को तोड़ डाला। आप ने अपने ह़िल्म व ह़या की वजह से उस से कोई मुआख़ज़ा नहीं फ़रमाया लेकिन ख़ुदा तआ़ला की क़हहारी व जब्बारी ने

1 ......المستدرک على الصحيحين، كتاب التفسير، تفسير سورة النجم، باب توضيح معنى الا اللمم، الحديث:٣٨٠٣، ج٣، ص٢٧٧

2 ....*तम्बीह : हमारी तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना जहजाह बिन सईद गिफ़ारी* رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ *सह़ाबिये रसूल हैं और हमें किसी का भी कोई क़ौल ऐसा नहीं मिला जिस में इन के सह़ाबी होने की नफ़ी हो, लिहाज़ा इन के लिये ऐसे अलफ़ाज़ हरगिज़ इस्ति'माल न किये जाएं।*

मुसन्निफ़ की त़रफ़ से उ़ज़्र : *किसी आ़म मुसलमान से भी येह तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता कि वोह किसी सह़ाबी के बारे में जान बूझ कर कोई ना ज़ैबा कलिमा इस्ति'माल करे। यक़ीनन ह़ज़रते मुसन्निफ़* عَلَیْہِ الرَّحْمَة *के इल्म में न होगा कि येह सह़ाबी हैं क्यूं कि यहां जो मुआ़मला था वोह सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी* رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ *के अ़सा के तोड़ने का था जिस की वजह से शायद मुसन्निफ़ से तसामेह़ हो गया वरना वोह हरगिज़ ऐसी बात सह़ाबिये रसूल के लिये न लिखते क्यूं कि मुसन्निफ़ ने ख़ुद अपनी कुतुब में सह़ाबए किराम* عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان *के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए हैं जो कि इन के रासिख़ सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा और आ़शिक़े सह़ाबए किराम* عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان *होने की दलील है।*

उस बे अदबी और गुस्ताख़ी पर उस मर्दूद को येह सज़ा दी कि उस के हाथ में केन्सर का मरज़ हो गया और उस का हाथ गल

सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के बारे में इस्लामी अ़क़ीदा : सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मुतअ़ल्लिक़ अहले सुन्नत का मौक़िफ़ है कि

(1) सहाबए किराम (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) के बाहम जो वाक़िआत हुवे, उन में पड़ना ह़राम, ह़राम, सख़्त ह़राम है, मुसलमानों को तो येह देखना चाहिये कि वोह सब ह़ज़रात आक़ाए दो आ़लम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जां निषार और सच्चे ग़ुलाम हैं।

(2) सहाबए किराम (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) अम्बिया न थे, फ़िरिश्ते न थे कि मासूम हों। इन में बा'ज़ के लिये लग़ज़िशें हुईं मगर इन की किसी बात पर गिरिफ़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़िलाफ़ है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1/ स. 254 मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना)

तफ़्सील : मज़कूरा वाक़िआ़ की तफ़्तीश करते हुवे हम ने मुतअ़द्दद अ़रबी कुतुबे सियर व तारीख़ वग़ैरा देखीं लेकिन इन में "बद नसीब और ख़बीषुन्नफ़्स" या इस की मिष्ल कलिमात नहीं मिले। चुनान्चे "अल इस्तीआ़ब" में है :

وروى أنّ جهجاه هذا هو الذى تناوَلَ العصا من يَدِ عثمان وهو يَخطبُ فكسَرَها يومئذ , فأَخَذَته الأَكِلَةُ فى ركبته وكانت عصا رسولِ اللهِ صلى الله عليه و آله وسلم.(الاستيعاب فى معرفة الأصحاب 1/ 334) وفى "الإصابة" بلفظِ: فوضعها على ركبته فكسرها ....حتى مات. (الإصابة فى تمييز الصحابة 1 -/622)

तर्जमा : और मरवी है कि येह वोही जहजाह (बिन सईद ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) हैं जिन्हों ने ब हालते ख़ुत़बा उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के दस्ते मुबारक से अ़सा (छड़ी) छीन कर अपने घुटने पर रख कर तोड़ दिया था तो (सय्यिदुना) जहजाह (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) को घुटने में ज़ख़्म हो गया यहां तक कि वोह रिह़लत फ़रमा गए। वोह अ़सा मुबारक रसूले अकरम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का था।

इन की सहाबिय्यत के दलाइल : कुतुबे तराजिम में इन के मुतअ़ल्लिक़ बयान किया गया है कि "वोह बैअ़ते रिज़्वान में ह़ाज़िर थे"

شَهِدَ بيعةَ الرضوانِ بالحديبية۔(الإصابة فى تمييز الصحابة 1/ 621)

और मुतअ़द्दद कुतुब में अ़सा तोड़ने वाला वाक़िआ़ इन्ही का लिखा है, जिस की ताईद "इस्तीआ़ब" से बिल ख़ुसूस होती है कि उन्हों ने पहले इन के ईमान लाने का वाक़िआ़ बयान किया और फिर "هذا هو الذى تناوَلَ العَصا" के अल्फ़ाज़ के ज़रीए येह वाज़ेह़ कर दिया कि अ़सा तोड़ने वाला वाक़िआ़ इन्ही का है। इन के सहाबी होने की सराहत इन कुतुब में भी की गई है।(الإستيعاب فى معرفة الأصحاب، 1/ 334)

सड़ कर गिर पड़ा और वोह येह सज़ा पा कर एक साल के अन्दर ही मर गया।[1] (حجۃ اللہ علی العالمین ج۲،ص ۸۶۲ وتاریخ الخلفاء،ص ۱۱۲)

गुस्ताख़ी की सज़ा

हज़रते अबू क़िलाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं मुल्के शाम की सर ज़मीन में था तो मैं ने एक शख़्स को बार बार येह सदा लगाते हुवे सुना कि "हाए अफ़्सोस! मेरे लिये जहन्नम है।" मैं उठ कर उस के पास गया तो येह देख कर हैरान रह गया कि उस शख़्स के दोनों हाथ और पाउं कटे हुवे हैं और वोह दोनों आंखों से अन्धा है और अपने चेहरे के बल ज़मीन पर औंधा पड़ा हुवा बार बार लगातार येही कह रहा है कि "हाए अफ़्सोस! मेरे लिये जहन्नम है।" येह मन्ज़र देख कर मुझ से रहा न गया और मैं ने उस से पूछा कि ऐ शख़्स! तेरा क्या ह़ाल है? और क्यूं और किस बिना पर तुझे अपने जहन्नमी होने का यक़ीन है? येह सुन कर उस ने येह कहा: ऐ शख़्स! मेरा ह़ाल न पूछ, मैं उन बद नसीब लोगों में से हूं जो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़त्ल करने के लिये उन के मकान में घुस पड़े थे। मैं जब तल्वार ले कर उन के क़रीब पहुंचा तो उन की बीवी साहिबा ने मुझे डांट कर शोर

---

(۱) (التمھید لما فی الموطأ من المعانی والأسانید) فلما أسلمتُ دعانی رسول الله صلى الله عليه وسلم إلى منزله فحلب لی عنزا، (230/7). (۲) (الثقات لابن حبان) وكان جهجاه من فقراء المهاجرين وهو الذى أكل عند النبى صلى الله عليه و سلم وهو كافر فأكثر ثم أسلم فأكل فقال له النبى صلى الله عليه وسلم المؤمن يأكل فى معى واحد والكافر يأكل فى سبعة أمعاء (280/1) (۳)(أسد الغابة) ثم أسلم فلم يستتم حلاب شاة واحدة (451/1) (۴)(شرح مشكل الآثار للطحاوى) ثم إنه أصبح فأسلم (280/1)(حصه دوم) (۵) شرح الزرقانى على المؤطا. ثم أصبح فأسلم. (393/4)

[1] ......حجۃاللّٰہ علی العالمین،الخاتمۃفی اثبات کرامات الاولیاء...الخ،المطلب الثالث فی ذکرجملۃجمیلۃ...الخ،ص ۶۱۳

मचाना शुरूअ़ कर दिया तो मैं ने उन की बीवी साहिबा को एक थप्पड़ मार दिया येह देख कर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह दुआ़ मांगी कि "**अल्लाह** तआ़ला तेरे दोनों हाथों और दोनों पाउं को काट डाले और तेरी दोनों आंखों को अन्धी कर दे और तुझ को जहन्नम में झोंक दे।" ऐ शख़्स ! मैं अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पुर जलाल चेहरे को देख कर और उन की इस क़ाहिराना दुआ़ को सुन कर कांप उठा और मेरे बदन का एक एक रौंगटा खड़ा हो गया और मैं ख़ौफ़ व दहशत से कांपते हुवे वहां से भाग निकला।

अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की चार दुआ़ओं में से तीन दुआ़ओं की ज़द में तो आ चुका हूं, तुम देख रहे हो कि मेरे दोनों हाथ और दोनों पाउं कट चुके और दोनों आंखें अन्धी हो चुकीं अब सिर्फ़ चौथी दुआ़ या'नी मेरा जहन्नम में दाख़िल होना बाक़ी रह गया है और मुझे यक़ीन है कि येह मुआ़मला भी यक़ीनन हो कर रहेगा चुनान्चे, अब मैं इसी का इन्तिज़ार कर रहा हूं और अपने जुर्म को बार बार याद कर के नादिम व शर्मसार हो रहा हूं और अपने जहन्नमी होने का इक़रार करता हूं।(1) (ازالۃ الخفاء،مقصد۲،ص۲۲۷)

तबसेरा

मज़्कूरा बाला दोनों रिवायतों और करामतों से येह सबक़ मिलता है कि **अल्लाह** तआ़ला अगर्चे बहुत बड़ा सत्तार व ग़फ़्फ़ार और ग़फ़ूरो रह़ीम है, लेकिन अगर कोई बद नसीब उस के मह़बूब बन्दों की शान में कोई गुस्ताख़ी व बे अदबी करता है तो ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की क़ह्हारी व जब्बारी उस मर्दूद को हरगिज़ हरगिज़ मुआ़फ़ नहीं फ़रमाती बल्कि ज़रूर बिज़्ज़रूर दुन्या व आख़िरत के बड़े बड़े अ़ज़ाबों में गिरिफ़्तार कर देती है और वोह दोनों जहान में क़हरे क़ह्हार व ग़ज़बे जब्बार का इस त़रह़ सज़ावार हो जाता है कि दुन्या में ला'नतों

(1)......ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء، مقصد دوم، اما مآثر امیر المؤمنین عثمان بن عفان رضی اللہ تعالٰی عنہ، ج٤، ص٣١٥

की बार और फिटकार और आख़िरत में अ़ज़ाबे नार के सिवा उस को कुछ नहीं मिलता। राफ़िज़ी और वहाबी जिन के दीनो मज़हब की बुन्याद ही महबूबाने ख़ुदा की बे अदबी पर है हम ने इन गुस्ताख़ों और बे अदबों में से कई एक को अपनी आंखों से देखा है कि इन लोगों पर क़हरे इलाही की ऐसी मार पड़ी है कि तौबा तौबा, अल अमान। और मरते वक़्त इन लोगों का इतना बुरा ह़ाल हुवा है कि तौबा तौबा। نعوذ باللہ

अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को **अल्लाह** वालों की बे अदबी व गुस्ताख़ी की ला'नत से मह़फ़ूज़ रखे और अपने महबूबों की ता'ज़ीम व तौक़ीर और इन के अदबो एह़तिराम की तौफ़ीक़ बख़्शे। (आमीन)

ख़्वाब में पानी पी कर सैराब

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जिन दिनों बाग़ियों ने ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान का मुह़ासरा कर लिया और इन के घर में पानी की एक बूंद तक का जाना बन्द कर दिया था और ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ प्यास की शिद्दत से तड़पते रहते थे मैं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर हुवा तो आप उस दिन रोज़ादार थे। मुझ को देख कर आप ने फ़रमाया कि ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ! आज मैं ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदारे पुर अन्वार से ख़्वाब में मुशर्रफ़ हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्तिहाई मुशफ़िक़ाना लहजे में इरशाद फ़रमाया कि ऐ उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ालिमों ने पानी बन्द कर के तुम्हें प्यास से बे क़रार कर दिया है ? मैं ने अ़र्ज़ किया कि जी हां ! तो फ़ौरन ही आप ने दरेची में से एक डोल मेरी त़रफ़ लटका दिया जो निहायत शीरीं और ठन्डे पानी से भरा हुवा था, मैं उस को पी कर सैराब हो गया और अब इस वक़्त बेदारी की ह़ालत में भी उस पानी की ठन्डक मैं अपनी दोनों छातियों और दोनों कंधों के दरमियान मह़सूस करता हूं। फिर ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि ऐ उ़षमान !

अगर तुम्हारी ख़्वाहिश हो तो इन बाग़ियों के मुक़ाबले में तुम्हारी इमदाद व नुस्रत करूं। और अगर तुम चाहो तो हमारे पास आ कर रोज़ा इफ़्तार करो। ऐ अ़ब्दल्लाह बिन सलाम ! मैं ने ख़ुश हो कर येह अ़र्ज़ कर दिया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप के दरबारे पुर अन्वार में ह़ाज़िर हो कर रोज़ा इफ़्तार करना येह ज़िन्दगी से हज़ारों लाखों दरजे ज़ियादा मुझे अ़ज़ीज़ है। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं इस के बा'द रुख़्सत हो कर चला आया और उसी दिन रात में बाग़ियों ने आप رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को शहीद कर दिया।[1] (البدایہ والنہایہ، ج۷،ص۱۸۲)

अपने मद्फ़न की ख़बर

ह़ज़रत इमामे मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़षमान رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه एक मरतबा मदीनए मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ़ के उस ह़िस्से में तशरीफ़ ले गए जो "ह़श कोकब" कहलाता है तो आप ने वहां खड़े हो कर एक जगह पर येह फ़रमाया कि अ़न क़रीब यहां एक मर्दे सालेह़ दफ़्न किया जाएगा। चुनान्चे, इस के बा'द ही आप की शहादत हो गई और बाग़ियों ने आप के जनाज़ए मुबारका के साथ इस क़दर हुल्लड़ बाज़ी की, कि आप को न रौज़ए मुनव्वरा के क़रीब दफ़्न किया जा सका न जन्नतुल बक़ीअ़ के उस ह़िस्से में मद्फ़ून किये जा सके जो किबारे सहाबा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم का क़ब्रिस्तान था बल्कि सब से दूर अलग थलग "ह़श कोकब" में आप सिपुर्दे ख़ाक किये गए जहां कोई सोच भी नहीं सकता था कि यहां अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़षमान رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की क़ब्र मुबारक बनेगी क्यूंकि इस वक़्त तक वहां कोई क़ब्र थी ही नहीं।[2] (ازالۃ الخفاء، مقصد۲،ص۲۲۷)

1 ......البداية والنهاية، ذكرمجئ الاحزاب الى عثمان ...الخ، ذكر حصر امير المؤمنين عثمان بن عفان رضى الله تعالىٰ عنه، ج٥، ص٢٦٩

2 ......ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، اما مآثرامير المؤمنين عثمان بن عفان رضى الله تعالىٰ عنه، ج٤، ص٣١٥

तबसेरा

इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला अपने औलिया को इन बातों का भी इ़ल्म अ़ता फ़रमा देता है कि वोह कब और कहां वफ़ात पाएंगे और किस जगह उन की क़ब्र बनेगी। चुनान्चे, सेंकड़ों औलियाए किराम के तज़्किरों में लिखा हुवा है कि उन **अल्लाह** वालों ने क़ब्ल अज़ वक़्त लोगों को येह बता दिया है कि वोह कब ? और कहां ? और किस जगह वफ़ात पा कर मदफ़ून होंगे।

ज़रूरी इन्तिबाह

इस मौक़अ़ पर बा'ज़ कज फ़हम और बद अ़क़ीदा लोग अ़वाम को बहकाते रहते हैं कि कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआ़ला ने येह फ़रमाया है : (1)وَمَا تَدْرِیْ نَفْسٌ بِاَیِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ या'नी **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई इस को नहीं जानता कि वोह कौन सी ज़मीन में मरेगा। लिहाज़ा औलियाए किराम के सब क़िस्से ग़लत़ हैं। (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) इस का जवाब येह है कि कुरआने मजीद की येह आयत ह़क़ और बर ह़क़ है और हर मोमिन का इस पर ईमान है मगर इस आयत का मत़लब येह है कि बिग़ैर **अल्लाह** तआ़ला के बताए हुवे कोई शख़्स अपने अ़क़्लो फ़हम से इस बात को नहीं जान सकता कि वोह कब और कहां मरेगा। लेकिन अगर **अल्लाह** तआ़ला अपने ख़ास बन्दों ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ब ज़रीअ़ए वह़्य और औलियाए किराम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم को बत़रीक़े कश्फ़ो करामत इन चीज़ों का इ़ल्म अ़ता फ़रमा दे तो वोह भी येह जान लेते हैं कि कब और कहां इन का इन्तिक़ाल होगा ?

ख़ुलासए कलाम येह है कि **अल्लाह** तआ़ला तो इस बात को जानता ही है कि कौन कहां मरेगा लेकिन **अल्लाह** तआ़ला के बता देने से ख़ासाने ख़ुदा भी इस बात को जान लेते हैं कि कौन कहां मरेगा। मगर कहां **अल्लाह** तआ़ला का इ़ल्म और कहां बन्दों का इ़ल्म, **अल्लाह** तआ़ला का इ़ल्म अज़ली, ज़ाती और क़दीम है और बन्दों का इ़ल्म अ़त़ाई और ह़ादिष है। **अल्लाह** तआ़ला का इ़ल्म अज़ली, अबदी और ग़ैर मह़दूद है और बन्दों का इ़ल्म फ़ानी और मह़दूद है।

---

1 .....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और कोई जान नहीं जानती कि किस ज़मीन में मरेगी (پ ۲۱،لقمٰن:۳٤)

अब येह मस्अला निहायत ही सफ़ाई के साथ वाज़ेह हो गया कि कुरआनी इरशाद का मफ़ाद कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई नहीं जानता कि कौन कब और कहां मरेगा ? और अहले ह़क़ का येह अ़क़ीदा कि औलियाए किराम भी जानते हैं कि कौन कब और कहा मरेगा ? येह दोनों बातें अपनी अपनी जगह पर सह़ीह़ हैं और इन दोनों बातों में हरगिज़ हरगिज़ कोई तआ़रुज़ (टकराव) नहीं। क्यूंकि जहां येह कहा गया कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई नहीं जानता कि कौन कब और कहां मरेगा। इस का मत़लब येह है कि बिग़ैर खुदा के बताए कोई नहीं जानता और जहां येह कहा गया कि ह़ज़राते अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व औलिया رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡهِم जानते हैं कि कौन कब और कहां मरेगा तो इस का मत़लब येह है कि ह़ज़राते अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व औलिया رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡهِم खुदा عَزَّوَجَلَّ के बता देने से जान लेते हैं। अब नाज़िरीने किराम इन्साफ़ फ़रमाएं कि इन दोनों बातों में कौन सा तआ़रुज़ और टकराव है ? दोनों ही बातें अपनी अपनी जगह पर सो फ़ीसदी सह़ीह़ और दुरुस्त हैं। وَاللّٰه تَعَالٰى اَعلم

शहादत के बा'द ग़ैबी आवाज़

ह़ज़रते अ़दी बिन ह़ातिम सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के दिन मैं ने अपने कानों से सुना कि कोई शख़्स बुलन्द आवाज़ से येह कह रहा था :

اَبۡشِرِ ابۡنَ عَفَّانَ بِرَوۡحٍ وَّرَیۡحَانٍ وَّبِرَبٍّ غَیۡرِ غَضۡبَانَ اَبۡشِرِ ابۡنَ عَفَّانَ بِغُفۡرَانَ وَّرِضۡوَانَ

(या'नी ह़ज़रते उ़षमान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को राह़त और ख़ुश्बू की बिशारत दो और न नाराज़ होने वाले रब की मुलाक़ात की ख़ुश ख़बरी सुनाओ और खुदा के ग़ुफ़रान व रिज़्वान की भी बिशारत दे दो) ह़ज़रते अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं इस आवाज़ को सुन कर इधर उधर नज़र दौड़ाने लगा और पीछे मुड़ कर भी देखा मगर कोई शख़्स नज़र नहीं आया।[1] (شواہد النبوۃ،ص۱۵۸)

1 ......شواهد النبوة، ركن سادس دربيان شواهد ودلايلى...الخ، ص ٢٠٩

मदफ़्न में फ़िरिश्तों का हुजूम

रिवायत है कि बाग़ियों की हुल्लड़ बाज़ियों के सबब तीन दिन तक आप की मुक़द्दस लाश बे गोरो कफ़न पड़ी रही। फिर चन्द जां निषारों ने रात की तारीकी में आप के जनाज़ए मुबारका को उठा कर जन्नतुल बक़ीअ़ में पहुंचा दिया और आप की मुक़द्दस क़ब्र खोदने लगे। उन लोगों ने देखा कि सुवारियों की एक बहुत बड़ी जमाअ़त उन के पीछे पीछे जन्नतुल बक़ीअ़ में दाख़िल हुई उन को देख कर लोगों पर ऐसा ख़ौफ़ त़ारी हुवा कि कुछ लोगों ने जनाज़ा मुबारका को छोड़ कर भाग जाने का इरादा कर लिया। येह देख कर सुवारों ने बा आवाज़े बुलन्द कहा कि आप लोग ठहरे रहें और बिल्कुल न डरें, हम लोग भी इन की तदफ़ीन में शिर्कत के लिये यहां हाज़िर हुवे हैं। येह आवाज़ सुन कर लोगों का ख़ौफ़ दूर हो गया और इत़मीनान व सुकून के साथ लोगों ने आप को दफ़्न किया। क़ब्रिस्तान से लौट कर इन सहाबियों رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُم ने क़सम खा कर लोगों से कहा कि यक़ीनन येह फ़िरिश्तों की जमाअ़त थी।[1] (شواہد النبوۃ، ص ۱۵۸)

गुस्ताख़ दरिन्दे के मुंह में

मन्क़ूल है कि हिजाज का एक क़ाफ़िला मदीनए मुनव्वरा पहुंचा। तमाम अहले क़ाफ़िला हज़रते अमीरुल मोअमिनीन उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ के मज़ारे मुबारक पर ज़ियारत करने और फ़ातिहा ख़्वानी के लिये गए लेकिन एक शख़्स जो आप से बुग़्ज़ो इनाद रखता था तौहीन व इहानत के त़ौर पर आप की ज़ियारत के लिये नहीं गया और लोगों से कहने लगा कि वोह बहुत दूर है इस लिये मैं नहीं जाऊंगा।

येह क़ाफ़िला जब अपने वत़न को वापस आने लगा तो क़ाफ़िले के तमाम अफ़राद ख़ैरो आ़फ़िय्यत और सलामती के साथ अपने अपने वत़न पहुंच गए लेकिन वोह शख़्स जो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ

1 ......شواھد النبوۃ، رکن سادس دربیان شواھد ودلایلی...الخ، ص ۲۰۹

की क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत के लिये नहीं गया था उस का येह अन्जाम हुवा कि दरमियाने राह में बीच क़ाफ़िले के अन्दर एक दरिन्दा जानवर दर्राता और गुर्राता हुवा आया और उस शख़्स को अपने दांतों से दबोच कर और पंजों से फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर डाला।

येह मन्ज़र देख कर तमाम अहले क़ाफ़िला ने यक ज़बान हो कर येह कहा कि येह हज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बे अदबी व बे हुर्मती का अन्जाम है।[1] (شواہد النبوۃ، ص۱۵۸)

तबसेरा

मज़्कूरा बाला तीनों रिवायतों से अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जलालते शान और दरबारे ख़ुदावन्दी में इन की मक़्बूलिय्यत और विलायत व करामत का ऐसा अ़ज़ीमुश्शान निशान ज़ाहिर होता है कि इन के मरातिब की बुलन्दियों का कोई तसव्वुर भी नहीं कर सकता और आख़िरी रिवायत तो उन गुस्ताख़ों के लिये बहुत ही इ़ब्रत ख़ेज़ और ख़ौफ़नाक निशान है जो हज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में बद ज़बान हो कर ख़ुलफ़ाए षलाषा पर तबर्राबाज़ी किया करते हैं। जैसा कि हमारे दौर के शीओं का मज़्मूम व नापाक त़रीक़ा है।

अहले सुन्नत हज़रात पर लाज़िम है कि इन की मजालिस में हरगिज़ हरगिज़ क़दम न रखें वरना क़हरे इलाही में मुब्तला होने का ख़त़रनाक अन्देशा है। ख़ुदावन्दे करीम हर मुसलमान को अपने क़हरो ग़ज़ब से बचाए रखे और हज़राते ख़ुलफ़ाए किराम और तमाम सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की मह़ब्बत व अ़क़ीदत की दौलत अ़त़ा फ़रमाए। आमीन !

---

1 ......شواهد النبوة، ركن سادس دربيان شواهد ودلايلى...الخ، ص٢١٠

﴾4﴿ हज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

ख़लीफ़ए चहारुम जानशीने रसूल व ज़ौजे बतूल हज़रते अ़ली बिन अबी ता़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की कुन्यत "अबुल ह़सन" और "अबू तुराब" है। आप हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा अबू ता़लिब के फ़रज़न्दे अरजुमन्द हैं। आ़मुल फ़ील के तीस बरस बा'द जब कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ तीस बरस की थी। 13 रजब को जुमुआ़ के दिन हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़ानए का'बा के अन्दर पैदा हुवे। आप की वालिदए माजिदा का नाम हज़रते फ़ाति़मा बिन्ते असद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) है आप ने अपने बचपन ही में इस्लाम क़बूल कर लिया था और हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ेरे तर्बिय्यत हर वक़्त आप की इमदाद व नुस्रत में लगे रहते थे। आप मुहाजिरीने अव्वलीन और अ़शरए मुबश्शरा में अपने बा'ज़ ख़ुसूसी दरजात के लिहा़ज़ से बहुत ज़ियादा मुमताज़ हैं। जंगे बद्र, जंगे उहुद, जंगे ख़न्दक़ वग़ैरा तमाम इस्लामी लड़ाइयों में अपनी बे पनाह शुजाअ़त के साथ जंग फ़रमाते रहे और कुफ़्फ़ारे अ़रब के बड़े बड़े नामवर बहादुर और सूरमा आप की मुक़द्दस तल्वारे ज़ुल फ़िक़ार की मार से मक़्तूल हुवे। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत के बा'द अन्सार व मुहाजिरीन ने आप के दस्ते ह़क़ परस्त पर बैअ़त कर के आप को अमीरुल मोअमिनीन मुन्तख़ब किया और चार बरस आठ माह नव दिन तक आप मस्नदे ख़िलाफ़त को सरफ़राज़ फ़रमाते रहे। 17 रमज़ान सि. 40 हि. को अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुलजम मुरादी ख़ारिजी मुर्दूद ने नमाज़े फ़ज्र को जाते हुवे आप की मुक़द्दस पेशानी और नूरानी चेहरे पर ऐसी तल्वार मारी जिस से आप शदीद तौर पर ज़ख़्मी हो गए और दो दिन ज़िन्दा रह कर जामे शहादत से सैराब हो गए और बा'ज़ किताबों में लिखा है कि 19 रमज़ान जुमुआ़ की रात में आप ज़ख़्मी हुवे और 21 रमज़ान शबे यक शम्बा आप की शहादत हुई। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعلم

आप के बड़े फ़रज़न्दे अरजुमन्द ह़ज़रते इमाम ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और आप को दफ़्न फ़रमाया ।(1) (تاریخ الخلفاء،وازالۃ الخفاء وغیرہ)

करामत

क़ब्र वालों से सुवाल व जवाब

ह़ज़रते सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि हम लोग अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ मदीनए मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ़ में गए तो आप ने क़ब्रों के सामने खड़े हो कर बा आवाज़े बुलन्द फ़रमाया कि ऐ क़ब्र वालो ! السلام علیکم ورحمۃ اللہ क्या तुम लोग अपनी ख़बरें हमें सुनाओगे या हम तुम लोगों को तुम्हारी ख़बरें सुनाएं ? इस के जवाब में क़ब्रों के अन्दर से आवाज़ आई : "وعلیک السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ" ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप ही हमें येह सुनाइये कि हमारी मौत के बा'द हमारे घरों में क्या क्या मुआ़मलात हुवे ? ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि ऐ क़ब्र वालो ! तुम्हारे बा'द तुम्हारे घरों की ख़बर येह है कि तुम्हारी बीवियों ने दूसरे लोगों से निकाह़ कर लिया और तुम्हारे माल व दौलत को तुम्हारे वारिसों ने आपस में तक़्सीम कर लिया और तुम्हारे छोटे छोटे बच्चे यतीम हो कर दर बदर फिर रहे हैं और तुम्हारे मज़बूत़ और ऊंचे ऊंचे मह़लों में तुम्हारे दुश्मन आराम और चैन के साथ ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं । इस के जवाब में क़ब्रों में से एक मुर्दे की येह दर्दनाक आवाज़ आई कि ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमारी ख़बर येह है कि हमारे कफ़न

1 ...تاریخ الخلفاء،الخلفاء الراشدون،علی بن ابی طالب رضی اللّٰہ عنہ،ص۱۳۲ واسد الغابۃ، علی بن ابی طالب، ج٤، ص۱۲۸۔۱۳۲ ملتقطاً و ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء، مقصد دوم،امامآثرامیرالمؤمنین و امام اشجعین اسداللّٰہ...الخ، ج٤، ص٤٠٥ ملتقطاًو معرفۃ الصحابۃ،علی بن ابی طالب، الحدیث:۳۲۱،۳۲۳،۳۲۵، ج۱، ص۱۰۰ ملتقطاًوغیرھما

पुराने हो कर फट चुके हैं और जो कुछ हम ने दुन्या में ख़र्च किया था उस को हम ने यहां पा लिया है और जो कुछ हम दुन्या में छोड़ आए थे उस में हमें घाटा ही घाटा उठाना पड़ा है।[1] (حجۃ اللہ علی العالمین ج۲،ص۸۶۳)

तबसेरा

इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला अपने मह़बूब बन्दों को येह ताक़त व क़ुदरत अ़ता फ़रमाता है कि क़ब्र वाले इन को सुवालों का बा आवाज़े बुलन्द इस त़रह़ जवाब देते हैं कि दूसरे ह़ाज़िरीन भी सुन लेते हैं। येह क़ुदरत व त़ाक़त आ़म इन्सानों को ह़ासिल नहीं है। लोग अपनी आवाज़ें तो मुर्दों को सुना सकते हैं और मुर्दे इन की आवाज़ों को सुन भी लेते हैं मगर क़ब्र के अन्दर से मुर्दों की आवाज़ों को सुन लेना येह आ़म इन्सानों के बस की बात नहीं है, बल्कि येह ख़ासाने ख़ुदा का ख़ास ह़िस्सा और ख़ास्सा है जिस को इन की करामत के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता और इस रिवायत से येह भी पता चला कि क़ब्र वालों का येह इक़्बाली बयान है कि मरने वाले दुन्या में जो मालो दौलत छोड़ कर मर जाते हैं उस में मरने वालों के लिये सरासर घाटा ही घाटा है और जिस मालो दौलत को वोह मरने से पहले ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करते हैं वोही उन के काम आने वाला है।

फ़ालिज ज़दा अच्छा हो गया

अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुबकी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी किताब "त़बक़ात" में ज़िक्र फ़रमाया है कि एक मरतबा अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने दोनों शाहज़ादगान ह़ज़रते इमामे ह़सन व इमामे ह़ुसैन (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के साथ ह़रमे का'बा में ह़ाज़िर

[1] حجۃ اللہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملۃ جمیلۃ ...الخ، ص ۶۱۳

थे कि दरमियानी रात में नागहां येह सुना कि एक शख़्स बहुत ही गिड़ गिड़ा कर अपनी ह़ाजत के लिये दुआ़ मांग रहा है और ज़ार ज़ार रो रहा है। आप ने हुक्म दिया कि उस शख़्स को मेरे पास लाओ। वोह शख़्स इस ह़ाल में ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा कि उस के बदन की एक करवट फ़ालिज ज़दा थी और वोह ज़मीन पर घिसटता हुवा आप के सामने आया। आप ने उस का क़िस्सा दरयाफ़्त फ़रमाया तो उस ने अ़र्ज़ किया कि ऐ अमीरल मोअमिनीन ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मैं बहुत ही बे बाकी के साथ क़िस्म क़िस्म के गुनाहों में दिन रात मुन्हमिक रहता था और मेरा बाप जो बहुत ही सालेह़ और पाबन्दे शरीअ़त मुसलमान था, बार बार मुझ को टोकता और गुनाहों से मन्अ़ करता रहता था मैं ने एक दिन अपने बाप की नसीह़त से नाराज़ हो कर उस को मार दिया और मेरी मार खा कर मेरा बाप रन्जो ग़म में डूबा हुवा ह़रमे का'बा आया और मेरे लिये बद दुआ़ करने लगा। अभी उस की दुआ़ ख़त्म भी नहीं हुई थी कि बिल्कुल ही अचानक मेरी एक करवट पर फ़ालिज का अषर हो गया और मैं ज़मीन पर घिसट कर चलने लगा। इस ग़ैबी सज़ा से मुझे बड़ी इ़ब्रत ह़ासिल हुई और मैं ने रो रो कर अपने बाप से अपने जुर्म की मुआ़फ़ी त़लब की और मेरे बाप ने अपनी शफ़्क़ते पिदरी से मजबूर हो कर मुझ पर रह़्म खाया और मुझे मुआ़फ़ कर दिया और कहा कि बेटा चल ! जहां मैं ने तेरे लिये बद दुआ़ की थी उसी जगह अब मैं तेरे लिये सिह़्ह़त व सलामती की दुआ़ मांगूंगा। चुनान्चे, मैं अपने बाप को ऊंटनी पर सुवार कर के मक्कए मुअ़ज़्ज़मा ला रहा था कि रास्ते में बिल्कुल नागहां ऊंटनी एक मक़ाम पर बिदक कर भागने लगी और मेरा बाप उस की पीठ पर से गिर कर दो चट्टानों के दरमियान हलाक हो गया और अब मैं अकेला ही ह़रमे का'बा में आ कर दिन रात रो रो कर ख़ुदा तआ़ला से अपनी तन्दुरुस्ती के लिये दुआ़एं मांगता रहता हूं। अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सारी सर

गुज़श्त सुन कर फ़रमाया कि ऐ शख़्स ! अगर वाक़ेई तेरा बाप तुझ से खुश हो गया था तो इत्मीनान रख कि खुदा करीम भी तुझ से खुश हो गया है। उस ने कहा कि ऐ अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ में ब हलफ़े शरई क़सम खा कर कहता हूं कि मेरा बाप मुझ से खुश हो गया था। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस शख़्स की हालते ज़ार पर रह्म खा कर उस को तसल्ली दी और चन्द रक्अत नमाज़ पढ़ कर उस की तन्दुरुस्ती के लिये दुआ मांगी। फिर फ़रमाया कि ऐ शख़्स ! उठ खड़ा हो जा ! येह सुनते ही वोह बिला तकल्लुफ़ उठ कर खड़ा हो गया और चलने लगा। आप ने फ़रमाया कि ऐ शख़्स ! अगर तू ने क़सम खा कर येह न कहा होता कि तेरा बाप तुझ से खुश हो गया था तो मैं हरगिज़ तेरे लिये दुआ न करता।[1] (حجۃ اللہ علی العالمین، ج۲، ص۸۶۳)

गिरती हुई दीवार थम गई

हज़रते इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रावी हैं कि एक मरतबा अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक दीवार के साए में एक मुक़द्दमे का फ़ैसला फ़रमाने के लिये बैठ गए। दरमियाने मुक़द्दमा में लोगों ने शोर मचाया कि ऐ अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यहां से उठ जाइये येह दीवार गिर रही है। आप ने निहायत सुकून व इत्मीनान के साथ फ़रमाया कि मुक़द्दमे की कार रवाई जारी रखो। अल्लाह तआला बेहतरीन हाफ़िज़ व नासिर व निगेहबान है। चुनान्चे, इत्मीनान के साथ आप उस मुक़द्दमे का फ़ैसला फ़रमा कर जब वहां से चल दिये तो फ़ौरन ही वोह दीवार गिर गई।[2] (ازالۃ الخفاء، مقصد۲، ص۲۷۳)

---

1 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة ...الخ، ص٦١٤

2 ......ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، امامآثر امير المؤمنين و امام اشجعين اسد الله...الخ، ومن كراماته، ج٤، ص٤٩٤

तबसेरा

येह रिवायत इस बात की दलील है कि ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस अपने औलियाए किराम को ऐसी ऐसी रूहानी ताक़तें अ़ता फ़रमाता है कि इन के इशारों से गिरती हुई दीवारें तो क्या चीज़ें हैं? बहते हुवे दरयाओं की रवानी भी ठहर जाती है। सच है

कोई अन्दाज़ा कर सकता है इस के ज़ोरे बाज़ू का ?
निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती हैं तक़दीरें

आप को झूटा कहने वाला अन्धा हो गया

अ़ली बिन ज़ाज़ान का बयान है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मरतबा कोई बात इरशाद फ़रमाई तो एक बद नसीब ने निहायत ही बे बाकी के साथ येह कह दिया कि ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप झूटे हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि ऐ शख़्स! अगर मैं सच्चा हूं तो ज़रूर तू क़हरे इलाही में गिरिफ़्तार हो जाएगा। उस गुस्ताख़ ने कह दिया कि आप मेरे लिये बद दुआ़ कर दीजिये, मुझे इस की परवाह नहीं है। उस के मुंह से इन अल्फ़ाज़ का निकलना था कि बिल्कुल ही अचानक वोह शख़्स दोनों आंखों से अन्धा हो गया और इधर उधर हाथ पाउं मारने लगा।(1) (ازالۃ الخفاء، مقصد۲،ص۲۷۳)

कौन कहां मरेगा? कहां दफ़्न होगा?

हज़रते अस्बग़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि हम लोग एक मरतबा अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ सफ़र में मैदाने करबला के अन्दर ठीक उस जगह पहुंचे जहां आज

---

(1)……ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء، مقصد دوم، اما مآثر امیرالمؤمنین و امام اشجعین اسداللّٰہ...الخ،ومن کراماتہ،ج٤،ص٤٩٥

हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्रे अन्वर बनी हुई है, तो आप ने फ़रमाया कि इस जगह आइन्दा ज़माने में एक आले रसूल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) का क़ाफ़िला ठहरेगा और इस जगह उन के ऊंट बन्धे हुवे होंगे और इसी मैदान में जवानाने अहले बैत की शहादत होगी और इसी जगह उन शहीदों का मद्फ़न बनेगा और इन लोगों पर आस्मान व ज़मीन रोएंगे ।(1) (ازالۃ الخفاء،مقصد۲،ص۲۷۳بحوالہ الریاض النضرۃ)

तबसेरा

रिवायते बाला से पता चलता है कि औलियाउल्लाह को ब ज़रीअ़ए कश्फ़ बरसों बा'द होने वाले वाक़िआ़त और लोगों के हालात यहां तक कि लोगों की मौत और मदफ़न की कैफ़िय्यात का इल्म हासिल हो जाता है और येह दर हक़ीक़त इल्मे ग़ैब है जो **अल्लाह** तआ़ला के अ़ता फ़रमाने से औलियाए किराम को हासिल हुवा करता है और येह औलियाए किराम की करामत हुवा करती है।

फ़िरिश्तों ने चक्की चलाई !

हज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाने के लिये उन के मकान पर भेजा तो मैं ने वहां येह देखा कि उन के घर में चक्की बिग़ैर किसी चलाने वाले के खुद ब खुद चल रही है। जब मैं ने बारगाहे रिसालत में इस अ़जीब करामत का तज़्किरा किया तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ अबू ज़र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) **अल्लाह** तआ़ला के कुछ फ़िरिश्ते ऐसे भी हैं जो ज़मीन में सैर करते रहते हैं, **अल्लाह** तआ़ला ने उन फ़िरिश्तों

1 ......الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ،الباب الرابع فی مناقب امیرالمؤمنین علی بن ابی طالب،الفصل التاسع فی ذکر نبذمن فضائلہ، ذکر کراماتہ،ج۲،ص۲۰۱

की येह भी ज़िम्मेदारी (ड्यूटी) लगा दी है कि वोह मेरी आल की इमदाद व इआनत करते रहें।(1) (ازالۃ الخفاء،مقصد۲،ص۲۷۳)

तबसेरा

इस रिवायत से येह सबक़ मिलता है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आले पाक को बारगाहे ख़ुदावन्दी में इस क़दर क़ुर्ब और मक़्बूलिय्यत ह़ासिल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने कुछ फ़िरिश्तों को इन की इमदाद व नुसरत और ह़ाजत बर आरी के लिये ख़ास तौर पर मुक़र्रर फ़रमा दिया है। येह शरफ़ ह़ज़राते अहले बैत को हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निस्बते ख़ास्सा की वजह से ह़ासिल हुवा है। (سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ) सुल्त़ाने मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत और इन के वक़ार व इक़्तिदार का क्या कहना ? कि आप के घर वालों की चक्की फ़िरिश्ते चलाया करते थे।

मैं कब वफ़ात पाऊंगा ?

ह़ज़रते फ़ुज़ाला बिन अबी फ़ुज़ाला رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इरशाद फ़रमाते हैं कि एक मरतबा अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ मक़ामे "यम्बअ़" में बहुत सख़्त बीमार हो गए तो मैं अपने वालिद के हमराह उन की इ़यादत के लिये गया। दौराने गुफ़्तगू मेरे वालिद ने अ़र्ज़ किया : ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ आप इस वक़्त ऐसी जगह अ़लालत की ह़ालत में मुक़ीम हैं अगर इस जगह आप की वफ़ात हो गई तो "क़बीलए जुहैना" के गंवारों के सिवा और कौन आप की तजहीज़ व तक्फ़ीन करेगा ? इस लिये मेरी गुज़ारिश है कि आप मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ ले चलें क्यूंकि वहां अगर येह ह़ादिषा रू नुमा हुवा तो वहां आप के जां निषार मुहाजिरीन व अन्सार और दूसरे मुक़द्दस सहाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ आप की नमाज़े

(1)......الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ،الباب الرابع فی مناقب امیرالمؤمنین علی بن ابی طالب،الفصل التاسع فی ذکر نبذمن فضائلہ، ذکر کراماتہ،ج۲،ص۲۰۲ ملتقطاً

जनाज़ा पढ़ेंगे और येह मुक़द्दस हस्तियां आप के कफ़न व दफ़्न का इन्तिज़ाम करेंगी। येह सुन कर आप ने फ़रमाया कि ऐ अबू फ़ुज़ाला ! तुम इत़्मीनान रखो कि मैं अपनी बीमारी में हरगिज़ हरगिज़ वफ़ात नहीं पाऊंगा। सुन लो उस वक़्त तक हरगिज़ हरगिज़ मेरी मौत नहीं आ सकती जब तक कि मुझे तल्वार मार कर मेरी पेशानी और दाढ़ी को ख़ून से रंगीन न कर दिया जाए।[1] (ازالۃ الخفاء،مقصد۲،ص۲۷۳)

तबसेरा

चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि बद बख़्त अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुलजिम मुरादी ख़ारिजी ने आप की मुक़द्दस पेशानी पर तल्वार चला दी, जो आप की पेशानी को काटती हुई जबड़े तक पैवस्त हो गई। उस वक़्त आप की ज़बाने मुबारक से येह जुम्ला अदा हुवा : فُزْتُ بِرَبِّ الْكَعْبَةِ (या'नी का'बा के रब की क़सम ! कि मैं कामयाब हो गया) इस ज़ख़्म में आप शहादत के शरफ़ से सरफ़राज़ हो गए और आप ने ह़ज़रते अबू फ़ुज़ाला رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मक़ामे यम्बअ़ में जो फ़रमाया था वोह ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ सह़ीह़ हो कर रहा।

दरे ख़ैबर का वज़्न

जंगे ख़ैबर में जब घमसान की जंग होने लगी तो ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ढाल कट कर गिर पड़ी तो आप ने जोशे जिहाद में आगे बढ़ कर क़ल्अ़ए ख़ैबर का फ़ाटक उखाड़ डाला और उस के एक कवाड़ को ढाल बना कर उस पर दुश्मनों की तल्वारों को रोकते थे। येह किवाड़ इतना भारी और वज़्नी था कि जंग के ख़ातिमे के बा'द चालीस आदमी मिल कर भी उस को न उठा सके।[2] (زرقانی ج۲،ص۲۳۰)

---

[1] ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصددوم، اما مآثر اميرالمؤمنين وامام اشجعين اسد الله...الخ، ومن كراماته، ج٤، ص٤٩٦

[2] شرح الزرقاني على المواهب اللدنية، غزوة خيبر، ج٣، ص٢٦٧ ملتقطاً

तबसेरा

क्या फ़ातिहे ख़ैबर के इस कारनामे को इन्सानी ताक़त की कार गुज़ारी कहा जा सकता है ? हरगिज़ हरगिज़ नहीं । येह इन्सानी ताक़त का कारनामा नहीं है बल्कि येह रूहानी ताक़त का एक शाहकार है जो फ़क़त **अल्लाह** वालों ही का हिस्सा है जिस को उर्फ़े आम्मा में **करामत** कहा जाता है ।

कटा हुवा हाथ जोड़ दिया !

रिवायत है कि एक ह़बशी ग़ुलाम जो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का इन्तिहाई मुख़्लिस मुहि़ब्ब था, शामते आ'माल से उस ने एक मरतबा चोरी कर ली, लोगों ने उस को पकड़ कर दरबारे ख़िलाफ़त में पेश कर दिया और ग़ुलाम ने अपने जुर्म का इक़रार भी कर लिया । अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उस का हाथ काट दिया । जब वोह अपने घर को रवाना हुवा तो रास्ते में ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ और इब्नुल कुर्रा से उस की मुलाक़ात हो गई । इब्नुल कुर्रा ने पूछा कि तुम्हारा हाथ किस ने काटा ? तो ग़ुलाम ने कहा : अमीरुल मोअमिनीन व या'सूबुल मुस्लिमीन, दामादे रसूल व ज़ौजे बतूल ने । इब्नुल कुर्रा ने कहा कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने तुम्हारा हाथ काट डाला फिर भी तुम इस क़दर ए'ज़ाज़ व इकराम और मद्ह़ो षना के साथ उन का नाम लेते हो ? ग़ुलाम ने कहा कि क्या हुवा ? उन्हों ने ह़क़ पर मेरा हाथ काटा और मुझे अ़ज़ाबे जहन्नम से बचा लिया । ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने दोनों की गुफ़्त्गू सुनी और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से इस का तज़्किरा किया तो अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उस ग़ुलाम को बुलवा कर उस का कटा हुवा हाथ उस की कलाई पर रख कर रूमाल से छुपा दिया फिर कुछ पढ़ना शुरूअ़ कर दिया । इतने में एक ग़ैबी आवाज़ आई कि रूमाल हटाओ ! जब लोगों ने रूमाल हटाया तो ग़ुलाम का कटा हुवा हाथ इस त़रह़ कलाई से जुड़ गया था कि कहीं कटने का निशान तक भी नहीं था ।(1) (تفسیر کبیر، ج۵، ص۴۷۹)

1 ......التفسیر الکبیر، سورة الکھف، تحت الآیة:۹-۱۲، ج۷، الجزء۲۱، ص۴۳٤

शोहर, औ़रत का बेटा निकला !

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के काशानए खि़लाफ़त से कुछ दूर एक मस्जिद के पहलू में दो मियां बीवी रात भर झगड़ा करते रहे, सुब्ह़ को अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोनों को बुला कर झगड़े का सबब दरयाफ़्त फ़रमाया, शोहर ने अ़र्ज़ किया : ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मैं क्या करूं ? निकाह़ के बा'द मुझे इस औ़रत से बे इन्तिहा नफ़रत हो गई, येह देख कर बीवी मुझ से जगड़ा करने लगी, फिर बात बढ़ गई और रात भर लड़ाई होती रही। आप ने तमाम ह़ाज़िरीने दरबार को बाहर निकाल दिया और औ़रत से फ़रमाया कि देख मैं तुझ से जो सुवाल करूं उस का सच सच जवाब देना। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ऐ औ़रत ! तेरा नाम येह है ? तेरे बाप का नाम येह है ? औ़रत ने कहा कि बिल्कुल ठीक ठीक आप ने बताया। फिर आप ने फ़रमाया कि ऐ औ़रत तू याद कर कि तू ज़िनाकारी से ह़ामिला हो गई थी और एक मुद्दत तक तू और तेरी मां इस ह़म्ल को छुपाती रही। जब दर्दे ज़ेह शुरूअ़ हुवा तो तेरी मां तुझे उस घर से बाहर ले गई और जब बच्चा पैदा हुवा तो उस को एक कपड़े में लपेट कर तू ने मैदान में डाल दिया । इत्तिफ़ाक़ से एक कुत्ता उस बच्चे के पास आया। तेरी मां ने उस कुत्ते को पथ्थर मारा लेकिन वोह पथ्थर बच्चे को लगा और उस का सर फट गया तेरी मां को बच्चे पर रह़म आ गया और उस ने बच्चे के ज़ख़्म पर पट्टी बांध दी। फिर तुम दोनों वहां से भाग खड़ी हुईं। इस के बाद उस बच्चे की तुम दोनों को कुछ भी ख़बर नहीं मिली। क्या येह वाक़िआ़ सच है ? औ़रत ने कहा : कि हां ! ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह पूरा वाक़िआ़ ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ सह़ीह़ है। फिर आप ने फ़रमाया कि ऐ मर्द ! तू अपना सर खोल कर इस को दिखा दे। मर्द ने सर खोला तो उस ज़ख़्म का निशान मौजूद था। इस के बा'द अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ने फ़रमाया कि ऐ औरत ! येह मर्द तेरा शोहर नहीं बल्कि तेरा बेटा है, तुम दोनों अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो कि उस ने तुम दोनों को हराम कारी से बचा लिया, अब तू अपने इस बेटे को ले कर अपने घर चली जा।[1] (شواہد النبوۃ، ص ۱۶۱)

तबसेरा

मज़कूरा बाला दोनों मुस्तनद करामतों को बग़ौर पढ़िये और ईमान रखिये कि खुदावन्दे कुद्दूस के औलियाए किराम आम इन्सानों की तरह नहीं हुवा करते बल्कि अल्लाह तआला अपने इन महबूब बन्दों को ऐसी ऐसी रूहानी ताक़तों का बादशाह बल्कि शहनशाह बना देता है कि इन बुज़ुर्गों के तसर्रुफ़ात और इन की रूहानी ताक़तों और कुदरतों की मन्ज़िले बुलन्द तक किसी बड़े से बड़े फ़लसफ़ी की अक़्ल व फ़हम की भी रसाई नहीं हो सकती।

खुदा की क़सम ! मैं हैरान हूं कि कितने बड़े जाहिल या मुतजाहिल हैं वोह लोग जो औलियाए किराम को बिल्कुल अपने ही जैसा मुल्ला समझ कर इन के साथ बराबरी का दा'वा करते हैं और औलियाए किराम के तसर्रुफ़ात का चिल्ला चिल्ला कर इन्कार करते फिरते हैं। तअज्जुब है कि ऐसे ऐसे वाक़िआत जो नूरे हिदायत के चांद तारे हैं इन मुन्किरों की निगाह से आज तक ओझल ही हैं मगर इस में कोई तअज्जुब की बात नहीं, जो दोनों हाथों से अपनी आंखों को बन्द कर ले उस को चांद सितारे तो क्या सूरज की रोशनी भी नज़र नहीं आ सकती। दर हक़ीक़त औलियाए किराम के मुन्किरीन का येही हाल है।

ज़रा देर में क़ुरआने करीम ख़त्म कर लेते

येह करामत रिवायाते सहीहा से षाबित है कि आप घोड़े पर सुवार होते वक़्त एक पाउं रिकाब में रखते और क़ुरआने मजीद शुरूअ करते और दूसरा पाउं रिकाब में रख कर

1 ......شواھد النبوۃ، رکن سادس دربیان شواھد ودلایلی...الخ،ص ۲۱۳

घोड़े की ज़िन पर बैठने तक इतनी देर में एक कुरआने मजीद ख़त्म कर लिया करते थे।[1] (شواہد النبوۃ،ص ۱۶۰)

इशारे से दरया की तुग़्यानी ख़त्म

एक मरतबा नहरे फ़ुरात में ऐसी ख़ौफ़नाक तुग़्यानी आ गई कि सैलाब में तमाम खेतियां ग़र्क़आब हो गई लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरबारे गोहरबार में फ़रयाद की। आप फ़ौरन ही उठ खड़े हुवे और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जुब्बा मुबारका व इमामए मुक़द्दसा व चादरे मुबारका ज़ैबे तन फ़रमा कर घोड़े पर सुवार हुवे और आदमियों की एक जमाअ़त जिस में ह़ज़रते इमामे ह़सन व इमाम हुसैन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا भी थे, आप के साथ चल पड़े। आप ने पुल पर पहुंच कर अपने अ़सा से नहरे फ़ुरात की त़रफ़ इशारा किया तो नहर का पानी एक गज़ कम हो गया। फिर दूसरी मरतबा इशारा फ़रमाया तो मज़ीद एक गज़ कम हो गया जब तीसरी बार इशारा किया तो तीन गज़ पानी उतर गया और सैलाब ख़त्म हो गया। लोगों ने शोर मचाया कि अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बस कीजिये येही काफ़ी है।[2] (شواہد النبوۃ،ص ۱۶۲)

जासूस अन्धा हो गया !

एक शख़्स आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास रह कर जासूसी किया करता था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की खुफ़्या ख़बरें आप के मुख़ालिफ़ीन को पहुंचाया करता था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब उस से दरयाफ़्त फ़रमाया तो वोह शख़्स क़समें खाने लगा और अपनी बराअत ज़ाहिर करने लगा। आप ने जलाल में आ कर फ़रमाया कि

---

1 ......شواھد النبوۃ، رکن سادس دربیان شواھد ودلایلی...الخ، ص ۲۱۲

2 ......شواھد النبوۃ، رکن سادس دربیان شواھد ودلایلی...الخ، ص ۲۱۴

अगर तू झूटा है तो अल्लाह तआ़ला तेरी आंखों की रोशनी छीन ले। एक हफ़्ता भी नहीं गुज़रा था कि येह शख़्स अन्धा हो गया और लोग इस को लाठी पकड़ा कर चलाने लगे।[1] (شواہد النبوۃ،ص۱۶۷)

तुम्हारी मौत किस त़रह़ होगी ?

एक शख़्स आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा तो आप ने उस को उस के ह़ालात बता कर येह बताया कि तुम को फ़ुलां खजूर के दरख़्त पर फांसी दी जाएगी। चुनान्चे, उस शख़्स के बारे में जो कुछ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया था वोह ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ दुरुस्त निकला और आप की पेशगोई पूरी हो कर रही।[2] (شواہد النبوۃ،ص۱۶۲)

पथ्थर उठाया तो चश्मा उबल पड़ा !

मक़ामे सिफ़्फ़ीन को जाते हुवे आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का लश्कर एक ऐसे मैदान से गुज़रा जहां पानी नायाब था, पूरा लश्कर प्यास की शिद्दत से बे ताब हो गया। वहां के गिर्जा घर में एक राहिब रहता था। उस ने बताया कि यहां से दो कोस के फ़ासिले पर पानी मिल सकेगा। कुछ लोगों ने इजाज़त त़लब की ताकि वहां से जा कर पानी पियें, येह सुन कर आप अपने खच्चर पर सुवार हो गए और एक जगह की त़रफ़ इशारा फ़रमाया कि उस जगह तुम लोग ज़मीन को खोदो। चुनान्चे, लोगों ने ज़मीन की खुदाई शुरूअ़ कर दी तो एक पथ्थर ज़ाहिर हुवा। लोगों ने उस पथ्थर को निकालने की इन्तिहाई कोशिश की लेकिन तमाम आलात बेकार हो गए और वोह पथ्थर न निकल सका। येह देख कर आप को जलाल आ गया और आप ने अपनी सुवारी से उतर कर आस्तीन चढ़ाई और दोनों हाथों की उंगलियों को उस पथ्थर की दराज़ में डाल कर ज़ोर लगाया तो वोह

---

1 ......شواھد النبوۃ، رکن سادس دربیان شواھد ودلایلی...الخ،ص ۲۲۱

2 ......شواھد النبوۃ، رکن سادس دربیان شواھد ودلایلی...الخ،ص ۲۱۵

पथ्थर निकल पड़ा और उस के नीचे से एक निहायत ही साफ़ शफ़्फ़ाफ़ और शीरीं पानी का चश्मा ज़ाहिर हो गया और तमाम लश्कर उस पानी से सैराब हो गया। लोगों ने अपने जानवरों को भी पिलाया और लश्कर की तमाम मश्कों को भी भर लिया, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस पथ्थर को उस की जगह पर रख दिया। गिर्जा घर का ईसाई राहिब आप की येह करामत देख कर सामने आया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से दरयाफ़्त किया कि क्या आप फ़िरिश्ते हैं? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : नहीं। उस ने पूछा : क्या आप नबी हैं? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : नहीं। उस ने कहा : फिर आप कौन हैं? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं पैग़म्बरे मुर्सल हज़रते मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ख़ातिमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सहाबी हूं और मुझ को हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चन्द बातों की वसिय्यत भी फ़रमाई है। येह सुन कर वोह ईसाई राहिब कलिमा शरीफ़ पढ़ कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गया।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : तुम ने इतनी मुद्दत तक इस्लाम क्यूं क़बूल नहीं किया था? राहिब ने कहा कि हमारी किताबों में येह लिखा हुवा है कि इस गिर्जाघर के क़रीब जो एक चश्मा पोशीदा है और इस चश्मे को वोही शख़्स ज़ाहिर करेगा जो या तो नबी होगा या नबी का सहाबी होगा। चुनान्चे, मैं और मुझ से पहले बहुत से राहिब इस गिर्जाघर में इसी इन्तिज़ार में मुक़ीम रहे। अब आज आप ने येह चश्मा ज़ाहिर कर दिया तो मेरी मुराद बर आई। इस लिये मैं ने आप के दीन को क़बूल कर लिया। राहिब की तक़रीर सुन कर आप रो पड़े और इस क़दर रोए कि आप की रीश मुबारक आंसूओं से तर हो गई और फिर आप ने इरशाद फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ कि इन लोगों की किताबों में भी मेरा ज़िक्र है। येह राबिह मुसलमान हो कर आप के ख़ादिमों में शामिल हो गया और

आप के लश्कर में दाखि़ल हो कर शामियों से जंग करत हुवे शहीद हो गया और आप ने इस को अपने दस्ते मुबारक से दफ़्न किया और इस के लिये मग़्फ़िरत की दुआ भी फ़रमाई ।[1] (شواہد النبوۃ،ص۱۶۴)

﴾5﴿ ह़ज़रते त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप का नामे नामी भी अ़शरए मुबश्शरा की फ़ेहरिस्ते गिरामी में है। मक्कए मुकर्रमा के अन्दर ख़ानदाने क़ुरैश में आप की पैदाइश हुई। मां बाप ने "त़लह़ा" नाम रखा, मगर दरबारे नबुव्वत से इन को "फ़य्याज़" व "जूद" व "ख़ैर" के मुअ़ज़्ज़ज़ अलक़ाब अ़त़ा हुवे। येह जमाअ़ते सहाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم में साबिक़ीने अव्वलीन के जुमरे में हैं।[2] इन के इस्लाम लाने का वाक़िआ़ येह है कि येह ब सिलसिलए तिजारत बसरा गए तो वहां के ईसाई पादरी ने इन से दरयाफ़्त किया कि क्या मक्का में "अह़मद नबी" पैदा हो चुके हैं ? इन्हों ने ह़ैरान हो कर पूछा : कौन "अह़मद नबी ?" पादरी ने कहा : "अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब । वो नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां हैं और उन की नबुव्वत के ज़ुहूर का येही ज़माना है और उन की पहचान का निशान येह है कि वोह मक्कए मुकर्रमा में पैदा होंगे और खजूरों वाले शहर (मदीनए मुनव्वरा) की त़रफ़ हिजरत करेंगे।"

चूंकि उस वक़्त तक हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी नबुव्वत का ए'लान नहीं फ़रमाया था इस लिये ह़ज़रते त़लह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पादरी को नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां ख़ातिमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में कोई जवाब न दे सके, लेकिन बसरा

1 ......شواھد النبوۃ، رکن سادس دربیان شواھد ودلایلی...الخ،ص۲۱۶

2 ......الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ، الباب الخامس فی مناقب ابی محمدطلحۃ بن عبید اللّٰہ، الفصل الثانی فی اسمہ و کنیتہ، ج۲،ص۲۴۵

से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा आने के बा'द जब इन को पता चला कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी नबुव्वत का ए'लान फ़रमा दिया है तो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ बारगाहे नबुव्वत में ह़ाज़िर हो कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे।(1)

कुफ़्फ़ारे मक्का ने इन को बेह़द सताया और रस्सी बांध बांध कर इन को मारते रहे मगर येह पहाड़ की त़रह़ दीने इस्लाम पर षाबित क़दम रहे। फिर हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा चले गए और जंगे बद्र के सिवा तमाम इस्लामी जंगों में कुफ़्फ़ार से लड़ते रहे। जंगे बद्र में इन की ग़ैर ह़ाज़िरी का येह सबब हुवा कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को और ह़ज़रते सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अबू सुफ़्यान के क़ाफ़िले की तलाश में भेज दिया था। अबू सुफ़्यान का क़ाफ़िला साह़िले समन्दर के रास्तों से मक्कए मुकर्रमा चला गया और येह दोनों ह़ज़रात जब लौट कर मैदाने बद्र में पहुंचे तो जंग ख़त्म हो चुकी थी।

जंगे उहुद में इन्हों ने बड़ी ही जां बाज़ी और सरफ़रोशी का मुज़ाहरा किया। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कुफ़्फ़ार के ह़म्लों से बचाने में चूंकि येह तल्वार और नेज़ों की बोछाड़ को अपने हाथ पर रोकते रहे इस लिये आप की उंगली कट गई और हाथ बिल्कुल शल हो गया था और इन के बदन पर तीर, तल्वार और नेज़ों के पछत्तर ज़ख़्म लगे।(2)

इन के फ़ज़ाइल व मनाक़िब में चन्द ह़दीषें भी वारिद हुई हैं। जंगे उहुद के दिन जब जंग रुक जाने के बा'द हुज़ूरे अकरम

---

1 ......الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ، الباب الخامس فی مناقب ابی محمد طلحۃ بن عبید اللّٰہ، الفصل الرابع فی اسلامہ، ج۲، ص۲۵۰

2 ......اسد الغابۃ، طلحۃ بن عبید اللّٰہ القرشی التیمی، ج۳، ص۸۳،۸۴ والاکمال فی اسماء الرجال، حرف الطاء، فصل فی الصحابۃ، ص۶۰۱

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चट्टान पर चढ़ने लगे तो लोहे की ज़िर्ह के बोझ की वजह से चट्टान पर चढ़ना दुश्वार हो गया। उस वक़्त हज़रते त़लह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बैठ गए और इन के बदन के ऊपर से गुज़र कर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चट्टान पर चढ़े और ख़ुश हो कर फ़रमाया : "اَوْجَبَ طَلْحَة" (या'नी त़लह़ा ने अपने लिये जन्नत वाजिब कर ली।)[1] (مشکوٰۃ،ص۵۶۶)

इसी त़रह़ हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया : ज़मीन पर चलता फिरता शहीद "**त़लह़ा**" है।[2]

(کنز العمال،ج۱۲،ص۲۷۵مطبوعہ حیدرآباد)

20 जुमादिल उख़रा सि. **36** ही. में जंगे जमल के दौरान आप को एक तीर लगा और आप चौंसठ बरस की उ़म्र में शहादत से सरफ़राज़ हुवे।[3] (اکمال ص۶۰۱وعشرہ مبشرہ ص۲۴۵)

करामत

एक क़ब्र से दूसरी क़ब्र में

शहादत के बा'द आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को बसरा के क़रीब दफ़्न कर दिया गया मगर जिस मक़ाम पर आप की क़ब्र शरीफ़ बनी वोह नुशैब में था इस लिये क़ब्र मुबारक कभी कभी पानी में डूब जाती थी। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने एक शख़्स को बार बार मुतवातिर ख़्वाब में आ कर अपनी क़ब्र बदलने का हुक्म दिया। चुनान्चे, उस

1 ......مشكاة المصابيح، كتاب المناقب، باب مناقب العشرة رضى الله عنهم، الحديث: ٦١٢١، ج٢، ص ٤٣٣

2 ......كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، تتمّة العشرة رضى الله عنهم اجمعين طلحة بن عبيد الله، الحديث: ٣٦٥٩٢، ج٧، الجزء ١٣، ص ٨٦

3 ......الاستيعاب فى معرفة الاصحاب، طلحة بن عبيدالله التيمى، ج٢، ص ٣٢٠ ملتقطاً

शख़्स ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से अपना ख़्वाब बयान किया तो आप ने दस हज़ार दिरहम में एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का मकान ख़रीद कर उस में क़ब्र खोदी और ह़ज़रते त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की मुक़द्दस लाश को पुरानी क़ब्र में से निकाल कर उस क़ब्र में दफ़्न कर दिया। काफ़ी मुद्दत गुज़र जाने के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का मुक़द्दस जिस्म सलामत और बिल्कुल ही तरोताज़ा था।[1] (اکمال ص۶۰۱ وعشرہ مبشرہ ص۲۴۵)

तबसेरा

गौर फ़रमाइये कि कच्ची क़ब्र जो पानी में डूबी रहती थी एक मुद्दत गुज़र जाने के बा वुजूद एक वली और शहीद की लाश ख़राब नहीं हुई तो ह़ज़राते अम्बिया عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ख़ुसूसन हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस जिस्म को क़ब्र की मिट्टी भला किस त़रह़ ख़राब कर सकती है ? येही वजह है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَ عَلَی الۡاَرۡضِ اَنۡ تَاکُلَ اَجۡسَادَ الۡاَنۡبِیَاءِ[2] (मिश्क़ात, स.121)

या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने अम्बिया عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के जिस्मों को ज़मीन पर ह़राम फ़रमा दिया है कि ज़मीन इन को कभी खा नहीं सकती।

इसी त़रह़ इस रिवायत से इस मस्अले पर भी रोशनी पड़ती है कि शुहदाए किराम अपने लवाज़िमे ह़यात के साथ अपनी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं, क्यूंकि अगर वोह ज़िन्दा न होते तो क़ब्र में पानी भर जाने से उन को क्या तक्लीफ़ होती ? इसी त़रह़ इस रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि शुहदाए किराम ख़्वाब में आ कर ज़िन्दों को अपने अह़वाल व कैफ़िय्यात से मुत्तलअ़ करते रहते हैं क्यूंकि ख़ुदा

1 ......اسد الغابة، طلحة بن عبیداللّٰه القرشی التیمی، ج۳، ص۸۷

2 ......سنن ابن ماجه، کتاب الجنائز، باب ذکر وفاته ودفنه صلی اللّٰه علیه و سلم، الحدیث: ۱۶۳۶، ج۲، ص۲۹۰

तआ़ला ने उन को येह क़ुदरत अ़ता फ़रमाई है कि वोह ख़्वाब या बेदारी में अपनी क़ब्रों से निकल कर ज़िन्दों से मुलाक़ात और गुफ़्तगू कर सकते हैं। अब ग़ौर फ़रमाइये कि जब शहीदों का येह ह़ाल है और इन की जिस्मानी ह़यात की येह शान है तो फिर ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ख़ास कर हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जिस्मानी ह़यात और इन के तसर्रुफ़ात और इन के इख़्तियार व इक़्तिदार का क्या आ़लम होगा।

ग़ौर फ़रमाइये कि वहाबियों के पेश्वा मौलवी इमाईल देहलवी ने अपनी किताब तक़विय्युतल ईमान में येह मज़मून लिख कर कि "हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मर कर मिट्टी में मिल गए।" (نَعُوْذُ بِاللّٰه) कितना बड़ा जुर्म और ज़ुल्मे अ़ज़ीम किया है।

अल्लाहु अक्बर इन बे अदबों और गुस्ताख़ों ने अपने नोके क़लम से मुह़िब्बीने रसूल के क़ुलूब को किस त़रह़ मजरूह़ व ज़ख़्मी किया है, इस को बयान करने के लिये हमारे पास अल्फ़ाज़ नहीं हैं।

فَاِلَى اللّٰهِ الْمُشْتَكٰى وَهُوَ عَزِيْزٌ ذُوانْتِقَام

﴾6﴿ ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़वाम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه

येह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फूफी ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के फ़रज़न्द हैं। इस लिये येह रिश्ते में शहनशाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फूफीज़ाद भाई और ह़ज़रते सय्यिदा ख़दीजा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के भतीजे और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के दामाद हैं। येह भी अ़शरए मुबश्शरा या'नी उन दस ख़ुश नसीब सह़ाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم में से हैं जिन को हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जन्नती होने की ख़ुश ख़बरी सुनाई।

बहुत ही बुलन्द क़ामत, गोरे और छरीरे बदन के आदमी थे और अपनी वालिदए माजिदा की बेहतरीन तर्बिय्यत की बदौलत बचपन ही से निडर, जफ़ाकश, बुलन्द ह़ौसला और निहायत ही

ऊलुल अ़ज़्म और बहादुर थे। सोलह बरस की उ़म्र में उस वक़्त इस्लाम क़बूल किया जब कि अभी छे या सात आदमी ही ह़ल्क़ा बगोशे इस्लाम हुवे थे। तमाम इस्लामी लड़ाइयों में दिलावराने अ़रब के मुक़ाबले में आप ने जिस मुजाहिदाना बहादुरी का मुज़ाहरा किया तवारीखे़ जंग में इस की मिषाल मिलनी मुश्किल है। आप जिस त़रफ़ भी तल्वार ले कर बढ़ते कुफ़्फ़ार के परे के परे काट कर रख देते।

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जंगे ख़न्दक़ के दिन "ह़वारी" (मुख़्लिस व जां निषार दोस्त) का ख़ित़ाब अ़त़ा फ़रमाया। आप जंगे जमल से बेज़ार हो कर वापस तशरीफ़ ले जा रहे थे कि अ़म्र बिन जरमूज़ ने आप को धोका दे कर शहीद कर दिया। वक़्ते शहादत आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की उ़म्र शरीफ़ चौंसठ बरस की थी। सि. 36 ही. में ब मक़ामे सफ़वान आप की शहादत हुई।

पहले येह "वादियुल सबाअ़" में दफ़्न किये गए मगर फिर लोगों ने इन की मुक़द्दस लाश को क़ब्र से निकाला और पूरे ए'ज़ाज़ व एह़तिराम के साथ ला कर आप को शहरे बसरा में सिपुर्दे ख़ाक किया जहां आप की क़ब्र शरीफ़ मशहूर ज़ियारत गाह है।[1] (اکمال ص۵۹۵وغیرہ)

करामात

बा करामत बरछी

जंगे बद्र में सई़द बिन अल आ़स का बेटा "उ़बैदा" सर से पाउं तक लोहे का लिबास पहने हुवे कुफ़्फ़ार की सफ़ में से निकला और निहायत ही घमन्ड और ग़ुरूर से येह बोला कि ऐ मुसलमानो ! सुन लो कि मैं "अबू कर्श" हूं। उस की येह मग़रूराना ललकार सुन

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الزای، فصل فی الصحابة، ص۵۹۵ واسد الغابة، الزبیربن العوام، ج۲، ص۲۹۵۔۲۹۸ملتقطاً والریاض النضرة فی مناقب العشرة، الباب السادس فی مناقب الزبیربن العوام،الفصل السادس فی خصائصه، ذکراختصاصه...الخ، ج۲، ص۲۷۵

कर हज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जोशे जिहाद में भरे हुवे मुक़ाबले के लिये अपनी सफ़ से निकले मगर येह देखा कि उस की दोनों आंखों के सिवा उस के बदन का कोई हि़स्सा ऐसा नहीं है जो लोहे में छुपा हुवा न हो। आप ने ताक कर उस की आंख में इस ज़ोर से बरछी मारी कि बरछी उस की आंख को छेदती हुई खोपड़ी की हड्डी में चुभ गई और वोह लड़ खड़ा कर ज़मीन पर गिरा और फ़ौरन ही मर गया। हज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब उस की लाश पर पाउं रख कर पूरी ताक़त से बरछी को खींचा तो बड़ी मुश्किल से बरछी निकली लेकिन बरछी का सिरा मुड़ कर ख़म हो गया था। येह बरछी एक बा करामत यादगार बन कर बरसों तक तबर्रुक बनी रही। हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से येह बरछी त़लब फ़रमा ली और इस को अपने पास रखा। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के पास यके बा'द दीगरे मुन्तक़िल होती रही और येह ह़ज़रात ए'ज़ाज़ व एह़तिराम के साथ इस बरछी की ख़ास हि़फ़ाज़त फ़रमाते रहे। फिर ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़रज़न्द हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के पास आ गई यहां तक कि सि. 73 हि. में जब बनू उमय्या के ज़ालिम गवर्नर हज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी ने इन को शहीद कर दिया तो येह बरछी बनू उमय्या के क़ब्ज़े में चली गई। फिर इस के बा'द ला पता हो गई।(1) (بخاری شریف ج۲،ص۵۷۰،غزوہ بدر)

तबसेरा

बुख़ारी शरीफ़ की येह हदीषे पाक हर मुसलमान दीनदार को झन्झोड़ झन्झोड़ कर मुतनब्बेह कर रही है कि बुज़ुर्गाने दीन व

---

(1) ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب ۱۲، الحدیث:۳۹۹۸،ج۳،ص۱۸ وحاشیۃ البخاری، کتاب المغازی،ج۲،ص۵۷۰ و اسد الغابۃ، عبداللّٰہ بن الزبیربن العوام، ج۳،ص۲۴۵۔۲۴۸

उ़-लमाए सालिह़ीन के अ़सा, क़लम, तल्वार, तस्बीह़, लिबास, बरतन वग़ैरा सामानों को यादगार के तौ़र पर बत़ौरे तबर्रुक अपने पास रखना ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم की मुक़द्दस सुन्नत है। ग़ौर फ़रमाइये कि ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की बरछी को तबर्रुक बना कर रखने में ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने किस क़दर एह़तिमाम किया और किस किस त़रह़ इस बरछी का ए'ज़ाज़ व इकराम किया !

बद अ़क़ीदा लोग जो बुज़ुर्गाने दीन के तबर्रुकात और इन की ज़ियारतों का मज़ाक़ उड़ाया करते हैं और अहले सुन्नत को त़ा'ना दिया करते हैं कि येह लोग बुज़ुर्गों की लाठियों, तल्वारों, क़लमों का इकराम व एह़तिराम करते हैं। येह ह़दीष़ उन की आंखें खोल देने के लिये सुरमए हिदायत से कम नहीं बशर्ते कि उन की आंखें फूट न गई हों।

फ़त्ह़े फ़सत़ात़

मिस्र की जंग में ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपने लश्कर के साथ फ़सत़ात़ के क़ल्ए़ का कई माह से मुह़ासरा किये हुवे थे लेकिन इस मज़बूत़ क़ल्ए़ को फ़त्ह़ करने की कोई सबील नज़र नहीं आ रही थी। आप ने दरबारे ख़िलाफ़त में मज़ीद फ़ौजों से इमदाद के लिये दरख़्वास्त भेजी। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने दस हज़ार मुजाहिदीन और चार अफ़्सरों को भेज कर येह तह़रीर फ़रमाया कि इन चार अफ़्सरों में हर अफ़्सर दस हज़ार सिपाह के बराबर है। इन चार अफ़्सरों में ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه भी थे।

ह़ज़रे अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को ह़म्ला आवर मुह़ासिरीन की फ़ौज का सिपह सालार बना दिया। ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने क़ल्ए़ का चक्कर लगा कर अन्दाज़ा फ़रमा लिया कि इस क़ल्ए़ को फ़त्ह़ करना

निहायत ही दुश्वार है लेकिन आप ने अपने फ़ौजी दस्ते को मुख़ातब कर के फ़रमाया कि ऐ बहादुराने इस्लाम ! देखो मैं आज अपनी हस्ती को इस्लाम पर फ़िदा और क़ुरबान करता हूं। येह कह कर आप ने बिल्कुल अकेले क़ल्ए की दीवार पर सीढ़ी लगाई और तन्हा क़ल्ए की फ़सील पर चढ़ कर "अल्लाहु अक्बर" का ना'रा मारा और एक दम फ़सील के नीचे क़ल्ए के अन्दर कूद कर अकेले ही क़ल्ए की अन्दरूनी फ़ौज से लड़ते हुवे क़ल्ए का फाटक खोल दिया और इस्लामी फ़ौज ना'रए तक्बीर बुलन्द करते हुवे क़ल्ए के अन्दर दाख़िल हो गई और दम ज़दन में क़ल्आ फ़त्ह हो गया।

इस मज़बूत व मुस्तह़कम क़ल्ए को जिस बे मिषाल जुरअत और बहादुरी से मिनटों में फ़त्ह कर लिया। इस को तारीखे़ जंग में करामत के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता। अमीरे लश्कर ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी इस करामत को देख कर दंग रह गए क्यूंकि वोह कई माह से इस क़ल्ए का मुह़ासरा किये हुवे थे मगर बा वुजूद अपनी जंगी महारत और आ'ला दरजे की कोशिशों के वोह इस क़ल्ए को फ़त्ह नहीं कर सके थे।

(کتاب عشرہ مبشرہ، ص۲۲۴)

ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शक्ल में ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जंगे बद्र के दिन ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام पीले रंग का इमामा बांधे हुवे ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शक्लो सूरत में फ़िरिश्तों की फ़ौज ले कर उतरे थे।[1] (کنز العمال، ج۲، ص۱۲۷، مطبوعہ حیدر آباد)

---

1 ......كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الزبير بن العوام ...الخ، الحديث: ٣٦٦٢٢، ج٧، الجزء١٣، ص٩٠

﴾7﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ

येह भी अ़शरए मुबश्शरा या'नी दस जन्नती सह़ाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم की फ़ेहरिस्त में हैं। हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादते मुबारका से दस साल बा'द ख़ानदाने क़ुरैश में पैदा हुवे।(1) इब्तिदाई ता'लीम व तर्बिय्यत उसी त़रह़ हुई जिस त़रह़ सरदाराने क़ुरैश के बच्चों की हुवा करती थी। इन के इस्लाम लाने का सबब येह हुवा कि यमन के एक बुढ्ढे ईसाई राहिब ने इन को नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ुहूर की ख़बर दी और येह बताया कि वोह मक्का में पैदा होंगे और मदीनए मुनव्वरा को हिजरत करेंगे। जब येह यमन से लौट कर मक्कए मुकर्रमा आए तो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन को इस्लाम की तरग़ीब दी। चुनान्चे, एक दिन इन्हों ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर इस्लाम क़बूल कर लिया। जब कि आप से पहले चन्द ही आदमी आग़ोशे इस्लाम में आए थे चूंकि मुसलमान होते ही आप के घर वालों ने आप पर ज़ुल्मो सितम का पहाड़ तोड़ना शुरूअ़ कर दिया इस लिये हिजरत कर के ह़बशा चले गए। फिर ह़बशा से मक्कए मुकर्रमा वापस आए और अपना सारा माल व अस्बाब छोड़ कर बिल्कुल ख़ाली हाथ हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा चले गए। मदीनए मुनव्वरा पहुंच कर आप ने बाज़ार का रुख़ किया और चन्द ही दिनों में आप की तिजारत में इस क़दर ख़ैरो बरकत हुई कि आप का शुमार दौलत मन्दों में होने लगा और आप ने क़बीलए अन्सार की एक ख़ातून से शादी भी कर ली।(2)

तमाम इस्लामी लड़ाइयों में आप ने जानो माल के साथ शिर्कत की। जंगे उहुद में येह ऐसी जां बाज़ी और सरफ़रोशी के साथ

1 ......الطبقات الکبری لابن سعد، عبدالرحمن بن عوف،ج۳، ص۹۲

2 ......الطبقات الکبری لابن سعد، عبدالرحمن بن عوف،ج۳، ص۹۲-۹۳ ملخصاً

कुफ़्फ़ार से लड़े कि इन के बदन पर इक्कीस ज़ख़्म लगे थे और इन के पाउं में भी एक गहरा ज़ख़्म लग गया था जिस की वजह से येह लंगड़ा कर चलते थे।(1) आप की सख़ावत का येह आ़लम था कि एक मरतबा आप का तिजारती क़ाफ़िला जो सात सो ऊंटों पर मुश्तमिल था। आप ने अपना येह पूरा क़ाफ़िला मअ़ ऊंटों और इन पर लदे हुवे सामानों के ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़ैरात कर दिया।

एक मरतबा हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को सदक़ा देने की तरग़ीब दी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने चार हज़ार दिरहम पेश कर दिये। दूसरी मरतबा चालीस हज़ार दिरहम और तीसरी मरतबा पांच सो घोड़े, पांच सो ऊंट पेश कर दिये(2) ब वक़्ते वफ़ात एक हज़ार घोड़े और पचास हज़ार दीनारों का सदक़ा किया और जंगे बद्र में शरीक होने वाले सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के लिये चार चार सो दीनार की वसिय्यत फ़रमाई(3) और उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا और दूसरी अज़्वाजे मुत़ह्हरात के लिये एक बाग़ की वसिय्यत की जो चालीस हज़ार दिरहम की मालिय्यत का था।(4)

सि. 32 हि. में कुछ दिनों बीमार रह कर बहत्तर साल की उ़म्र में विसाल फ़रमाया और मदीनए मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न हुवे और हमेशा के लिये सख़ावत व शुजाअ़त का येह आफ़्ताब ग़ुरूब हो गया।(5) (عشرہ مبشرہ،ص۲۲۹ تا ۲۳۵واکمال،ص۶۰۳ وکنزالعمال،ج۱۵،ص۲۰۴)

---

1 ......اسد الغابة، عبدالرحمن بن عوف، ج٣، ص٤٩٦

2 ......اسد الغابة، عبدالرحمن بن عوف، ج٣، ص٤٩٨

3 ......اسد الغابة، عبدالرحمن بن عوف، ج٣، ص٤٩٩ـ٥٠٠

4 ......مشكاة المصابيح، كتاب المناقب، باب مناقب العشرة...الخ ، الحديث ٦١٣٠، ج٢، ص٤٣٤

5 ......الاكمال فى اسماء الرجال، حرف العين، فصل فى الصحابة، ص٦٠٣

करामात

यूं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुक़द्दस ज़िन्दगी सरापा करामत ही करामत थी मगर ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त का मस्अला आप ने जिस त़रह़ तै फ़रमाया वोह आप की बात़िनी फ़िरासत और ख़ुदादाद करामत का एक बड़ा ही अनमोल नुमूना है।

ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ब वक़्ते वफ़ात छे जन्नती सहाबा ह़ज़रते उ़षमान व ह़ज़रते अ़ली व ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास व ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़वाम व ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ व ह़ज़रते त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) का नाम ले कर येह वसिय्यत फ़रमाई कि मेरे बा'द इन छे शख़्सों में से जिस पर इत्तिफ़ाक़े राए हो जाए उस को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया जाए और तीन दिन के अन्दर ख़िलाफ़त का मस्अला ज़रूर तै कर लिया जाए और इन तीन दिनों तक ह़ज़रते सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में इमामत करते रहेंगे। इस वसिय्यत के मुत़ाबिक़ येह छे ह़ज़रात एक मकान में जम्अ़ हो कर दो रोज़ तक मश्वरा करते रहे मगर येह मजलिसे शूरा किसी नतीजे पर न पहुंची। तीसरे दिन ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि तुम लोग जानते हो कि आज तक़र्रुरे ख़िलाफ़त का तीसरा दिन है लिहाज़ा तुम लोग आज अपने में से किसी को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब कर लो। ह़ाज़िरीन ने कहा : ऐ अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम लोग तो इस मस्अले को ह़ल नहीं कर सके। अगर आप के ज़ेहन में कोई तजवीज़ हो तो पेश कीजिये। आप ने फ़रमाया कि छे आदमियों की येह जमाअ़त ईषार से काम ले और तीन आदमियों के ह़क़ में अपने अपने ह़क़ से दस्त बरदार हो जाए। येह सुन कर ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ए'लान फ़रमा दिया कि मैं ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में अपने ह़क़ से दस्त

बरदार होता हूं। फिर ह़ज़रते त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में अपने ह़क़ से कनारा कश हो गए। आख़िर में ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि मैं ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपना ह़क़ दे दिया। अब ख़िलाफ़त के ह़क़दार ह़ज़रते उ़षमान व ह़ज़रते अ़ली व ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم रह गए। फिर ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि ऐ उ़षमान व अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا मैं तुम दोनों को यक़ीन दिलाता हूं कि मैं हरगिज़ हरगिज़ ख़लीफ़ा नहीं बनूंगा, अब तुम दो ही उम्मीद वार रह गए हो इस लिये तुम दोनों ख़लीफ़ा के इन्तिख़ाब का ह़क़ मुझे दे दो। ह़ज़रते उ़षमान व ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इन्तिख़ाबे ख़लीफ़ा का मस्अला ख़ुशी ख़ुशी ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिपुर्द कर दिया। इस गुफ़्तगू के मुकम्मल हो जाने के बा'द ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मकान से बाहर निकल आए और पूरे शहरे मदीना में ख़ुफ़्या त़ौर पर गश्त कर के इन दोनों उम्मीद वारों के बारे में राए आ़म्मा मा'लूम करते रहे। फिर दोनों उम्मीद वारों से अलग अलग तन्हाई में येह अ़हद ले लिया कि अगर मैं तुम को ख़लीफ़ा बना दूं तो तुम अ़द्ल करोगे और अगर दूसरे को ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दूं तो तुम उस की इत़ाअ़त करोगे। जब दोनों उम्मीद वारों से येह अ़हद ले लिया तो फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में आ कर येह ए'लान फ़रमाया कि ऐ लोगो ! मैं ने ख़िलाफ़त के मुआ़मले में ख़ुद भी काफ़ी ग़ौरो ख़ौज़ किया और इस मुआ़मले में अन्सार व मुहाजिरीन की राए आ़म्मा भी मा'लूम कर ली है। चूंकि राए आ़म्मा ह़ज़रते उ़षमान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के ह़क़ में ज़ियादा है इस लिये मैं ह़ज़रते उ़षमान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करता हूं। येह कह कर सब से पहले ख़ुद आप ने ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त की और आप के बा'द ह़ज़रते अ़ली

और दूसरे सब सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने बैअ़त कर ली। इस त़रह़ ख़िलाफ़त का मस्अला बिग़ैर किसी इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार के तै हो गया जो बिला शुबा ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक बहुत बड़ी **करामत** है।[1]

(عشرہ مبشرہ،ص۲۳۱تا۲۳۴ و بخاری، ج۱،ص۵۲۴ مناقب عثمان)

जन्नत में जाने वाला पहला मालदार

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

اَوَّلُ مَن یَّدْخُلُ الْجَنَّۃَ مِنْ اَغْنِیَاءِ اُمَّتِیْ عَبْدُ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْفٍ

(या'नी मेरी उम्मत के मालदारों में सब से पहले अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जन्नत में दाख़िल होंगे।)[2] (کنزالعمال، ج۱۲،ص۲۹۳)

मां के पेट ही से सईद

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का बयान है कि ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मरतबा बेहोश हो गए और कुछ देर बा'द जब वोह होश में आए तो फ़रमाया कि अभी अभी मेरे पास दो बहुत ही ख़ौफ़नाक फ़िरिश्ते आए और मुझ से कहा कि तुम उस ख़ुदा के दरबार में चलो जो अ़ज़ीज़ व अमीन है। इतने में एक दूसरा फ़िरिश्ता आ गया और उस ने कहा कि इन को छोड़ दो येह तो जब अपनी मां के शिकम में थे उसी वक़्त से सआ़दत आगे बढ़ कर इन से वाबस्ता हो चुकी है।[3] (کنزالعمال، ج۱۵،ص۲۰۳ مطبوعہ حیدرآباد)

---

1 ......الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ، الباب الثالث فی مناقب امیر المؤمنین عثمان بن عفان، الفصل العا شر فی خلافتہ و ما یتعلق بھا ، ذکر حدیث الشوری، ج۲، ص۵۳ - ۵۵ملتقطاً

2 ......کنزالعمال،کتاب الفضائل، ذکر الصحابۃ وفضلھم ، عبدالرحمن بن عوف، الحدیث: ۳۳۴۹۵، ج٦، الجزء۱۱،ص۳۲۸

3 ......کنزالعمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابۃ، الحدیث:۳٦٦۸۵،ج۷،الجزء۱۳،ص۹۹

﴾8﴿ हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

इन की कुन्यत अबू इस्हाक़ है और ख़ानदाने क़ुरैश के एक बहुत ही नामवर शख़्स हैं जो मक्कए मुकर्रमा के रहने वाले हैं। येह उन ख़ुश नसीबों में से एक हैं जिन को नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जन्नत की बिशारत दी। येह इब्तिदाए इस्लाम ही में जब कि अभी इन की उ़म्र सतरह बरस की थी दामने इस्लाम में आ गए और हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ साथ तमाम मा'रिकों में हाज़िर रहे। येह ख़ुद फ़रमाया करते थे : मैं वोह पहला शख़्स हूं जिस ने अल्लाह तआला की राह में कुफ़्फ़ार पर तीर चलाया और हम लोगों ने हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रह कर इस हाल में जिहाद किया कि हम लोगों के पास सिवाए बबूल के पत्तों और बबूल की फलियों के कोई खाने की चीज़ न थी।[1] (مشکوٰۃ، ج۲،ص۵٦۷)

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ास तौर पर इन के लिये येह दुआ़ फ़रमाई : "اَللّٰھُمَّ سَدِّدْ سَھْمَہٗ وَاَجِبْ دَعْوَتَہٗ"[2] (ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन के तीर के निशाने को दुरुस्त फ़रमा दे और इन की दुआ़ मक़्बूल फ़रमा)

ख़िलाफ़ते राशिदा के ज़माने में भी येह फ़ारस और रूम के जिहादों में सिपह सालार रहे। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में इन को कूफ़ा का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया फिर इस ओ़हदे से मा'ज़ूल कर दिया और येह बराबर जिहादों में कुफ़्फ़ार से कभी सिपाही बन कर और कभी इस्लामी लश्कर के सिपह सालार बन कर लड़ते रहे। जब हज़रते

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف السین، فصل فی الصحابۃ، ص۵۹٦ ملتقطاً
ومعرفۃ الصحابۃ، معرفۃ سعد بن ابی وقاص...الخ، الحدیث:۵۲۰،ج۱،ص۱۴۵

2 ......کنزالعمال،کتاب الفضائل، فضائل الصحابۃ، سعد بن ابی وقاص...الخ، الحدیث:
۳٦٦۴۰، ج۷،الجزء۱۳،ص۹۲

उषमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अमीरुल मोअमिनीन हुवे तो उन्हों ने दोबारा इन्हें कूफ़ा का गवर्नर बना दिया। येह मदीनए मुनव्वरा के क़रीब मक़ामे "अ़क़ीक़" में अपना एक घर बना कर उस में रहते थे और सि. 55 हि. में जब कि इन की उ़म्र शरीफ़ पछत्तर बरस की थी उसी मकान के अन्दर विसाल फ़रमाया। आप ने वफ़ात से पहले येह वसिय्यत फ़रमाई थी कि मेरे कफ़न में मेरा ऊन का वोह पुराना जुब्बा ज़रूर पहनाया जाए जिस को पहन कर मैं ने जंगे बद्र में कुफ़्फ़ार से जिहाद किया था चुनान्चे, वोह जुब्बा आप के कफ़न में शामिल किया गया। लोग फ़र्ते अ़क़ीदत से आप के जनाज़े को कन्धों पर उठा कर मक़ामे "अ़क़ीक़" से मदीनए मुनव्वरा लाए और ह़ाकिमे मदीना मरवान बिन अल ह़कम ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और जन्नतुल बक़ीअ़ में आप की क़ब्रे मुनव्वर बनाई।

"अ़शरए मुबश्शरा" या'नी जन्नत की खुश ख़बरी पाने वाले दस सह़ाबियों में से येही सब से आख़िर में दुन्या से तशरीफ़ ले गए और इन के बा'द दुन्या अ़शरए मुबश्शरा के ज़ाहिरी वुजूद से ख़ाली हो गई मगर ज़माना इन की बरकात से हमेशा हमेशा मुस्तफ़ीज़ होता रहेगा।(1) (اکمال فی اسماء الرجال وتذکرۃ الحفاظ، ج۱، ص۲۲وغیرہ)

करामात

आप की करामतों में से चन्द करामात मुन्दरजए ज़ैल हैं :

बद नसीब बुड्ढा

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि कूफ़ा के कुछ लोग ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शिकायात

---

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف السین، فصل فی الصحابة، ص ٥٩٦
واسد الغابة، سعد بن مالك القرشی، ج٢، ص ٤٣٤، ٤٣٧ ملتقطاً وملخصاً

ले कर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरबारे ख़िलाफ़त मदीनए मुनव्वरा में पहुंचे। ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन शिकायात की तह़क़ीक़ात के लिये चन्द मो'तबर सहाबियों رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ कूफ़ा भेजा और येह हुक्म फ़रमाया कि कूफ़ा शहर की हर मस्जिद के नमाज़ियों से नमाज़ के बा'द येह पूछा जाए कि ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कैसे आदमी हैं? चुनान्चे, तह़क़ीक़ात करने वालों की इस जमाअ़त ने जिन जिन मस्जिदों में नमाज़ियों को क़सम दे कर ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में दरयाफ़्त किया तो तमाम मस्जिदों के नमाज़ियों ने इन के बारे में कलिमए ख़ैर कहा और मद्ह़ व षना की मगर एक मस्जिद में फ़क़त् एक आदमी जिस का नाम "अबू सो'दा" था उस ने ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तीन शिकायात पेश कीं और कहा :

لَا يَقْسِمُ بِالسَّوِيَّةِ وَلَا يَسِيْرُ بِالسَّرِيَّةِ وَلَا يَعْدِلُ فِى الْقَضِيَّةِ

(या'नी येह माले ग़नीमत बराबरी के साथ तक़्सीम नहीं करते और ख़ुद लश्करों के साथ जिहाद में नहीं जाते और मुक़द्दमात के फ़ैसलों में अ़द्ल नहीं करते)

येह सुन कर ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ौरन ही येह दुआ़ मांगी : "ऐ अल्लाह ! अगर येह शख़्स झूटा है तो इस की उ़म्र लम्बी कर दे और इस की मोह़ताजी को दराज़ कर दे और इस को फ़ितनों में मुबतला कर दे।" अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर ताबेई का बयान है कि इस दुआ़ का मैं ने येह अषर देखा कि "अबू सो'दा" इस क़दर बुढ्ढा हो चुका था कि बुढ़ापे की वजह से इस की दोनों भवें उस की दोनों आंखों पर लटक पड़ी थीं और वोह दरबदर भीक मांग मांग कर इन्तिहाई फ़क़ीरी और मोह़ताजी की ज़िन्दगी बसर करता था और इस बुढ़ापे में भी वोह राह चलती हुई जवान जवान लड़कियों को छेड़ता था और इन के बदन में चुटकियां

भरता रहता था और जब कोई उस से इस का हाल पूछता था तो वोह कहा करता था कि मैं क्या बताऊं ? मैं एक बुड्ढा हूं जो फ़ितनों में मुब्तला हूं क्यूंकि मुझ को हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बद दुआ लग गई है ।[(1)] (حجۃ اللہ علی العالمین، ج۲،ص۸۶۵،بحوالہ بخاری ومسلم وبیہقی)

दुश्मने सहाबा का अन्जाम

एक शख़्स हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की शान में गुस्ताख़ी व बे अदबी के अल्फ़ाज़ बकने लगा । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि तुम अपनी इस ख़बीष हरकत से बाज़ रहो वरना मैं तुम्हारे लिये बद दुआ कर दूंगा । उस गुस्ताख़ व बे बाक ने कह दिया कि मुझे आप की बद दुआ की कोई परवाह नहीं । आप की बद दुआ से मेरा कुछ भी नहीं बिगड़ सकता । येह सुन कर आप को जलाल आ गया और आप ने उस वक़्त येह दुआ मांगी कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर इस शख़्स ने तेरे प्यारे नबी के प्यारे सहाबियों की तौहीन की है तो आज ही इस को अपने क़हरो ग़ज़ब की निशानी दिखा दे ताकि दूसरों को इस से इब्रत हासिल हो । इस दुआ के बा'द जैसे ही वोह शख़्स मस्जिद से बाहर निकला तो बिल्कुल ही अचानक एक पागल ऊंट कहीं से दौड़ता हुवा आया और उस को दांतों से पछाड़ दिया और उस के ऊपर बैठ कर उस को इस क़दर ज़ोर से दबाया कि उस की पस्लियों की हड्डियां चूर चूर हो गई और वोह फ़ौरन ही मर गया । येह मन्ज़र देख कर लोग दौड़ दौड़ कर हज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुबारक बाद देने लगे की आप की दुआ मक़्बूल हो गई और सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का दुश्मन हलाक हो गया ।[(2)] (دلائل النبوۃ،ج۳،ص۲۰۷وحجۃ اللہ علی العالمین،ج۲،ص۸۶۶)

---

1 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة...الخ، ص٦١٥

2 ......دلائل النبوة للبيهقى، باب ماجاء فى دعاء رسول الله صلى الله عليه وسلم لسعد بن ابى وقاص...الخ، ج٦، ص١٩٠

गुस्ताख़ की ज़बान कट गई

जंगे क़ादिसिय्या में ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लामी लश्करों के सिपह सालार थे लेकिन आप ज़ख़्मों से निढ़ाल थे इस लिये मैदाने जंग में निकल कर जंग नहीं कर सके बल्कि सीने के नीचे एक तकया रख कर और पेट के बल लैट कर फ़ौजों की कमान करते रहे। बड़ी ख़ूं रैज़ और घमसान की जंग के बा'द जब मुसलमानों की फ़त्ह़े मुबीन हो गई तो एक मुसलमान सिपाही ने येह गुस्ताख़ी और बे अदबी की, कि ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर नुक्ता चीनी करते हुवे इन की शान में हिजू और बे अदबी के अश्आ़र लिख डाले जो येह हैं।

نُقَاتِلُ حَتّٰی يُنْزِلَ اللّٰهُ نَصْرَهٗ

وَسَعْدٌ بِبَابِ الْقَادِسِيَّةِ مُعْصَمُ

(हम लोग जंग करते हैं यहां तक कि अल्लाह तआ़ला अपनी मदद नाज़िल फ़रमा देता है और ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह ह़ाल है कि वोह क़ादिसिय्या के फाटक पर मह़फ़ूज़ हो कर बैठे ही रहते हैं।)

فَاُبْنَا وَقَدْ اٰمَتْ نِسَاءٌ كَثِيْرَةٌ

وَنِسْوَةُ سَعْدٍ لَيْسَ فِيْهِنَّ اَيِّمٌ

(हम जब जंग से वापस आए तो बहुत सी औ़रतें बेवा हो चुकीं थीं लेकिन सा'द की कोई बीवी भी बेवा नहीं हुई।)

इस दिल ख़राश हिजू से ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़ल्बे नाज़ुक पर बड़ी ज़बरदस्त चोट लगी और आप ने इस त़रह़ दुआ़ मांगी कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस शख़्स की ज़बान और हाथ को मेरी हिजू करने से रोक दे। आप की ज़बान से इन कलिमात का निकलना था कि यकायक किसी ने उस गुस्ताख़

सिपाही को इस त़रह़ तीर मारा कि उस की ज़बान कट कर गिर पड़ी और उस का हाथ भी कट गया और वोह शख़्स एक लफ़्ज़ भी न बोल सका उस का दम निकल गया।(1)

(دلائل النبوۃ، ج۳، ص۲۰۷ والبدایہ والنہایہ، ج۷، ص۴۵)

चेहरा पीठ की त़रफ़ हो गया

एक औ़रत की येह आ़दते बद थी कि वोह हमेशा ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान में झांक झांक कर आप के घरेलू ह़ालात की जुस्त्जू व तलाश किया करती थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बार बार उस को समझाया और मन्अ़ किया मगर वोह किसी त़रह़ बाज़ नहीं आई। यहां तक कि एक दिन निहायत जलाल में आप की ज़बान मुबारक से येह अल्फ़ाज़ निकल पड़े कि "तेरा चेहरा बिगड़ जाए" इन लफ़्ज़ों का येह अषर हुवा कि उस औ़रत की गर्दन घूम गई और उस का चेहरा पीठ की त़रफ़ हो गया।(2)

(حجۃ اللہ علی العالمین، ج۲، ص۸۶۲ بحوالہ ابن عساکر)

एक ख़ारिजी की हलाकत

एक गुस्ताख़ ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को गाली दी। ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह सुन कर रन्जो ग़म में डूब गए और जोश में आ कर येह दुआ़ कर दी कि "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर येह तेरे औलिया में से एक वली को गालियां दे रहा है तो इस मजलिस के बरख़ास्त होने से क़ब्ल ही इस शख़्स को अपना क़हरो ग़ज़ब दिखा दे।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बाने

1 ......البداية و النهاية، سنة اربع عشرة من الهجرة، غزوة القادسية، ج٥، ص١١٣ ملتقطاً
وثم دخلت سنة اربع وخمسين، ذكر توفى فيها...الخ، ج٥، ص٥٧٢ ـ ٥٧٣ ملتقطاً
ودلائل النبوة لابى نعيم، اجابة الدعوة، اللهم كف لسانه...الخ، ج٢، ص١٢١

2 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث
فى ذكر جملة جميلة ...الخ، ص٦١٦

अक़्दस से इस दुआ़ का निकलना था कि उस मर्दूद का घोड़ा बिदक गया और वोह पथ्थरों के ढेर में मुंह के बल गिर पड़ा और उस का सर पाश पाश हो गया जिस से वोह हलाक हो गया।(1)

(حجۃ اللہ علی العالمین، ج۲،ص۸۶۶بحوالہ حاکم)

तबसेरा

हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मज़्कूरए बाला इन पांच करामतों से हम को दो सबक़ मिलते हैं :

अव्वल : येह कि महबूबाने बारगाहे इलाही या'नी अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व सिद्दीक़ीन और शुहदाए किराम व सालिहीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعالٰی عَلَيْهِم की शान में अदना दर्जे की बद दुआ़एं बहुत ही ख़त़रनाक और हलाकत आफ़रीं बलाएं हैं। इन बुज़ुर्गों की बद दुआ़ और फिटकार और इन की शान में गुस्ताख़ी और बे अदबी येह क़हरे इलाही का सिग्नल है। इन ख़ुदा के मुक़द्दस और महबूब बन्दों की ज़रा सी भी बे अदबी को ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की शाने क़हहारी व जब्बारी मुआ़फ़ नहीं फ़रमाती बल्कि ज़रूर उन गुस्ताख़ों को दोनों जहान के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार कर देती है।

दुवुम : येह कि अल्लाह तआ़ला के महबूब बन्दों उ़-लमा, औलिया और तमाम सालिहीन की बददुआ़एं बहुत ही ख़त़रनाक और हलाकत आफ़रीं बलाएं हैं। इन बुज़ुर्गों की बद दुआ़ और फिटकार वोह तल्वार है जिस की कोई ढाल नहीं और येह तबाही व बरबादी का वोह ज़हर आलूद तीर है जिस का निशाना कभी ख़त़ा नहीं करता लिहाज़ा हर मुसलमान पर लाज़िम है कि ज़िन्दगी भर हर हर क़दम पर येह ध्यान रखे कि कभी भी अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दों की शान में ज़र्रा भर भी बे अदबी न होने पाए और बुज़ुर्गाने

(1) حجة الله على العالمين، الخاتمة فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملة جمیلة ...الخ،ص٦١٦

दीन में से किसी की भी बद दुआ न ले बल्कि हमेशा इस कोशिश में लगा रहे कि खुदा عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की दुआएं मिलती रहें क्यूंकि नेक बन्दों की बद दुआएं बरबादी का ख़ौफ़नाक सिग्नल और इन की दुआएं आबादी का शीरीं फल हैं।

साठ हज़ार का लश्कर दरया में

जंगे फ़ारस में हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस्लामी लश्कर के सिपह सालार थे। दौराने सफ़र रास्ते में दरयाए दिजला को पार करने की ज़रूरत पेश आ गई और कश्तियां मौजूद नहीं थीं। आप ने लश्कर को दरया में चल देने का हुक्म दे दिया और खुद सब से आगे आगे आप येह दुआ पढ़ते हुवे दरया पर चलने लगे

"نَسْتَعِيْنُ بِاللّٰهِ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَحَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ"

लोग आपस में बिला झिजक एक दूसरे से बातें करते हुवे घोड़ों वाले घोड़ों पर सुवार, ऊंटों वाले ऊंटों पर सुवार, पैदल चलने वाले पा पियादा अपने अपने सामानों के साथ दरया पर इस त़रह़ चलने लगे जिस त़रह़ मैदानों में क़ाफ़िले गुज़रते रहते हैं। उ़षमान नेहदी ताबेई का बयान है कि इस मौक़अ़ पर एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का प्याला दरया में गिर पड़ा तो दरया की मौजों ने उस प्याले को किनारे पर पहुंचा दिया और उन को उन का प्याला मिल गया। इस लश्कर की ता'दाद साठ हज़ार (पा पियादा और सुवार) की थी।(1)

(دلائل النبوۃ، ج۳، ص۲۰۹ وطبری، ج۴، ص۱۷۱)

तबसेरा

येह रिवायत इस बात की दलील है कि दरया भी औलियाउल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم के अह़काम का फ़रमां बरदार है और इन **अल्लाह** वालों की हुकूमत खुदावन्दे कुद्दूस की अ़ता से जिस

(1)……دلائل النبوة لابی نعیم، الفصل التاسع و العشرون، عبور سعد بن ابی وقاص بعسکرہ...الخ، ج۲، ص۱۳۲۔۱۳٤ ملخصاً

तरह ख़ुश्की पर है इसी तरह दरयाओं पर भी इन की हुकूमत का सिक्का चलता है। काश ! वोह बद अक़ीदा लोग जो औलियाए किराम رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیہِم के अदबो एहतिराम से महरूम और इन बुज़ुर्गों की खुदादाद ताक़तों और इन के तसर्रुफ़ात की कुदरतों के मुन्किर हैं इन रिवायात को बग़ौर पढ़ते और इन रौशनी के मनारों से हिदायत का नूर हासिल करते।

डॉक्टर मुहम्मद इक़्बाल ने हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इसी करामत की तरफ़ इशारा करते हुवे अपनी नज़्म में येह शे'र लिखा है :

दश्त तो दश्त हैं दरया भी न छोड़े हम ने
बहरे ज़ुल्मात में दौड़ा दिये घोड़े हम ने

ना'रए तक्बीर से ज़लज़ला

जंगे क़ादिसिय्या में फ़त्हे हासिल हो जाने के बा'द हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने "हम्स" पर चढ़ाई की। येह रूमियों का बहुत ही मज़बूत क़ल्आ था। बादशाहे रूम ने इस शहर की हिफ़ाज़त के लिये बहुत ही ज़बरदस्त फ़ौज भेजी थी मगर जब हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस शहर के क़रीब पहुंचे तो आप ने अपने लश्कर को हुक्म फ़रमाया : لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ का बुलन्द आवाज़ से ना'रा मारें। चुनान्चे, जब पूरी फ़ौज ने एक साथ ना'रा मारा तो इस शहर में इस ज़ोर का ज़लज़ला आ गया कि तमाम इमारतें हिलने लगीं। फिर दूसरी मरतबा ना'रा मारा तो क़ल्आ और शहर की दीवारें गिरने लगीं और रूमी फ़ौज पर ऐसी दहशत सुवार हो गई कि वोह हथयार भी न उठा सकी बल्कि एक गिरां क़दर रक़म बतौरे जिज़्या के दे कर रूमियों ने मुसलमानों से सुल्ह कर ली।(1) (ازالۃ الخفاء،مقصد۲،ص۵۹)

(1)......ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء، مقصد دوم،امامآثرفاروق اعظم، ج۳، ص۲۱۳

तबसेरा

कलिमए तय्यिबा और तक्बीर का ना'रा हर शख़्स लगा सकता है मगर तजरिबा येह है कि अगर इस ज़माने के लाखों मुसलमान भी एक साथ मिल कर येह ना'रा मारें तो घास का एक पत्ता और भुस का एक तिन्का भी नहीं हिल सकता मगर सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم के इस ना'रे से पथ्थरों की चट्टानों से बने हुवे महल्लात और क़ल्ए चकना चूर हो कर ज़मीन पर बिखर गए। इस से मा'लूम हुवा कि अगर्चे कलिमए तक्बीर के अल्फ़ाज़ व मआनी में तो ज़र्रा बराबर भी फ़र्क़ नहीं है लेकिन अल्लाह वालों की ज़बानों, आवाज़ों और लहजों में और हमारी ज़बानों, आवाज़ों और लहजों में ज़मीनो आस्मान का फ़र्क़ है। कहां वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक और पाकबाज़ बन्दे ? और कहां हम दिलों के मैल और ज़बानों के गन्दे। इस से पता चलता है कि एक ही आयत, एक ही दुआ, एक अल्लाह वाला पढ़ दे तो इस की तासीर कुछ और होती है और एक गुनाहों वाला पढ़ दे तो इस की तासीर कुछ और होती है।

डॉक्टर इक़्बाल ने इसी मज़्मून की त़रफ़ इशारा करते हुवे ख़ूब कहा :

परवाज़ है दोनों की इसी एक फ़ज़ा में
करगस का जहां और है शाहीं का जहां और
अल्फ़ाज़ व मआनी में तफ़ावुत नहीं लेकिन
मुल्ला की अज़ां और मुजाहिद की अज़ां और

(बाबे जिब्रील)

बहर हाल इस नुक्ते से हरगिज़ हरगिज़ ग़ाफ़िल नहीं रहना चाहिये कि औलियाए किराम और आम इन्सानों में बहुत बड़ा फ़र्क़ है जो लोग सिर्फ़ पांच वक़्त नमाज़ पढ़ कर औलियाए किराम के

साथ बराबरी का दा'वा करते फिरते हैं। खुदा की क़सम ! येह लोग गुमराही के इतने गहरे और इस क़दर अन्धेरे ग़ार में गिर पड़े हैं कि इन्हें न तौफ़ीक़े इलाही की सीढ़ी मिल सकती है न वहां तक आफ़्ताबे हिदायत की रोशनी पहुंच सकती है। खुदावन्दे करीम इन गुमराहों के कुर्ब और इन के मक्रो फ़रैब के काले जादू से हर मुसलमान को महफ़ूज़ रखे। (आमीन)

उ़म्र दराज़ हो गई

एक शख़्स निहायत ही ख़त़रनाक और जान लेवा बीमारी में मुब्तला हो कर अपनी ज़िन्दगी से नाउम्मीद हो चुका था। वोह ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो गया और रो रो कर फ़रयाद करने लगा : ऐ सह़ाबिये रसूल ! मेरे बच्चे अभी बहुत ही छोटे छोटे हैं मेरे मरने के बा'द इन की परवरिश करने वाला मुझे कोई नज़र नहीं आता लिहाज़ा आप येह दुआ़ कर दीजिये कि इन बच्चों के बालिग़ होने तक ज़िन्दा रहूं। आप को उस मरीज़ के ह़ाले ज़ार पर रह़्म आ गया और आप ने उस की तन्दुरुस्ती और सलामती के लिये दुआ़ कर दी तो वोह शख़्स शिफ़ायाब हो गया और बीस बरस तक ज़िन्दा रहा ह़ालांकि किसी को भी उम्मीद तक नहीं थी कि वोह इस बीमारी से बच कर ज़िन्दा रह सकेगा।(1) (حجۃ اللہ علی العالمین ج۲،ص۸۶۶بحوالہ بیہقی)

तबसेरा

ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इन करामतों में आप ने इन की बद दुआ़ओं का षमरा भी देख लिया और इन की दुआ़ओं का जल्वा भी देख लिया इस लिये इस से

---

1 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة...الخ،ص٦١٦

सबक़ हासिल कीजिये और हमेशा अल्लाह वालों की बद दुआओं से बचते रहिये और इन बुज़ुर्गों से हमेशा नेक दुआओं की भीक मांगते रहिये अगर आप का येह तर्ज़े अमल रहा तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़िन्दगी भर आप सआदत और खुश बख़्त के बादशाह बने रहेंगे। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم

﴾9﴿ हज़रते सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

येह भी अशरए मुबश्शरा या'नी उन दस सहाबियों رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم में से हैं जिन को रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जन्नती होने की खुश ख़बरी सुनाई है। येह ख़ानदाने क़ुरैश में से हैं और ज़मानए जाहिलिय्यत के मश्हूर मुवह्हिद ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल के फ़रज़न्द और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बहनोई हैं। येह जब मुसलमान हुवे तो इन को हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रस्सी से बांध कर मारा और इन के घर में जा कर इन को और अपनी बहन फ़ातिमा बिन्ते अल ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को भी मारा मगर येह दोनों इस्तिक़ामत का पहाड़ बन कर इस्लाम पर षाबित क़दम रहे। जंगे बद्र में इन को और हज़रते तल्हा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) को हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अबू सुफ़्यान के क़ाफ़िले का पता लगाने के लिये भेज दिया था इस लिये येह जंगे बद्र के मा'रिके में हिस्सा न ले सके मगर इस के बा'द की तमाम लड़ाइयों में येह शमशीर बकफ़ हो कर कुफ़्फ़ार से हमेशा जंग करते रहे। गन्दुमी रंग, बहुत ही दराज़ क़द, ख़ूब सूरत और बहादुर जवान थे। तक़रीबन सि. 50 हि. में सत्तर बरस की उम्र पा कर मक़ामे "अक़ीक़" में विसाल फ़रमाया और लोगों ने आप के जनाज़ए मुबारका को मदीनए मुनव्वरा ला कर आप को जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न किया।[(1)] (اکمال فی اسماء الرجال،ص۵۹۶ و بخاری شریف،ج۱،ص۵۴۵ مع حاشیہ)

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف السین، فصل فی الصحابة،ص٥٩٦
و الاستيعاب، باب حرف السين، سعيد بن زيد بن عمرو، ج٢، ص١٧٨
و اسد الغابة، عمر بن الخطاب، ج٤، ص١٥٨-١٥٩

करामत

कुंवां क़ब्र बन गया

एक औ़रत जिस का नाम अरवा बिन्ते उवैस था इस ने उन के ऊपर हा़किमे मदीना मरवान बिन अल ह़कम की कचहेरी में येह दा'वा दाइर कर दिया कि इन्हों ने मेरी एक ज़मीन ले ली है। मरवान ने जब इन से जवाब त़लब किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि मैं ने जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना कि जो शख़्स किसी की बालिश्त बराबर भी ज़मीन ले लेगा तो क़ियामत के दिन उस को सातों ज़मीनों का तौक़ पहनाया जाएगा तो इस ह़दीष को सुन लेने के बा'द भला येह क्यूंकर मुमकिन है कि मैं किसी की ज़मीन ले लूंगा। आप का जवाब सुन कर मरवान ने कहा : ऐ औ़रत ! अब मैं तुझ से कोई गवाह त़लब नहीं करूंगा, जा तू उस ज़मीन को ले ले। ह़ज़रते सई़द बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह फ़ैसला सुन कर येह दुआ़ मांगी : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर येह औ़रत झूटी है तो अन्धी हो जाए और उसी ज़मीन पर मरे। चुनान्चे, इस के बा'द येह औ़रत अन्धी हो गई। मुह़म्मद बिन ज़ैद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का बयान है कि मैं ने उस औ़रत को देखा है कि वोह अन्धी हो गई थी और दीवारें पकड़ कर इधर उधर चलती फिरती थी यहां तक कि वोह एक दिन उसी ज़मीन के एक कुंवें मे गिर कर मर गई और किसी ने उस को निकाला भी नहीं इस लिये वोही कुंवां उस की क़ब्र बन गया और एक अल्लाह वाले की दुआ़ की मक़्बूलिय्यत का जल्वा नज़र आ गया।(1)

(مشکوٰۃ، ج۲، ص۵۴۶ و حجۃ اللہ ج۲، ص۸۶۶ بحوالہ بخاری و مسلم)

---

(1)......مشكاة المصابيح، كتاب احوال القيامة وبدء الخلق، الحديث:٥٩٥٣، ج٢، ص٤٠١ وحجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة ...الخ، ص٦١٦

तबसेरा

अल्लाह वालों की येह करामत है कि इन की दुआ़एं बहुत ज़ियादा और बहुत जल्द मक़्बूल हुवा करती हैं और इन की ज़बान से निकले अल्फ़ाज़ का षमरा ख़ुदावन्दे करीम ज़रूर आ़लमे वुजूद में लाता है। सच है

जो जज़्ब के आ़लम में निकले लबे मोमिन से
वोह बात ह़क़ीक़त में तक़्दीरे इलाही है

﴾10﴿ ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह ख़ानदाने क़ुरैश के बहुत ही नामवर और मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स है। फ़हर बिन मालिक पर इन का ख़ानदानी शजरा रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ानदान से मिल जाता है। येह भी "अ़शरए मुबश्शरा" में से हैं। इन का अस्ली नाम "आ़मिर" है। अबू उ़बैदा इन की कुन्यत है और इन को बारगाहे रिसालत से अमीनुल उम्मत का लक़ब मिला है। इब्तिदाए इस्लाम ही में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन के सामने इस्लाम पेश किया तो आप फ़ौरन ही इस्लाम क़बूल कर के जांनिषारी के लिये बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो गए। पहले आप ने ह़बशा हिजरत की। फिर ह़बशा से हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा चले गए। जंगे बद्र वग़ैरा तमाम इस्लामी जंगों में इन्तिहाई जां बाज़ी के साथ कुफ़्फ़ार से मा'रिका आराई करते रहे। जंगे उहुद में लोहे की टोपी की दो कड़ियां हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़्सारे मुनव्वर में चूभ गई थीं। आप ने अपने दांतों से पकड़ कर इन कड़ियों को खींच कर निकाला। इसी में आप के अगले दो दांत टूट गए थे। बहुत ही शेर दिल, बहादुर, बुलन्द क़ामत और बा रो'ब चेहरे वाले पहलवान थे। सि. 18 हि. में ब मक़ामे

उरदन ताऊने उमवास में वफ़ात पा गए। हज़रते मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और मक़ामे बीसान में दफ़्न हुवे। ब वक़्ते वफ़ात उम्र शरीफ़ अठ्ठावन बरस थी।[1] (اکمال فی اسماء الرجال،ص۶۰۸)

करामत

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की करामतों में से एक बहुत ही मश्हूर और अजीब करामत दर्जे ज़ैल है :

बे मिषाल मछली

आप तीन सो मुजाहिदीने इस्लाम के लश्कर पर सिपह सालार बन कर "सैफुल बह्‌र" में जिहाद के लिये तशरीफ़ ले गए। वहां फ़ौज का राशन ख़त्म हो गया यहां तक कि येह चोबीस चोबीस घन्टे में एक एक खजूर बतौरे राशन के मुजाहिदीन को देने लगे। फिर वोह खजूरें भी ख़त्म हो गईं। अब भुकमरी के सिवा कोई चारए कार नहीं था। इस मौक़अ़ पर आप की येह करामत ज़ाहिर हुई कि अचानक समन्दर की तूफ़ानी मौजों ने साहिल पर एक बहुत बड़ी मछली को फेंक दिया और इस मछली को येह तीन सो मुजाहिदीन की फ़ौज अठ्ठारह दिनों तक शिकम सैर हो कर खाती रही और इस की चरबी को अपने जिस्मों पर मलती रही यहां तक कि सब लोग तन्दुरुस्त और ख़ूब फ़रबा हो गए। फिर चलते वक़्त इस मछली का कुछ हिस्सा काट कर अपने साथ ले कर मदीनए मुनव्वरा वापस आए और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में भी इस मछली का एक टुकड़ा पेश किया। जिस को आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तनावुल फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि इस मछली को अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारा रिज़्क़ बना कर भेज

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال،حرف العین،فصل فی الصحابۃ،ص۶۰۸ ملخصاً
والریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ، الباب العاشرفی مناقب ابی عبیدۃ بن الجراح،
الفصل الاول فی نسبہ،ج۲، ص۳۴۵ والفصل الرابع فی اسلامہ،ج۲،ص۳۴۶

दिया। येह मछली कितनी बड़ी थी लोगों को इस का अन्दाज़ा बताने के लिये अमीरे लश्कर ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन अ़ल जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हुक्म दिया कि इस मछली की दो पस्लियों को ज़मीन में गाड़ दें। चुनान्चे, दोनों पस्लियां ज़मीन पर गाड़ दी गईं तो इतनी बड़ी मेह़राब बन गई कि इस के नीचे से कजावा बन्धा हुवा ऊंट गुज़र गया।(1) (بخاری شریف، ج۲،ص۶۲۶ باب غزوۂ سیف البحر)

तबसेरा

ऐसे वक़्त में जब कि लश्कर में ख़ूराक का सारा सामान ख़त्म हो चुका था और लश्कर के सिपाहियों के लिये भुकमरी के सिवा कोई चारा ही नहीं था बिल्कुल ही नागहां बिग़ैर किसी मेह़नत मशक़्क़त के इस मछली का ख़ुश्की में मिल जाना इस को करामत के सिवा और क्या कहा जा सकता है। फिर इतनी बड़ी मछली कि तीन सो भूके सिपाहियों ने इस मछली को काट काट कर अठ्ठारह दिनों तक ख़ूब ख़ूब शिकम सैर हो कर खाया। येह एक दूसरी करामत है क्यूंकि इतनी बड़ी मछली बहुत ही नादिरुल वुजूद है कि इतना बड़ा लश्कर इस को इतने दिनों तक खाता रहे और फिर इस के टुकड़ों को काट काट कर ऊंटों पर लाद कर मदीनए मुनव्वरा तक ले जाए मगर फिर भी मछली ख़त्म नहीं हुई बल्कि इस का कुछ हिस्सा लोग छोड़ कर चले गए। इतनी बड़ी मछली का वुजूद दुन्या में बहुत ही कमयाब है। फिर मछली एक ऐसी चीज़ है कि मरने के बा'द दो चार दिनों में सड़ गल कर और पानी बन कर बह जाती है मगर आ़दते जारिय्या के ख़िलाफ़ महीनों तक येह मरी हुई मछली ज़मीन पर धूप में पड़ी रही फिर भी बिल्कुल ताज़ा रही न इस में बदबू पैदा हूई न इस का मज़ा तब्दील हुवा येह तीसरी करामत है।

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی،باب غزوۃ سیف البحر...الخ، الحدیث:۴۳۶۰، ۴۳۶۱،ج۳،ص۱۲۷

ग़रज़ इस अ़जीबो ग़रीब मछली का मिल जाना इस एक करामत के ज़िम्न में चन्द करामतें ज़ाहिर हुई जो बिला शुबा अमीरे लश्कर ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ जन्नती सह़ाबी की बहुत ही अ़ज़ीम और नादिरुल वुजूद करामतें हैं। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم

﴾11﴿ ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ

ह़ज़रते ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा हैं और चूंकि इन्हों ने भी ह़ज़रते षुवैबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का दूध पिया था इस लिये दूध के रिश्ते से येह हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रिज़ाई भाई भी हैं। सिर्फ़ चार साल हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उ़म्र में बड़े थे और बा'ज़ का क़ौल है कि सिर्फ़ दो ही साल का फ़र्क़ था। येह हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से इन्तिहाई वालिहाना मह़ब्बत रखते थे। येही वजह है कि जब अबू जह्ल ने ह़रमे का'बा में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बहुत ज़ियादा बुरा भला कहा तो येह बा वुजूद येह कि अभी मुसलमान नहीं हुवे थे लेकिन जोशे ग़ज़ब में आपे से बाहर हो गए और ह़रमे का'बा में जा कर अबू जह्ल के सर पर इस ज़ोर के साथ अपनी कमान से ज़र्ब लगाई कि उस का सर फट गया और एक हंगामा मच गया। आप ने अबू जह्ल का सर फाड़ कर बुलन्द आवाज़ से कलिमा पढ़ा और क़ुरैश के सामने ज़ोर ज़ोर से ए'लान करने लगे कि मैं भी मुसलमान हो चुका हूं ! अब किसी की मजाल नहीं है कि मेरे भतीजे को आज से कोई बुरा भला कह सके।

इस में इख़्तिलाफ़ है कि ए'लाने नबुव्वत के दूसरे साल आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुसलमान हुवे या छटे साल, बहर ह़ाल आप के मुसलमान हो जाने से बहुत ज़ियादा इस्लाम और मुसलमानों की तक़्विय्यत का सामान हो गया क्यूंकि आप की बहादुरी और जंगी कारनामों का सिक्का तमाम बहादुराने क़ुरैश के ऊपर बैठा हुवा था।

दरबारे नबुव्वत से इन को "असदुल्लाह व असदुर्रसूल" (अल्लाह व रसूल का शेर) का मुअ़ज़्ज़ज़ ख़िताब मिला। सि. 3 हि. जंगे उहुद के मा'रिके में लड़ते हुवे शहादत से सरफ़राज़ हो गए और सय्यिदुश्शुहदा के क़ाबिले एह़तिराम लक़ब के साथ मशहूर हुवे।[(1)]

(اکمال،ص۵۶۰وزرقانی ج۳،ص۲۷۰تا۲۸۵ومدارج النبوۃ وغیرہ)

फ़िरिश्तों ने ग़ुस्ल दिया

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا का क़ौल है कि हज़रते हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इन की शहादत के बा'द फ़िरिश्तों ने ग़ुस्ल दिया। चुनान्चे, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी इस की तस्दीक़ फ़रमाई कि बेशक मेरे चचा को शहादत के बा'द फ़िरिश्तों ने ग़ुस्ल दिया।[(2)] (حجۃ اللہ علی العالمین،ص۸۶۳،ج۲بحوالہ ابن سعد)

तबसेरा

मस्अला येह है कि शहीद को ग़ुस्ल नहीं दिया जाएगा चुनान्चे, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को न तो खुद ग़ुस्ल दिया न सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को इस का हुक्म फ़रमाया लिहाज़ा ज़ाहिर येही है कि चूंकि तमाम शुहदाए उहुद में आप सय्यिदुश्शुहदा के मुअ़ज़्ज़ज़ ख़िताब से सरफ़राज़ हुवे इस लिये फ़िरिश्तों ने ए'ज़ाज़ी तौर पर आप के ए'ज़ाज़ व इकराम का इज़्हार करने के लिये आप को ग़ुस्ल दिया या मुमकिन है कि

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب اللدنية، اسلام حمزة، ج۱، ص۴۷۷
والاكمال فی اسماء الرجال، حرف الحاء، فصل فی الصحابة، ص۵۹۰
ومدارج النبوت، قسم دوم، باب سوم بدء الوحی وثبوت نبوت...الخ، ج۲، ص۴۴

2 ......حجة الله علی العالمين، الخاتمة فی اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فی ذكر جملة جميلة...الخ، ص۶۱۴

हज़रते हन्ज़ला ग़सीलुल मलाइका رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह इन को भी ग़ुस्ल की ह़ाजत हो और फ़िरिश्तों ने इस बिना पर ग़ुस्ल दिया। बहर हाल इस में शक नहीं कि एक सहाबी को ग़ुस्ल देने के लिये आस्मान से फ़िरिश्तों का नुज़ुल होना और अपने नूरानी हाथों से ग़ुस्ल देना येह सय्यिदुश्शुहदा ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक बहुत ही अ़ज़ीमुश्शान **करामत** है। (وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم)

क़ब्र के अन्दर से सलाम का जवाब

हज़रते फ़ातिमा ख़ुज़ाइय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का बयान है कि मैं एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुश्शुहदा जनाबे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़ारे अक़्दस की ज़ियारत के लिये गई और मैं ने क़ब्रे मुनव्वर के सामने खड़े हो कर اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَمَّ رَسُوْلِ اللّٰهِ कहा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ब आवाज़े बुलन्द क़ब्र के अन्दर से मेरे सलाम का जवाब दिया जिस को मैं ने अपने कानों से सुना।[1] (حجۃ اللہ، ج۲،ص۸۶۳بحوالہ بیہقی)

इसी त़रह़ शैख़ मह़मूद कुर्दी शैख़ानी नज़ीले मदीनए मुनव्वरा ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्रे अन्वर पर ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ब्रे मुनव्वर के अन्दर से ब आवाज़े बुलन्द इन के सलाम का जवाब दिया और इरशाद फ़रमाया कि ऐ शैख़ मह़मूद ! तुम अपने लड़के का नाम मेरे नाम पर "ह़म्ज़ा" रखना। चुनान्चे, जब ख़ुदावन्दे करीम ने इन को फ़रज़न्द अ़त़ा फ़रमाया तो इन्हों ने उस का नाम "ह़म्ज़ा" रखा।[2]

(حجۃ اللہ علی العالمین، ج۲،ص۸۶۳بحوالہ کتاب الباقیات الصالحات)

---

1 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة ...الخ،ص ٦١٤

2 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة ...الخ،ص ٦١٤

तबसेरा

इस रिवायत से ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की चन्द करामतें मा'लूम हुई :

﴾1﴿ येह कि आप ने क़ब्र के अन्दर से शैख़ मह़मूद के सलाम को सुन लिया और देख भी लिया कि सलाम करने वाले शैख़ मह़मूद हैं। फिर आप ने सलाम का जवाब शैख़ मह़मूद को सुना भी दिया ह़ालांकि दूसरे क़ब्र वाले सलाम करने वालों के सलाम को सुन तो लेते हैं और पहचान भी लेते हैं मगर सलाम का जवाब सलाम करने वालों को सुना नहीं सकते।

﴾2﴿ सय्यिदुश्शुहदा ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी क़ब्र शरीफ़ के अन्दर रहते हुवे येह मा'लूम था कि अभी शैख़ मह़मूद के कोई बेटा नहीं है मगर आइन्दा इन को ख़ुदावन्दे करीम फ़रज़न्द अ़त़ा फ़रमाएगा। जभी तो आप ने हुक्म दिया कि ऐ शैख़ मह़मूद ! तुम अपने लड़के का नाम मेरे नाम पर ह़म्ज़ा रखना।

﴾3﴿ आप ने जवाबे सलाम और बेटे का नाम रखने के बारे में जो कुछ इरशाद फ़रमाया वोह इस क़दर बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया कि शैख़ मह़मूद और दूसरे ह़ाज़िरीन ने सब कुछ अपने कानों से सुन लिया।

मज़्कूरए बाला करामतों से इस मस्अले पर रोशनी पड़ती है कि शुहदाए किराम अपनी अपनी क़ब्रों में पूरे लवाज़िमे ह़यात के साथ ज़िन्दा हैं और उन के इ़ल्म की वुस्अ़त का येह ह़ाल है कि वोह यहां तक जान और पहचान लेते हैं कि आदमी की पुश्त में जो नुत़्फ़ा है इस से पैदा होने वाला बच्चा लड़का है या लड़की। येही तो वजह है कि ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि ऐ शैख़ मह़मूद ! तुम अपने लड़के का नाम मेरे नाम पर रखना अगर इन को बिल यक़ीन येह मा'लूम न होता कि लड़का ही पैदा होगा तो आप किस त़रह़ लड़के का नाम अपने नाम पर रखने का हुक्म देते ? وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم

क़ब्र में से ख़ून निकला

जब हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी हुकूमत के दौरान मदीनए मुनव्वरा के अन्दर नहरें खोदने का हुक्म दिया तो एक नहर हज़रते हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़ारे अक़्दस के पहलू में निकल रही थी। ला इल्मी में अचानक नहरे खोदने वालों का फावड़ा आप के क़दम मुबारक पर पड़ गया और आप का पाउं कट गया तो उस में से ताज़ा ख़ून बह निकला हालांकि आप को दफ़्न हुवे छियालीस साल गुज़र चुके थे।(1) (حجۃ اللہ، ج۲،ص۸۶۴بحوالہ ابن سعد)

तबसेरा

वफ़ात के बा'द ताज़ा ख़ून का बह निकलना येह दलील है कि शुहदाए किराम अपनी क़ब्रों में पूरे लवाज़िमे हयात के साथ ज़िन्दा हैं जैसा कि इस से क़ब्ल भी हम इस मस्अले पर इसी किताब में क़दरे रोशनी डाल चुके हैं।

﴾12﴿ हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दूसरे चचा हैं इन की उ़म्र आप से दो साल ज़ाइद थी। येह इब्तिदाए इस्लाम में कुफ़्फ़ारे मक्का के साथ थे यहां तक कि आप जंगे बद्र में कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से जंग में शरीक हुवे और मुसलमानों के हाथों में गिरिफ़्तार हुवे मगर मुहक़्क़िक़ीन का क़ौल येह है कि येह जंगे बद्र से पहले मुसलमान हो गए थे और अपने इस्लाम को छुपाए हुवे थे और कुफ़्फ़ारे मक्का इन को क़ौमिय्यत का दबाव डाल कर ज़बरदस्ती जंगे बद्र में लाए थे। चुनान्चे, जंगे बद्र में लड़ाई से पहले हुज़ूरे

---

(1) ......الطبقات الکبری لابن سعد،طبقات البدریین من المهاجرین،ذکر الطبقة الاولیٰ...الخ، ج۳،ص۷ مختصراً

अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमा दिया था कि तुम लोग ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़त्ल मत करना क्यूंकि वोह मुसलमान हो गए हैं लेकिन कुफ़्फ़ारे मक्का उन पर दबाव डाल कर उन्हें जंग में लाए हैं।

येह बहुत ही मुअ़ज़्ज़ज़ और मालदार थे और ज़मानए जाहिलिय्यत में भी हुज्जाज को ज़मज़म शरीफ़ पिलाने और ख़ानए का'बा की ता'मीरात का ए'ज़ाज़ आप को ह़ासिल था। फ़त्ह़े मक्का के दिन इन्हीं की तरग़ीब पर ह़ज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया और दूसरे सरदाराने क़ुरैश भी इन्हीं के मश्वरों से मुतअष्षिर हो कर इस्लाम के दामन में आए। इन के फ़ज़ाइल में चन्द ह़दीषें भी मरवी हैं और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को बहुत सी बिशारतें और बहुत ज़ियादा दुआ़एं दी हैं जिन का तज़्किरा सिह़ाह़ सत्ता और ह़दीष की दूसरी किताबों में तफ़्सील के साथ मौजूद है। सि. 32 हि. में अठ्ठासी बरस की उ़म्र पा कर मदीनए मुनव्वरा में वफ़ात पाई और जन्नतुल बक़ीअ़ में सिपुर्दे ख़ाक किये गए।(1) (اکمال،ص۶۰۶وتاریخ الخلفاء وغیرہ)

करामत

इन के तुफ़ैल बारिश हुई

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में जब शदीद क़ह़त़ पड़ गया और ख़ुश्क साली की मुसीबत से दुन्याए अ़रब बद ह़ाली में मुब्तला हो गई तो अमीरुल

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص۶۰۶ مختصراً
واسد الغابة، عباس بن عبدالمطلب، ج۳، ص۱۶۳
والسيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدر الكبرى، ذكر رؤيا عاتكة بنت عبدالمطلب،
نهى النبي اصحابه عن قتل...الخ، ص۲۵۹ ملخصاً

मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़े इस्तिस्क़ा के लिये मदीनए मुनव्वरा से बाहर मैदान में तशरीफ़ ले गए और इस मौक़अ़ पर हज़ारों सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का इजतिमाअ़ हुवा। इस भरे मजमअ़ में दुआ़ के वक़्त ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बाज़ू थाम कर उन्हें उठाया और उन को अपने आगे खड़ा कर के इस त़रह़ दुआ़ मांगी :

"या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पहले जब हम लोग क़ह़्त़ में मुब्तला होते थे तो तेरे नबी को वसीला बना कर बारिश की दुआ़एं मांगते थे और तू हम को बारिश अ़त़ा फ़रमाता था मगर आज हम तेरे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा को वसीला बना कर दुआ़ मांगते हैं लिहाज़ा तू हमें बारिश अ़त़ा फ़रमा दे।"

फिर जब ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी बारिश के लिये दुआ़ मांगी तो नागहां उसी वक़्त इस क़दर बारिश हुई कि लोग घुटनों घुटनों तक पानी में चलते हुवे अपने घरों में वापस आए और लोग जोशे मसर्रत और जज़्बए अ़क़ीदत से आप की चादर मुबारक को चूमने लगे और कुछ लोग आप के जिस्मे मुबारक पर अपना हाथ फेरने लगे चुनान्चे, ह़ज़रते ह़स्सान बिन षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो दरबारे नबुव्वत के शाइ़र थे इस वाक़िए़ को अपने अश्आ़र में ज़िक्र करते हुवे फ़रमाया है

سَئَلَ الْاِمَامُ وَقَدْ تَتَابَعَ جَدْبُنَا
فَسَقَى الْغَمَامُ بِغُرَّةِ الْعَبَّاسِ
اَحْيَى الْاِلٰـهُ بِهِ الْبِلَادَ فَاَصْبَحَتْ
مُخْضَرَّةَ الْاَجْنَابِ بَعْدَ الْيَاسِ

(या'नी अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस ह़ालत में दुआ़ मांगी कि लगातार कई साल से क़ह़्त़ पड़ा हुवा था तो बदली ने

हज़रते अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रोशन पेशानी के तुफ़ैल में सब को सैराब कर दिया। मा'बूदे बर हक़ ने इस बारिश से तमाम शहरों को ज़िन्दगी अता फ़रमाई और ना उम्मीदी के बा'द तमाम शहरों के अतराफ़ हरे भरे हो गए।)[1] (بخاری،ج۱،ص۵۲۶ و حجۃ اللہ،ج۲،ص۸۶۵ و دلائل النبوۃ،ج۳،ص۲۰۶)

﴾13﴿ हज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते जा'फ़र बिन अबी तालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते अली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भाई हैं। येह क़दीमुल इस्लाम हैं। इकत्तीस आदमियों के मुसलमान होने के बा'द येह दामने इस्लाम में आए और कुफ़्फ़ारे मक्का की ईज़ा रसानियों से तंग आ कर रहमते आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इजाज़त से पहले हबशा की तरफ़ हिजरत की फिर हबशा से कश्तियों पर सुवार हो कर मदीनए तय्यिबा की तरफ़ हिजरत की और ख़ैबर में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते आलिया में उस वक़्त पहुंचे जब कि ख़ैबर फ़त्ह हो चुका था और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم माले ग़नीमत को मुजाहिदीन के दरमियान तक़्सीम फ़रमा रहे थे। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जोशे महब्बत में उन से मुआनक़ा फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि मैं इस बात का फ़ैसला नहीं कर सकता कि जंगे ख़ैबर की फ़त्ह से मुझे ज़ियादा ख़ुशी हासिल हुई या ऐ जा'फ़र बिन अबू तालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तुम मुहाजिरीने हबशा की आमद से ज़ियादा ख़ुशी हासिल हुई।

येह बहुत ही जांबाज़ और बहादुर थे और निहायत ही ख़ूब सूरत और वजीहा भी। सि. 8 हि. की जंगे मौता में अमीरे लश्कर

---

1 ......صحیح البخاری،کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم،باب ذکر العباس بن عبدالمطلب، الحدیث: ۳۷۱۰،ج۲، ص۵۳۷

وحجۃ اللّٰہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملۃ جمیلۃ ...الخ،ص۶۱۵

होने की हालत में इक्तालीस बरस की उ़म्र में शहादत से सरफ़राज़ हुवे। इस जंग में सिपह सालार होने की वजह से लश्करे इस्लाम का झन्डा इन के हाथ में था। कुफ़्फ़ार ने तल्वार की मार से इन के दाएं हाथ को शहीद कर दिया तो इन्हों ने झपट कर झन्डे को बाएं हाथ से पकड़ लिया जब बायां हाथ भी कट कर गिर पड़ा तो इन्हों ने झन्डे को दोनों कटे हुवे बाज़ूओं से थाम लिया।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : जब हम ने इन की लाश मुबारक को उठाया तो इन के जिस्मे अत़हर पर नव्वे ज़ख़्म थे मगर कोई ज़ख़्म भी इन के बदन के पिछले हिस्से पर नहीं लगा था बल्कि तमाम ज़ख़्म इन के बदन के अगले ही हिस्से पर थे।[1] (اکمال صفحہ ۵۸۹ وحواشی بخاری وغیرہ)

करामत

ज़ुल जनाहैन

इन का एक लक़ब "ज़ुल जनाहैन" (दो बाज़ूओं वाला) है। दूसरा लक़ब त़य्यार (उड़ने वाला) है। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की येह करामत बयान फ़रमाई है कि इन के कटे हुवे बाज़ूओं के बदले में अल्लाह तआ़ला ने इन को दो पर अ़ता फ़रमाए हैं और येह जन्नत के बाग़ों में जहां चाहते हैं उड़ कर चले जाते हैं।[2]

तबसेरा

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की इसी करामत को बयान करते हुवे अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़ख़्रिया अन्दाज़ में येह शे'र इरशाद फ़रमाया है :

---

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الجیم، فصل فی الصحابۃ، ص ۵۸۹ ملخصاً
والاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، جعفربن ابی طالب، ج۱، ص ۳۱۳ ملخصاً

2 ......الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، جعفربن ابی طالب، ج۱، ص ۳۱۳

وَجَعْفَرُ الَّذِیْ یُمْسِیْ وَیُضْحِیْ
یَطِیْرُ مَعَ الْمَلَائِکَۃِ ابْنُ اُمِّیْ

(या'नी जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो सुब्ह़ो शाम फ़िरिश्तों के झुरमट में नूरानी बाज़ूओं से परवाज़ फ़रमाते रहते हैं वोह मेरे ह़क़ीक़ी भाई हैं ।)(1)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह करामत नादिरुल वुजूद है क्यूंकि और किसी दूसरे सहाबी के बारे में येह करामत हमारी नज़र से नहीं गुज़री ।

﴾14﴿ ह़ज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह ख़ानदाने क़ुरैश के बहुत ही नामवर अशराफ़ में से हैं । इन की वालिदा ह़ज़रते बीबी लुबाबए सुग़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते बीबी मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बहन थीं । येह बहादुरी और फ़न्ने सिपहगिरी व तदाबीरे जंग के ए'तिबार से तमाम सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में एक ख़ुसूसी इम्तियाज़ रखते हैं । इस्लाम क़बूल करने से पहले इन की और इन के बाप वलीद की इस्लाम दुश्मनी मश्हूर थी । जंगे बद्र और जंगे उहुद की लड़ाइयों में येह कुफ़्फ़ार के साथ रहे और इन से मुसलमानों को बहुत ज़ियादा जानी नुक़्सान पहुंचा मगर नागहां इन के दिल में इस्लाम की सदाक़त का ऐसा आफ़्ताब तूलुअ़ हो गया कि सि. 7 हि. में येह ख़ुद ब ख़ुद मक्का से मदीना जा कर दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर हो गए और दामने इस्लाम में आ गए और येह अ़हद कर लिया कि अब ज़िन्दगी भर मेरी तल्वार कुफ़्फ़ार से लड़ने के लिये बे नियाम रहेगी चुनान्चे, इस के बा'द हर जंग में इन्तिहाई मुजाहिदाना जाहो जलाल के साथ कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में शमशीर बकफ़ रहे यहां तक कि सि. 8 हि. में जंगे मौता में जब ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिषा व ह़ज़रते जा'फ़र बिन

(1)......البدایۃ و النھایۃ، فصل فی ذکر شیء من سیرتہ العادلۃ...الخ، ج٦، ص٤٨٧

अबी तालिब व हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم तीनों सिपह सालारों ने यके बा'द दीगरे जामे शहादत नौश कर लिया तो इस्लामी फ़ौज ने इन को अपना सिपह सालार मुन्तख़ब किया और इन्हों ने ऐसी जांबाज़ी के साथ जंग की, कि मुसलमानों की फ़त्हे मुबीन हो गई। और इसी मौक़अ़ पर जब कि येह जंग में मसरूफ़ थे हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा में सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की एक जमाअ़त के सामने इन को "सैफुल्लाह" (**अल्लाह** की तल्वार) के ख़िताब से सरफ़राज़ फ़रमाया। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में जब फ़ितनए इर्तिदाद ने सर उठाया तो इन्हों ने इन मा'रिकों में भी ख़ुसूसन जंगे यमामा में मुसलमान फ़ौजों की सिपह सालारी की ज़िम्मेदारी क़बूल की और हर महाज़ पर फ़त्हे मुबीन हासिल की। फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िलाफ़त के दौरान रूमियों की जंगों में भी इन्हों ने इस्लामी फ़ौजों की कमान संभाली और बहुत ज़ियादा फ़ुतूहात हासिल हुईं, सि. 21 हि. में चन्द दिन बीमार रह कर वफ़ात पाई।[1] (اکمال،ص۵۹۳وکنز العمال جلد۱۵وتاریخ الخلفاء)

करामात

ज़हर ने असर नहीं किया

रिवायत है कि जब हज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मक़ामे "हीरा" में अपने लश्कर के साथ पड़ाव किया तो लोगों ने अ़र्ज़ किया कि ऐ अमीरे लश्कर ! आप अ़जमियों के ज़हर से

(1)......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الخاء، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۲ مختصراً
و کنزالعمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة خالدبن الولید، الحدیث: ۳۷۰۲۰،
ج۷، الجزء ۱۳، ص ۱۶۱
وتاریخ الخلفاء، الخلفاء الراشدون، ابو بکرالصدیق، فصل فیماوقع فی خلافته، ص ۵۸
واسد الغابة، خالد بن الولید بن المغیرة، ج۲، ص ۱۳۵۔۱۳۸ ملتقطاً

बचते रहें। हम लोगों को अन्देशा है कि कहीं येह लोग आप को ज़हर न दे दें। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि लाओ मैं देख लूं कि अ़जमियों का ज़हर कैसा होता है? लोगों ने आप को दिया तो आप بِسۡمِ اللّٰہِ पढ़ कर खा गए और आप को बाल बराबर भी ज़रर नहीं पहुंचा और "कल्बी" की रिवायत में येह है कि एक ईसाई पादरी जिस का नाम अ़ब्दुल मसीह़ था एक ऐसा ज़हर ले कर आया कि इस के खा लेने से एक घन्टे के बा'द मौत यक़ीनी होती है। आप ने उस से वोह ज़हर मांग कर उस के सामने ही

بِسۡمِ اللّٰهِ الَّذِیۡ لَا یَضُرُّ مَعَ اسۡمِهٖ شَیۡءٌ فِی الۡاَرۡضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ

पढ़ा और येह ज़हर खा गए। येह मन्ज़र देख कर अ़ब्दुल मसीह़ ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम! येह इतना ख़त़रनाक ज़हर खा कर भी ज़िन्दा हैं येह बहुत ही ह़ैरत की बात है। अब बेहतर येही है कि इन से सुल्ह़ कर लो वरना इन की फ़त्ह़ यक़ीनी है। चुनान्चे, उन ईसाइयों ने एक गिरां क़दर जिज़्या दे कर सुल्ह़ कर ली। येह वाक़िआ़ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में हुवा।(1) (حجۃ اللہ ج۲،ص۸۶۷ بحوالہ بیہقی وغیرہ)

तबसेरा

हम इसी किताब की इब्तिदा में "तह़क़ीक़े करामात" के उ़न्वान के तह़्त में येह तह़रीर कर चुके हैं कि करामत की पच्चीस क़िस्मों में से मोहलिकात का असर न करना येह भी करामत की एक बहुत ही शानदार क़िस्म है चुनान्चे, मज़्कूरए बाला रिवायत इस की बेहतरीन मिषाल है।

---

1 ......حجة اللّٰه على العالمين، الخاتمة فی اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فی ذكر جملة جميلة ...الخ، ص ٦١٧

والكامل فی التاريخ ، سنة اثنتی عشرة، ذكر وقعة يوم...الخ، ج٢، ص ٢٤٤ ملتقطاً

وحياة الحيوان الكبرى، باب الحاء المهملة، الحية، فائدة، ج١، ص ٣٩٠ـ٣٩١ ملخصاً

शराब की शहद

हज़रते ख़ैषमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि एक शख़्स हज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास शराब से भरी हुई मश्क ले कर आया तो आप ने येह दुआ मांगी कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस को शहद बना दे। थोड़ी देर बा'द जब लोगों ने देखा तो वोह मश्क शहद से भरी हुई थी।[1] (حجۃ اللہ ج۲،ص۸۶۷ وطبری ج۴،ص۴)

शराब सिर्का बन गई

एक मरतबा लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से शिकायत की, कि ऐ अमीरे लश्कर ! आप की फ़ौज में कुछ लोग शराब पीते हैं। आप ने फ़ौरन ही तलाशी लेने का हुक्म दे दिया। तलाशी लेने वालों ने एक सिपाही के पास से शराब की एक मश्क बर आमद की लेकिन जब येह मश्क आप के सामने पेश की गई तो आप ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में येह दुआ मांगी कि "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस को सिर्का बना दे" चुनान्चे, जब लोगों ने मश्क का मुंह खोल कर देखा तो वाक़ेई उस में से सिर्का निकला। येह देख कर मश्क वाला सिपाही कहने लगा : ख़ुदा की क़सम ! येह हज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की करामत है वरना हक़ीक़त येही है कि मैं ने इस मश्क में शराब भर रखी थी।[2] (حجۃ اللہ علی العالمین ج۲،ص۸۶۷)

तबसेरा

करामत की पच्चीस क़िस्मों में से "क़ल्बे माहिय्यत" या'नी किसी चीज़ की हक़ीक़त को बदल देना भी है। मज़्कूरए बाला दोनों

1 ......حجۃ اللّٰہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملۃ جمیلۃ ...الخ، ص٦١٧

2 ......حجۃ اللّٰہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملۃ جمیلۃ ...الخ، ص٦١٧

रिवायात करामत की इसी क़िस्म की मिषालें हैं कि औलियाउल्लाह जब भी चाहते हैं अपनी रूहानी ताक़त या अपनी मुस्तजाब दुआओं की बदौलत एक चीज़ की हक़ीक़त को बदल कर उस को दूसरी चीज़ बना देते हैं। औलियाउल्लाह की करामतों के तज़किरों में इस की हज़ारों मिषालें मिलेंगी।

﴾15﴿ हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर बिन अल ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़रज़न्दे अरजुमन्द हैं। इन की वालिदा का नाम ज़ैनब बिन्ते मुज़ऊन है। येह बचपन ही में अपने वालिदे माजिद के साथ मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे। येह इल्मो फ़ज़्ल के साथ बहुत ही इबादत गुज़ार और मुत्तक़ी व परहेज़गार थे। मैमून बिन मेहरान ताबेई का फ़रमान है कि मैं ने अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से बढ़ कर किसी को मुत्तक़ी व परहेज़गार नहीं देखा। हज़रते इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाया करते थे कि हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमानों के इमाम हैं। येह हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वफ़ाते अक़्दस के बा'द साठ बरस तक हज के मजमूओं और दूसरे मवाक़ेअ़ पर मुसलमानों को इस्लामी अहकाम के बारे में फ़तवा देते रहे। मिज़ाज में बहुत ज़ियादा सख़ावत का ग़लबा था और बहुत ज़ियादा सदक़ा व ख़ैरात की आदत थी। अपनी जो चीज़ पसन्द आ जाती थी फ़ौरन ही उस को राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़ैरात कर देते थे। आप ने अपनी ज़िन्दगी में एक हज़ार ग़ुलामों को ख़रीद ख़रीद कर आज़ाद फ़रमाया। जंगे ख़न्दक़ और इस के बा'द की इस्लामी लड़ाइयों में बराबर कुफ़्फ़ार से जंग करते रहे। हां अलबत्ता हज़रते अली और हज़रते मुआविय्या (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के दरमियान जो लड़ाइयां हुईं आप उन लड़ाइयों में ग़ैर जानिबदार रहे।

अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान की हुकूमत के दौरान ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी अमीरुल ह़ज बन कर आया। आप ने खुत़बे के दरमियान उस को टोक दिया। ह़ज्जाज ज़ालिम ने जल भुन कर अपने एक सिपाही को हुक्म दे दिया कि वोह ज़हर में बुझाया हुवा नेज़ा हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पाउं में मार दे। चुनान्चे, उस मर्दूद ने आप के पाउं में नेज़ा मार दिया। ज़हर के अषर से आप का पाउं बहुत ज़ियादा फूल गया और आप अ़लील हो कर साहिबे फ़िराश हो गए। मक्कार ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ आप की इ़यादत के लिये आया और कहने लगा कि ह़ज़रत ! काश ! मुझे मा'लूम हो जाता कि किस ने आप को नेज़ा मारा है ? आप ने फ़रमाया : इस को जान कर फिर तुम क्या करोगे ? ह़ज्जाज ने कहा कि अगर मैं उस को क़त्ल न करूं तो खुदा मुझे मार डाले। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि तुम कभी हरगिज़ हरगिज़ उस को क़त्ल नहीं करोगे उस ने तो तुम्हारे हुक्म ही से ऐसा किया है। येह सुन कर ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ कहने लगा कि नहीं नहीं, ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान ! आप हरगिज़ हरगिज़ येह ख़याल न करें और जल्दी से उठ कर चल दिया। इसी मरज़ में सि. 73 हि. में हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के तीन माह बा'द हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चोरासी या छियासी बरस की उ़म्र पा कर वफ़ात पा गए और मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में मक़ामे "मुह़स्सब" या मक़ामे "ज़ी तुवा" में मदफ़ून हुवे।[1]

(اسد الغابہ، ج۳،ص۲۲۹، اکمال،ص۶۰۵ وتذکرۃ الحفاظ، ج۱،ص۳۵)

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص ٦٠٤-٦٠٥
واسد الغابة، عبداللّٰه بن عمر بن الخطاب، ج٣، ص ٣٤٧-٣٥١ ملخصاً

करामात

शेर दुम हिलाता हुवा भागा

अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुबकी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने त़बक़ात में तह़रीर फ़रमाया है कि एक शेर रास्ते में बैठा हुवा था और क़ाफ़िले वालों का रास्ता रोके हुवे था। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के क़रीब जा कर फ़रमाया कि रास्ते से अलग हट कर खड़ा हो जा। आप की येह डांट सुन कर शेर दुम हिलाता हुवा रास्ते से दूर भाग निकला।(1) (تفسیر کبیر، ج۵،ص۹۷۱ و حجۃ اللہ، ج۲،ص۸۶۶)

एक फ़िरिश्ते से मुलाक़ात

ह़ज़रते अ़त़ा बिन अबी रबाह़ का बयान है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोपहर के वक़्त देखा कि एक बहुत ही ख़ूब सूरत सांप ने सात चक्कर लगा कर बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ किया। फिर मक़ामे इब्राहीम पर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी। आप ने उस सांप से फ़रमाया : अब आप जब कि त़वाफ़ से फ़ारिग़ हो चुके हैं यहां पर आप का ठहरना मुनासिब नहीं है क्यूंकि मुझे येह ख़त़रा है कि मेरे शहर के नादान लोग आप को कुछ ईज़ा पहुंचा देंगे। सांप ने बग़ौर आप के कलाम को सुना फिर अपनी दुम के बल खड़ा हो गया और फ़ौरन ही उड़ कर आस्मान पर चला गया। इस त़रह़ लोगों को मा'लूम हो गया कि येह कोई फ़िरिश्ता था जो सांप की शक्ल में त़वाफ़े का'बा के लिये आया था।(2) (دلائل النبوۃ، ج۳،ص۲۰۷)

ज़ियाद कैसे हलाक हुवा ?

ज़ियाद सल्त़नते बनू उमय्या का बहुत ही ज़ालिम व जाबिर गवर्नर था। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह ख़बर

1 ......حجۃ اللّٰہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملۃ جمیلۃ ...الخ،ص ٦١٦

2 ......دلائل النبوۃ لابی نعیم ، اجابۃ الدعوۃ،اذا بصر بحیۃ...الخ،ج٢،ص ١٢٢

मिली कि वोह हिजाज़ का गवर्नर बन कर आ रहा है। आप को येह हरगिज़ हरगिज़ गवारा न था कि मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा पर ऐसा ज़ालिम हुकूमत करे। चुनान्चे, आप ने येह दुआ मांगी कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इब्ने सुमय्या (ज़ियाद) की इस तरह मौत हो जाए कि इस के क़िसास में कोई मुसलमान क़त्ल न किया जाए। आप की येह दुआ मक़्बूल हो गई कि अचानक ज़ियाद के अंगूठे में ताऊन की गलटी निकल पड़ी और वोह एक हफ़्ते के अन्दर ही एड़ियां रगड़ रगड़ कर मर गया।[1] (ابن عساکر والمنتخب، ج۵،ص۲۳۱)

तबसेरा

हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की पहली करामत से येह मा'लूम हुवा कि अल्लाह वालों की हुकूमत का सिक्का न सिर्फ़ इन्सानों ही के दिलों पर होता है बल्कि इन के हाकिमाना तसर्रुफ़ात का परचम दरिन्दों, चरिन्दों, परन्दों के दिलों पर भी लहराता रहता है और सब के सब **अल्लाह** वालों के फ़रमां बरदार हो जाते हैं। येही वोह मज़्मून है जिस की तरफ़ इशारा करते हुवे हज़रते शैख़ सा'दी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया है

تو ہم گردن از حکمِ داور مپیچ

کہ گردن نہ پیچد زِ حکمِ تو ہیچ

(या'नी तुम ख़ुदावन्दे तआला के हुक्म से गर्दन न मोड़ो ताकि कोई मख़्लूक़ तुम्हारे हुक्म से गर्दन न मोड़े)

मत़लब येह है कि अगर तुम ख़ुदा के फ़रमां बरदार बने रहोगे तो ख़ुदा की तमाम मख़्लूक़ात तुम्हारी फ़रमां बरदार बनी रहेगी।

दूसरी करामत से येह सबक़ मिलता है कि जब का'बए मुअज़्ज़मा के तवाफ़ के लिये फ़िरिश्ते सांप की शक्ल में आते हैं तो

1 ......الکامل فی التاریخ، سنۃ ثلاث و خمسین، ذکر وفاۃ زیاد، ج۳، ص ۳٤۱

फिर ज़ाहिर है कि फ़िरिश्ते इन्सानों की शक्ल में भी ज़रूर ही आते होंगे। लिहाज़ा हर हा़जी को येह ध्यान रखना चाहिये कि ह़रमे का'बा में हरगिज़ हरगिज़ किसी से उलझना नहीं चाहिये। ख़ुदा न ख़्वास्ता तुम किसी इन्सान से झगड़ा तकरार करो और वोह ह़क़ीक़त में कोई फ़िरिश्ता हो जो इन्सान के रूप में तकरार कर रहा हो तो फिर येह समझ लो कि किसी फ़िरिश्ते से लड़ने झगड़ने का अन्जाम अपनी हलाकत के सिवा और क्या हो सकता है ?

तीसरी करामत से ज़ाहिर है कि अल्लाह वालों की दुआ़एं उस तीर की त़रह़ होती हैं जो कमान से निकल कर निशाने से बाल बराबर ख़त़ा नहीं करतीं। इस लिये हमेशा इस का ख़याल रखना चाहिये कि कभी भी किसी बद दुआ़ की ज़द और फिटकार में न पड़ें और मग़रिब ज़दा मुल्ह़िदों और बे दीनों की त़रह़ हरगिज़ हरगिज़ येह न कहा करें कि "मियां ! किसी की दुआ़ या बद दुआ़ से कुछ नहीं होता, येह मुल्ला लोग ख़्वाह म ख़्वाह लोगों को बद दुआ़ की धूंस दिया करते हैं" बल्कि येह ईमान रखें कि बुज़ुर्गों की दुआ़ओं और बद दुआ़ओं में बहुत ज़ियादा ताषीर है।

﴾16﴿ ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ बिन अल नो'मान अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह मदीनए मुनव्वरा के रहने वाले बहुत ही जलीलुल क़द्र सह़ाबी हैं। ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ ले जाने से पहले ही ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मदीनए मुनव्वरा भेज दिया कि वोह मुसलमानों को इस्लाम की ता'लीम दें और ग़ैर मुस्लिमों में इस्लाम की तब्लीग़ करते रहें। चुनान्चे, ह़ज़रते मुसअ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तब्लीग़ से ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दामने इस्लाम में आ गए और ख़ुद इस्लाम क़बूल करते ही येह ए'लान फ़रमा दिया कि मेरे क़बीलए बनू अ़ब्दुल अशहल का जो मर्द या औ़रत इस्लाम से मुंह

मोड़ेगा मेरे लिये ह़राम है कि मैं उस से कलाम करूं। आप का येह ए'लान सुनते ही क़बीलए बनू अ़ब्दुल अशहल का एक एक बच्चा दौलते इस्लाम से माला माल हो गया। इस त़रह़ आप का मुसलमान हो जाना मदीनए मुनव्वरा में इशाअ़ते इस्लाम के लिये बहुत ही बा बरकत षाबित हुवा।(1)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत ही बहादुर और इन्तिहाई निशाने बाज़ तीर अन्दाज़ भी थे। जंगे बद्र और जंगे उहुद में ख़ूब ख़ूब दादे शुजाअ़त दी, मगर जंगे ख़न्दक़ में ज़ख़्मी हो गए और इसी ज़ख़्म में शहादत से सरफ़राज़ हो गए। इन की शहादत का वाकिआ़ येह है कि आप एक छोटी सी ज़िरह पहने हुवे नेज़ा ले कर जोशे जिहाद में लड़ने के लिये मैदाने जंग में जा रहे थे कि इब्नुल अ़रक़ा नामी काफ़िर ने ऐसा निशाना बान्ध कर तीर मारा कि जिस से आप की एक रग जिस का नाम "अकह़ल" है कट गई। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के लिये मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में एक ख़ैमा गाड़ा और इन का इलाज शुरूअ़ किया। ख़ुद अपने दस्ते मुबारक से दो मरतबा इन के ज़ख़्म को दाग़ा और इन का ज़ख़्म भरने लग गया था लेकिन इन्हों ने शौक़े शहादत में ख़ुदावन्दे तआ़ला से येह दुआ़ मांगी :

"या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू जानता है कि किसी क़ौम से मुझे जंग करने की इतनी तमन्ना नहीं है जितनी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से लड़ने की तमन्ना है जिन्हों ने तेरे रसूल को झुटलाया और इन को इन के वत़न से निकाला, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरा तो येही ख़याल है कि अब तू ने हमारे और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के दरमियान जंग का ख़ातिमा कर दिया है लेकिन अगर अभी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से कोई जंग बाक़ी रह गई हो जब तो मुझे ज़िन्दा रखना ताकि मैं तेरी राह में उन काफ़िरों से जंग करूं और अगर अब उन लोगों से कोई जंग बाक़ी न रह गई हो तो तू मेरे इस ज़ख़्म को फाड़ दे और इसी ज़ख़्म में तू मुझे शहादत अ़त़ा फ़रमा दे।"

1 ......اسد الغابة، سعد بن معاذ، ج ٢، ص ٤٤١

ख़ुदा की शान कि आप की येह दुआ ख़त्म होते ही बिल्कुल अचानक आप का ज़ख़्म फट गया और ख़ून बह कर मस्जिदे नबवी में बनी ग़िफ़ार के ख़ैमे के अन्दर पहुंच गया। उन लोगों ने चोंक कर कहा कि ऐ ख़ैमे वालो ! येह कैसा ख़ून है जो तुम्हारी त़रफ़ से बह कर हमारी त़रफ़ आ रहा है ? जब लोगों ने देखा तो ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ज़ख़्म से ख़ून जारी था और इसी ज़ख़्म में इन की शहादत हो गई।[1] (بخاری، ج۲،ص۵۹۱باب مرجع النبی من الاحزاب)

ऐन वफ़ात के वक़्त इन के सिरहाने हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं। जां कनी के आ़लम में इन्हों ने आख़िरी बार जमाले नबुव्वत का दीदार किया और कहा : السلام علیك یا رسول اللّٰہ फिर बुलन्द आवाज़ से कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं गवाही देता हूं कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं और आप ने तब्लीग़े रिसालत का ह़क़ अदा कर दिया।[2] (مدارج النبوۃ،ج۲،ص۱۸۱)

आप का साले विसाल 5 हिजरी है। ब वक़्ते विसाल आप की उ़म्र शरीफ़ 37 बरस की थी। जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हैं। जब हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन को दफ़्ना कर वापस आ रहे थे तो शिद्दते ग़म से आप के आंसूओं के क़त़रात आप की रीश मुबारक पर गिर रहे थे।[3] (اکمال،ص۵۹۶واسد الغابہ،ج۲،ص۲۹۸)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرجع النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم من احزاب...الخ، الحدیث:۴۱۲۲، ج۳، ص۵۷

2 ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب پنجم، ج۲، ص ۱۸۱

3 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف السین، فصل فی الصحابة، ص۵۹۶
واسد الغابة، سعد بن معاذ رضی اللّٰہ عنہ، ج۲، ص۴۴۳

करामत

जनाज़े में सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रावी हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि सा'द बिन मुआ़ज़ की मौत से अ़र्शे इलाही हिल गया और सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते इन के जनाज़े में शरीक हुवे ।[(1)] (زرقانی، ج۲،ص۱۴۳وحجۃ اللہ ج۲،ص۸۶۸)

मिट्टी मुश्क बन गई

मुह़म्मद बिन शुरह़बील बिन ह़सना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का बयान है कि एक शख़्स ने ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र की मिट्टी हाथ में ली तो उस में से मुश्क की ख़ुश्बू आने लगी और एक रिवायत में येह भी है कि जब उन की क़ब्र खोदी गई तो उस में से ख़ुश्बू आने लगी जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस का ज़िक्र किया गया तो आप ने سُبْحٰنَ اللہ ! سُبْحٰنَ اللہ फ़रमाया और मसर्रत के आषार आप के रुख़्सारे अन्वर पर नुमूदार हो गए ।[(2)]

(زرقانی، ج۲،ص۱۴۳وحجۃ اللہ،ج۲ص۸۶۸بحوالہ ابن سعد)

फ़िरिश्तों से ख़ैमा भर गया

हज़रते सलमा बिन अस्लम बिन ह़रीश رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ैमे में दाख़िल हुवे तो वहां कोई भी आदमी मौजूद न था मगर फिर भी हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लम्बे लम्बे

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب اللدنية، غزوة بنی قريظة، ج٣، ص٩٢
وحجة الله على العالمين، الخاتمة فی اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فی ذكر جملة جميلة ...الخ، ص٦١٧

2 ......شرح الزرقانی علی المواهب اللدنية، غزوة بنی قريظة، ج٣، ص٩٨-٩٩

क़दम रख कर फ़लांगते हुवे ख़ैमे में तशरीफ़ ले गए और उन की लाश के पास थोड़ी देर ठहर कर बाहर तशरीफ़ लाए। मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने आप को देखा कि आप ख़ैमे में लम्बे लम्बे क़दम के साथ फ़लांगते हुवे दाख़िल हुवे हालांकि ख़ैमे में कोई शख़्स भी मौजूद न था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि ख़ैमे में इस क़दर फ़िरिश्तों का हुजूम था कि वहां क़दम रखने की जगह न थी इस लिये मैं ने फ़िरिश्तो के बाज़ूओं को बचा बचा कर क़दम रखा।[1] (حجۃ اللہ علی العالمین، ج۲،ص ۸۶۸ بحوالہ ابن سعد)

तबसेरा

खु़दा عَزَّوَجَلَّ के नेक और मह़बूब बन्दों की निस्बत से जब उन की क़ब्र की मिट्टी में मुश्क की ख़ुश्बू पैदा हो जाती है तो उन मुक़द्दस क़ब्रों के पास हाज़िर होने वाले ज़ाइरों की अगर बीमारियां ज़ाइल हो कर इन्हें तन्दुरुस्ती मिल जाए या इन की नुहूसत व शक़ावत दूर हो कर इन्हें बरकत व सआ़दत ह़ासिल हो जाए तो इस में कौन सा तअ़ज्जुब है ? जिन की ताषीर से मिट्टी मुश्क बन सकती है क्या उन की ताषीर से बीमारी तन्दुरुस्ती और बद नसीबी ख़ुश नसीबी नहीं बन सकती ?

काश ! वोह लोग जो औलियाउल्लाह की क़ब्रों को मिट्टी का ढेर कह कर क़ब्रों की ज़ियारत करने वालों का मज़ाक़ उड़ाया करते हैं और इन मुक़द्दस क़ब्रों की ताषीरों का इन्कार करते रहते हैं इस रिवायत से हिदायत की रोशनी ह़ासिल करते और मक़ाबिरे औलियाउल्लाह का अदब व एह़तिराम करते।

1 ......حجۃ اللّٰہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملۃ جمیلۃ ...الخ، ص ٦١٧

﴾17﴿ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन हिराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

येह मदीनए मुनव्वरा के रहने वाले अन्सारी हैं और मश्हूर सहाबी हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के वालिदे माजिद हैं। क़बीलए अन्सार में येह अपने ख़ानदान बनी सलमा के सरदार और रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बहुत ही जां निषार सहाबी हैं। जंगे बद्र में बड़ी बहादुरी और जांबाज़ी के साथ कुफ़्फ़ार से लड़े और सि. 3 हि. में जंगे उहुद के दिन सब से पहले जामे शहादत से सैराब हुवे।[1]

बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरा की रिवायत है कि इन्हों ने रात में अपने फ़रज़न्द हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बुला कर येह फ़रमाया : मेरे प्यारे बेटे ! कल सुब्ह़ जंगे उहुद में सब से पहले मैं ही शहादत से सरफ़राज़ होऊंगा और बेटा सुन लो ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द तुम से ज़ियादा मेरा कोई प्यारा नहीं है लिहाज़ा तुम मेरा क़र्ज़ अदा कर देना और अपनी बहनों के साथ अच्छा सुलूक करना येह मेरी आख़िरी वसिय्यत है।

हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि वाक़ेई सुब्ह़ को मैदाने जंग में सब से पहले मेरे वालिद हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन हिराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ही शहीद हुवे।[2]

(بخاری، ج۱، ص۱۸۰واسد الغابہ، ج۳، ص۲۳۲)

करामात

फ़िरिश्तों ने साया किया

हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि जंगे उहुद के दिन जब मेरे वालिद हज़रते अ़ब्दुल्लाह अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मुक़द्दस

1 ......اسد الغابة، عبداللّٰہ بن عمرو بن حرام، ج۳، ص ۳۵۳

2 ......صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب ھل یخرج المیت من القبر...الخ، الحدیث: ۱۳۵۱، ج۱، ص۴۵۴

लाश को उठा कर बारगाहे रिसालत में लाए तो उन का येह हाल था कि काफ़िरों ने उन के कान और नाक को काट कर उन की सूरत बिगाड़ दी थी। मैं ने चाहा कि उन का चेहरा खोल कर देखूं तो मेरी बरादरी और कुम्बा क़बीले वालों ने मुझे इस ख़याल से मन्अ़ कर दिया कि लड़का अपने बाप का येह ह़ाल देख कर रन्जो ग़म से निढाल हो जाएगा। इतने में मेरी फूफी रोती हुई उन की लाश के पास आईं तो सय्यिदे आ़लम हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम इन पर रोओ या न रोओ फ़िरिश्तों की फ़ौज बराबर लगातार इन की लाश पर अपने बाज़ूओं से साया करती रही है।[1] (بخاری،ج۱،ص۳۹۵)

कफ़न सलामत, बदन तरो ताज़ा

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि जंगे उहुद के दिन मैं ने अपने वालिद ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को एक दूसरे शहीद (ह़ज़रते अ़म्र बिन जमूह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के साथ एक ही क़ब्र में दफ़्न कर दिया था। फिर मुझे येह अच्छा नहीं लगा कि मेरे बाप एक दूसरे शहीद की क़ब्र में दफ़्न हैं इस लिये मैं ने इस ख़याल से कि उन को एक अलग क़ब्र में दफ़्न करूं। छे माह के बा'द मैं ने उन की क़ब्र को खोद कर लाश मुबारक को निकाला तो वोह बिल्कुल उसी ह़ालत में थे जिस ह़ालत में उन को मैं ने दफ़्न किया था बजुज़ इस के कि उन के कान पर कुछ तग़य्युर हुवा था।[2] (بخاری،ج۱،ص۱۸۰وحاشیہ بخاری)

और इब्ने सा'द की रिवायत में है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चेहरे पर ज़ख़्म लगा था और इन का हाथ इन के

1 ......صحیح البخاری، کتاب الجهاد و السیر، باب ظل الملئکة علی الشهید، الحدیث: ۲۸۱٦، ج۲، ص۲۵۸

2 ......صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب هل یخرج المیت من القبر...الخ، الحدیث: ۱۳۵۱،ج۱،ص٤٥٤

ज़ख़्म पर था जब इन का हाथ इन के जख़्म से हटाया गया तो ज़ख़्म से ख़ून बहने लगा। फिर जब इन का हाथ इन के ज़ख़्म पर रख दिया गया तो ख़ून बन्द हो गया और इन का कफ़न जो एक चादर थी जिस से चेहरा छुपा दिया गया था और इन के पैरों पर घास डाल दी गई थी, चादर और घास दोनों को हम ने इसी त़रह़ पर पड़ा हुवा पाया।[(1)] (ابن سعد، ج۳،ص۵۶۲)

फिर इस के बा'द मदीनए मुनव्वरा में नहरों की खुदाई के वक़्त जब ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह ए'लान कराया कि सब लोग मैदाने उहुद से अपने अपने मुर्दों को उन की क़ब्रों से निकाल कर ले जाएं तो ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने दोबारा छियालीस बरस के बा'द अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र खोद कर उन की मुक़द्दस लाश को निकाला तो मैं ने उन को इस ह़ाल में पाया कि अपने ज़ख़्म पर हाथ रखे हुवे थे। जब उन का हाथ उठाया गया तो ज़ख़्म से ख़ून बहने लगा फिर जब हाथ ज़ख़्म पर रख दिया गया तो ख़ून बन्द हो गया और उन का कफ़न जो एक चादर का था ब दस्तूर सह़ीह़ व सालिम था।[(2)] (حجۃ اللہ علی العالمین، ج۲،ص۸۶۴بحوالہ بیہقی)

क़ब्र में तिलावत

ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं अपनी ज़मीन की देख भाल के लिये "ग़ाबा" जा रहा था तो रास्ते में रात हो गई। इस लिये मैं ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन ह़िराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र के पास ठहर गया। जब कुछ रात गुज़र गई तो

---

1 ......الطبقات الکبریٰ لابن سعد، عبداللّٰہ بن عمرو بن حرام، ج۳، ص۴۲۴

2 ......حجۃ اللّٰہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملۃ جمیلۃ ...الخ، ص۶۱۷

मैं ने उन की क़ब्र में से तिलावत की इतनी बेहतरीन आवाज़ सुनी कि इस से पहले इतनी अच्छी क़िराअत मैं ने कभी भी नहीं सुनी थी !

जब मैं मदीनए मुनव्वरा को लौट कर आया और मैं ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस का तज़्किरा किया तो आप ने इरशाद फ़रमाया कि क्या ऐ त़ल्ह़ा ! तुम को येह मा'मूल नहीं कि खुदा ने उन शहीदों की अरवाह़ को क़ब्ज़ कर के ज़बरजद और याक़ूत की क़िन्दीलों में रखा है और उन क़िन्दीलों को जन्नत के बाग़ों में आवेज़ां फ़रमा दिया है जब रात होती है तो येह रूहें क़िन्दीलों से निकाल कर उन के जिस्मों में डाल दी जाती हैं फिर सुब्ह़ को वोह अपनी जगहों पर वापस लाई जाती हैं।[1] (حجۃ اللہ علی العالمین، ج۲،ص۸۷۱بحوالہ ابن مندہ)

तबसेरा

येह मुस्तनद रिवायात इस बात का सुबूत हैं कि ह़ज़राते शुहदाए किराम अपनी अपनी क़ब्रों में पूरे लवाज़िमे ह़यात के साथ ज़िन्दा हैं और वोह अपने जिस्मों के साथ जहां चाहें जा सकते हैं तिलावत कर सकते हैं और दूसरे क़िस्म क़िस्म के तसर्रुफ़ात भी कर सकते और करते हैं।

﴾18﴿ ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ

इन की कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह है। येह क़बीलए ख़ज़रज के अन्सारी और मदीनए मुनव्वरा के बाशिन्दे हैं। येह उन सत्तर खुश नसीब अन्सार में से एक हैं जिन लोगों ने हिजरत से बहुत पहले मैदाने अ़रफ़ात की घाटी में हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बैअ़त इस्लाम की थी। येह जंगे बद्र और इस के बा'द तमाम जिहादों में मुजाहिदाना शान से शरीके जंग रहे। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

---

1 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة ...الخ، ص ٦٢٠

ने इन को यमन का क़ाज़ी और मुअ़ल्लिम बना कर भेजा था और हज़रते अमीरुल मोअमिनीन उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में इन को मुल्के शाम का गवर्नर भी मुक़र्रर कर दिया था जहां इन्हों ने सि. **18** हि. में ताऊ़ने अ़मवास में अ़लील हो कर अड़तीस साल की उ़म्र में वफ़ात पाई। आप बहुत ही बुलन्द पाया आ़लिम, हाफ़िज़, क़ारी, मुअ़ल्लिम और निहायत ही मुत्तक़ी व परहेज़गार और आला दरजे के इ़बादत गुज़ार थे। बनी सलमा के तमाम बुतों को इन्हों ने ही तोड़ फोड़ कर फेंक दिया था। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया की क़ियामत में इन का लक़ब "इमामुल उ़-लमा" है।(1) (اکمال،ص٦١٦واسد الغابہ،ج٤،ص٣٧٨)

करामत

मुंह से नूर निकलता था

हज़रते अबू बह़रिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को "ह़म्स" की मस्जिद में देखा कि वोह घने और घूंघरियाले बाल वाले बहुत ख़ूब सूरत थे जब वोह गुफ़्तगू फ़रमाते तो इस के साथ साथ उन के मुंह से एक नूर निकलता जिस की रोशनी और चमक साफ़ नज़र आती।(2)

(تذکرۃ الحفاظ،ج١،ص٢٠)

﴿19﴾ हज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अन्सार के क़बीलए औस की शाख़ बनी अ़ब्दुल अश्हल से ख़ानदानी तअ़ल्लुक़ रखते हैं। मदीनए मुनव्वरा में हज़रते मुसअ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की

---

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف المیم، فصل فی الصحابة، ص٦١٦
واسد الغابة، معاذ بن جبل رضی اللّٰہ عنہ، ج٥، ص٢٠٦ ملتقطاً

2 ......تذکرة الحفاظ، الطبقة الاولیٰ، معاذ بن جبل بن عمرو بن اوس...الخ، ج١، الجزء١، ص٢٠

तब्लीग़ से येह इस्लाम में दाख़िल हुवे। अपने क़बीले बनी अ़ब्दुल अश्हल के सरदार और मदीनए मुनव्वरा में अपनी ख़ूबियों की वजह से बहुत ही बा वक़ार थे। येह क़ुरआने मजीद बड़ी ही ख़ुश इल्ह़ानी के साथ पढ़ते थे। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी इन का बहुत ज़ियादा ए'ज़ाज़ व इकराम करते थे और बारगाहे नबुव्वत में मुक़र्रब और ह़ाज़िर बाश थे।

जंगे बद्र, जंगे उहुद, जंगे ख़न्दक़ वग़ैरा तमाम ग़ज़वात में सर बकफ़ और कफ़न बरदोश कुफ़्फ़ार से जंग करते रहे। ज़मानए ख़िलाफ़त के जिहादों में भी शिर्कत फ़रमाते रहे यहां तक कि फ़त्ह़े बैतुल मुक़द्दस में अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ रहे। सि. 20 हि. में ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त के दौरान मदीनए मुनव्वरा के अन्दर विसाल फ़रमाया और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न हुवे।[1]

(اکمال،ص۵۸۵واسدالغابہ،ج۱،ص۹۲)

करामत
फ़िरिश्ते घर के ऊपर उतर पड़े

रिवायत में है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़े तहज्जुद में सूरए बक़रह की तिलावत शुरूअ़ की। उसी घर में आप का घोड़ा भी बन्धा हुवा था और घोड़े के क़रीब ही में इन का बच्चा यह्या भी सो रहा था। येह इन्तिहाई ख़ुश इल्ह़ानी के साथ क़िराअत कर रहे थे। अचानक इन का घोड़ा बिदकने लगा यहां तक कि इन को ख़त़रा मह़सूस होने लगा कि घोड़ा इन के बच्चे को कुचल देगा। चुनान्चे, नमाज़ ख़त्म कर के जब इन्हों ने सह़्न में आ कर ऊपर देखा तो येह नज़र आया कि बादल के टुकड़े के मानिन्द जिस में बहुत से चराग़ रोशन हैं कोई चीज़ इन के मकान के ऊपर उतर रही है। आप ने इस

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الھمزۃ، فصل فی الصحابۃ، ص٥٨٥
واسد الغابۃ، اسید بن حضیر، ج١، ص١٤٢-١٤٤ ملخصاً وملتقطاً

मन्ज़र से घबरा कर क़िराअत मौक़ूफ़ कर दी और सुब्ह़ को जब बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर येह वाक़िआ़ बयान किया तो रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि येह फ़िरिश्तों की मुक़द्दस जमाअ़त थी जो तेरी क़िराअत की वजह से आस्मान से तेरे मकान की त़रफ़ उतर पड़ी थी अगर तू सुब्ह़ तक तिलावत करता रहता तो येह फ़िरिश्ते ज़मीन से इस क़दर क़रीब हो जाते कि तमाम इन्सानों को इन का दीदार हो जाता।[1]

(دلائل النبوۃ، ج۳،ص۲۰۵ومشکوۃ شریف،ص۱۸۴ فضائل قرآن)

तबसेरा

इस रिवायत से षाबित होता है कि ख़ुदा के नेक बन्दों की तिलावत सुनने के लिये आस्मान से फ़िरिश्तों की जमाअ़त ज़मीन की त़रफ़ उतरती है। येह और बात है कि आ़म लोग फ़िरिश्तों को देख नहीं सकते मगर अल्लाह वालों में से कुछ ख़ास ख़ास लोगों को फ़िरिश्तों का दीदार भी नसीब हो जाता है बल्कि वोह फ़िरिश्तों से गुफ़्तगू भी कर लेते हैं।

﴾20﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन हिश्शाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन हिश्शाम बिन उ़षमान बिन अ़म्र क़ुरैशी, येह क़बीलए क़ुरैश में ख़ानदाने बनी तीम से तअ़ल्लुक़ रखते हैं सि. 4 हि. में पैदा हुवे। येह मश्हूर मुह़द्दिष ह़ज़रते ज़ोहरा बिन मो'बद के दादा हैं। अहले ह़िजाज़ के मुह़द्दिषीन में इन का शुमार होता है और इन के शागिर्दों में इन के पोते ज़ोहरा बिन मो'बद बहुत मश्हूर हैं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन हिश्शाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बचपन ही में इन की वालिदा ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते हुमैद ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ले गईं और अ़र्ज़ किया :

[1] مشکاۃ المصابیح، کتاب فضائل القرآن، الفصل الاول، الحدیث:۲۱۱۶،ج۱،ص۳۹۸

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप मेरे इस बच्चे से बैअ़त ले लीजिये । हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह तो बहुत ही छोटा है। फिर अपना मुक़द्दस हाथ उन के सर पर फेरा और उन के लिये ख़ैरो बरकत की दुआ़ फ़रमा दी ।(1)

(اسدالغابہ،ج۳،ص۲۷۰واکمال،ص۵۹۵)

करामत

तिजारत में बरकत

इसी दुआ़ए नबवी की बदौलत इन को येह करामत ह़ासिल हुई कि इन को तिजारत में नफ़्अ़ के सिवा किसी सौदे में कभी भी नुक़्सान हुवा ही नहीं । रिवायत है कि येह अपने पोते ज़ोहरा बिन मो'बद को साथ ले कर बाज़ार में जाते और ग़ल्ला ख़रीदते तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) उन से मुलाक़ात करते और कहते कि हम को भी आप अपनी इस तिजारत में शरीक कर लीजिये इस लिये कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने आप के लिये ख़ैरो बरकत की दुआ़ फ़रमाई है । फिर येह सब लोग इस तिजारत में शरीक हो जाते तो बसा अवक़ात ऊंट के बोझ बराबर नफ़्अ़ कमा लेते और उस को अपने घर भेज देते।(2)

(بخاری،ج۱،ص۳۴۰،باب الشرکۃ فی الطعام)

तबसेरा

नेक और सालेह़ लोगों को अपने कारोबार और धन्दे रोज़गार में इस निय्यत से शरीक कर लेना कि उन की बरकत से हम फ़ैज़याब

1 ......اسد الغابة، عبد اللّٰه بن هشام ، ج۳، ص ۴۲۱
والاكمال فی اسماء الرجال، حرف العين، فصل فی الصحابة، ص ۶۰۵

2 ......صحيح البخاری، كتاب الشركة، باب الشركة فی الطعام وغيره، الحديث:۲۵۰۱،
ج۲،ص۱۴۵

होंगे । येह सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم का मुक़द्दस त़रीक़ा है । चुनान्चे, पुराने ज़माने के ख़ुश अ़क़ीदा और नेक ताजिरों का येही त़रीक़ा था कि वोह जब कोई तिजारत करते थे तो किसी आ़लिमे दीन या पीरे त़रीक़त का कुछ ह़िस्सा इस तिजारत में मुक़र्रर कर के उन बुज़ुर्गों को अपना शरीके तिजारत बना लेते थे ताकि इन अल्लाह वालों की वजह से तिजारत में ख़ैरो बरकत हो । इसी लिये आज कल भी बा'ज़ ख़ुश अ़क़ीदा और नेक बख़्त मोमिन ख़ुसूसन मैमन अपनी तिजारत में ह़ज़रते ग़ौषे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को ह़िस्सेदार बना लेते हैं और नफ़्अ़ में जितनी रक़म हु़ज़ूरे ग़ौषे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के नाम की निकलती है । उस को येह लोग "**नियाज़ खाता**" कहते हैं और इसी रक़म से येह लोग ग्यारहवीं शरीफ़ की फ़ातिह़ा भी दिलाते हैं और आ़लिमों और सय्यिदों को इसी रक़म से नज़राना भी दिया करते हैं । यक़ीनन येह बहुत ही अच्छा त़रीक़ा है । وَاللّٰہ تعَالٰی اَعلم

﴾21﴿ ह़ज़रते ख़ुबैब बिन अ़दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ

येह मदीनए मुनव्वरा के अन्सारी हैं और क़बीलए अन्सार में ख़ानदाने औस के बहुत ही नामी गिरामी फ़रज़न्द हैं । बहुत ही पुर जोश और जांबाज़ सहाबी हैं और हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इन को बे पनाह वालिहाना इ़श्क़ था । जंगे बद्र में दिल खोल कर इन्तिहाई बहादुरी के साथ कुफ़्फ़ार से लड़े । जंगे उहुद में भी आप मुजाहिदाना कारनामे शुजाअ़त के शाहकार की हैषिय्यत रखते हैं लेकिन सि. 4 हि. में इस्फ़ान व मक्कए मुकर्रमा के दरमियान मक़ाम "रजीअ़" में येह कुफ़्फ़ार के हाथों गिरिफ़्तार हो गए । चूंकि इन्हों ने जंगे बद्र में कुफ़्फ़ारे मक्का के एक मश्हूर सरदार "ह़ारिष बिन आ़मिर" को क़त्ल कर दिया था इस लिये उन के बेटों ने इन को ख़रीद लिया और लोहे की ज़न्जीरों में जकड़ कर इन को अपने घर की एक कोठड़ी में क़ैद कर दिया । फिर मक्कए मुकर्रमा से बाहर

मक़ामे "तनईम" में ले जा कर एक बहुत बड़े मजमअ़ के सामने इन को सूली पर चढ़ा कर शहीद कर दिया। इस्लाम में येह पहले ख़ुश नसीब सहाबी हैं जिन को कुफ़्फ़ार ने सूली पर चढ़ा कर शहीद किया। सूली पर चढ़ने से पहले इन्हों ने दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी और फ़रमाया कि ऐ गुरौहे कुफ़्फ़ार सुन लो ! मेरा दिल तो येही चाहता था कि देर तक नमाज़ पढ़ता रहूं क्यूंकि येह मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ है मगर मुझ को येह ख़याल आ गया कि कहीं तुम लोग येह न समझ लो कि मैं शहादत से डर रहा हूं। इस लिये मैं ने बहुत ही मुख़्तसर नमाज़ पढ़ी। कुफ़्फ़ार ने आप को जब सूली पर चढ़ा दिया तो आप ने चन्द वज्द आफ़रीं और ईमान अफ़रोज़ अश्आ़र पढ़े फिर ह़ारिष बिन आ़मिर के बेटे "अबू सरूआ़" ने आप के मुक़द्दस सीने में नेज़ा मार कर आप को शहीद कर दिया।(1) आप की शहादत का मुफ़स्सल ह़ाल आप हमारी किताब "ईमानी तक़रीरें" और "सीरतुल मुस्तफ़ा" में पढ़िये। इन की मुन्दरिजए ज़ैल करामात क़ाबिल ज़िक्र हैं।

करामात

बे मौसिम का फल

जिन दिनों येह ह़ारिष बिन आ़मिर के बेटों की क़ैद में थे ज़ालिमों ने दाना पानी बन्द कर दिया था और इन को ज़न्जीरों में इस त़रह़ जकड़ दिया था कि इन के हाथ पाउं दोनों बन्धे हुवे थे। ह़ारिष बिन आ़मिर की बेटी का बयान है कि ख़ुदा की क़सम ! मैं ने ख़ुबैब (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) से अच्छा कोई क़ैदी नहीं देखा, मैं ने बारहा येह देखा कि वोह क़ैद की कोठड़ी के अन्दर ज़न्जीरों में बन्धे हुवे बेहतरीन अंगूरों का ख़ोशा हाथ में लिये खा रहे हैं ह़ालांकि ख़ुदा की क़सम ! उन दिनों

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الرجیع...الخ، الحدیث: ۴۰۸۶، ج۳، ص۴۶

والمواھب اللدنیۃ وشرح الزرقانی، کتاب المغازی، بعث الرجیع، ج۲، ص ۴۸۱۔۴۹۰ ملتقطاً

मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के अन्दर कोई फल भी नहीं मिलता था और अंगूर का तो मौसिम भी नहीं था।[1] (حجۃ اللہ علی العالمین، ج۲،ص۸۶۹وبخاری شریف)

मक्का की आवाज़ मदीने पहुंची

जब ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सूली पर चढ़ाए गए तो इन्हों ने बड़ी ह़सरत के साथ कहा कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं यहां किसी को नहीं पाता जिस के ज़रीए़ मैं आख़िरी सलाम तेरे प्यारे रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंचा सकूं लिहाज़ा तू मेरा सलाम ह़बीब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तक पहुंचा दे। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم का बयान है कि ह़ुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा के अन्दर अपने अस्ह़ाब की मजलिस में रोनक अफ़रोज़ थे कि बिल्कुल ही नागहां आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बुलन्द आवाज़ से وعلیك السلام फ़रमाया : सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस वक़्त आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस के सलाम का जवाब दिया है। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रामाया कि तुम्हारा दीनी भाई ख़ुबैब अभी अभी मक्कए मुकर्रमा में सूली पर चढ़ा दिया गया है और उस ने सूली पर चढ़ कर मेरे पास अपना सलाम भेजा है और मैं ने उस के सलाम का जवाब दिया है।[2] (حجۃ اللہ علی العالمین، ج۲،ص۸۶۹)

---

1 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة ...الخ، ص٦١٨
وصحيح البخارى، كتاب المغازى، باب ١٠، الحديث:٣٩٨٩، ج٣، ص١٥

2 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة ...الخ،ص٦١٩
وفتح البارى شرح صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب غزوة الرّجيع..الخ،تحت الحديث:٤٠٨٦، ج٧، ص٣٢٧

एक साल में तमाम क़ातिल हलाक

रिवायत है कि सूली पर चढ़ाए जाने के वक़्त ह़ज़रते खुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ातिलों के मजमए की त़रफ़ देख कर येह दुआ मांगी : اَللّٰھُمَّ اَحۡصِھِمۡ عَدَدًا وَّاقۡتُلۡھُمۡ بَدَدًا وَّلَا تُبۡقِ مِنۡھُمۡ اَحَدًا (या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू मेरे इन तमाम क़ातिलों को गिन कर शुमार कर ले और इन सब को हलाक फ़रमा दे और इन में से किसी एक को भी बाक़ी न रख।) एक काफ़िर का बयान है कि मैं ने जब (खुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को बद दुआ करते हुवे सुना तो मैं ज़मीन पर लैट गया ताकि खुबैब की नज़र मुझ पर न पड़े। चुनान्चे, इस का अषर येह हुवा कि एक साल पूरा होते होते तमाम वोह लोग जो आप के क़त्ल में शरीक व राज़ी थे सब के सब हलाक व बरबाद हो गए। फ़क़त् तन्हा मैं बच गया हूं।[1] (حجۃ اللہ علی العالمین،ج۲،ص۸۶۹وبخاری)

लाश को ज़मीन निगल गई

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से इरशाद फ़रमाया कि मक़ामे तनईम में ह़ज़रते खुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की लाश सूली पर लटकी हुई है जो मुसलमान उन की लाश को सूली से उतार कर लाएगा मैं उस के लिये जन्नत का वा'दा करता हूं। येह खुश ख़बरी सुन कर ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़वाम और ह़ज़रते मिक़दाद बिन अल अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا तेज़ रफ़्तार घोड़ों पर सुवार हो कर रातों को सफ़र करते और दिन में छुपते हुवे मक़ामे तनईम में गए। चालीस कुफ़्फ़ार सूली के पहरादार बन कर सो रहे थे।

---

1 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة ...الخ،ص٦١٨

وصحيح البخارى، كتاب المغازى، باب ١٠، الحديث:٣٩٨٩، ج٣، ص ١٥

وفتح البارى شرح صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب غزوة الرّجيع...الخ، تحت الحديث:٤٠٨٦،ج٧،ص٣٢٧

इन दोनों ह़ज़रात ने लाश को सूली से उतारा और चालीस दिन गुज़र जाने के बा वुजूद लाश बिल्कुल तरोताज़ा थी और ज़ख़्मों से ताज़ा ख़ून टपक रहा था। घोड़े पर लाश को रख कर मदीनए मुनव्वरा का रुख़ किया मगर सत्तर काफ़िरों ने इन लोगों का पीछा किया। जब इन दोनों ह़ज़रात ने देखा कि अब हम गिरिफ़्तार हो जाएंगे तो इन दोनों ने मुक़द्दस लाश को ज़मीन पर रख दिया। ख़ुदा की शान देखिये कि एक दम ज़मीन फट गई और मुक़द्दस लाश को ज़मीन निगल गई और फिर ज़मीन इस त़रह़ बराबर हो गई कि फटने का नामो निशान भी बाक़ी न रहा। येही वजह है कि ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का लक़ब "बलीउ़ल अर्ज़" (जिन को ज़मीन निगल गई) है। फिर इन दोनों ह़ज़रात ने फ़रमाया कि ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का ! हम तो दो शेर हैं जो अपने जंगल में जा रहे थे अगर तुम लोगों से हो सके तो हमारा रास्ता रोक कर देख लो वरना अपना रास्ता लो जब कुफ़्फ़ारे मक्का ने देख लिया कि इन दोनों ह़ज़रात के पास लाश नहीं है तो वोह लोग मक्का वापस चले गए।(1) (مدارج النبوۃ، ج۲،ص۱۴۱)

तबसेरा

शहीदे इस्लाम ह़ज़रते ख़ुबैब अन्सारी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की इन चारों करामतों को पढ़ कर इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये कि ख़ुदावन्दे करीम शुहदाए किराम बिल ख़ुसूस अपने ह़बीब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अस्ह़ाबे किराम को कैसी कैसी अ़ज़ीमुश्शान करामतों से सरफ़राज़ फ़रमाता है और येह नसीह़त ह़ासिल कीजिये कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने दीने इस्लाम की ख़ात़िर कैसी कैसी क़ुरबानियां पेश की हैं और फिर सोचिये कि हम आज कल के मुसलमान इस्लाम के लिये क्या कर रहे हैं ? और हमें क्या करना चाहिये और फिर ख़ुदा का नाम ले कर उठिये और इस्लाम के लिये कुछ कर डालिये।

(1) ......مدارج النبوت، قسم سوم، باب سوم، ج۲، ص۱۴۱

﴾22﴿ हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह मदीनए मुनव्वरा के वोही खुश नसीब अन्सारी हैं जिन के मकान को शहनशाहे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेहमान बन कर शरफ़े नुज़ूल बख़्शा और येह शहनशाहे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मेज़बानी से सात माह तक सरफ़राज़ होते रहे और दिन रात सुब्हो शाम हर वक़्त व हर आन अपने हर क़ौल व फ़े'ल से ऐसी वालिहाना अक़ीदत और आशिक़ाने जांनिषारी का मुज़ाहरा करते रहे कि मुश्किल ही से इस की मिषाल मिल सकेगी ।

हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुलाक़ातियों की आसानी के लिये नीचे की मन्ज़िल में क़ियाम पसन्द फ़रमाया । मजबूरन हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ऊपर की मन्ज़िल में रहे । एक मरतबा इत्तिफ़ाक़न पानी का घड़ा टूट गया तो इस अन्देशे से कि कहीं पानी बह कर नीचे वाली मन्ज़िल में न चला जाए और हुज़ूर रहमते आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कुछ तक्लीफ़ न पहुंच जाए । हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घबरा गए और सारा पानी अपने लिहाफ़ में जज़्ब कर लिया । घर में बस येही एक रज़ाई थी जो गीली हो गई । रात भर मियां बीवी ने सर्दी खाई मगर हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ज़र्रा भर भी तक्लीफ़ पहुंच जाए येह गवारा नहीं किया । ग़रज़ बे पनाह अदबो एहतिराम और महब्बतो अक़ीदत के साथ सुल्ताने दारैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मेहमान नवाज़ी व मेज़बानी के फ़राइज़ अदा करते रहे ।

हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सख़ावत के साथ साथ शुजाअत और बहादुरी में भी बे हद ताक़ थे । तमाम इस्लामी लड़ाइयों में मुजाहिदाना शान के साथ मा'रिका आज़माई फ़रमाते रहे यहां तक कि हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़माने में जब मुजाहिदीने इस्लाम का लश्कर जिहादे क़ुस्तुनतुनिया के लिये

रवाना हुवा तो अपनी ज़ईफ़ी के बा वुजूद आप भी मुजाहिदीन के उस लश्कर के साथ जिहाद के लिये तशरीफ़ ले गए और बराबर मुजाहिदीन की सफ़ों में खड़े हो कर जिहाद करते रहे ।

जब सख़्त बीमार हो गए और खड़े होने की ताक़त नहीं रही तो आप ने मुजाहिदीने इस्लाम से फ़रमाया कि जब तुम लोग जंगबन्दी करो तो मुझे भी सफ़ में अपने क़दमों के पास लिटाए रखो और जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो तुम लोग मेरी लाश को कुस्तुनतुनिया के क़ल्ए की दीवार के पास दफ़्न करना । चुनान्चे, सि. **51** हि. में इसी जिहाद के दौरान आप की वफ़ात हुई और इस्लामी लश्कर ने इन की वसिय्यत के मुताबिक़ इन को कुस्तुनतुनिया के क़ल्ए की दीवार के पास दफ़्न कर दिया ।

येह अन्देशा था कि शायद ईसाई लोग आप की क़ब्र मुबारक को खोद डालें मगर ईसाइयों पर ऐसी हैबत सुवार हो गई कि वोह आप की मुक़द्दस क़ब्र को हाथ न लगा सके और आज तक आप की क़ब्र शरीफ़ उसी जगह मौजूद है और ज़ियारत गाहे ख़लाइक़े ख़ासो आ़म है जहां हर क़ौम व मिल्लत के लोग हमा वक़्त हाज़िरी देते हैं ।

करामत

क़ब्र मुबारक शिफ़ा ख़ाना बन गई

येह आप की करामत का एक रूहानी और नूरानी जल्वा है कि बहुत ही दूर दूर से क़िस्म क़िस्म के मायूसुल इलाज मरीज़ आप की क़ब्र शरीफ़ पर शिफ़ा के लिये हाज़िरी देते हैं और ख़ुदा के फ़ज़्लो करम से शिफ़ायाब हो जाते हैं ।(1)

(اکمال فی اسماء الرجال، ص۵۸۶ وحاشیہ کنز العمال، ج۶، ص۲۲۵ مطبوعہ حیدر آباد)

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الهمزه، فصل فی الصحابة، ص ٥٨٦
واسد الغابة، خالد بن زيد بن كليب، ج٢، ص١١٦ ملتقطاً

﴾22﴿ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन बसर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह अ़ब्दुल्लाह बिन बसर माज़िनी हैं। इन की कुन्यत अबू बसर या अबू सफ़वान है। इन के वालिद ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वत की और शहनशाहे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने माह़ज़र तनावुल फ़रमाया फिर खजूरें लाई गईं, आप ने खजूरें भी खाईं और ह़ज़रते अब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सर पर अपना दस्ते मुबारक रख कर दुआ़ फ़रमाई। येह आख़िरी उ़म्र में मुल्के शाम में चले गए।

अ़ल्लामा इब्ने अषीर का बयान है कि येह आख़िरी सह़ाबी हैं जिन का मुल्के शाम में विसाल शरीफ़ हुवा। इन की उ़म्र में इख़्तिलाफ़ है। असाबा में है कि 94 बरस की उ़म्र में वफ़ात पाई और अ़ल्लामा अबू नोऐ़म का क़ौल है कि एक सो बरस की उम्र में इन का विसाल हुवा। बिग़ैर किसी बीमारी के शहरे ह़ुम्स में वुज़ू करते हुवे बिल्कुल ही अचानक वफ़ात पा गए।[1]

(اکمال،ص۶۰۳واسدالغابہ،ج۳،ص۱۲۵وکنزالعمال،ج۱۶،ص۱۰۴)

करामत

रिज़्क़ में कभी तंगी पैदा नहीं हुई

दुआ़ए नबवी की बरकत से उ़म्र भर कभी इन की रोज़ी में तंगी नहीं हुई। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के घर में तआ़म से फ़ारिग़ हो कर घर वालों के लिये तीन दुआ़एं मांगी थीं :

﴾1﴿ या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन लोगों की मग़फ़िरत फ़रमा।

﴾2﴿ या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन लोगों पर रह़मत नाज़िल फ़रमा।

---

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال،حرف العین، فصل فی الصحابة، ص ٦٠٣
واسد الغابة، عبداللّٰہ بن بسرالمازنی،ج٣،ص١٨٦
والاصابة فی تمییز الصحابة، حرف العین المھملة، عبداللّٰہ بن بسر، ج٤، ص ٢٠

﴿3﴾ या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन लोगों की रोज़ी में बरकत फ़रमा।(1)

(کنز العمال، ج۱۶،ص۱۰۴ مطبوعہ حیدر آباد)

﴿24﴾ हज़रते अ़म्र बिन अल हमक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

सुल्हे हुदैबिय्या के बा'द येह अपने क़बीलए बनी ख़ुज़ाआ़ से हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा आए और दरबारे नबुव्वत में हाज़िर रह कर ह़दीषें याद करते रहे। फिर कूफ़ा चले गए और वहां से मिस्र जा कर मुक़ीम हो गए। कुछ दिनों शाम में भी रहे। इन के शागिर्दों में जुबैर बिन नुफ़ैर और रफ़ाआ़ बिन शद्दाद वग़ैरा बहुत मशहूर मुह़द्दिषीन हैं। येह ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के त़रफ़दार थे और जंगे जमल व सिफ़्फ़ीन व नहरवान में ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ रहे। जब ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़िलाफ़त ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को सोंप दी तो उस वक़्त ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के गवर्नर "ज़ियाद" के ख़ौफ़ से येह इ़राक़ से भाग कर "मौसिल" के एक ग़ार में रू पोश हो गए और इसी ग़ार में इन को सांप ने काट लिया जिस से इन की वहीं वफ़ात हो गए। अ़ल्लामा इब्ने अषीर साह़िबे उसदुल ग़ाबा का बयान है कि इन की क़ब्र शरीफ़ मौसिल में बहुत ही मशहूर ज़ियारत गाह है। क़ब्र पर बहुद बड़ा गुम्बद और लम्बी चोड़ी दरगाह है। सि. 50 हि. में आप की शहादत हुई।(2) (اسد الغابہ، ج۴،ص۱۰۰)

करामत

अस्सी बरस की उ़म्र में भी सब बाल काले !

इन्हों ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में दूध का हदिय्या पेश किया, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

---

1 ......كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث: ٣٧٢٧٤، ج٧، الجزء١٣، ص ٢١٠

2 ......اسد الغابة، عمرو بن الحمق الخزاعي، ج٤، ص ٢٣٠

दूध नोश फ़रमा कर इन की जवानी की बक़ा के लिये दुआ फ़रमा दी। इस दुआए नबवी की बदौलत इन को येह करामत मिल गई कि अस्सी बरस की उम्र हो जाने के बा वुजूद इन का एक बाल भी सफ़ेद नहीं हुवा था।[1] (کنز العمال، ج۱۶،ص۱۱۲ واسد الغابہ، ج۴،ص۱۰۰)

﴾25﴿ हज़रते आसिम बिन षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते आसिम बिन षाबित बिन अबिल अफ़्लह अन्सारी येह अन्सार में क़बीलए औस के माया नाज़ सपूत हैं। बहुत ही जांबाज़ और बहादुर सहाबी हैं। इन्हों ने जंगे बद्र में बे मिषाल जुरअत व बहादुरी का मुज़ाहरा किया और कुफ़्फ़ारे कुरैश के बड़े बड़े नामवर सरदारों को क़त्ल कर दिया। येह हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़रज़न्द हज़रते आसिम बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाना हैं। सि. 4 हि. में ग़ज़्वतुर्रजीअ़ में येह कुफ़्फ़ार से दस्त ब दस्त लड़ते हुवे अपने छे साथियों के साथ शहीद हो गए।[2] (اسد الغابہ، ج۳،ص۷۳)

इन की मुन्दरिजए ज़ैल दो करामतें बहुत ही मशहूर हैं जो निहायत ही मुस्तनद हैं।

करामात

शहद की मक्खियों का पहरा

चूंकि आप ने जंगे बद्र के दिन कुफ़्फ़ारे मक्का के बड़े बड़े नामी गिरामी सूरमाओं और नामवर सरदारों को मौत के घाट उतार दिया था इस लिये जब कुफ़्फ़ारे मक्का को इन की शहादत की ख़बर मिली तो इन काफ़िरों ने चन्द आदमियों को इस लिये मक़ामे रजीअ़ में भेज दिया ताकि इन के बदन का कोई ऐसा हिस्सा (सर वग़ैरा) काट कर लाएं जिस से येह शनाख़्त हो जाए कि वाक़ेई हज़रते

1 ......اسد الغابة، عمرو بن الحمق الخزاعی، ج٤، ص ٢٣١
وکنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث: ٣٧٢٨٥، ج٧،الجزء١٣، ص٢١٣

2 ......اسد الغابة، عاصم بن ثابت، ج٣، ص ١٠٦

आ़सिम क़त्ल हो गए। चुनान्चे, चन्द कुफ़्फ़ार इन की लाश की तलाश में मक़ामे रजीअ़ तक पहुंच तो गए मगर वहां जा कर उन काफ़िरों ने इस शहीद मर्द की येह करामत देखी कि लाखों की ता'दाद में शहद की मख्खियों के झुंड ने इन की लाश के इर्द गिर्द इस त़रह़ घेरा डाल रखा है जिस से वहां तक किसी का पहुंचना ही नामुमकिन हो गया है इस लिये कुफ़्फ़ारे मक्का नाकाम व नामुराद हो कर मक्का वापस चले गए।[1] (بخاری،ج۲،ص۵۶۹وزرقانی،ج۲،ص۷۳)

समन्दर में क़ब्र

एक रिवायत में येह भी है कि मक्का की एक काफ़िरा औ़रत सलाफ़ा बिन्ते सा'द के दो बेटों को ह़ज़रते आ़सिम बिन षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जंगे उहुद में क़त्ल कर डाला था, इस लिये उस औ़रत ने जोशे इन्तिक़ाम में येह क़सम खा रखी थी कि अगर मुझ को आ़सिम बिन षाबित का सर मिल गया तो मैं इन की खोपड़ी में शराब पियूंगी। चुनान्चे, उस ने कुछ लोगों को भेजा था कि तुम उन का सर काट कर लाओ, मैं उस को बहुत बड़ी क़ीमत दे कर ख़रीद लूंगी। इस लालच में चन्द कुफ़्फ़ार मक़ामे रजीअ़ तक तो पहुंचे मगर जब इन्हों ने शहद की मख्खियों का घेरा देखा तो हवास बाख़्ता हो गए मगर येह चन्द लालची लोग इस इन्तिज़ार में वहां ठहर गए कि जब कभी भी येह शहद की मख्खियां उड़ जाएंगी तो हम इन का सर काट कर ले जाएंगे। ख़ुदा की शान कि निहायत ही ज़ोरदार बारिश हुई और पहाड़ों से बरसाती नाला बहता हुवा इस मैदान में पहुंचा और इस ज़ोर का रेला आया कि कुफ़्फ़ार जान बचाने के लिये भाग खड़े हुवे और आप की मुक़द्दस लाश पानी के बहाव के साथ बहती हुई समन्दर में पहुंच गई।

[1] صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب ۱۰، الحدیث:۳۹۸۹، ج۳، ص ۱۵-۱۶
وحجة اللّٰه علی العالمین، الخاتمة فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ،المطلب الثالث فی ذکر جملة جمیلة ...الخ،ص۶۱۸

रिवायत है कि जिस दिन आ़सिम बिन षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम क़बूल किया था उसी दिन ख़ुदा से येह अ़हद किया था कि मैं न तो किसी काफ़िर के बदन को हाथ लगाऊंगा न किसी काफ़िर को मौक़अ़ दूंगा कि वोह मेरे बदन को छू सके। **अल्लाह अकबर !** ख़ुदा की शान कि ज़िन्दगी भर तो इन का येह अ़हद पूरा होता ही रहा मगर शहादत के बा'द भी ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने उन के इस अ़हद को पूरा फ़रमा दिया कि कुफ़्फ़ार उन के मुक़द्दस बदन को हाथ न लगा सके। पहले शहद की मख्खियों का पहरा लगा दिया फिर बरसाती नालों ने इन के बदने मुबारक को इन के मदफ़न तक पहुंचा दिया।[1] (حجۃ اللہ،ج۲،ص۸۶۹بحوالہ بیہقی وکنز العمال،ج۱۲،ص۱۷۸)

तबसेरा

हज़रते आ़सिम बिन षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इन दोनों करामतों को पढ़ कर ग़ौर फ़रमाइये कि **अल्लाह** तआ़ला का शुहदाए किराम पर कितना फ़ज़्ले अ़ज़ीम होता है और राहे ख़ुदा में जान फ़िदा करने वालों को रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُہٗ के दरबारे आ़लिय्या से कैसी कैसी अ़ज़ीमुश्शान करामतों के निशान अ़ता किये जाते हैं। वफ़ात के बा'द भी इन के तसर्रुफ़ात ब सूरते करामात जारी रहते हैं। लिहाज़ा शहीदों से अ़क़ीदत व महब्बत और इन का अदबो एह़तिराम वाजिबुल अ़मल और लाज़िमुल ईमान होता है।

1 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة ...الخ، ص٦١٨
ودلائل النبوة للبيهقى، باب غزوة الرجيع وما ظهر...الخ، ج٣، ص٣٢٨
وكنزالعمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث:٣٧٤٦٥، ج٧، الجزء١٣، ص٢٤٥

﴾26﴿ ह़ज़रते उ़बैदा बिन अल ह़ारिष رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

इन का वत़न मक्कए मुकर्रमा है और येह ख़ानदाने कु़रैश के बहुत ही मुमताज़ और नामवर शख़्स हैं। येह इब्तिदाए इस्लाम ही में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए थे। फिर हिजरत भी की। निहायत ही वजीह बहुत ही बहादुर और जांबाज़ सह़ाबी हैं। सि. 2 हि. में साठ या अस्सी मुहाजिरीन के साथ हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को "राबिग़" की त़रफ़ जिहाद के लिये रवाना फ़रमाया। चुनान्चे, तारीख़े इस्लाम में मुजाहिदीन का येह लश्कर सरिय्यए उ़बैदा बिन अल ह़ारिष के नाम से मश्हूर है।

सि. 2 हि. जंगे बद्र में इन्हों ने शैबा बिन रबीआ़ से जंग की जो लश्करे कुफ़्फ़ार के सिपह सालार उ़त्बा बिन रबीआ़ का भाई था। येह बड़ी जांबाज़ी के साथ लड़ते रहे मगर इस क़दर ज़ख़्मी हो गए कि इन की पिंडली टूट कर चूर चूर हो गई और नली का गुदा बहने लगा। येह देख कर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आगे बढ़ कर शैबा को क़त्ल कर दिया और ह़ज़रते उ़बैदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने कान्धे पर उठा कर बारगाहे रिसालत में लाए। इस ह़ालत में ह़ज़रते उ़बैदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या मैं शहादत से मह़रूम रहा? इरशाद फ़रमाया : हरगिज़ नहीं बल्कि तुम शहादत से सरफ़राज़ हो गए! येह सुन कर उन्हों ने कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर आज अबू त़ालिब ज़िन्दा होते तो वोह मान लेते कि उन के इस शे'र का मिस्दाक़ मैं ही हूं :

وَنُسلِمُهٗ حَتّٰی نُصَرَّعَ حَوْلَهٗ

وَنَذْهَلُ عَنْ اَبْنَائِنَا وَالْحَلَائِلِ

(या'नी हम हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उस वक़्त दुश्मनों के ह़वाले करेंगे जब हम इन के गिर्दा गिर्द लड़ते लड़ते

ख़ून में लत पत हो जाएंगे और हम अपने बेटों और बीवियों को भूल जाएंगे।) इसी ज़ख़्म में आप मन्ज़िले सुफ़रा में पहुंच कर शरफ़े शहादत से सरफ़राज़ हो गए।[1] (ابوداود،ج۲،ص۲۶۱وزرقانی،ج۱،ص۴۱۸)

करामत

क़ब्र की ख़ुश्बू दूर तक

इश्क़े रसूल में बे पनाह जां निषारियों और फ़िदा कारियों की बदौलत इन को येह शानदार करामत नसीब हुई कि इन की क़ब्रे अतहर से इस क़दर मुश्क की तेज़ ख़ुश्बू आती कि पूरा मैदान हर वक़्त महकता रहता। चुनान्चे, मन्क़ूल है कि एक मुद्दत के बा'द हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم के साथ मन्ज़िले सुफ़रा में क़ियाम हुवा तो सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने हैरान हो कर बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस सहरा में मुश्क की इस क़दर ख़ुश्बू कहां से और क्यूं आ रही है ? आप ने इरशाद फ़रमाया कि इस मैदान में अबू मुआ़विया (ह़ज़रते उ़बैदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ) की क़ब्र मौजूद होते हुवे तुम्हें तअ़ज्जुब क्यूं हो रहा है कि यहां मुश्क की ख़ुश्बू महक रही है ![2]

(کتاب صد صحابہ،ص۳۱۴مرتبہ شاہ مراد مارہروی)

अल्लाहु अक्बर ! येह सच है

कमालाते वली मिट्टी में भी यूं जगमगाते हैं
कि जैसे नूर ज़ुल्मत में कभी पिन्हां नहीं होता

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب اللدنیة، باب غزوة بدر الکبریٰ، ج۲، ص۲۷۶
و سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب فی المبارزة، الحدیث:۲۶۶۵، ج۳، ص۷۲
و اسد الغابة، عبیدة بن الحارث بن المطلب، ج۳، ص۵۷۲_۵۷٤ ملتقطاً

2 ......الاستعاب فی معرفة الاصحاب، باب حرف العین، باب عبیدة، عبیدة بن الحرث المطلبی، ج۳، ص۱٤۱

﴾27﴿ ह़ज़रते सा'द बिन अर्रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सा'द बिन अर्रबीअ़ बिन अ़म्र अन्सारी ख़ज़रजी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बैअ़तुल उ़क़्बा ऊला और बैअ़तुल उ़क़्बा षानिय्या दोनों बैअ़तों में शरीक रहे और येह अन्सार में से ख़ानदाने बनी अल ह़ारिष के सरदार भी थे। ज़मानए जाहिलिय्यत में जब कि अ़रब में लिखने पढ़ने का बहुत ही कम रवाज था उस वक़्त येह कातिब थे। येह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इन्तिहाई शैदाई और बे ह़द जांनिषार सह़ाबी हैं।

ह़ज़रते सा'द बिन अर्रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की साहिबज़ादी का बयान है कि मैं अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरबार में ह़ाज़िर हुई तो इन्हों ने अपने बदन की चादर उतार कर मेरे लिये बिछा दी और मुझे इस पर बिठाया। इतने में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ गए और पूछा : येह लड़की कौन है ? अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि येह उस शख़्स की बेटी है जिस ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने ही में जन्नत के अन्दर अपना ठिकाना बना लिया और मैं और तुम यूं ही रह गए ! येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ैरत के साथ दरयाफ़्त किया कि ऐ ख़लीफ़ए रसूल ! वोह कौन शख़्स हैं ? तो आप ने फ़रमाया कि "सा'द बिन अर्रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ" तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस की तस्दीक़ की।

जंगे बद्र में निहायत शुजाअ़त के साथ कुफ़्फ़ार से मा'रिका आराई की। जंगे उहुद में बारह काफ़िरों को एक एक नेज़ा मारा और जिस को एक नेज़ा मारा वोह मर कर ठन्डा हो गया। फिर घुमसान की जंग में ज़ख़्मी हो कर इसी जंगे उहुद में सि. 3 हि. में शहीद हो

गए और ह़ज़रते ख़ारिजा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ एक क़ब्र में दफ़्न हो गए।[(1)] (اکمال،ص۵۹۶،حاشیہ کنزالعمال،ج۱۶،ص۳۶،اسدالغابہ،ج۲،ص۲۷۷)

करामत

दुन्या में जन्नत की ख़ुश्बू

ह़ज़रते ज़ैद बिन षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि जंगे उहुद के दिन हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ को ह़ज़रते सा'द बिन अर्रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की लाश की तलाश में भेजा और फ़रमाया कि अगर वोह ज़िन्दा मिलें तो तुम उन से मेरा सलाम कह देना। चुनान्चे, जब तलाश करते करते मैं उन के पास पहुंचा तो उन को इस ह़ाल में पाया कि अभी कुछ कुछ जान बाक़ी थी, मैं ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सलाम पहुंचाया तो उन्हों ने जवाब दिया और कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मेरा सलाम कह देना और सलाम के बा'द येह भी अ़र्ज़ कर देना कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं जन्नत की ख़ुश्बू मैदाने जंग में सूंघ चुका और मेरी क़ौम अन्सार से मेरा येह आख़िरी पैग़ाम कह देना कि अगर तुम में एक आदमी भी ज़िन्दा रहा और कुफ़्फ़ार का ह़म्ला रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंच गया तो ख़ुदा तआ़ला के दरबार में तुम्हारा कोई उ़ज़्र क़बूल नहीं हो सकता और तुम्हारा वोह अ़हद टूट जाएगा जो तुम लोगों ने बैअ़तुल उ़क़बा में किया था, इतना कहते कहते उन की रूह़ परवाज़ कर गई। (حجۃ اللہ،ج۲،ص۸۷۰بحوالہ حاکم وبیہقی)

---

1 ......اسد الغابة، سعد بن الربيع، ج٢، ص٤١٤

والاكمال فى اسماء الرجال، حرف السين، فصل فى الصحابة، ص٥٩٦

والاصابة فى تمييز الصحابة، سعد بن الربيع، ج٣، ص٤٩

बा'ज़ रिवायात से पता चलता है कि जिस शख़्स को हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सा'द बिन अर्रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की लाश का पता लगाने के लिये भेजा था वोह हज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे चुनान्चे, हज़रते अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येही क़ौल है। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعلم(1) (اسدالغابہ،ج۲،ص۲۷۷)

तबसेरा

अल्लाहु अकबर ! ग़ौर फ़रमाइये कि हज़राते सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कितनी वालिहाना महब्बत और किस क़दर आ़शिक़ाना लगाव था कि जांकनी का आ़लम है, ज़ख़्मों से निढाल हैं मगर इस वक़्त में भी हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़याल दिलो दिमाग़ के गोशे गोशे में छाया हुवा है। अपने घर वालों के लिये, अपनी बच्चियों के लिये कोई वसिय्यत नहीं फ़रमाते मगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये अपनी सारी क़ौम को कितना अहम आख़िरी पैग़ाम देते हैं ! सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की येही वोह नेकियां हैं जो क़ियामत तक किसी को नसीब नहीं हो सकतीं और इसी लिये सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का सारी उम्मत में वोही दरजा है जो आस्मान पर सितारों की बरात में चांद का दरजा है।

हज़रते सा'द बिन अर्रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कोई बेटा नहीं था फ़क़त़ दो साहिबज़ादियां थीं जिन को हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की मीराष में से दो षलष अ़ता फ़रमाया। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعلم

---

1 ......حجة اللّٰه على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة ...الخ، ص٦١٩
واسد الغابة، سعد بن الربيع، ج٢، ص٤١٤

﴾28﴿ हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नसब नामा येह है : अनस बिन मालिक बिन अन्नज़्र बिन ज़मज़म बिन ज़ैद बिन हिराम अन्सारी । आप क़बीलए अन्सार में ख़ज़रज की एक शाख़ बनी नज्जार में से हैं । इन की वालिदा का नाम उम्मे सुलैम बिन्ते मलहान है । इन की कुन्यत हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अबू हम्ज़ा रखी और इन का मश्हूर लक़ब "ख़ादिमुन्नबी" है और इस लक़ब पर हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बेहद फ़ख़्र था । दस बरस की उ़म्र में येह ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुवे और दस बरस तक सफ़र व वत़न, जंग व सुल्ह़ हर जगह हर ह़ाल में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत करते रहे और हरदम ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर बाश रहते । हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तबर्रुकात में से इन के पास छोटी सी लाठी थी । आप ने वसिय्यत की थी कि इस को ब वक़्ते दफ़्न मेरे कफ़न में रख दें । चुनान्चे, येह लाठी आप के कफ़न में रख दी गई । हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के लिये ख़ास तौर पर माल और अवलाद में तरक़्क़ी और बरकत की दुआएं फ़रमाई थीं, चुनान्चे, इन के माल और अवलाद में बेहद बरकत व तरक़्क़ी हुई । मुख़्तलिफ़ बीवियों और बांदियों से आप के अस्सी लड़के और दो बेटियां पैदा हुईं और जिस दिन आप का विसाल हुवा उस दिन आप के बेटों और पोतों वग़ैरा की ता'दाद एक सो बीस थी । बहुत ज़ियादा ह़दीषें आप से मरवी हैं । आप के शागिर्दों की ता'दाद भी बहुत ज़ियादा है, ह़िना का ख़िज़ाब सर और दाढ़ी में लगाते थे और ख़ुश्बू भी ब कषरत इस्ति'माल करते । आप ने वसिय्यत फ़रमाई कि मेरे कफ़न में वोही ख़ुश्बू लगाई जाए जिस में हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पसीना मिला हुवा है । इन की वालिदा हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पसीने को जम्अ़ कर के ख़ुश्बू में मिलाया करती थीं ।

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में लोगों को ता'लीम देने के लिये आप मदीनए मुनव्वरा से बसरा चले गए। आप के साले विसाल और आप की उ़म्र शरीफ़ के बारे में इख़्तिलाफ़ है। मश्हूर येह है कि सि. 91 हि. को आप का विसाल हुवा। बा'ज़ों ने सि. 92 हि. बा'ज़ ने सि. 93 हि. बा'ज़ ने सि. 90 हि. को आप के विसाल का साल तह़रीर किया है। ब वक़्ते विसाल आप की उ़म्र शरीफ़ एक सो तीन बरस की थी। बा'ज़ ने एक सो दस बा'ज़ ने एक सो सात और बा'ज ने निनानवे बरस लिखा है। बसरा में वफ़ात पाने वाले सह़ाबियों में से सब से आख़िर में आप का विसाल हुवा। आप के बा'द शहर बसरा में कोई सह़ाबी बाक़ी नहीं रहा। बसरा से दो कोस के फ़ासिले पर आप की क़ब्र शरीफ़ बनी जो ज़ियारत गाहे ख़लाइक़ है। आप बहुत ही ह़क़ गो, ह़क़ पसन्द, इबादत गुज़ार सह़ाबी हैं और आप की चन्द करामतें भी मन्क़ूल हैं।(1)

(اکمال،ص۵۸۵واسدالغابہ،ج۱،ص۱۲۷)

करामात

साल में दो मरतबा फल देने वाला बाग़

इन की करामतों में से एक करामत येह है कि दुन्या भर में खजूरों का बाग़ साल में एक ही मरतबा फ़लता है मगर आप का बाग़ साल में दो मरतबा फलता था।(2) (مشکوٰۃ شریف،ج۲،ص۵۴۵)

---

(1)......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الهمزة، فصل فی الصحابة، ص ٥٨٥
واسد الغابة، انس بن مالك بن النضر، ج ١، ص ١٩٢ـ١٩٥ ملتقطاً

(2)......مشكاة المصابيح، كتاب الفضائل و الشمائل، باب الكرامات، الحديث: ٥٩٥٢، ج ٢، ص ٤٠١

खजूरों में मुश्क की ख़ुश्बू

इसी त़रह़ येह भी आप की बहुत ही बे मिषाल करामत है कि आप के बाग़ की खजूरों में मुश्क की ख़ुश्बू आती थी जिस की मिषाल कहीं दुन्या भर में नहीं मिल सकती है।(1) (مشکوۃ شریف، ج۲،ص۵۴۵)

दुआ़ से बारिश

आप का बाग़बान आया और शदीद क़ह़त़ और ख़ुश्क साली की शिकायत करने लगा। आप ने वुज़ू फ़रमाया और नमाज़ पढ़ी फिर फ़रमाया कि ऐ बाग़बान ! आस्मान की त़रफ़ देख ! क्या तुझे कुछ नज़र आ रहा है। बाग़बान ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर मैं तो आस्मान में कुछ भी नहीं देख रहा हूं। फिर आपने नमाज़ पढ़ कर येह ही सुवाल फ़रमाया : और बाग़बान ने येही जवाब दिया। फिर तीसरी बार या चौथी बार नमाज़ पढ़ कर आप ने बाग़बान से पूछा कि क्या आस्मान में कुछ नज़र आ रहा है ? अब की मरतबा बाग़बान ने जवाब दिया कि जी हां ! एक परन्द के पर के बराबर बदली का टुकड़ा नज़र आ रहा है। फिर आप बराबर नमाज़ और दुआ़ में मश्ग़ूल रहे यहां तक कि आस्मान में हर त़रफ़ अब्र छा गया और निहायत ही ज़ोरदार बारिश हुई। फिर ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बाग़बान को हुक्म दिया कि तुम घोड़े पर सुवार हो कर देखो कि येह बारिश कहां तक पहुंची है ? उस ने चारों त़रफ़ घोड़ा दौड़ा कर देखा और आ कर कहा कि येह बारिश "मसीरीन" और "गज़बान" के मह़ल्लों से आगे नहीं बढ़ी।(2) (طبقات ابن سعد، ج۷،ص۲۱)

---

1 ......مشکاۃ المصابیح، کتاب الفضائل و الشمائل، باب الکرامات، الحدیث:۵۹۵۲، ج۲، ص۴۰۱

2 ......الطبقات الکبری لابن سعد، انس بن مالک بن النضر، ج۷، ص۱۵

तबसेरा

बारिश कहा तक हुई है ? इस को देखने और मा'लूम करने की वजह येह थी कि उस शहर में जहां आप थे क़ह्त़ पड़ गया था और पानी की सख़्त ज़रूरत थी बाक़ी दूसरे अ़लाक़ों में काफ़ी बारिश हो चुकी थी । उन अ़लाक़ों में क़त़अ़न मज़ीद बारिश की ज़रूत नहीं थी बल्कि वहां ज़ियादा बारिश से नुक़्सान होने का अन्देशा था इसी लिये आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि बारिश कहा तक हुई है ? जब आप को मा'लूम हो गया कि बारिश उसी शहर में हुई है जहां बारिश की ज़रूरत थी तो फिर आप को इत़्मीनान हो गया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه इस बारिश से कहीं भी कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा ।

अल्लाहु अक्बर ! बारगाहे इलाही के मक़्बूल बन्दों की शान और दरबारे ख़ुदावन्दी में इन की मक़्बूलिय्यत का क्या कहना ? जब ख़ुदा से अ़र्ज़ किया बारिश हो गई और जहां तक बारिश बरसाना चाही वहीं तक बरसी ।

लिल्लाह ! ग़ौर फ़रमाइये कि क्या औलियाउल्लाह का ह़ाल और इन की शान आ़म इन्सानों जैसी है ? तौबा نعوذ باللہ कहां येह **अल्लाह** तआ़ला के पाक बन्दे और कहां मन्हूस और दिलों के गन्दे लोग ! چہ نسبت خاک را با عالم پاک

ह़ज़रते मौलाना रूम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

کار پاکاں را قیاس از خود مگیر
گرچہ ماند در نوشتن شَیر و شِیر

(या'नी पाक लोगों के मुआ़मलात को अपने ऊपर मत क़ियास कर, अगर्चे लिखने में शेर (شَیر) और शीर (شِیر) बिल्कुल हमशक्ल और मुशाबेह हैं लेकिन एक शेर (شَیر) वोह है कि इन्सान को फाड़ कर खा जाता है और एक शीर (شِیر) या'नी दूध है कि इसे इन्सान खाता और पीता है। (1) فَاعْتَبِرُوْا یٰۤاُولِی الْاَبْصَارِ

---

1 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो इब्रत लो ऐ निगाह वालो । (پ۲۸،الحشر:۲)

﴾29﴿ हज़रते अनस बिन नज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चचा हैं। येह बहुत ही बहादुर और जां बाज़ सहाबी हैं। हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मेरे चचा हज़रते अनस बिन नज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जंगे उहुद के दिन अकेले ही कुफ़्फ़ार से लड़ते हुवे आगे बढ़ते ही चले गए। जब आप ने देखा कि कुछ मुसलमान सुस्त पड़ गए हैं और आगे नहीं बढ़ रहे तो आप ने बुलन्द आवाज़ से ललकार कर फ़रमाया وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِہٖ اِنِّیْ لَاَجِدُ رِیْحَ الْجَنَّۃِ دُوْنَ اُحُدٍ وَّاِنَّھَا لَرِیْحُ الْجَنَّۃِ (या'नी मैं उस ज़ात की क़सम खा कर कहता हूं कि जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है कि मैं उहुद पहाड़ के पास जन्नत की ख़ुश्बू पा रहा हूं और यक़ीनन बिलाशुबा येह जन्नत ही की ख़ुश्बू है।)

आप ने येह फ़रमाया और अकेले ही कुफ़्फ़ार के नर्ग़े में लड़ते लड़ते ज़ख़्मों से चूर हो कर गिर पड़े और शहादत के शरफ़ से सरफ़राज़ हुवे।

इन के बदन पर तीरों, तल्वारों और नेज़ों के अस्सी से ज़ियादा ज़ख़्म गिने गए थे और कुफ़्फ़ार ने इन की आंखों को फोड़ कर और नाक, कान, होंट को काट कर इन की सूरत इस क़दर बिगाड़ दी थी कि कोई शख़्स इन की लाश को पहचान न सका मगर जब इन की बहन हज़रते रुब्बीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आईं तो उन्हों ने इन की उंगलियों के पौरों को देख कर पहचाना कि येह मेरे भाई अनस बिन नज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की लाश है।

हज़रते अनस बिन नज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जंगे बद्र में शरीक नहीं हो सके थे इस का इन्हें शदीद रन्जो क़लक़ था कि अफ़्सोस ! मैं इस्लाम के पहले ग़ज़्वे में ग़ैर हाज़िर रहा। फिर वोह अकसर कहा करते थे कि अगर आइन्दा कभी **अल्लाह** तआ़ला ने येह दिन दिखाया कि कुफ़्फ़ार से जंग का मौक़अ़ मिला तो **अल्लाह** तआ़ला देख लेगा कि मैं जंग क्या करता हूं और क्या कर दिखाता हूं।

चुनान्चे, सि. 3 हि. में जब जंगे उहुद हुई तो इन्हों ने खुदा तआ़ला से जो वा'दा किया था वोह पूरा कर के दिखा दिया कि अपने बदन पर अस्सी से ज़ाइद ज़ख़्म खा कर शहीद हो गए। चुनान्चे, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि इन की शान में कुरआने करीम की येह आयत नाज़िल हुई।

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ (1)

मोअमिनीन में से कुछ मर्द ऐसे हैं जिन्हों ने खुदा से किये हुवे अपने अ़हद को पूरा कर दिया। (2)

(اکمال،ص۵۸۵،اسد الغابہ،ج۱،ص۱۲۲،حجۃ اللہ ج۲،ص۸۷۱ بخاری شریف)

करामत

इन की करामतों में से येह एक करामत बहुत ज़ियादा मश्हूर और मुस्तनद है।

खुदा ने क़सम पूरी फ़रमा दी

हज़रते अनस बिन अन्नज़्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की बहन रुब्बीअ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने झगड़ा व तकरार करते हुवे एक अन्सारी की लड़की के दो अगले दांत तोड़ डाले। लड़की वालों ने क़िसास का मुतालबा किया और शहनशाहे कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुरआने मजीद के हुक्म के मुताबिक़ येह फ़ैसला फ़रमा दिया कि रुब्बीअ़ बिन्ते अन्नज़्र के दांत क़िसास में तोड़ दिये जाएं।

---

1 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुसलमानों में कुछ वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अ़हद अल्लाह से किया था। (پ۲۱،الاحزاب:۲۳)

2 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الھمزۃ، فصل فی الصحابۃ، ص۵۸۵ واسد الغابۃ، انس بن النضر، ج۱، ص۱۹۸ وحجۃ اللّٰہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملۃ جمیلۃ...الخ، ص۶۱۹

जब हज़रते अनस बिन अन्नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पता चला तो वोह बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवे और येह कहा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुदा तआ़ला की क़सम ! मेरी बहन का दांत नहीं तोड़ा जाएगा। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ अनस बिन अन्नज़्र ! तुम क्या कह रहे हो ? क़िसास तो **अल्लाह** तआ़ला की किताब का फ़ैसला है। येह गुफ़्तगू अभी हो रही थी कि लड़की वाले दरबारे नबुव्वत में हाज़िर हुवे और कहने लगे कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़िसास में रुब्बीअ़ का दांत तोड़ने के बदले में हम लोगों को दैत (माली मुआ़वज़ा) दिला दिया जाए। इस त़रह़ अनस बिन अन्नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़सम भी पूरी हो गई और इन की बहन ह़ज़रते रुब्बीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का दांत तोड़े जाने से भी बच गया।

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस मौक़अ़ पर येह इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला के बन्दों में से कुछ ऐसे लोग भी हैं कि अगर वोह किसी मुआ़मले में **अल्लाह** तआ़ला की क़सम खा लें तो **अल्लाह** तआ़ला उन की क़सम पूरी फ़रमा देता है।(1)

(بخاری شریف، ج۲،ص ۶۶۴،باب قولہ والجروح قصاص)

तबसेरा

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इरशादे गिरामी का येह मत़लब है कि **अल्लाह** तआ़ला के बन्दों में से कुछ ऐसे मक़्बूलाने बारगाहे इलाही हैं कि अगर किसी ऐसी चीज़ के बारे में जो बज़ाहिर होने वाली न हो, **अल्लाह** तआ़ला के येह बन्दे अगर क़सम खा लें कि हो जाएगी तो **अल्लाह** तआ़ला उन मुक़द्दस बन्दों की क़समों को टूटने नहीं देता बल्कि उस न होने वाली चीज़ को मौजूद फ़रमा देता है ताकि इन मुक़द्दस बन्दों की क़सम पूरी हो जाए।

1 ......صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب والجروح قصاص، الحدیث: ۴۶۱۱، ج۳، ص۲۱۵

देख लीजिये कि हज़रते रुब्बीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिये दरबारे नबुव्वत से क़िसास का फ़ैसला हो चुका था और मुद्दई ने क़िसास ही का मुतालबा किया था लेकिन जब हज़रते अनस बिन अन्नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ क़सम खा गए कि खुदा की क़सम ! मेरी बहन का दांत नहीं तोड़ा जाएगा तो खुदा तआ़ला ने ऐसा ही सबब पैदा कर दिया। तो ज़ाहिर है कि अगर फ़ैसले के मुताबिक़ दांत तोड़ दिया जाता तो इन की क़सम टूट जाती मगर खुदा तआ़ला का फ़ज़्लो करम हो गया कि मुद्दई का दिल बदल गया और उस ने बजाए क़िसास के दैत का मुतालबा कर दिया इस त़रह़ दांत टूटने से बच गया और इन की क़सम पूरी हो गई।

इस की बहुत सी मिषालें और षुबूत ह़ासिल होंगे कि **अल्लाह** वाले जिस बात की क़सम खा गए **अल्लाह** तआ़ला ने उस चीज़ को मौजूद फ़रमा दिया अगर्चे वोह चीज़ ऐसी थी कि बज़ाहिर इस के होने की कोई भी सूरत नहीं थी।

﴾30﴿ ह़ज़रते ह़न्ज़ला बिन अबी आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

येह मदीनए मुनव्वरा के बाशिन्दे हैं और अन्सार के क़बीलए औस से इन का ख़ानदानी तअ़ल्लुक़ है। इन का बाप अबू आ़मिर अपने क़बीले का सरदार था और ज़मानए जाहिलिय्यत में उस की इ़बादत की कषरत को देख कर आ़म तौर पर लोग इस को अबू आ़मिर राहिब कहा करते थे। जब हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हिजरत फ़रमा कर मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए और पूरा मदीना और अत़राफ़ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों पर कुरबान होने लगा तो मदीने के दो शख़्सों पर ह़सद का भूत सुवार हो गया। एक अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य, दूसरा अबू आमिर राहिब। लेकिन अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य ने तो अपनी दुश्मनी को छुपाए रखा और मुनाफ़िक़ बन कर मदीने ही में रहा लेकिन अबू आ़मिर राहिब ह़सद की आग में जल भुन कर मदीने से मक्का चला गया और कुफ़्फ़ार को भड़का कर मदीनए मुनव्वरा पर ह़म्ले के लिये तय्यार किया चुनान्चे,

सि. 3 हि. में जब जंगे उहुद हुई तो अबू आमिर कुफ़्फ़ार के लश्कर में शामिल था और कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से लड़ रहा था मगर उस के बेटे ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ परचमे इस्लाम के नीचे निहायत ही जवां मर्दी और जोश व ख़रोश के साथ कुफ़्फ़ार से लड़ रहे थे। अबू आमिर राहिब जब तल्वार घुमाता हुवा मैदान में निकला तो ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं अपनी तल्वार से अपने बाप अबू आमिर का सर काट कर लाऊं मगर हु़ज़ूर रह़मतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रह़मत ने येह गवारा नहीं किया कि बेटे की तल्वार बाप का सर काटे इस लिये आप ने इजाज़त नहीं दी मगर ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जोशे जिहाद में इस क़दर आपे से बाहर हो गए थे कि सर हथेली पर रख कर इन्तिहाई जांबाज़ी के साथ लड़ते हुवे क़ल्बे लश्कर तक पहुंच गए और कुफ़्फ़ार के सिपह सालार अबू सुफ़्यान पर ह़म्ला कर दिया और क़रीब था कि ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तल्वार अबू सुफ़्यान का फ़ैसला कर दे मगर अचानक पीछे से शद्दाद बिन अल अस्वद ने झपट कर वार को रोका और ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर दिया।[1] (اسد الغابہ، ج۲، ص۶۷ ومدارج النبوۃ، ص۱۲۳)

करामत

ग़सीलुल मलाइका

ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि फ़िरिश्तों ने उन्हें ग़ुस्ल दिया है। जब उन की बीवी से उन का ह़ाल दरयाफ़्त किया गया तो उन्हों ने येह बताया कि वोह जंगे उहुद की रात में अपनी बीवी के साथ सोए थे और ग़ुस्ल की ह़ाजत

1 ......اسد الغابۃ، حنظلۃ بن ابی عامر، ج۲، ص۸۴-۸۵
والاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، حنظلۃ بن ابی عامر، ج۲، ص۱۱۹

हो गई थी मगर वोह रात के आख़िरी हिस्से में दा'वते जंग की पुकार सुन कर इस ख़याल से बिला गुस्ल मैदाने जंग की त़रफ़ दौड़ पड़े कि शायद गुस्ल करने में अल्लाह के रसूल की पुकार पर दौड़ने में देर लग जाए। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येही वजह है कि फ़िरिश्तों ने शहादत के बा'द उन को गुस्ल दिया, वरना शहीद को गुस्ल देने की ज़रूरत ही नहीं है। इसी वाक़िए की बिना पर ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ग़सीलुल मलाइका (फ़िरिश्तों के नहलाए हुवे) कहा जाता है।(1) (مدارج النبوۃ، ج۲ومشکوۃ شریف وغیرہ)

तबसेरा

फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहादत के बा'द गुस्ल दिया। येह आप की बहुत बड़ी करामत और निहायत ही अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत है। चुनान्चे, आप के क़बीले वालों को इस पर बहुत बड़ा फ़ख़्र और नाज़ था कि ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमारे क़बीले के एक अ़दीमुल मिषाल फ़र्द हैं कि जिन को फ़िरिश्तों ने नहलाया। इस तफ़ाख़ुर के सिलसिल में मन्क़ूल है कि क़बीलए औस के लोगों ने क़बीलए ख़ज़रज वालों से कहा कि देख लो ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़सीलुल मलाइका हमारे क़बीलए औस के हैं और ह़ज़रते आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शहद की मख्खियों ने जिन की लाश पर पहरा दिया था वोह भी हमारे क़बीलए औस के हैं और ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिन की वफ़ात पर अ़र्शे इलाही हिल गया वोह भी हमारे क़बीलए औस के हैं और ह़ज़रते ख़ुज़ैमा बिन षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिन की अकेले की गवाही दो गवाहों के बराबर है वोह भी हमारे क़बीलए औस ही के हैं। येह सुन कर क़बीलए ख़ज़रज के लोगों ने कहा कि हमारे क़बीलए ख़ज़रज

1 ......مدارج النبوت، قسم دوم، باب سوم، ج۲،ص۱۲۳،۱۲۴

वालों को भी येह फ़ख़्र हासिल है कि हुज़ूरे अक़्दस عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मौजूदगी में हमारे क़बीले के चार आदमी हाफ़िज़े कुरआन व क़ारी हुवे और तुम्हारे क़बीले में इस वक़्त तक कोई भी पूरा हाफ़िज़े कुरआन नहीं हुवा। देख लो हज़रते ज़ैद बिन षाबित, हज़रते अबू ज़ैद व हज़रते उबय्य बिन का'ब व हज़रते मुआज़ बिन जबल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ اَجْمَعِیْن) येह चारों हुफ़्फ़ाज़ हमारे क़बीलए ख़ज़रज के सपूत हैं।[1] (اسد الغابہ، ج۲،ص۶۸)

﴾31﴿ हज़रते आमिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आज़ाद कर्दा गुलाम हैं। येह इब्तिदाए इस्लाम ही में मुसलमान हो गए थे फिर कुफ़्फ़ारे मक्का ने इन को बहुत ज़ियादा सताया तो हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया। वाक़िअए हिजरत के वक़्त जब कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने यारे ग़ार सिद्दीक़े जां निषार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ ग़ारे षौर में तशरीफ़ फ़रमा हुवे तो येही हज़रते आमिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दिन भर बकरियों को चरा कर ग़ार के पास रात को लाते और इन बकरियों का दूध दोह कर दोनों आलम के ताजदार और उन के यारे ग़ार को पिलाते। जब ग़ारे षौर से हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा के लिये रवाना हुवे तो एक ऊंटनी पर शहनशाहे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और एक ऊंटनी पर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रते आमिर बिन फ़ुहैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) बैठे।

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 4 हि. वाक़िअए "बीरे मऊना" में आप को शहादत की सआदत हासिल हुई।[2] (اسد الغابہ، ج۳،ص۹۱)

(पूरी तफ़्सील के लिये पढ़िये हमारी किताब "सीरतुल मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم")

---

1 ......اسد الغابة، حنظلة بن ابی عامر رضی اللّٰہ عنہ، ج۲، ص۸۵

2 ......اسد الغابة، عامر بن فھیرة رضی اللّٰہ عنہ، ج۳، ص۱۳۳

करामत

लाश आस्मान तक बुलन्द हुई

जंगे बीरे मऊना में सत्तर सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में से सिर्फ़ अ़म्र बिन उमय्या ज़मिरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़िन्दा बचे बाक़ी सब जामे शहादत से सैराब हो गए। इन ही शुहदाए किराम में से ह़ज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी हैं। कुफ़्फ़ार के सरदार आ़मिर बिन तुफ़ैल का बयान है कि ह़ज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा जब शहीद हो गए तो एक दम उन की लाश ज़मीन से बुलन्द हो कर आस्मान तक पहुंची फिर थोड़ी देर के बा'द आहिस्ता आहिस्ता वोह ज़मीन पर उतर आई और इस के बा'द उन की लाश तलाश करने पर नहीं मिली क्यूंकि फ़िरिश्तों ने उन्हें दफ़्न कर दिया।[1] (بخاری، ج۲، ص۵۸۷)

तबसेरा

जिस त़रह़ ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़िरिश्तों ने ग़ुस्ल दिया तो इन का लक़ब "ग़सीलुल मलाइका" हुवा। इसी त़रह़ चूंकि इन को फ़िरिश्तों ने क़ब्र में दफ़्न किया था इस लिये येह "दफ़ीनुल मलाइका" (फ़िरिश्तों के दफ़्न कर्दा) हैं। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم

﴾32﴿ ह़ज़रते ग़ालिब बिन अ़ब्दुल्लाह लैषी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते ग़ालिब बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मिसअ़र बिन जा'फ़र बिन कल्ब लैषी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन का वत़न मक्कए मुअ़ज़्ज़मा है और येह फ़त्ह़े मक्का से पहले ही मुसलमान हो गए थे। फ़त्ह़े मक्का में येह हुज़ूरे अक़्दस शहनशाहे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हम

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الرجیع ورعل...الخ، الحدیث:۴۰۹۳، ج۳، ص۴۹

واسد الغابة، عامر بن فهيرة رضى الله عنه، ج۳، ص۱۳۴

रिकाब थे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को मक्कए मुकर्रमा के रास्तों की दुरुस्ती और कुफ़्फ़ार के हालात की जासूसी के काम पर मामूर फ़रमाया। फिर फ़त्हे मक्का के बा'द साठ सुवारों का अफ़्सर बना कर आप ने इन को मक़ामे कदीद में बनी अल मलूह़ से जंग के लिये भेज दिया।

इब्नुल कल्बी का बयान है कि जनाबे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को बनी मुर्रा से लड़ने के लिये "फ़दक" भेजा, वहीं येह शहादत से सरफ़राज़ हो गए।(1) وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم (اسد الغابہ، ج۴،ص۱۶۸)

एक रिवायत से येह भी मा'लूम होता है कि ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में भी येह जिहादों में शरीक होते रहे हैं। ख़ास तौर पर जंगे क़ादिसिय्या में ख़ूब ख़ूब कुफ़्फ़ार से लड़े। मश्हूर है कि हरमज़ इन्ही के हाथ से मारा गया। ह़ज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हुकूमत के दौरान ज़ियाद ने इन को ख़ुरासान का ह़ाकिम बना दिया।(2) (اصابہ، ج۵،ص۱۸۷)

इन की येह एक करामत बहुत मश्हूर और निहायत ही मुस्तनद है।

करामत

ख़ुश्क नाले में नागहां सैलाब

ह़ज़रते जुन्दब बिन मकीष जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ग़ालिब बिन अ़ब्दुल्लाह लैषी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक छोटे से लश्कर का अमीर

1 ......اسد الغابة، غالب بن عبدالله الكنانى الليثى، ج ٤، ص ٣٥٧ ملتقطاً

2 ......الاصابة فى تمييز الصحابة، حرف الغين المعجمة، ج ٥، ص ٢٤٣

बना कर जिहाद के लिये भेजा। मैं भी इस लश्कर में शामिल था। हम लोगों ने मक़ामे "कुदैद" में क़बीलए बनी अल मलूह़ पर ह़म्ला किया और उन के ऊंटों को माले ग़नीमत बना कर वापस आने लगे, अभी हम लोग कुछ दूर ही चले थे कि बनू अल मलूह़ के तमाम क़बाइल का एक बहुत बड़ा लश्कर जम्अ़ हो कर हमारे तआ़क़ुब में आ गया, हम लोग एक नाले के पार आ गए जो बिल्कुल ही ख़ुश्क था और हम लोगों को बिल्कुल ही यक़ीन हो गया कि अब हम लोग इन काफ़िरों के हाथों में गिरिफ़्तार हो जाएंगे मगर कुफ़्फ़ार जब नाले के पास आए तो बा वुजूद येह कि न बारिश हुई न बदली किसी त़रफ़ नज़र आई अचानक नाला पानी से भर गया और इस ज़ोरो शोर से पानी का बहाव था कि इस को पार करना इन्तिहाई दुश्वार था चुनान्चे, कुफ़्फ़ार का लश्कर नाले के पास ठहर गया और एक काफ़िर भी नाले को पार न कर सका और हम लोग निहायत ही इत़मीनान और सलामती के साथ मदीनए मुनव्वरा पहुंच गए।[1] (حجۃ اللہ، ج۲، ص۸۷۲بحوالہ ابن سعد)

तबसेरा

हम करामत की क़िस्मों के बयान में लिख चुके हैं कि बिल्कुल नागहां और अचानक ग़ैब से किसी चीज़ का बत़ौरे इमदाद के ज़ाहिर हो जाना येह भी करामत की एक क़िस्म है। ख़ुश्क नाले में अचानक पानी भर जाना येह ह़ज़रते ग़ालिब बिन अ़ब्दुल्लाह लैषी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की इसी क़िस्म की करामत है, इन की इसी करामत की बदौलत तमाम सह़ाबियों رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ की जान बच गई।

﴾33﴿ ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ यमन के बाशिन्दे थे। मक्कए मुकर्रमा में आ कर इस्लाम क़बूल किया। पहले हिजरत कर के ह़बशा चले गए फिर ह़बशा से कश्तियों पर सुवार हो कर

1 ......الطبقات الکبری لابن سعد، سریۃ غالب بن عبداللہ اللیثی...الخ، ج۲، ص۹۵

तमाम मुहाजिरीने ह़बशा के साथ आप भी तशरीफ़ लाए और ख़ैबर में हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में हाज़िर हुवे । ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सि. 20 हि. में इन को बसरा का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया और ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत तक येह बसरा के गवर्नर रहे जब ह़ज़रते अ़ली और ह़ज़रते अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की जंग शुरूअ़ हुई तो पहले आप ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के त़रफ़दार थे मगर इस झगड़े से मुन्क़बिज़ हो कर मक्कए मुकर्रमा चले गए यहां तक कि सि. 52 हि. में आप की वफ़ात हो गई ।[1] (اکمال،ص۶۱۸)

करामात

ग़ैबी आवाज़ सुनते थे

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की येह एक ख़ास करामत थी कि ग़ैबी आवाज़ें आप के कान में आया करती थीं । चुनान्चे, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का बयान है कि एक मरतबा ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ समन्दरी जिहाद में अमीरे लश्कर बन कर गए । रात में सब मुजाहिदीन कश्तियों पर सुवार हो कर सफ़र कर रहे थे कि बिल्कुल नागहां ऊपर से एक पुकारने वाले की आवाज़ आई :

"क्या मैं तुम लोगों को ख़ुदा तआ़ला के उस फ़ैसले की ख़बर दे दूं जिस का वोह अपनी ज़ात पर फ़ैसला फ़रमा चुका है ? येह वोह है कि जो **अल्लाह** तआ़ला के लिये गर्मी के दिनों में प्यासा रहेगा । **अल्लाह** तआ़ला पर ह़क़ है कि प्यास के दिन (क़ियामत में) ज़रूर ज़रूर उस को सैराब फ़रमा देगा ।"[2] (حجۃ اللہ،ج۲،ص۸۷۲بحوالہ حاکم)

---

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف المیم، فصل فی الصحابۃ، ص ٦١٨

2 ......المستدرك علی الصحیحین،کتاب معرفۃ الصحابۃ علیهم الرضوان ، باب جزاء من یعطش للّٰہ فی یوم صائف، الحدیث:٦٠٢٢، ج٤، ص ٥٨٦

लह्ने दावूदी

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आवाज़ और लहजे में इतनी ज़बरदस्त कशिश थी कि इस को करामत के सिवा और कुछ भी नहीं कहा जा सकता। हज़रते अमीरुल मोअमिनीन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब हज़रते अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखते तो फ़रमाते : ذَكِّرْنَا رَبَّنَا يَا اَبَا مُوْسٰى (ऐ अबू मूसा ! हम को अपने रब की याद दिलाओ) येह सुन कर हज़रते अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुरआन शरीफ़ पढ़ने लगते, इन की क़िराअत सुन कर हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़ल्ब में ऐसी नूरी तजल्ली पैदा हो जाती कि इन्हें दुन्या से दूरी और अपने रब की हुज़ूरी नसीब हो जाती थी।(1)

हज़रते बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़िराअत सुनी तो इरशाद फ़रमाया कि हज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सी खुश इल्हानी इस शख़्स को खुदा तआला की तरफ़ से अता की गई है।(2) (کنز العمال، ج۱۲،ص۲۱۸،مطبوعہ حیدرآباد)

﴾34﴿ हज़रते तमीम दारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते तमीम बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पहले नस्रानी थे फिर सि. 9 हि. में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे। बहुत ही इबादत गुज़ार थे। एक ही रक्अत में कुरआने मजीद पढ़ा करते थे और कभी कभी एक ही आयत को रात भर सुब्ह तक नमाज़ में बार बार पढ़ते रहते। हज़रते मुहम्मद बिन अल मुन्कदिर का बयान है कि एक रात सोते रह गए और नमाज़े तहज्जुद के लिये नहीं उठ सके तो इन्हों ने अपनी इस कोताही का कफ़्फ़ारा इस तरह अदा किया कि मुकम्मल एक साल तक रात भर नहीं सोए। पहले मदीनए मुनव्वरा में रहते थे फिर

---

1 ......كنز العمال، كتاب الفضائل،فضائل الصحابة،الحديث:٣٧٥٤٧،ج٧،الجزء١٣،ص٢٦٠

2 ......كنز العمال، كتاب الفضائل،فضائل الصحابة،الحديث:٣٧٥٥٠،ج٧،الجزء١٣،ص٢٦٠

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बा'द मुल्के शाम में चले गए और अख़ीर उ़म्र तक मुल्के शाम ही में रहे। मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में सब से पहले इन्हों ने क़िन्दील जलाई और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दज्जाल के जसासा का वाक़िआ़ इन से सुन कर सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को सुनाया।[1] (اکمال،ص۵۸۸واسد الغابہ،ج۱،ص۲۱۵)

करामत

चादर दिखा कर आग बुझा दी

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की करामतों में से एक मश्हूर और मुस्तनद करामत येह है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में जब पहाड़ के एक ग़ार से एक क़ुदरती आग नुमूदार हुई तो अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन को अपनी चादर अ़ता फ़रमाई, येह चादर ले कर जब आग के क़रीब पहुंचे तो आग बुझती हुई पीछे को हटती चली गई यहां तक कि आग ग़ार के अन्दर दाख़िल हो गई और येह ख़ुद भी आग को चादर से दफ़्अ़ करते हुवे ग़ार में घुसते चले गए जब येह आग को बुझा कर ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे तो आप ने फ़रमाया कि ऐ तमीम दारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इसी दिन के लिये हम ने तुम को छुपा रखा था।[2] (حجۃ اللہ،ج۲،ص۸۷۳بحوالہ ابونعیم)

(इस आग का मुफ़स्सल ह़ाल हम ने अपनी किताब "रूह़ानी ह़िकायात" ह़िस्सा. 2 और "सीरतुल मुस्त़फ़ा" में तह़रीर किया है)

---

1 ......اسد الغابة، تميم بن اوس رضى اللّٰه عنه، ج ١، ص ٣١٩
والاكمال فى اسماء الرجال، حرف التاء، فصل فى الصحابة، ص ٥٨٨

2 ......حجة اللّٰه على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث
فى ذكر جملة جميلة...الخ، ص ٦٢١

﴾35﴿ ह़ज़रते इमरान बिन ह़सीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

इन की कुन्यत "अबू नजीद" है और येह क़बीलए बनू ख़ज़ाआ" की एक शाख़ बनू का'ब के ख़ानदान से हैं इस लिये **ख़ज़ाई** और **का'बी** कहलाते हैं। सि. 7 हि. में जंगे ख़ैबर के साल मुसलमान हुवे। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी ख़िलाफ़त के दौरान इन को अहले बसरा की ता'लीम के लिये मुक़र्रर फ़रमाया था। मुह़म्मद बिन सीरीन मुह़द्दिष फ़रमाया करते थे कि बसरा में इमरान बिन ह़सीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ज़ियादा पुराना और अफ़्ज़ल कोई सह़ाबी नहीं। इन की पूरी ज़िन्दगी मज़हबी रंग में रंगी हुई थी त़रह़ त़रह़ की इबादतों में बहुत ज़ियादा मह़नते शाक़्क़ा फ़रमाते थे।

ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ इन्हें इतनी वालिहाना अ़क़ीदत थी और आप का इतना एह़तिराम रखते थे कि जिस हाथ से इन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक पर बैअ़त की थी उस हाथ से उ़म्र भर इन्हों ने पेशाब का मक़ाम नहीं छुवा। तीस बरस तक मुसलसल इस्तिस्क़ा की बीमारी में साह़िबे फ़िराश रहे और शिकम का ऑपरेशन भी हुवा मगर सब्र व शुक्र का येह ह़ाल था कि हर मिज़ाज पुर्सी करने वाले से येही फ़रमाया करते थे कि मेरे ख़ुदा को जो पसन्द है वोही मुझे भी मह़बूब है। सि. 52 हि. में ब मक़ामे बसरा आप का विसाल हुवा।(1)

(حجۃ اللہ، ج۲، ص۸۷۳ والاکمال واسد الغابہ، ج۴، ص۱۳۷)

---

1 ......الاكمال فى اسماء الرجال، حرف العين، فصل فى الصحابة، ص٦٠٧
واسد الغابة، عمران بن حصين رضى اللّٰه عنه، ج٤، ص٢٩٩
وحجة اللّٰه على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء..الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة...الخ، ص٦٢١
والطبقات الكبرى لابن سعد، عمران بن حصين رضى اللّٰه عنه، ج٤، ص٢١٥

करामत

फ़िरिश्तों से सलाम व मुसाफ़हा

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मश्हूर करामत येह है कि आप फ़िरिश्तों की तस्बीह़ की आवाज़ सुना करते और फ़िरिश्ते आप से मुसाफ़ह़ा किया करते थे नीज़ आप बहुत मुस्तजाबुद्दा'वात भी थे। या'नी आप की दुआएं बहुत ज़ियादा मक़्बूल हुवा करती थीं।(1)

(حجۃ اللہ، ج۲،ص۸۷۳ واسد الغابہ، ج۴،ص۱۳۷ وابن سعد، ج۴،ص۲۸۸)

﴾36﴿ ह़ज़रते सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

येह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आज़ाद कर्दा गुलाम हैं और बा'ज़ का क़ौल है कि येह ह़ज़रते उम्मुल मोअमिनीन उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के गुलाम थे। उन्हों ने इस शर्त़ पर इन को आज़ाद किया था कि उ़म्र भर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत करते रहेंगे। "सफ़ीना" इन का लक़ब है। इन के नाम में इख़्तिलाफ़ है किसी ने "रबाह़" किसी ने "मेहरान" किसी ने "रौमान" नाम बताया है। "सफ़ीना" अ़रबी में कश्ती को कहते हैं। इन का लक़ब "सफ़ीना" होने का सबब येह है कि दौराने सफ़र एक शख़्स थक गया तो उस ने अपना सामान इन के कन्धों पर डाल दिया और येह पहले ही बहुत ज़ियादा सामान उठाए हुवे थे। येह देख कर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुश त़बई और मुज़ाह़ के त़ौर पर येह फ़रमाया कि اَنْتَ سَفِیْنَۃٌ (तुम तो कश्ती हो) उस दिन से आप का येह लक़ब इतना मश्हूर हो गया कि लोग आप का अस्ली नाम ही

1 ......حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة...الخ، ص ٦٢١
والطبقات الكبرى لابن سعد، عمران بن حصين رضى الله عنه، ج٤، ص٢١٦
واسد الغابة، عمران بن حصين رضى الله عنه، ج٤، ص٢٩٩

भूल गए, लोग इन का अस्ली नाम पूछते तो येह फ़रमाते थे कि मैं नहीं बताऊंगा। मेरा नाम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "सफ़ीना" रख दिया है अब मैं इस नाम को कभी हरगिज़ हरगिज़ नहीं बदलूंगा।(1)

(اکمال،ص۵۹۷واسد الغابہ،ج۲،ص۳۲۴)

करामत

शेर ने रास्ता बताया

इन की मशहूर और निहायत ही मुस्तनद करामत येह है कि येह रूम की सर ज़मीन में जिहाद के दौरान इस्लामी लश्कर से बिछड़ गए और लश्कर की तलाश में दौड़ते भागते चले जा रहे थे कि बिल्कुल ही अचानक जंगल से एक शेर निकल कर इन के सामने आ गया, इन्हों ने डांट कर बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया कि ऐ शेर ! मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुलाम हूं और मेरा मुआमला येह है कि मैं लश्करे इस्लाम से अलग पड़ गया हूं और लश्कर की तलाश में हूं। येह सुन कर शेर दुम हिलाता हुवा इन के पहलू में आ कर खड़ा हो गया और बराबर इन को अपने साथ में लिये हुवे चलता रहा यहां तक कि येह लश्करे इस्लाम में पहुंच गए तो शेर वापस चला गया।(2) (مشکوٰۃ،ج۲،ص۵۴۵،باب الکرامات)

﴾37﴿ हज़रते अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

इन का नाम सदी बिन इजलान है मगर येह अपनी कुन्यत ही के साथ मशहूर हैं। बनू बाहिला के ख़ानदान से हैं इस लिये बाहिली कहलाते हैं। मुसलमान होने के बा'द सब से पहले सुल्हे हुदैबिया में शरीक हो कर बैअ़तुर्रिज़्वान के शरफ़ से सरफ़राज़ हुवे।

---

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف السین، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۷
واسد الغابة، سفینة رضی اللّٰه عنه، ج ۲، ص ۴۸۱

2 ......مشکاة المصابیح ، کتاب الفضائل و الشمائل، باب الکرامات، الحدیث:۵۹۴۹،
ج ۲، ص ۴۰۰

दो सो पचास ह़दीषें इन से मरवी हैं और ह़दीषों के दर्स व इशाअ़त में इन को बेह़द शग़फ़ था, पहले मिस्र में रहते थे फिर ह़म्स चले गए और वहीं सि. 86 हि. में इक्यानवे बरस की उ़म्र में वफ़ात पाई। बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने इन का साले वफ़ात सि. 81 हि. तह़रीर किया है। येह अपनी दाढ़ी में ज़र्द रंग का ख़िज़ाब करते थे।(1)

(اکمال،ص۵۸۶واسدالغابہ،ج۳،ص۱۶)

करामात

फ़िरिश्ते ने दूध पिलाया

इन की एक करामत येह है कि जिस को वोह खुद बयान फ़रमाया करते थे कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन को भेजा कि तुम अपनी क़ौम में जा कर इस्लाम की तब्लीग़ करो चुनान्चे, हुक्मे नबवी की ता'मील करते हुवे येह अपने क़बीले में पहुंचे और इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाया मगर इन की क़ौम ने इन के साथ बहुत बुरा सुलूक किया, खाना खिलाना तो बड़ी बात है पानी का एक क़त़रा भी नहीं दिया बल्कि इन का मज़ाक़ उड़ाते हुवे और बुरा भला कहते हुवे इन को बस्ती से बाहर निकाल दिया। येह भूक प्यास से इन्तिहाई बे ताब और निढाल हो चुके थे लाचार हो कर खुले मैदान ही में एक जगह सो गए तो ख़्वाब में देखा कि एक आने वाला (फ़िरिश्ता) आया और इन को दूध से भरा हुवा एक बरतन दिया। येह इस दूध को पी कर ख़ूब जी भर कर सैराब हो गए। ख़ुदा की शान देखिये कि जब नींद से बेदार हुवे तो न भूक थी न प्यास।

---

1 ......اسد الغابة، صدى بن عجلان، ج۳، ص۱۶۔۱۷
والاكمال فى اسماء الرجال، حرف الهمزة، فصل فى الصحابة، ص۵۸۶
والاعلام للزركلى، صدى بن عجلان، ج۳، ص۲۰۳

इस के बा'द गाउं के कुछ ख़ैर पसन्द और सुलझे हुवे लोगों ने गाउं वालों को मलामत की, कि अपने ही क़बीले का एक मुअ़ज़्ज़ज़ आदमी गाउं में आया और तुम लोगों ने उस के साथ शर्मनाक क़िस्म की बद सुलूकी कर डाली जो हमारे क़बीले वालों की पेशानी पर हमेशा के लिये कलंक का टीका बन जाएगी। येह सुन कर गाउं वालों को नदामत हुई और वोह लोग खाना पानी वग़ैरा ले कर मैदान में इन के पास पहुंचे तो इन्हों ने फ़रमाया कि मुझे तुम्हारे खाने पानी की अब कोई ज़रूरत नहीं है मुझ को तो मेरे रब ने खिला पिला कर सैराब कर दिया है और फिर अपने ख़्वाब का क़िस्सा बयान किया। गाउं वालों ने जब येह देख लिया कि वाक़ेई येह खा पी कर सैराब हो चुके हैं और इन के चेहरे पर भूक व प्यास का कोई अषर व निशान तक नहीं ह़ालांकि इस सुनसान जंगल और बियाबान में खाना पानी कहीं से मिलने का कोई सुवाल ही पैदा नहीं होता तो गाउं वाले आप की इस करामत से बेह़द मुतअ़ष्षिर हुवे यहां तक कि पूरी बस्ती के लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया।(1)

(حجۃ اللہ، ج۲،ص۸۷۳بحوالہ بیہقی وکنز العمال، ج۱۶،ص۲۲۲ومستدرک حاکم، ج۳،ص۶۴۲)

इमदादे ग़ैबी की अशरफ़ियां

ह़ज़रते अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बांदी का बयान है कि येह बहुत ही सख़ी और फ़य्याज़ आदमी थे। किसी साइल को भी अपने दरवाज़े से ना मुराद नहीं लौटाते थे। एक दिन इन के पास सिर्फ़ तीन ही अशरफ़ियां थीं और येह उस दिन रोज़े से थे इत्तिफ़ाक़ से उस दिन तीन साइल दरवाज़े पर आए और आप ने

1 ......دلائل النبوۃ للبیہقی، باب ماجاء فی ما ظہر علی ابی امامۃ...الخ، ج٦، ص١٢٦ وکنزالعمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابۃ، الحدیث:٣٧٥٦٢،ج٧،الجزء١٣،ص٢٦٢

तीनों को एक एक अशरफ़ी दे दी। फिर सो रहे। बांदी कहती हैं कि मैं ने नमाज़ के लिये उन्हें बेदार किया और वोह वुज़ू कर के मस्जिद में चले गए। मुझे उन के ह़ाल पर बड़ा तरस आया कि घर में न एक पैसा है न अनाज का एक दाना, भला येह रोज़ा किस चीज़ से इफ़्त़ार करेंगे ? मैं ने एक शख़्स से क़र्ज़ ले कर रात का खाना तय्यार किया और चराग़ जलाया। फिर मैं जब उन के बिस्तर को दुरुस्त करने के लिये गई तो क्या देखती हूं तीन सो अशरफ़ियां बिस्तर पर पड़ी हुई हैं। मैं ने उन को गिन कर रख दिया वोह नमाज़े इ़शा के बा'द जब घर आए और चराग़ जलता हुवा और बिछा हुवा दस्तरख़्वान देखा तो मुस्कुराए और फ़रमाया कि आज तो ماشآءالله मेरे घर में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ख़ैर ही ख़ैर है ! फिर मैं ने उन्हें खाना खिलाया और अ़र्ज़ किया कि अल्लाह तआ़ला आप पर रह़्म फ़रमाए आप इन अशरफ़ियों को यूंही ला परवाही के साथ बिस्तर पर छोड़ कर चले गए और मुझ से कह कर भी नहीं गए कि मैं इन को उठा लेती, आप ने ह़ैरान हो कर पूछा कि कैसी अशरफ़ियां ? मैं तो घर में एक पैसा भी छोड़ कर नहीं गया था ! येह सुन कर मैं ने उन का बिस्तर उठा कर जब उन्हें दिखाया कि येह देख लीजिये अशरफ़ियां पड़ी हुई हैं तो वोह बहुत ख़ुश हुवे लेकिन उन्हें भी इस पर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा। फिर सोच कर कहने लगे कि येह अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से मेरी इमदादे ग़ैबी है ! मैं इस के बारे में इस के सिवा क्या कह सकता हूं ?(1) (حلیۃ الاولیاء، ج۱۰،ص۱۲۹وشواہدالنبوۃ،ص۲۱۸)

﴾38﴿ ह़ज़रते दह़िय्या बिन ख़लीफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ

येह बहुत ही बुलन्द मर्तबा सह़ाबी हैं। जंगे उहुद और इस के बा'द के तमाम इस्लामी मा'रिकों में कुफ़्फ़ार से लड़ते रहे। सि. 6 हि. हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को रूम के

1 ......شواھد النبوۃ، رکن سادس د ریان شواھد ودلایلی...الخ، ابو امامہ باھلی...الخ،ص۲۸٤

बादशाह क़ैसर के दरबार में अपना मुबारक ख़त़ दे कर भेजा और क़ैसरे रूम हुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का नामए मुबारक पढ़ कर ईमान ले आया मगर उस की सल्त़नत के अरकान ने इस्लाम क़बूल करने से इन्कार कर दिया।

इन्हों ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में चमड़े का मोज़ा बत़ौरे नज़्राना पेश किया और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस को क़बूल फ़रमाया। येह मदीनए मुनव्वरा से शाम में आ कर मुक़ीम हो गए थे और ह़ज़रते अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ज़माने तक ज़िन्दा रहे।[1] (اکمال،ص۵۹۴)

करामत

ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام इन की सूरत में

इन की मश्हूर करामत येह है कि ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْهِ السَّلَام इन की सूरत में ज़मीन पर नाज़िल हुवा करते थे।[2]

(اکمال،ص۵۹۴واسدالغابہ،ج۲،ص۱۳۰)

﴾39﴿ ह़ज़रते साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

इन की कुन्यत अबू यज़ीद है, बनू कन्दा में से थे। हिजरत के दूसरे साल पैदा हुवे और ह़ज्जतुल वदाअ़ में अपने वालिद के साथ ह़ज किया। इमाम ज़ोहरी इन के शागिर्दों में बहुत ही मश्हूर हैं। सि. 80 हि. में इन की वफ़ात हुई।[3] (اکمال،ص۵۹۸)

1 ......الاكمال فى اسماء الرجال، حرف الدال، فصل فى الصحابة، ص ٥٩٣
واسد الغابة، دحية بن خليفة، ج٢، ص ١٩٠

2 ......الاكمال فى اسماء الرجال، حرف الدال، فصل فى الصحابة، ص ٥٩٣
واسد الغابة، دحية بن خليفة، ج٢، ص ١٩٠

3 ......الاكمال فى اسماء الرجال، حرف السين، فصل فى الصحابة، ص ٥٩٨

करामत

चौरानवे बरस का जवान

हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के सर पर अपना दस्ते मुबारक फेरा था। जुऐद बिन अ़ब्दुर्रह़मान का बयान है कि ह़ज़रते साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चौरानवे बरस तक निहायत ही तन्दुरुस्त और क़वी हैकल रहे और कान, आंख, दांत किसी चीज़ में भी कमज़ोरी के आषार नहीं पैदा हुवे थे। (کنز العمال، ج۱۶،ص۵۱)

ह़ज़रते साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के गुलाम अ़ता कहते हैं कि ह़ज़रते साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सर के अगले ह़िस्से के बाल बिल्कुल सियाह थे और सर के पिछले ह़िस्से के सब बाल और दाढ़ी बिल्कुल सफ़ेद थी। मैं ने ह़ैरान हो कर पूछा : ऐ मेरे आक़ा ! येह क्या मुआ़मला है ? मुझे इस पर तअ़ज्जुब हो रहा है ! तो उन्हों ने फ़रमाया कि मैं बचपन में बच्चों के साथ खेल रहा था तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास से गुज़रे और मुझ से मेरा नाम पूछा, मैं ने अपना नाम साइब बिन यज़ीद बताया तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर अपना हाथ मुबारक फेरा जहां तक हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दस्ते मुबारक पहुंचा है वोह बाल सफ़ेद नहीं हुवे और आइन्दा भी कभी सफ़ेद नहीं होंगे ![(1)]

﴾40﴿ ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

इन की कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह है और येह हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आज़ाद कर्दा गुलाम हैं। येह फ़ारस के शहर "रामहर मज़" के बाशिन्दे थे। मजूसी मज़हब के पाबन्द थे और

---

(1)...... كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، السائب بن يزيد، الحديث:۳۷۱۳۷، ۳۷۱۳۸، ج۷، الجزء۱۳، ص۱۸۷، ۱۸۸

इन के बाप मजूसियों के इबादत गाह आतश ख़ाने के मुन्तज़िम थे। येह बहुत से राहिबों और ईसाई साधूंओं की सोह़बत उठा कर मजूसी मज़्हब से बेज़ार हो गए और अपने वत़न से मजूसी दीन छोड़ कर दीने ह़क़ की तलाश में घर से निकल पड़े और ईसाइयों की सोह़बत में रह कर ईसाई हो गए। फिर डाकूओं ने गिरिफ़्तार कर लिया और अपना ग़ुलाम बना कर बेच डाला और यके बा'द दीगरे येह दस आदमियों से ज़ियादा अश्ख़ास के ग़ुलाम रहे। जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त येह एक यहूदी के ग़ुलाम थे जब इन्हों ने इस्लाम क़बूल कर लिया तो जनाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन को ख़रीद कर आज़ाद फ़रमा दिया।

जंगे ख़न्दक़ में मदीनए मुनव्वरा शहर के गिर्द ख़न्दक़ खोदने का मश्वरा इन्हों ने ही दिया था। येह बहुत ही त़ाक़तवर थे और अन्सार व मुहाजिरीन दोनों ही इन से मह़ब्बत करते थे। चुनान्चे, अन्सारियों ने कहना शुरूअ़ किया **सलमानु मिन्ना** या'नी सलमान हम में से हैं और मुहाजिरीन ने भी येही कहा कि **सलमानु मिन्ना** या'नी सलमान हम में से हैं। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चूंकि इन पर बहुत बड़ा करमे अ़ज़ीम था, जब अन्सार व मुहाजिरीन का ना'रा सुना तो इरशाद फ़रमाया : **सलमानु मिन्ना अहलुल बैति** (या'नी सलमान हम में से हैं) येह फ़रमा कर इन को अपने अहले बैत में शामिल फ़रमा लिया। अ़क़्दे मुवाख़ात में हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन को अबुद्दरदा सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का भाई बना दिया था, अकाबिर सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه में इन का शुमार है। बहुत आ़बिदो ज़ाहिद और मुत्तक़ी व परहेज़गार थे।

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का बयान है कि येह रात में बिल्कुल ही अकेले सोह़बते नबी से सरफ़राज़ हुवा करते थे। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते थे कि सलमान

फ़ारसी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने इल्मे अव्वल भी सीखा और इल्मे आख़िर भी सीखा और वोह हम अहले बैत में से हैं। अहादीष में इन के फ़ज़ाइल व मनाक़िब बहुत मज़्कूर हैं। अबू नोऐम ने फ़रमाया कि इन की उम्र बहुत ज़ियादा हुई। बा'ज़ का क़ौल है तीन सो पचास बरस की उम्र हुई और दो सो पचास बरस की उम्र पर तमाम मुअर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है। सि. 35 हि. में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात हुई।

येह मरज़ुल मौत में थे तो हज़रते सा'द और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इन की बीमार पुर्सी के लिये गए तो हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रोने लगे। इन हज़रात ने रोने का सबब दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम लोगों को वसिय्यत की थी कि तुम लोग दुन्या में इतना ही सामान रखना जितना कि एक सुवार मुसाफ़िर अपने साथ रखता है लेकिन अफ़्सोस कि मैं इस मुक़द्दस वसिय्यत पर अ़मल नहीं कर सका क्यूंकि मेरे पास इस से कुछ ज़ाइद सामान है!

बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात का साल 10 रजब सि. 33 हि. या सि. 36 हि. तहरीर किया है। मज़ारे मुबारक मदाइन में है जो ज़ियारत गाहे ख़लाइक़ है।(1)

(ترمذی مناقب سلمان فارسی واکمال، ص۵۹۷ وحاشیہ کنز العمال، ج۱۲، ص۳۶ واسد الغابہ، ج۲، ص۳۲۸)

---

1 ......اسد الغابة، سلمان الفارسی، ج۲، ص۴۸۷۔۴۹۲ ملتقطاً
والاکمال فی اسماء الرجال، حرف السین، فصل فی الصحابة، ص۵۹۷
وکنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، سلمان الفارسی، الحدیث:۳۷۱۲۶،
ج۷، الجزء۱۳، ص۱۸۴
وتهذیب التهذیب، حرف السین، سلمان الخیر الفارسی، ج۳، ص۴۲۴ ملتقطاً

करामात

मलकुल मौत ने सलाम किया

जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो आप ने अपनी बीवी साहिबा से फ़रमाया कि तुम ने जो थोड़ा सा मुश्क रखा है उस को पानी में घोल कर मेरे सर में लगा दो क्यूंकि इस वक़्त मेरे पास कुछ ऐसी हस्तियां तशरीफ़ लाने वाली हैं जो न इन्सान हैं और न जिन्न। इन की बीवी साहिबा का बयान है कि मैं ने मुश्क को पानी में घोल कर इन के सर में लगा दिया और मैं जैसे ही मकान से बाहर निकली घर के अन्दर से आवाज़ आई : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ رَسُوْلِ اللّٰهِ मैं येह आवाज़ सुन कर मकान के अन्दर गई तो ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की रूहे मुत़ह्हरा परवाज़ कर चुकी थी और वोह इस त़रह़ लैटे हुवे थे कि गोया गहरी नींद सो रहे हैं।[1] (شواہد النبوۃ،ص۲۲۱)

ख़्वाब में अपने अन्जाम की ख़बर देना

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मुझ से ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि आइये हम और आप येह अ़हद करें कि हम दोनों में से जो भी पहले विसाल करे वोह ख़्वाब में आ कर अपना ह़ाल दूसरे को बता दे। मैं ने कहा कि क्या ऐसा हो सकता है ? तो उन्हों ने फ़रमाया कि हां मोमिन की रूह़ आज़ाद रहती है। रूए ज़मीन में जहां चाहे जा सकती है। इस के बा'द ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हो गया।

फिर मैं एक दिन क़ैलूला कर रहा था तो बिल्कुल ही अचानक ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे सामने आ गए और

1 ......شواهد النبوة، ركن سادس دربيان شواهد ودلايلى...الخ،سلمان فا رسى...الخ، ص۲۸۷

बुलन्द आवाज़ से इन्हों ने कहा : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ मैं ने जवाब में : وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ कहा और इन से दरयाफ़्त किया कि कहिये विसाल के बा'द आप पर क्या गुज़री ? और आप किस मर्तबे पर हैं ? तो इन्हों ने फ़रमाया कि मैं बहुत ही अच्छे हाल में हूं और मैं आप को येह नसीहत करता हूं कि आप हमेशा ख़ुदा पर तवक्कुल करते रहें क्यूंकि तवक्कुल बेहतरीन चीज़ है, तवक्कुल बेहतरीन चीज़ है, तवक्कुल बेहतरीन चीज़ है, इस जुम्ले को इन्हों ने तीन मरतबा इरशाद फ़रमाया।[1] (شواہد النبوۃ،ص۲۲۱)

तबसेरा

इस रिवायत से येह मा'लूम हुवा कि ख़ुदा के नेक बन्दों की रूहें अपने घर वालों या अह़बाब के मकानों पर जाया करती हैं और अपने मुतअ़ल्लिक़ीन को ज़रूरी हिदायात भी देती रहती हैं और येह रूहें कभी ख़्वाब में और कभी आ़लमे अमषाल में अपने मिषाली जिस्मों के साथ बेदारी में भी अपने मुतअ़ल्लिक़ीन से मुलाक़ात कर के इन को हिदायात देती और नसीह़त फ़रमाती रहती हैं। चुनान्चे, बहुत से बुज़ुर्गों से येह मन्क़ूल है कि उन्हों ने वफ़ात के बा'द अपने जिस्मों के साथ अपनी क़ब्रों से निकल कर अपने मुतअ़ल्लिक़ीन से मुलाक़ात की नीज़ अपने और दूसरों के ह़ालात के बारे में बात भी की।

चुनान्चे, मश्हूर रिवायत है कि ह़ज़रते ख़्वाजा अबुल ह़सन ख़िरक़ानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रोज़ाना ह़ज़रते ख़्वाजा बा यज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िरी दिया करते थे। एक दिन ह़ज़रते ख़्वाजा बा यज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه क़ब्रे अन्वर

1 ......شواهد النبوة، رکن سادس دربیان شواهد ودلایلی...الخ،سلمان فا رسی...الخ، ص ۲۸۷

से बाहर तशरीफ़ लाए और ह़ज़रते ख़्वाजा अबुल ह़सन ख़िरक़ानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को अपनी निस्बत त़रीक़त से सरफ़राज़ फ़रमा कर ख़िलाफ़त अ़त़ा फ़रमाई।

चुनान्चे, शजरए नक़्शबन्दिय्या पढ़ने वाले येह अच्छी त़रह़ जानते हैं कि ह़ज़रते ख़्वाजा अबुल ह़सन ख़िरक़ानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते ख़्वाजा बा यज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़लीफ़ा हैं ह़ालांकि तारीख़ों से षाबित है कि ह़ज़रते ख़्वाजा बा यज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वफ़ात के तक़रीबन उन्तालीस बरस बा'द ह़ज़रते ख़्वाजा अबुल ह़सन ख़िरक़ानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़िरक़ान में पैदा हुवे।

चरिन्दो परन्द ताबेए फ़रमान

इन की मश्हूर करामत येह है कि जंगल में दौड़ते हुवे हिरन को बुलाया तो वोह आप के पास फ़ौरन ही ह़ाज़िर हो गया। इसी त़रह़ एक मरतबा उड़ती हुई चिड़या को आप ने आवाज़ दी तो वोह आप की आवाज़ सुन कर ज़मीन पर उतर पड़ी। (तज़्किरए मह़मूद)

फ़िरिश्ते से गुफ़्तगू

सलम बिन अ़त़िय्या असदी का बयान है कि ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه एक मुसलमान के पास उस की इयादत के लिये तशरीफ़ ले गए, वोह जांकनी के आ़लम में था तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि ऐ फ़िरिश्ते ! तू इस के साथ नर्मी कर ! रावी कहते हैं कि उस मुसलमान ने कहा कि ऐ सलमान फ़ारसी ! (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) येह फ़िरिश्ता आप के जवाब में कहता है कि मैं तो हर मोमिन के साथ नर्मी ही इख़्तियार करता हूं।[1] (حلیۃ الاولیاء، ج۱،ص۲۰۴)

1 حلية الاولياء،ذكر الصحابة من المهاجرين،سلمان الفارسى،الحديث:٦٤٩،ج١،ص٢٦٢

﴾41﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भाई ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़रज़न्दे अरजुमन्द हैं । इन की वालिदा का नाम अस्मा बिन्ते उ़मैस (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) है । इन के वालिदैन जब हिजरत कर के ह़बशा चले गए तो येह ह़बशा ही में पैदा हुवे फिर अपने वालिदैन के साथ हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा आए। येह बहुत ही दानिशमन्द व ह़लीम, निहायत ही इ़ल्म व फ़ज़्ल वाले और बहुत ही पाकबाज़ व परहेज़गार थे और सख़ावत में तो इस क़दर बुलन्द मरतबा थे कि इन को بَحْرُالْجُوْدِ (सख़ावत का दरया) और اَسْخَی الْمُسْلِمِیْنَ (मुसलमानों में सब से ज़ियादा सख़ी) कहते थे । नव्वे बरस की उ़म्र पा कर सि. 80 हि. में मदीनए मुनव्वरा के अन्दर वफ़ात पाई ।(1) (اکمال فی اسماء الرجال، ص۶۰۴)

इन के विसाल के वक़्त अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान उमवी ख़लीफ़ा की त़रफ़ से मदीनए मुनव्वरा के ह़ाकिम ह़ज़रते अब्बान बिन उ़षमान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) थे उन को ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात की ख़बर पहुंची तो वोह आए और ख़ुद अपने हाथों से इन को ग़ुस्ल दे कर कफ़न पहनाया और इन का जनाज़ा उठा कर जन्नतुल बक़ीअ़ के क़ब्रिस्तान ले गए ।

ह़ज़रते अब्बान बिन उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के आंसू उन के रुख़्सार पर बह रहे थे और वोह ज़ोर ज़ोर से येह कह रहे थे कि ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप बहुत ही बेहतरीन आदमी थे, आप में कभी कोई शर था ही नहीं, आप शरीफ़ थे, लोगों के साथ नेक बरताव करने वाले नेकूकार थे । फिर ह़ज़रते अब्बान बिन

(1) ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص ٦٠٤
واسد الغابة، عبداللّٰه بن جعفر رضی اللّٰه عنه، ج٣، ص ١٩٩

उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। आप की उ़म्र शरीफ़ के बारे में इख़्तिलाफ़ है। बा'ज़ ने कहा कि आप की उ़म्र नव्वे बरस की थी और बा'ज़ का क़ौल है कि बानवे बरस की उ़म्र में आप ने विसाल फ़रमाया। इसी त़रह़ आप के विसाल के साल में भी इख़्तिलाफ़ है। सि. 80 हि. या सि. 82 हि. या सि. 85 हि. यूं तीन अक़्वाल हैं।(1) (اسد الغابہ، ج۳، ص۱۳۳تا۱۳۵)

करामात

सजदागाह से चश्मा उबल पड़ा

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का बयान है कि मैं ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से कहा कि मेरे बाप के ज़िम्मे तुम्हारा कुछ क़र्ज़ बाक़ी है। आप ने फ़रमाया कि मैं ने उस को मुआ़फ़ कर दिया। मैं ने उन से कहा कि मैं इस क़र्ज़ को मुआ़फ़ करना हरगिज़ हरगिज़ पसन्द नहीं करूंगा हां येह और बात है कि मेरे पास नक़्द रक़म नहीं है लेकिन मेरे पास ज़मीनें हैं। आप मेरी फ़ुलां ज़मीन अपने इस क़र्ज़ में ले लीजिये मगर उस ज़मीन में कुंवां नहीं है और आबपाशी के लिये दूसरा कोई ज़रीआ़ भी नहीं है। आप ने फ़रमाया कि बहुत अच्छा, बहर ह़ाल मैं ने आप की वोह ज़मीन ले ली। फिर आप उस ज़मीन में तशरीफ़ ले गए और वहां पहुंच कर अपने गुलाम को मुसल्ला बिछाने का हुक्म दिया और आप ने उस जगह दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी और बड़ी देर तक सजदे में पड़े रहे। फिर मुसल्ला उठा कर आप ने गुलाम से फ़रमाया कि इस जगह ज़मीन खोदो। गुलाम ने ज़मीन खोदी तो नागहां वहां से पानी का एक ऐसा ज़ख़्ख़ार चश्मा उबलने लगा जिस से न सिर्फ़ उस ज़मीन बल्कि आस पास की तमाम ज़मीनों की आबपाशी व सैराबी का इन्तिज़ाम हो गया। (اسد الغابہ، ج۳، ص۱۳۵)

---

(1)......اسد الغابة، عبداللّٰه بن جعفر رضى اللّٰه عنه، ج٣، ص٢٠١

وتهذيب التهذيب، حرف العين، عبداللّٰه بن جعفر...الخ، ج٤، ص٢٥٧

क़ब्र पर अश्आर

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्रे मुनव्वर पर मुन्दरिजए ज़ैल दो अश्आर लिखे हुवे देखे गए मगर येह नहीं मा'लूम हो सका कि येह किस के अश्आर हैं और किस ने लिखे हैं ? इस लिये हम इस को आप की एक **करामत** शुमार करते हैं। अश्आर येह हैं :

مُقِيْمٌ اِلٰى اَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ خَلْقَهٗ

لِقَاؤُكَ لَا يُرْجٰى وَاَنْتَ قَرِيْبٌ

(आप उस वक़्त तक यहां मुक़ीम रहेंगे जब कि अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ को क़ब्रों से उठाएगा। आप की मुलाक़ात की कोई उम्मीद ही नहीं की जा सकती ह़ालांकि आप बहुत ही क़रीब हैं।)

تَزِيْدُ بِلًى فِىْ كُلِّ يَوْمٍ وَّلَيْلَةٍ

وَتُنْسٰى كَمَا تَبْلٰى وَاَنْتَ حَبِيْبٌ

(आप हर दिन और हर रात पुराने होते जाएंगे और जैसे जैसे आप पुराने होते जाएंगे लोग आप को भूलते जाएंगे ह़ालांकि आप हर शख़्स के मह़बूब हैं।)[1] (اسد الغابہ،ج۳،ص۱۳۵)

तबसेरा

ह़ज़रते अब्बान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़रज़न्दे अरजुमन्द और ख़ानदाने बनू उमय्या के एक मुमताज़ फ़र्द हैं और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ानदाने बनू हाशिम के चश्मो चराग़ हैं और बा वुजूद येह कि दोनों ख़ानदानों में ख़ानदानी अ़सबिय्यत की बिना पर ख़ुसूसन ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बा'द

1 ......اسد الغابة، عبداللّٰه بن جعفر رضى اللّٰه عنه، ج٣، ص ٢٠٠-٢٠١ ملخصاً

कुशैदगी रहा करती थी मगर ह़ज़रते अब्बान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बा वुजूद येह कि उ़षमानी थे ख़ानदाने बनू उमय्या के एक नामवर फ़रज़न्द थे फिर उमवी ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान की त़रफ़ से ह़ाकिम थे लेकिन इन सब वुजूहात के बा वुजूद उन्हों ने ह़ाकिमे मदीनए मुनव्वरा होते हुवे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को गुस्ल दिया, कफ़न पहनाया और जन्नतुल बक़ीअ़ के क़ब्रिस्तान तक रोते हुवे जनाज़ा उठाया। इस से पता चलता है कि ह़ज़रते अब्बान बिन उ़षमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ही नेक नफ़्स और ख़ानदानी अ़सबिय्यत से बिल्कुल ही पाक साफ़ थे और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इस क़दर मक़्बूले ख़लाइक़ थे कि ख़ानदाने बनू हाशिम व ख़ानदाने बनू उमय्या दोनों की निगाहों में इन्तिहाई मोह़तरम व मुअ़ज़्ज़म थे। وَاللّٰہ تعَالٰی اَعلم

﴾42﴿ ह़ज़रते ज़ुऐब बिन कलीब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते ज़ुऐब बिन कलीब बिन रबीआ़ ख़ौलानी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यमन की सर ज़मीन में सब से पहले इस्लाम क़बूल किया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन का नाम अ़ब्दुल्लाह रखा।(1)

करामत

आग नहीं जला सकी

इन की इन्तिहाई ह़ैरतनाक **करामत** येह है कि अस्वद उ़नसी ने जब यमन के शहर सनआ़ में नबुव्वत का दा'वा किया और लोगों को अपना कलिमा पढ़ने पर मजबूर करने लगा तो ह़ज़रते ज़ुऐब बिन कलीब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बड़ी सख़्ती के साथ उस की झूटी नबुव्वत का इन्कार करते हुवे लोगों को उस की इत़ाअ़त से रोकना शुरूअ़ कर दिया। इस से जल भुन कर अस्वद उ़नसी ज़ालिम ने

(1) ......اسد الغابة، ذؤيب بن كليب، ج٢، ص٢١٩

आप को गिरिफ़्तार कर के जलती हुई आग के शो'लों में डाल दिया मगर आग से बदन तो क्या उन के जिस्म के कपड़े भी नहीं जले यहां तक कि पूरी आग जल कर बुझ गई और येह ज़िन्दा व सलामत रहे। जब येह ख़बर मदीनए मुनव्वरा पहुंची तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस नादिरुल वुजूद **करामत** का तज़्किरा फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि येह शख़्स मेरी उम्मत में हज़रते ख़लील (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) की तरह आग के शो'लों में जलने से महफ़ूज़ रहा और एक रिवायत में है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से येह ख़बर सुन कर हज़रते उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने ब आवाज़े बुलन्द येह कहा कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه कि हमारे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत में **अल्लाह** तआ़ला ने एक ऐसे शख़्स को भी पैदा फ़रमाया जो हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तरह आग के शो'लों में जलने से महफ़ूज़ रहा।[1]

(حجۃ اللہ،ج۲،ص۸۷۴واسدالغابہ،ج۲،ص۱۴۸)

तबसेरा

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौजूदगी में दो कज़्ज़ाबों ने नबुव्वत का दा'वा किया। एक "मुसैलिमतुल कज़्ज़ाब" दूसरा "अस्वद उ़नसी" हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौजूदगी ही में हज़रते फ़ीरोज़ दैलमी और हज़रते क़ैस बिन अ़ब्दुल यग़ूष (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) ने अस्वद उ़नसी को इस तरह क़त्ल किया कि हज़रते फ़ीरोज़ दैलमी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه उस को पछाड़ कर उस के सीने पर चढ़ गए और हज़रते क़ैस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उस का सर काट लिया

---

1 ......اسدالغابة، ذؤيب بن كليب رضی الله عنه، ج۲، ص۲۱۹

وحجة الله على العالمين، الخاتمة فی اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فی ذكر جملة جميلة...الخ، ص۶۲۲

मगर मुसैलिमतुल कज़्ज़ाब को ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ौजों ने क़त्ल किया और येह दोनों झूटे मुद्दइयाने नबुव्वत दुन्या से फ़ना हो गए।(1) (اکمال،ص۵۸۵وغیرہ)

«43» ह़ज़रते ह़म्ज़ा बिन अ़म्र अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

इन के वालिद का नाम अ़म्र था जो इब्ने उ़वैमर बिन ह़ारिष आ'रिज के नाम से मशहूर हैं। अहले ह़िज्जाज़ ने इन की ह़दीषों को बयान किया है। सि. 61 हि. में 71 या 80 बरस की उ़म्र में वफ़ात पाई।(2) (اکمال،ص۵۹۰واسدالغابہ،ج۲،ص۵۰)

करामत

उंगलियां रोशन हो गईं

इन की एक बहुत नादिरुल वुजूद **करामत** येह है कि येह लोग हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जिहाद में गए थे इत्तिफ़ाक़ से हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का साथ छूट गया और येह चन्द आदमी सख़्त अन्धेरी रात में इधर उधर बिखर गए न किसी को रास्ता मिलता था न एक दूसरे की ख़बर थी। इस परेशानी व ह़ैरानी के आ़लम में एक दम अचानक इन की पांचों उंगलियां इस क़दर रोशन हो गईं कि इन की रोशनी में सब को रास्ता नज़र आ गया और सब बिखरे हुवे लोग इकठ्ठा हो गए और हलाकत व बरबादी से बच गए।(3) (دلائل النبوۃ،ج۳،ص۲۰۶)

---

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال،حرف الھمزۃ، فصل فی الصحابۃ،ص۵۸۵
وتاریخ الخلفاء، الخلفاء الراشدون،ابو بکر الصدیق رضی اللہ عنہ، فصل فیما...الخ،ص۵۸

2 ......اسد الغابۃ، حمزۃ بن عمرو، ج۲، ص ۷۱،۷۲
والاکمال فی اسماء الرجال، حرف الحاء، فصل فی الصحابۃ، ص ۵۹۰

3 ......دلائل النبوۃ للبیھقی، باب ماجاء فی اضائۃ عصی الرجلین...الخ، ج۶، ص ۷۹

﴾44﴿ हज़रते या’ला बिन मुर्रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह क़बीला बनू षक़ीफ़ में से हैं। बहुत ही बहादुर और जांबाज़ सहाबी थे। बहुत सी इस्लामी लड़ाइयों में शरीके जिहाद रहे और मुहद्दिषीन की बहुत बड़ी जमाअ़त ने इन से ह़दीषों का दर्स लिया और कूफ़ा के मुहद्दिषीन में इन का शुमार है।(1) (اکمال،ص۶۲۳)

करामत

अ़ज़ाबे क़ब्र की आवाज़ सुन ली

इन का बयान है कि हम लोग रसूले खुदा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ साथ क़ब्रिस्तान में गुज़रे तो मैं ने एक क़ब्र में धमाका सुना। घबरा कर मैं ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने एक क़ब्र में धमाके की आवाज़ सुनी है। आप ने इरशाद फ़रमाया कि तू ने भी इस धमाके की आवाज़ सुन ली ? मैं ने अ़र्ज़ किया कि जी हां ! इरशाद फ़रमाया कि ठीक है इस क़ब्र वाले को इस की क़ब्र में अ़ज़ाब दिया जा रहा है येह इसी अ़ज़ाब की आवाज़ का धमाका था जो तू ने सुना। मैं ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस क़ब्र वाले को किस गुनाह के सबब अ़ज़ाब दिया जा रहा है ? आप ने फ़रमाया कि येह शख़्स चुग़ल ख़ोरी किया करता था और अपने बदन और कपड़ों को पेशाब से नहीं बचाता था।(2) (حجۃ اللہ،ج۲،ص۸۷۴بحوالہ بیہقی)

﴾45﴿ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़रज़न्द हैं। हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने इन के लिये

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال،حرف الیاء، فصل فی الصحابۃ،ص ۶۲۳

2 ......حجۃ اللّٰہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ، المطلب الثالث فی ذکرجملۃ جمیلۃ...الخ،ص ۶۲۲

हिक्मत और फ़िक़ह व तफ़्सीर के उ़लूम के ह़ासिल होने के लिये दुआ़ मांगी। इन का इ़ल्म बहुत ही वसीअ़ था इसी लिये कुछ लोग इन को बह़्र (दरया) कहते थे और ह़बरुल उम्माह (उम्मत का बहुत बड़ा आ़लिम) येह तो आप का बहुत ही मश्हूर लक़ब है। येह बहुत ही खू़ब सूरत और गोरे रंग के निहायत ही ह़सीनो ज़मील शख़्स थे। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को कम उ़म्री के बा वुजूद उमूरे ख़िलाफ़त के अहम तरीन मश्वरों में शरीक करते रहे।

लैष बिन अबी सुलैम का बयान है कि मैं ने ताऊस मुह़द्दिष से कहा कि तुम इस नौ उ़म्र शख़्स (अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की दर्सगाह से चिमटे हुवे हो और अकाबिर सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की दर्सगाहों में नहीं जा रहे हो।

ताऊस मुह़द्दिष ने फ़रमाया कि मैं ने येह देखा है कि सत्तर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के माबैन जब किसी मस्अले में इख़्तिलाफ़ होता था तो वोह सब ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के क़ौल पर अ़मल करते थे इस लिये मुझे इन के इ़ल्म की वुस्अ़त पर ए'तिमाद है इस लिये मैं इन की दर्सगाह छोड़ कर कहीं नहीं जा सकता। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर ख़ौफ़े खु़दा का बहुत ज़ियादा ग़लबा रहता। आप इस क़दर ज़ियादा रोते कि आप के दोनों रुख़्सारों पर आंसूओं की धार बहने का निशान पड़ गया था। सि. 68 हि. में ब मुक़ामे त़ाइफ़ 71 बरस की उ़म्र में विसाल हुवा।[(1)]

(اکمال، ص ۶۰۴ واسد الغابہ، ج ۳، ص ۱۹۲)

करामात

इन की करामतों में से तीन करामतें बहुत ज़ियादा मश्हूर हैं जो दर्जे ज़ैल हैं :

1 ......اسد الغابۃ، عبداللّٰہ بن عباس، ج ۳، ص ۲۹۵ ـ ۲۹۹ ملتقطاً

कफ़न में परन्द

मैमून बिन मेहरान ताबेई मुहद्दिष का बयान है कि मैं ताइफ़ में हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के जनाज़े में हाज़िर था। जब लोग नमाज़े जनाज़ा के लिये खड़े हुवे तो बिल्कुल ही अचानक निहायत तेज़ी के साथ एक सफ़ेद परन्द आया और इन के कफ़न के अन्दर दाख़िल हो गया। नमाज़ के बा'द हम लोगों ने टटोल टटोल कर बहुत तलाश किया मगर उस परन्दे का कुछ भी पता नहीं चला कि वोह कहां गया और क्या हुवा ?(1) (مستطرف،ج۲،ص۲۸۱)

ग़ैबी आवाज़

जब लोग हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को दफ़्न कर चुके और क़ब्र पर मिट्टी बराबर की जा चुकी तो तमाम हाज़िरीन ने एक ग़ैबी आवाज़ सुनी कि कोई शख़्स बुलन्द आवाज़ से येह तिलावत कर रहा है

يٰۤاَیَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَىٕنَّةُ ٥ ارْجِعِیْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِیَةً مَّرْضِیَّةً ٥ (2)

ऐ इत्मीनान पाने वाली जान ! तू अपने रब के दरबार में इस तरह हाज़िर हो जा कि तू ख़ुदा से ख़ुश है और ख़ुदा तुझ से ख़ुश है।(3)

(مستطرف،ج۲،ص۲۸۱وکنز العمال،ج۱۶وحاشیہ کنز العمال،ص۷۳)

---

1 ......المستطرف فی کل فن مستظرف، البا ب الحادی و الثمانون فی ذکر الموت...الخ، ج۲، ص ٤٧٦

2 ......پ ۳۰، الفجر:۲۷۔۲۸

3 ......و کنزالعمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، عبداللّٰه بن عباس، الحدیث:۳۷۱۸٦، ج۷، الجزء۱۳، ص۱۹۷ والمستطرف فی کل فن مستظرف ، الباب الحادی و الثمانون فی ذکرالموت ...الخ، ج۲، ص٤٧٦

हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلام का दीदार

येह भी हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की एक करामत है कि इन्हों ने दो मरतबा हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلام को अपनी आंखों से देखा।[1] (اکمال،ص۶۰۴)

﴾46﴿ हज़रते षाबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह मदीनए मुनव्वरा के अन्सारी हैं और ख़ानदाने बनी ख़ज़रज से इन का नसबी तअ़ल्लुक़ है। अकाबिर सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की फ़ेहरिस्त में इन का नामे नामी बहुत ही मश्हूर है। येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़तीब थे और इन को हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बेहतरीन ज़िन्दगी फिर शहादत फिर जन्नत की बिशारत दी थी। सि. 12 हि. में जंगे यमामा के दिन मुसैलिमतुल कज़्ज़ाब की फ़ौजों से जंग करते हुवे शहादत से सर बुलन्द हो गए।[2]

(اکمال،ص۵۸۸وغیرہ)

करामत

मौत के बा'द वसिय्यत

इन की येह एक करामत ऐसी बे मिष्ल करामत है कि इस की दूसरी कोई मिषाल नहीं मिल सकती। शहीद हो जाने के बा'द आप ने एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ख़्वाब में येह फ़रमाया कि ऐ शख़्स ! तुम अमीरे लश्कर हज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मेरा येह पैग़ाम कह दो कि मैं जिस वक़्त शहीद हुवा मेरे जिस्म पर लोहे की एक ज़िरह थी जिस को एक मुसलमान सिपाही ने मेरे बदन से उतार लिया और अपने घोड़े बांधने की जगह पर उस को रख कर उस पर एक हांडी औंधी कर के उस को छुपा रखा है लिहाज़ा अमीरे लश्कर मेरी इस ज़िरह को बरआमद कर के

---

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص ٦٠٤

2 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الثاء، فصل فی الصحابة، ص ٥٨٨
واسد الغابة، ثابت بن قیس، ج ١، ص ٣٤٠

अपने क़ब्ज़े में ले लें और तुम मदीनए मुनव्वरा पहुंच कर अमीरुल मोअमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मेरा पैग़ाम कह देना कि जो मुझ पर क़र्ज़ है वोह उस को अदा कर दें और मेरा फ़ुलां ग़ुलाम आज़ाद है । ख़्वाब देखने वाले सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना ख़्वाब हज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बयान किया तो उन्हों ने फ़ौरन ही तलाशी ली और वाक़ेई ठीक उसी जगह से ज़िरह बर आमद हुई जिस जगह का ख़्वाब में आप ने निशान बताया था और जब अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह ख़्वाब सुनाया गया तो आप ने हज़रते षाबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वसिय्यत को नाफ़िज़ करते हुवे उन का क़र्ज़ अदा फ़रमा दिया और उन के ग़ुलाम को आज़ाद क़रार दे दिया ।

मश्हूर सहाबी हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे कि येह हज़रते षाबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वोह ख़ुसूसिय्यत है जो किसी को भी नसीब नहीं हुई क्यूंकि ऐसा कोई शख़्स भी मेरे इल्म में नहीं है कि उस के मर जाने के बा'द ख़्वाब में की हुई उस की वसिय्यत को नाफ़िज़ किया गया हो ।[1]

(تفسیر صاوی،ج۲،ص۱۰۸)

﴿47﴾ हज़रते अ़ला बिन अल हज़्रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

इन का अस्ली नाम अ़ब्दुल्लाह और इन का अस्ली वत़न "हज़्रमौत" है। येह इब्तिदाए इस्लाम ही में मुलमान हो गए थे। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को बहरैन का हाकिम बना दिया । सि. 14 हि. में ब हालते जिहाद आप की वफ़ात हुई ।[2] (اکمال،ص۶۰۷)

1 ......حاشیة الصاوی علی تفسیر الجلالین،سورة الحجرات،تحت الآیة:۳،ج۵،ص۱۹۸۸
واسد الغابة، ثابت بن قیس،ج۱،ص ۳٤۰

2 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة،ص٦۰۷
والطبقات الکبری لابن سعد، العلاء بن الحضرمی، ج٤، ص۲٦٦، ۲٦۸

करामात

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जब अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बह्रैन के मुर्तदीन से जिहाद करने के लिये हज़रते अ़ला बिन अल ह़ज़्रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को भेजा तो हम लोगों ने उन की तीन करामतें ऐसी देखी हैं कि मैं येह नही कह सकता कि इन तीन में से कौन सी ज़ियादा तअ़ज्जुब ख़ेज़ और ह़ैरत अंगेज़ है।

पियादा और सुवार दरया के पार

"दारैन" पर ह़म्ला करने के लिये कश्तियों और जहाज़ों की ज़रूरत थी मगर कश्तियों के इन्तिज़ाम में बहुत लम्बी मुद्दत दरकार थी इस लिये हज़रते अ़ला बिन अल ह़ज़्रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने लश्कर को ललकार कर पुकारा कि ऐ मुजाहिदीने इस्लाम ! तुम लोग खुश्क मैदानों में तो ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की इमदाद व नुस्रत का नज़ारा बार बार देख चुके हो। अब अगर समन्दर में भी उस की ताईदे ग़ैबी का जल्वा देखना हो तो तुम सब लोग समन्दर में दाख़िल हो जाओ। आप ने येह कहा और मअ़ अपने लश्कर के येह दुआ़ पढ़ते हुवे समन्दर में दाख़िल हो गए।

يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا كَرِيْمُ يَاحَلِيْمُ يَا اَحَدُ يَا صَمَدُ يَاحَيُّ يَامُحْيَ الْمَوْتٰى يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

कोई ऊंट पर सुवार था, कोई घोड़े पर, कोई गधे पर सुवार था, कोई खच्चर पर और बहुत से पैदल चल रहे थे मगर समन्दर में क़दम रखते ही समन्दर का पानी खुश्क हो कर इस क़दर रह गया कि जानवरों के सिर्फ़ पाउं तर हुवे थे। पूरा इस्लामी लश्कर इस त़रह़ आराम व राह़त के साथ समन्दर में चल रहा था गोया भीगे हुवे रैत पर चल रहा है जिस पर चलना निहायत ही सह्ल और आसान होता

है। चुनान्चे इस को देख कर एक मुसलमान मुजाहिद ने जिन का नाम अ़फ़ीफ़ बिन अल मुन्जर था बरजस्ता अपने इन दो शे'रों में इस की ऐसी मन्ज़र कशी की है जो बिला शुबा वज्द आफ़रीं है

اَلَمْ تَـرَ اَنَّ اللّٰــهَ ذَلَّلَ بَحْرَهٗ

وَاَنْزَلَ بِالْكُفَّارِ اِحْدٰى الْجَلَائِلِ

(क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह तआला ने इन मुजाहिदों के लिये अपने समन्दर को फ़रमां बरदार बना दिया और कुफ़्फ़ार पर एक बहुत बड़ी मुसीबत नाज़िल फ़रमा दी।)

دَعَـوْنَـا اِلٰى شَقِّ الْبِحَارِ فَجَاءَ نَا

بِاَعْجَبَ مِنْ فَلْقِ الْبِحَارِ الْاَوَائِلِ

(हम लोगों ने समन्दर के फट जाने की दुआ़ मांगी तो ख़ुदा ने इस से कहीं ज़ियादा अ़जीब वाक़िआ़ हमारे लिये पेश फ़रमा दिया जो दरया फाड़ने के सिलसिले में पहले लोगों के लिये हुवा था।)[1]

(البدایہ والنہایہ، ج۷، ص۳۲۹ ودلائل النبوۃ، ج۳، ص۲۰۸)

चमक्ती रैत से पानी नुमूदार हो गया

दूसरी करामत येह है कि हम लोग चटयल मैदान में जहां पानी बिल्कुल ही नायाब था प्यास की शिद्दत से बे ताब हो गए और बहुत से मुजाहिदीन को तो अपनी हलाकत का यक़ीन भी हो गया। अपने लश्कर का येह ह़ाल देख ह़ज़रते अ़ला बिन अल ह़ज़्रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने नमाज़ पढ़ कर दुआ़ मांगी तो एक दम नागहां लोगों को बिल्कुल ही क़रीब सूखी रैत पर पानी चमकता हुवा नज़र आ गया।

1 ......البداية والنهاية، كتاب تاريخ الاسلام......الخ، ذكر ردة اهل البحرين...الخ، ج٥، ص٣٥
ودلائل النبوة لابى نعيم، ذكر خبر، الفصل التاسع والعشرون...الخ، ج٢، ص١٣٠
والكامل فى التاريخ، سنة احدى عشرة، ذكر ردة اهل البحرين، ج٢، ص٢٢٧

और एक रिवायत में येह है कि अचानक एक बदली नुमूदार हुई और इस क़दर पानी बरसा कि जल थल हो गया और सारा लश्कर जानवरों समेत पानी से सैराब हो गया और लश्कर वालों ने अपने तमाम बरतनों को भी पानी से भर लिया।(1)

(طبری،ج۳،ص۲۵۷ودلائل النبوۃ،ج۳،ص۲۰۸)

लाश क़ब्र से ग़ाइब

तीसरी करामत येह है कि जब ह़ज़रते अ़ला बिन अल ह़ज़्रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हुवा तो हम लोगों ने इन को रैतिली ज़मीन में दफ़्न कर दिया। फिर हम लोगों को ख़याल आया कि कोई जंगली जानवर आसानी के साथ इन की लाश को निकाल कर खा डालेगा लिहाज़ा इन को किसी आबादी के क़रीब सख़्त ज़मीन में दफ़्न करना चाहिये। चुनान्चे, हम लोगों ने फ़ौरन ही पलट कर इन की क़ब्र को खोदा तो इन की मुक़द्दस लाश क़ब्र से ग़ाइब हो चुकी थी और तलाश के बा वुजूद हम लोगों को नहीं मिली।(2)

(دلائل النبوۃ،ج۳،ص۲۰۸)

﴾48﴿ ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप बहुत ही मश्हूर सहाबी हैं। आप के वालिद का नाम रबाह़ है। येह ह़बशा के रहने वाले थे और मक्कए मुकर्रमा में एक काफ़िर उमय्या बिन ख़लफ़ के ग़ुलाम थे। इसी ह़ाल में मुसलमान हो गए। उमय्या बिन ख़लफ़ ने इन को बहुत सताया और इन पर बड़े बड़े ज़ुल्मो सितम..... के पहाड़ तोड़े मगर येह पहाड़ की तरह़

1......جامع کرامات الاولیاء، اسماء الصحابة رضی اللّٰہ تعالٰی عنہم، العلاء بن الحضرمی، ج ۱، ص ۱۵۲

ودلائل النبوۃ لابی نعیم، ذکر خبر، الفصل التاسع والعشرون...الخ، ج۲، ص ۱۳۰

2...मुमकिन है कि वोह जन्नतुल बक़ीअ़ में फ़िरिश्तों ने मुन्तक़िल कर दी हो (ताबिशे मौरिस) 12 मिन्ह

دلائل النبوۃ لابی نعیم، ذکر خبر، الفصل التاسع والعشرون...الخ، ج۲، ص ۱۳۰

इस्लाम पर डटे रहे। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक कषीर रक़म और एक गुलाम दे कर इन को उमय्या बिन ख़लफ़ से ख़रीद लिया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ाजोई के लिये इन को आज़ाद कर दिया। इसी लिये हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे कि अबू बक्र हमारे सरदार हैं और इन्हों ने हमारे सरदार (बिलाल) को आज़ाद किया।

खुदा की शान कि जंगे बद्र में उमय्या बिन ख़लफ़ को हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही ने चन्द अन्सारियों की मदद से क़त्ल किया। तमाम इस्लामी जिहादों में मुजाहिदाना शान के साथ जिहाद फ़रमाते रहे और मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुअज़्ज़िन भी रहे। विसाले नबवी के बा'द मदीनए तय्यिबा में रहना और हुज़ूरे अक़दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जगह को ख़ाली देखना इन के लिये नाक़ाबिले बरदाश्त हो गया। फ़िराक़े रसूल में हर वक़्त रोते रहते। इस लिये मदीनए मुनव्वरा को ख़ैरबाद कह दिया और मुल्के शाम में सुकूनत इख़्तियार कर ली। फिर सि. 20 हि. में 63 बरस की उम्र पा कर शहर दिमश्क़ में विसाल फ़रमाया और बाबुस्सग़ीर में मदफ़ून हुवे और बा'ज़ मुअर्रिख़ीन का क़ौल है कि आप का विसाल शहर ह़ल्ब में हुवा और बाबुल अरबईन में आप की क़ब्रे मुबारक बनाई गई।[1] (اکمال فی اسماء الرجال،ص۵۰۷)واللہ تعالٰی اعلم

करामत

ख़्वाब में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार

एक मरतबा ख़्वाब में सरवरे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से सरफ़राज़ हुवे तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الباء، فصل فی الصحابة،ص ۵۸۷
واسد الغابة، بلال بن رباح رضی اللّٰہ عنہ، ج ۱،ص ۳۰۵۔۳۰۹ ملتقطاً

ने प्यार भरे लहजे में इरशाद फ़रमाया : ऐ बिलाल ! येह क्या अन्दाज़ है कि तुम हमारे पास कभी नहीं आते ? ख़्वाब से बेदार हुवे तो इस क़दर बे क़रार हो गए कि फ़ौरन ही ऊंट पर सुवार हो कर आज़िमे सफ़र हो गए। जब मदीनए मुनव्वरा में रौज़ए अन्वर के पास पहुंचे तो शिद्दते ग़म से ग़श खा कर गिर पड़े और ज़मीन पर लौटने लगे जब कुछ सुकून हुवा तो हज़रते इमामे ह़सन व इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अज़ान की फ़रमाइश की । प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लाडलों की फ़रमाइश पर इन्कार की गुन्जाइश ही नहीं थी। आप ने मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में अज़ान दी और ज़मानए नबुव्वत की बिलाली अज़ान जब अहले मदीना के कान में पड़ी तो एक कोहराम मच गया यहां तक कि पर्दा नशीन औरतें जोशे बे क़रारी में घरों से बाहर निकलीं और हर छोटा बड़ा दौरे नबुव्वत की याद से बे क़रार हो कर ज़ार ज़ार रोने लगा। चन्द दिनों मदीनए मुनव्वरा में रह कर फिर आप मुल्के शाम चले गए।(1) (اسد الغابہ،ج۱،ص۲۰۶تا۲۰۹)

﴾49﴿ हज़रते ह़न्ज़ला बिन हुज़ैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबी हैं । एक मरतबा अपने बाप के साथ दरबारे नबुव्वत में हाज़िर हुवे और इन के बाप ने इन के लिये दुआ की दरख़्वास्त की तो हुज़ूर रह़मते आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अज़ राहे करम अपना दस्ते अक़्दस इन के सर पर फेरा जिस की बदौलत इन को मुन्दरिजए ज़ैल करामत मिली।(2)

(اسد الغابہ،ج۲،ص۶۵)

करामत

सर लगते ही मरज़ ग़ाइब

जिस क़िस्म का भी कोई मरीज़ इन्सान या जानवर जब इन के पास लाया जाता तो येह अपना सर उस मरीज़ के बदन पर लगा

❶......اسد الغابة، بلال بن رباح رضی اللّٰه عنه، ج۱، ص۳۰۷

❷......اسد الغابة، حنظلة بن حذیم، ج۲، ص۸۲

देते थे तो फ़िलफ़ौर शिफ़ा हासिल हो जाती थी और एक रिवायत में येह है कि येह अपने हाथ में अपना लुआ़बे दहन लगा कर अपने सर पर रखते और येह दुआ़ पढ़ते :

بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰی اَثَرِ یَدِ رَسُوْلِ اللّٰهِ

फिर अपना हाथ मरीज़ के वरम पर फेर देते तो फ़ौरन मरीज़ शिफ़ायाब हो जाता।[1] (کنز العمال،ج۱۵،ص۳۲۷مطبوعہ حیدر آباد)

﴾50﴿ ह़ज़रते अबू ज़र गि़फ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

इन का इस्मे गिरामी जुन्दब बिन जुनादा है मगर अपनी कुन्यत के साथ ज़ियादा मश्हूर हैं। बहुत ही बुलन्द पाया सहाबी हैं और येह अपने ज़ोहद व क़नाअ़त और तक़्वा व इबादत के ए'तिबार से तमाम सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ में एक खु़सूसी इम्तियाज़ रखते हैं। इब्तिदाए इस्लाम ही में मुसलमान हो गए थे यहां तक कि बा'ज़ मुअर्रिख़ीन का क़ौल है कि इस्लाम लाने में इन का पांचवां नम्बर है। इन्हों ने मक्कए मुकर्रमा में इस्लाम क़बूल किया फिर अपने वत़न क़बीलए बनी गि़फ़ार में चले गए फिर जंगे ख़न्दक़ के बा'द हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा पहुंचे और हु़ज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द कुछ दिनों के लिये मुल्के शाम चले गए फिर वहां से लौट कर मदीनए मुनव्वरा आए और मदीनए मुनव्वरा से चन्द मील दूर मक़ामे "रब्ज़ा" में सुकूनत इख़्तियार कर ली।(اکمال،ص۵۹۴)

बहुत से सहाबा और ताबेईन इल्मे ह़दीष में आप के शागिर्द हैं। ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त में ब मक़ामे रब्ज़ा सि. 32 हि. में आप ने वफ़ात पाई।[2] (اکمال،ص۵۹۴)

---

1 ......كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، حنظلة بن حذيم...الخ، الحديث:٣٦٩٩٤، ج٧، الجزء ١٣، ص١٥٥

2 ......الاكمال فى اسماء الرجال، حرف الذال، فصل فى الصحابة، ص٥٩٤ واسد الغابة، جندب بن جنادة، ج١، ص٤٤٠، ٤٤١ ملتقطاً

इन के बारे में हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी है कि जिस शख़्स को हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ियारत का शौक़ हो वोह अबू ज़र का दीदार कर ले।[1] (کنز العمال، ج۱۲،ص۲۵۵)

करामात

जंगल में कफ़न

रिवायत में है कि हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो इन की बीवी साहिबा रोने लगीं। आप ने पूछा : बीवी तुम रोती क्यूं हो ? बीवी ने जवाब दिया : मैं क्यूं न रोऊं जंगल में आप विसाल फ़रमा रहे हैं और हमारे पास न कफ़न है न कोई आदमी, मुझे येह फ़िक्र है कि इस जंगल में आप की तजहीज़ व तक्फ़ीन का मैं कहां से और कैसे इन्तिज़ाम करूंगी ? आप ने फ़रमाया : तुम मत रोओ और न कोई फ़िक्र करो। रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि मेरे सहाबा में से एक शख़्स जंगल में विसाल फ़रमाएगा और उस के जनाज़े में मुसलमानों की एक जमाअ़त हाज़िर हो जाएगी। मुझे यक़ीन है कि वोह जंगल में विसाल करने वाला सहाबी मैं ही हूं इस लिये तुम फ़िक्र न करो और इन्तिज़ार करो मुमकिन है कोई जमाअ़त आ रही हो। येह कह कर हज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه विसाल फ़रमा गए।

उन की बीवी का बयान है कि विसाल के थोड़ी ही देर के बा'द बिल्कुल अचानक चन्द सुवार आ गए और एक नौजवान ने अपनी गठड़ी में से एक नया कफ़न निकाला और आप उसी कफ़न में मदफ़ून हुवे और सुवारों की इस जमाअ़त ने निहायत ही एहतिमाम

1 ......كنز العمال، كتاب الفضائل، ذكر الصحابة وفضلهم ...الخ، الحديث:٣٣٢٢٧، ج٦، الجزء١١، ص٣٠٧

के साथ तजहीज़ व तक्फ़ीन और नमाज़े जनाज़ा व दफ़्न का इन्तिज़ाम किया ।[1] (الکلام المبین وکنز العمال، ج۱۵،ص۲۸۴،مطبوعہ حیدر آباد)

फ़क़त ज़म ज़म पर ज़िन्दगी

बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि जब ह़ज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमान हुवे तो रोज़ाना मस्जिदे ह़राम में जा कर अपने इस्लाम का ए'लान करते रहते और कुफ़्फ़ारे मक्का इन को इस क़दर मारते थे कि येह मरने के क़रीब हो जाते थे और ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन को लोगों से येह कह कर बचाया करते थे कि येह क़बीलए गिफ़ार के आदमी हैं जो तुम क़ुरैशियों की शामी तिजारत की शाहराह पर वाक़ेअ़ है । लिहाज़ा इन को ईज़ा मत दो वरना तुम्हारी शामी तिजारत का रास्ता बन्द हो जाएगा । ह़ज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पन्दरह दिन और पन्दरह रात इसी ह़रमे का'बा में रोज़ाना अपने इस्लाम का ए'लान करते और कुफ़्फ़ार से मार खाते रहे और इन पन्दरह दिनों और रातों में ज़मज़म शरीफ़ के पानी के सिवा इन को गेहूं या चावल का एक दाना या ज़र्रा बराबर कोई दूसरी गिज़ा मयस्सर नहीं हुई मगर येह सिर्फ़ ज़मज़म शरीफ़ पी कर ज़िन्दा रहे और पहले से ज़ियादा तन्दुरुस्त और फ़रबा भी हो गए ।[2]

(بخاری، ج۱،ص۴۹۹، باب قصہ زمزم وحاشیہ بخاری،ص۴۹۹ وفتح الباری)

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة،جندب بن جنادة،الحديث:٣٦٨٨٩، ج٧،الجزء ١٣،ص١٣٦ ملخصاً
واسد الغابة، جندب بن جنادة،ج١، ص ٤٤١ـ٤٤٢ ملخصاً

2 ......صحيح البخارى، كتاب المناقب،باب قصة زمزم،الحديث:٣٥٢٢،ج٢،ص٤٨٠
وفتح البارى شرح صحيح البخارى، كتاب المناقب،باب قصة زمزم،تحت الحديث: ٣٥٢٢، ج٦،ص٤٥٩

﴾51﴿ हज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अ़ली इब्ने अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़रज़न्दे अक्बर हैं। इन की कुन्यत अबू मुह़म्मद और लक़ब "सिब्त़े पयम्बर" व "रैह़ानतुर्रसूल" है। 15 रमज़ान सि. 3 हि. में आप की विलादत हुई। आप जवानाने अहले जन्नत के सरदार हैं और आप के फ़ज़ाइल व मनाक़िब में बहुत ज़ियादा ह़दीषें वारिद हुई हैं। आप ने तीन मरतबा अपना आधा माल ख़ुदा तआ़ला की राह में ख़ैरात कर दिया।

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बा'द कूफ़ा में चालीस हज़ार मुसलमानों ने आप के दस्ते मुबारक पर मौत की बैअ़त कर के आप को अमीरुल मोअमिनीन मुन्तख़ब किया लेकिन आप ने तक़रीबन छे माह के बा'द जुमादिल उला सि. 41 हि. में ह़ज़रते अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर बैअ़त फ़रमा कर ख़िलाफ़त उन के सिपुर्द फ़रमा दी और ख़ुद इबादतो रियाज़त में मश़्गूल हो गए।

इस त़रह़ हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो ग़ैब की ख़बर दी थी वोह ज़ाहिर हो गई कि मेरा येह बेटा "सय्यिद" है और इस की वजह से **अल्लाह** तआ़ला मुसलमानों की दो बड़ी जमाअ़तों में सुल्ह़ करा देगा। चुनान्चे, ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अगर ख़िलाफ़त ह़ज़रते अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सिपुर्द न फ़रमा देते तो ज़ाहिर है कि ह़ज़रते इमामे ह़सन और ह़ज़रते अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दोनों फ़ौजों के दरमियान बड़ी ही ख़ूं रेज़ जंग होती जिस से हज़ारों औ़रतें बेवा और लाखों बच्चे यतीम हो जाते और सल्त़नते इस्लाम का शीराज़ा बिखर जाता मगर ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़ैर पसन्द त़बीअ़त और नेक मिज़ाजी की बदौलत मुसलमानों में ख़ूं रेज़ी की नौबत नहीं आई। 5 रबीउल अव्वल

सि. 49 हि. में आप ब मक़ामे मदीनए मुनव्वरा ज़हर ख़ूरानी के बाइष शहादत से सरफ़राज़ हुवे।(1) (اکمال،ص۵۹۰واسدالغابہ،ج۲،ص۹۰تا۹۲)

करामात

ख़ुश्क दरख़्त पर ताज़ा खजूरें

आप की बहुत सी करामतों में से येह एक करामत बहुत ज़ियादा मश्हूर है कि एक सफ़र में आप का गुज़र खजूरों के एक ऐसे बाग़ में हुवा जिस के तमाम दरख़्त ख़ुश्क हो गए थे। ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के एक फ़रज़न्द भी इस सफ़र में आप के हम रिकाब थे, आप ने उसी बाग़ में पड़ाव किया और ख़ुद्दाम ने आप का बिस्तर एक सूखे दरख़्त की जड़ में बिछा दिया और ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के फ़रज़न्द ने अ़र्ज़ किया कि ऐ इब्ने रसूलुल्लाह ! काश ! इस सूखे दरख़्त पर ताज़ा खजूरें होतीं तो हम लोग सैर हो कर खा लेते। येह सुन ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने चुपके से कोई दुआ़ पढ़ी और बिल्कुल ही अचानक मिनटों में वोह सूखा दरख़्त बिल्कुल सर सब्ज़ो शादाब हो गया और उस में ताज़ा पकी हुई ख़जूरें लग गईं। येह मन्ज़र देख कर एक शुतरबान कहने लगा कि ख़ुदा की क़सम ! येह तो जादू का करिश्मा है। येह सुन कर ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के फ़रज़न्द ने उस को बहुत ज़ोर से डांटा और फ़रमाया कि तौबा कर, येह जादू नहीं है बल्कि येह शहज़ादए रसूल की दुआ़ए मक़्बूल की करामत है। फिर लोगों ने ख़जूरों को दरख़्त से तोड़ा और सब हमराहियों ने ख़ूब शिकम सैर हो कर खाया।(2) (روضۃ الشہداء،باب۶،ص۱۰۹)

---

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الحاء، فصل فی الصحابۃ، ص ۵۹۰
واسد الغابۃ، الحسن بن علی، ج۲، ص۱۵ـ۲۲ ملتقطاً
وتاریخ الخلفاء، الحسن بن علی بن ابی طالب رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، ص۱۵۲

2 ......روضۃ الشھداء (مترجم)، باب ششم، ج۱، ص۴۰۴

फ़रज़न्द पैदा होने की बिशारत

आप पैदल ह़ज के लिये जा रहे थे, दरमियाने राह में एक मन्ज़िल पर क़ियाम फ़रमाया वहां आप का एक अ़क़ीदत मन्द हाज़िरे ख़िदमत हुवा और अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर मैं आप का ग़ुलाम हूं। मेरी बीवी दर्दे ज़ेह में मुब्तला है आप दुआ़ फ़रमाएं कि तन्दुरुस्त लड़का पैदा हो। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि तुम अपने घर जाओ तुम्हें जैसे फ़रजन्द की तमन्ना है वैसा ही फ़रज़न्द तुम को **अल्लाह** तआ़ला ने अ़ता फ़रमा दिया है और तुम्हारा येह लड़का हमारा अ़क़ीदत मन्द और जांनिषार होगा। वोह शख़्स जब अपने मकान पर पहुंचा तो येह देख कर ख़ुशी से बाग़ बाग़ हो गया कि वाक़ेई ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जैसे फ़रज़न्द की बिशारत दी थी वैसा ही लड़का उस के हां पैदा हुवा।(1) (شواہد النبوۃ، ص ۱۷۲)

तबसेरा

ख़ुश्क दरख़्त पर ताज़ा खजूरों का दफ़्अ़तन लग जाना और अ़क़ीदत मन्द के घर में लड़की पैदा हुई है या लड़का ? और फिर इस बात को जान लेना कि येह लड़का बड़ा हो कर हमारा अ़क़ीदत मन्द व जांनिषार होगा। ग़ौर फ़रमाइये कि येह कितनी अ़ज़ीम और किस क़दर शानदार करामतें हैं। سُبْحٰنَ اللّٰہ क्यूं न हो कि आप इब्ने रसूल और नूरे दीदए ह़ैदर व बतूल हैं और ख़ुदावन्द की बारगाह में बे इन्तिहा मक़्बूल हैं। (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

﴾52﴿ ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

सय्यिदुश्शुहदा ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादते बा सआ़दत 5 शा'बान सि. 4 हि. को मदीनए मुनव्वरा में हुई। आप की कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह। और नामे नामी "हुसैन" और लक़ब

1 ......شواهد النبوة، ركن سادس...الخ، ذكر امير المؤمنين حسن رضى الله عنه، ص ۲۲۷

"सिबतुर्रसूल" व "रैहानतुर्रसूल" है। 10 मुहर्रम सि. 61 हि. जुमुआ के दिन करबला के मैदान में यज़ीदी सितमगारों ने इन्तिहाई बेदर्दी के साथ आप को शहीद कर दिया।[1] (اکمال،ص۵۹۰)

करामात

कुंवें से पानी उबल पड़ा

अबू औन कहते हैं कि हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा के रास्ते में इब्ने मुतीअ़ के पास से गुज़र हुवा। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि ऐ इब्ने रसूल ! मेरे इस कुंवें में पानी बहुत कम है, इस में डोल भरता नहीं, मेरी सारी तदबीरें बेकार हो चुकी हैं। काश ! आप हमारे लिये बरकत की दुआ फ़रमाएं। हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस कुंवें का पानी मंगाया और आप ने डोल से मुंह लगा कर पानी नौश फ़रमाया। फिर उस डोल में कुल्ली फ़रमा दी और हुक्म दिया कि सारा पानी कुंवें में उंडेल दें जब डोल का पानी कुंवें में डाला तो नीचे से पानी उबल पड़ा। कुंवें का पानी बहुत ज़ियादा बढ़ गया और पानी पहले से बहुत ज़ियादा शीरीं और लज़ीज़ भी हो गया।[2] (ابن سعد ج۵ ص۱۴۴)

बे अदबी करने वाला आग में

मैदाने करबला में एक बे बाक और बे अदब मालिक बिन उ़र्वा ने जब आप के ख़ैमे के गिर्द ख़न्दक़ में आग जलती हुई देखी तो उस बद नसीब ने येह कहा कि ऐ हुसैन ! तुम ने आख़िरत की आग से पहले ही यहां दुन्या में आग लगा ली ? हज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि ऐ ज़ालिम ! क्या तेरा गुमान है कि मैं दोज़ख़ में

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الخاء، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۰

2 ......الطبقات الکبری لابن سعد، الطبقة الاولی من اھل المدینة من التابعین، ومن عبداللّٰہ بن مطیع، ج۵، ص ۱۱۰

जाऊंगा ? फिर ह़ज़रते इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने मजरूह़ दिल से येह दुआ़ मांगी कि "ख़ुदावन्दा ! तू इस बद नसीब को नारे जहन्नम से पहले दुन्या में भी आग के अ़ज़ाब में डाल दे ।" इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुआ़ अभी ख़त्म भी नहीं हुई थी कि फ़ौरन ही मालिक बिन उ़र्वा का घोड़ा फिसल गया और येह शख़्स इस त़रह़ घोड़े से गिर पड़ा कि घोड़े की रिकाब में इस का पाउं उलझ गया और घोड़ा इस को घसीटते हुवे ख़न्दक़ की त़रफ़ ले भागा और येह शख़्स ख़ैमे के गिर्द ख़न्दक़ की आग में गिर कर राख का ढेर हो गया ।(1)

(روضۃ الشہداء،ص۱۲۹)

नेज़े पर सरे अक़्दस की तिलावत

ह़ज़रते ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि जब यज़ीदियों ने ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सरे मुबारक को नेज़े पर चढ़ा कर कूफ़ा की गलियों में गश्त किया तो मैं अपने मकान के बाला ख़ाने पर था जब सरे मुबारक मेरे सामने से गुज़रा तो मैं ने सुना कि सर मुबारक ने येह आयत तिलावत फ़रमाई :

(2) اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَ الرَّقِيْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۝ (کہف،پ۱۵)

इसी त़रह़ एक दूसरे बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि जब यज़ीदियों ने सरे मुबारक को नेज़े से उतार कर इब्ने ज़ियाद के मह़ल में दाख़िल किया तो आप के मुक़द्दस होंट हिल रहे थे और ज़बाने अक़्दस पर इस आयत की तिलावत जारी थी :

(3) وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ

(روضۃ الشہداء،ص۲۳۰)

---

1 ......روضة الشهداء (مترجم)،باب نهم ، ج٢، ص ١٨٦

2 ......तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम्हें मा'लूम हुवा कि पहाड़ की खोह और जंगल के किनारे वाले हमारी एक अ़जीब निशानी थे । (پ۱۵،الکھف:۹)

3 .....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हरगिज़ अल्लाह को बे ख़बर न जानना ज़ालिमों के काम से । (پ۱۳،ابراھیم:۴۲)
و روضة الشهداء (مترجم)، دسواں باب ، فصل اول ، ج٢، ص ٣٨٤

तबसेरा

इन ईमान अफ़रोज़ करामतों से येह ईमानी रोशनी मिलती है कि शुहदाए किराम अपनी अपनी क़ब्रों में तमाम लवाज़िमे हयात के साथ ज़िन्दा हैं। ख़ुदा की इबादत भी करते हैं और क़िस्म क़िस्म के तसर्रुफ़ात भी फ़रमाते रहते हैं और इन की दुआएं भी बहुत जल्द मक़्बूल होती हैं।

﴾53﴿ हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप के वालिद का नाम अबू सुफ़्यान और वालिदा का नाम हिन्द बिन्ते उतबा है। सि. **8** हि. में फ़त्हे मक्का के दिन येह ख़ुद और आप के वालिदैन सब मुसलमान हो गए और हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि बहुत ही उम्दा कातिब थे इस लिये दरबारे नबुव्वत में वह्य लिखने वालों की जमाअत में शामिल कर लिये गए। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में येह शाम के गवर्नर मुक़र्रर हुवे और हज़रते अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उषमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दौरे ख़िलाफ़त ख़त्म होने तक इस ओहदे पर फ़ाइज़ रहे मगर जब अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तख़्ते ख़िलाफ़त पर रोनक अफ़रोज़ हुवे तो आप ने इन को गवर्नरी से मा'ज़ूल कर दिया लेकिन इन्हों ने मा'ज़ूली का परवाना क़बूल नहीं किया और शाम की हुकूमत से दस्त बरदार नहीं हुवे बल्कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उषमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ून के क़िसास का मुतालबा करते हुवे इन्हों ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअत से न सिर्फ़ इन्कार किया बल्कि उन से मक़ामे सिफ़्फ़ीन में जंग भी हुई।

फिर जब सि. 41 हि. में हज़रते इमाम हसने मुजतबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़िलाफ़त इन के सिपुर्द फ़रमा दी तो येह पूरे आ़लमे इस्लाम के बादशाह हो गए। बीस बरस तक ख़िलाफ़ते राशिदा के गवर्नर रहे और बीस बरस तक ख़ुद मुख़्तार बादशाह रहे इस त़रह़ चालीस बरस तक शाम के तख़्ते सल्त़नत पर बैठ कर हुकूमत करते रहे और ख़ुश्की व समन्दर में जिहादों का इन्तिज़ाम फ़रमाते रहे।

इस्लाम में बहरी लड़ाइयों के मूजिद आप हैं, जंगी बेड़ियों की ता'मीर का कारख़ाना भी आप ने बनवाया, ख़ुश्की और समन्दरी फ़ौजों की बेहतरीन तन्ज़ीम फ़रमाई और जिहादों की बदौलत इस्लामी हुकूमत की हुदूद को वसीअ़ से वसीअ़ तर करते रहे और इशाअ़ते इस्लाम का दाइरा बराबर बढ़ता रहा। जा बजा मसाजिद की ता'मीर और दर्सगाहों का क़ियाम फ़रमाते रहे।

रजब सि. 60 हि. में आप ने लक़्वा की बीमारी में मुब्तला हो कर अपने दारुस्सलत़नत दिमश्क़ में विसाल फ़रमाया। ब वक़्ते विसाल आप ने वसिय्यत फ़रमाई थी कि मेरे पास हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक पैराहन, एक चादर, एक तहबन्द और कुछ मूए मुबारक और नाख़ुने अक़्दस के चन्द तराशे हैं। इन तीनों मुक़द्दस कपड़ों को मेरे कफ़न में शामिल किया जाए और मूए मुबारक और नाख़ुने अक़्दस को मेरी आंखों में रख कर मुझे अरह़मर्राह़िमीन के सिपुर्द किया जाए। चुनान्चे, लोगों ने आप की इस वसिय्यत पर अ़मल किया।(1) (اکمال،ص۶۱۷وغیرہ)

ब वक़्ते विसाल अठत्तर या छियासी बरस की उ़म्र थी। विसाल के वक़्त इन का बेटा यज़ीद दिमश्क़ में मौजूद नहीं था इस

1......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف المیم، فصل فی الصحابة، ص٦١٧
واسد الغابة، معاوية بن صخر بن ابی سفیان، ج٥، ص٢٢٠۔٢٢٣ ملتقطاً

लिये ज़ह्हाक बिन क़ैस ने आप के कफ़न व दफ़न का इन्तिज़ाम किया और इसी ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ही ख़ूब सूरत, गोरे रंग वाले और निहायत ही वजीह और रो'ब वाले थे। चुनान्चे, अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे कि "मुआविय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अरब के किस्रा हैं।"(1)

(اسد الغابہ، ج۴،ص۳۸۵ تا ۳۸۷)

करामात

आप की चन्द करामतें बहुत ही मश्हूर हैं और आप के फ़ज़ाइल में चन्द अहादीष भी मरवी हैं।

जंग में कभी मग़्लूब नहीं हुवे

इन की एक मश्हूर करामत येह है कि कुश्ती या जंग में कभी भी और कहीं भी और किसी शख़्स से भी मग़लूब नहीं हुवे बल्कि हमेशा ही अपने मद्दे मुक़ाबिल पर ग़ालिब रहे क्यूंकि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के बारे में इरशाद फ़रमा दिया था : اِنَّ مُعَاوِيَةَ لَا يُصَارِعُ اَحَدًا اِلَّا صَرَعَهٗ مُعَاوِيَةُ (या'नी मुआविय्या जिस शख़्स से लड़ेगा मुआविय्या ही उस को पछाड़ेगा।)(2)

(کنز العمال، ج۱۲،ص۳۱۷ بحوالہ دیلمی عن ابن عباس)

दुआ मांगते ही बारिश

सुलैम बिन आमिर ख़बाइरी का बयान है कि एक मरतबा मुल्के शाम में बिल्कुल ही बारिश नहीं हुई और शदीद क़हत का दौर

---

1 ......اسد الغابة، معاوية بن صخر بن ابی سفيان، ج٥، ص٢٢٢-٢٢٣ ملتقطاً

2 ......كنز العمال، كتاب الفضائل، ذكر الصحابة وفضلهم...الخ، معاوية بن ابی سفيان، الحديث:٣٣٦٥١، ج٦، الجزء١١، ص٣٤٢

दौरा हो गया। हज़रते अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़े इस्तिसक़ा के लिये मैदान में निकले और मिम्बर पर बैठ कर आप ने हज़रते इब्नुल अस्वद जरशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया और उन को मिम्बर के नीचे अपने क़दमों के पास बिठा कर अपने दोनों हाथों को उठाया और इस त़रह़ दुआ़ मांगी कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम तेरे हुज़ूर में हज़रते इब्नुल अस्वद जरशी को सिफ़ारिशी बना कर लाए हैं जिन को हम अपने से नेक और अफ़्ज़ल समझते हैं।

फिर हज़रते इब्नुल अस्वद जरशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और तमाम हाज़िरीन भी अपने अपने हाथों को उठा कर बारिश की दुआ़ मांगने लगे नागहां पश्चिम से एक ज़ोरदार अब्र उठा फिर मुस्लाधार बारिश होने लगी यहां तक कि मुल्के शाम की ज़मीन सैराब हो कर खेती से सर सब्ज़ो शादाब हो गई।[1] (طبقات ابن سعد، ج ۷، ص ۴۴۴)

शैत़ान ने नमाज़ के लिये जगाया

हज़रते अ़ल्लामा मौलाना जलालुद्दीन मौलानाए रूम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी मषनवी शरीफ़ में आप की इस करामत को बड़ी धूम से बयान फ़रमाया है कि एक रोज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मह़ल में दाख़िल हो कर किसी ने आप को नमाज़े फ़ज्र के लिये बेदार किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि तू कौन है ? और किस लिये तू ने मुझे जगाया है ? तो उस ने जवाब दिया कि ऐ अमीरे मुआ़विय्या ! मैं शैत़ान हूं। आप ने ह़ैरान हो कर पूछा कि ऐ शैत़ान ! तेरा काम तो इन्सान से गुनाह कराना है और तू ने मुझे नमाज़ के लिये जगा कर मुझे नेक अ़मल करने का मौक़अ़ दिया।

1 ......الطبقات الکبری لابن سعد، الطبقۃ الاولی من اھل الشام ...الخ، یزید بن الاسود الجرشی، ج۷، ص۳۰۹

इस की वजह क्या है ? तो शैतान ने जवाब दिया कि ऐ अमीरल मोअमिनीन ! मैं जानता हूं कि अगर सोते रहने में आप की नमाज़े फ़ज्र क़ज़ा हो जाती तो आप ख़ौफ़े इलाही से इस क़दर रोते और इस कषरत से तौबा व इस्तिग़फ़ार करते कि खुदा की रह़मत को आप की बे क़रारी व गिर्या व ज़ारी पर प्यार आ जाता और वोह आप की क़ज़ा नमाज़ क़बूल फ़रमा कर अदा नमाज़ से हज़ारों गुना ज़ियादा अज्रो षवाब अ़ता फ़रमा देता चूंकि मुझे खुदा के नेक बन्दों से बुग़्ज़ व ह़सद है इस लिये मैं ने आप को जगा दिया ताकि आप को कुछ ज़ियादा षवाब न मिल सके।(1) (مثنوی مولانا روم رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

तबसेरा

मषनवी शरीफ़ की इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि शैत़ान कभी लोगों को सुला कर और नमाज़े क़ज़ा करा कर नेकियों और षवाबों से मह़रूम कराता है तो कभी कुछ लोगों को नमाज़ों के लिये जगा कर और अदा नमाज़ें पढ़वा कर ज़ियादा नेकियों और षवाबों से मह़रूम कराता है और इस की सूरत येह है कि जो लोग सुब्ह़ को बेदार हो कर नमाज़े फ़ज्र जमाअ़त से पढ़ते हैं तो शैत़ान कभी कभी कुछ लोगों के दिलों में येह वस्वसा डाल देता है कि मैं खुदा का बहुत ही नेक बन्दा हूं क्यूंकि मैं ने फ़ज्र की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ी है और फुलां फुलां लोगों की नमाज़ें क़ज़ा हो गईं यक़ीनन मैं उन लोगों से बहुत नेक और बहुत अच्छा हूं। ज़ाहिर है कि अपनी अच्छाई और बुराई का ख़याल आते ही नमाज़ का अज्रो षवाब तो ग़ारत और अकारत हो ही गया, उलटे तकब्बुर और घमन्ड का गुनाह सर पर सुवार हो गया बहर ह़ाल शैत़ान के शर से खुदा तआ़ला की पनाह।

1 ......مثنوی مولانا روم (مترجم)، دفتر دوم، ص ۴۹۔۵۰ ملخصاً

﴾54﴿ हज़रते हारिषा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते हारिषा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अफ़ाज़िल सहाबा में से हैं। जंगे बद्र और जंगे उहुद वग़ैरा तमाम इस्लामी जंगों में मुजाहिदाना शान के साथ मा'रिका आराई करते रहे। येह क़बीलए बनू नज्जार में से हैं।(1)

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के बारे में इरशाद फ़रमाया कि मैं जन्नत में दाख़िल हुवा तो मैं ने वहां क़िराअत की आवाज़ सुनी, जब मैं ने दरयाफ़्त किया कि येह कौन शख़्स हैं? तो फ़िरिश्तों ने कहा कि येह हारिषा बिन नो'मान हैं। येह अपनी वालिदा के साथ बेहतरीन सुलूक करने वाले सहाबी हैं।(2)

(مشکوٰۃ، ج۲، ص۴۱۹ باب البر والصلۃ)

करामत

हज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام को देखा

इन का बयान है कि मैं एक मरतबा हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास से गुज़रा तो मैं ने देखा कि एक शख़्स आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठे हुवे हैं। मैं ने सलाम किया और वहां से चल दिया जब मैं वापस आया तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ हारिषा! तुम ने उस शख़्स को देखा जो मेरे पास बैठे हुवे थे? मैं ने अ़र्ज़ किया कि जी हां! तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि वोह हज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام थे और उन्हों ने तुम्हारे सलाम का जवाब भी दिया था।(3)

(اکمال فی اسماء الرجال، ص۵۹۱)

---

1 ......اسد الغابة، حارثة بن النعمان، ج ۱، ص ۵۲۵

2 ......مشكاة المصابيح، كتاب الآداب، باب البر والصلة، الحديث: ۴۹۲۶، ج ۲، ص ۲۰۶

3 ......الاكمال في اسماء الرجال، حرف الحاء، فصل في الصحابة، ص ۵۹۱

और एक रिवायत में येह भी है कि ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि ह़ारिषा बिन नो'मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अस्सी आदमियों में से एक हैं। तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त किया कि ऐ जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام इस का क्या मत़लब है कि येह अस्सी आदमियों में से एक हैं ? तो आप ने जवाब दिया कि जंगे हुनैन के दिन कुछ देर के लिये तमाम सहाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم शिकस्त खा कर पीछे हट जाएंगे मगर अस्सी आदमी पहाड़ की त़रह़ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ऐसी ह़ालत में डटे रहेंगे जब कि कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से तीरों की बारिश हो रही होगी उन अस्सी बहादुरों में से एक "ह़ारिषा बिन नो'मान" हैं।(1) (اسد الغابہ،ج۱،ص۳۵۸)

येह आख़िरी उ़म्र में नाबीना हो गए थे इस लिये हर वक़्त अपने मुसल्ले पर बैठे रहते थे। और अपने मुसल्ले के पास एक टोकरी में खजूर भर कर रखते थे और अपने मुसल्ले से हुजरे के दरवाज़े तक एक धागा बान्धे हुवे थे जब मिस्कीन दरवाज़े पर आ कर सलाम करता तो उसी धागे में खजूरें बांध कर धागा खींच लेते और खजूरें मिस्कीन के पास पहुंच जाया करती थीं उन के घर वालों ने कहा कि इस तकल्लुफ़ व तक्लीफ़ की क्या ज़रूरत है ? आप हुक्म दें तो घर वाले खजूरें मिस्कीन को दे दिया करेंगे। आप ने फ़रमाया कि मैं ने हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते हुवे सुना : مُنَاوَلَۃُ الْمِسْکِیْنِ تَقِیْ مِیْتَۃَ السُّوْءِ (या'नी मिस्कीन को अपने हाथ से देना बुरी मौत से बचाता है।)(2) (اسد الغابہ،ج۱،ص۳۵۹)

1 ......اسد الغابة،حارثة بن النعمان،ج۱،ص۵۲۵

2 ......شعب الايمان للبيهقى، باب الثانى و العشرون...الخ، فصل فى الاختيار فى صدقة التطوع، الحديث:۳٤٦۳،ج۳، ص۲٥۳ و اسد الغابة، حارثة بن النعمان،ج۱، ص۵۲۵

﴾55﴿ ह़ज़रते ह़कीम बिन हिज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

इन की कुन्यत अबू ख़ालिद है और ख़ानदाने क़ुरैश की शाख़ बनू असद से इन का ख़ानदानी तअ़ल्लुक़ है। येह उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के भतीजे हैं। इन की एक ख़ुसूसिय्यत येह है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में इन की वालिदा जब कि येह उन के बत़न में थे का'बे के अन्दर बुतों पर चढ़ावा चढ़ाने को गईं तो वहीं बीच का'बा में ह़कीम बिन हिज़ाम पैदा हो गए। ज़मानए जाहिलिय्यत और इस्लाम दोनों ज़मानों में येह अशराफ़े क़ुरैश में से शुमार किये जाते थे। फ़त्ह़े मक्का के साल सि. **8** हि. में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे। बहुत ही अ़क़्लमन्द, मुआ़मला फ़हम और साहि़बे इ़ल्म व तक़्वा शिआ़र थे। एक सो ग़ुलामों को ख़रीद कर आज़ाद किया और एक सो ऊंट उन मुसाफ़िरों को दिये जिन के पास सुवारी के जानवर नहीं थे। एक सो बीस बरस उ़म्र पाई। साठ बरस कुफ़्र की ह़ालत में और साठ बरस इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारी। सि. **54** हि. में ब मक़ामे मदीनए मुनव्वरा इन का विसाल हुवा।[1] (اکمال،ص۵۹۱)

करामत

तिजारत में कभी घाटा नहीं हुवा

इन की मश्हूर करामत येह है कि येह ताजिर थे। ज़िन्दगी भर तिजारत करते रहे मगर कभी भी और कहीं भी और किसी सौदे में भी कोई नुक़्सान और घाटा नहीं हुवा बल्कि अगर येह मिट्टी भी ख़रीदते तो उस में नफ़्अ़ ही नफ़्अ़ होता क्यूंकि ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के लिये येह दुआ़ फ़रमाई थी : اَللّٰھُمَّ بَارِكْ فِیْ صَفْقَتِهٖ (ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन के ब्योपार में बरकत अ़त़ा फ़रमा।)[2] (کنزالعمال،ج۱۲،ص۲۶۲)

---

1 ......الاكمال فی اسماء الرجال، حرف الحاء، فصل فی الصحابة، ص ٥٩١

2 ......كنز العمال، كتاب الفضائل، ذكر الصحابة وفضلهم رضی الله عنهم اجمعين، حكيم بن حزام، الحديث:٣٣٢٧٢، ج٦، الجزء١١، ص ٣١٠ بتغير لفظ

तिर्मिज़ी व अबू दावूद की रिवायतों में है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन को एक दीनार दे कर मेंढ़ा ख़रीदने के लिये भेजा तो इन्हों ने एक दीनार में मेंढा ख़रीदा और इसे दो दीनार में बेच डाला फिर वापस बाज़ार आए और एक दीनार में मेंढा ख़रीद कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में आ कर मेंढा और एक दीनार पेश कर दिये। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दीनार को तो ख़ुदा की राह में ख़ैरात कर दिया और फिर ख़ुश हो कर इन की तिजारत में बरकत के लिये दुआ फ़रमा दी।[1]

(مشکوٰۃ،ص۲۵۴،باب الشرکۃ والوکالت)

तबसेरा

तिजारत में नफ़्अ़ व नुक़्सान दोनों का होना लाज़िमी अम्र है हर ताजिर को इस का तजरिबा है कि ब्योपार में कभी नफ़्अ़ होता है कभी नुक़्सान, मगर ज़िन्दगी भर तिजारत में हमेशा नफ़्अ़ ही नफ़्अ़ होता रहे और कभी भी और कहीं भी और किसी सौदे में भी घाटा न उठाना पड़े बिलाशुबा इस को **करामत** के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता इस लिये हज़रते हकीम बिन हिज़ाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ यक़ीनन साहिबे करामत सहाबी और बुलन्द मर्तबा वली थे।

﴾56﴿ हज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ

येह क़दीमुल इस्लाम और मुहाजिरीने अव्वलीन में से हैं और येह उन मुसीबत ज़दा सहाबियों में से हैं जिन को कुफ़्फ़ारे मक्का ने इस क़दर ईज़ाएं दीं कि जिन्हें सोच कर ही बदन के रौंगटे खड़े हो जाते हैं। ज़ालिमों ने इन को जलती हुई आग पर लिटाया

1 ......مشكاة المصابيح، كتاب البيوع، باب الشركة والوكالة، الحديث:٢٩٣٧، ج١، ص٥٤٢

चुनान्चे, येह दहकती हुई आग के कोइलों पर पीठ के बल लैटे रहते थे और जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के पास से गुज़रते और येह आप को या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कह कर पुकारते तो आप इन के लिये इस त़रह़ आग से फ़रमाया करते थे :

يَا نَارُ كُوْنِىْ بَرْدًا وَّسَلَامًا عَلٰى عَمَّارٍ كَمَا كُنْتِ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ

(या'नी ऐ आग ! तू अ़म्मार पर उसी त़रह़ ठन्डी और सलामती वाली बन जा जिस त़रह़ तू ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये ठन्डी और सलामती वाली बन गई थी।)

इन की वालिदए माजिदा ह़ज़रते बीबी सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को इस्लाम क़बूल करने की वजह से अबू जहल ने बहुत सताया यहां तक कि उन की नाफ़ के नीचे नेज़ा मार दिया जिस से उन की रूह़ परवाज़ कर गई और अ़हदे इस्लाम में सब से पहले येह शहादत से सरफ़राज़ हो गईं।

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को तय्यिब व मुत़य्यिब के लक़ब से पुकारा करते थे। येह सि. 37 हि. में तिरानवे बरस की उ़म्र पा कर जंगे सिफ़्फ़ीन में ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ह़िमायत में ह़ज़रते अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की फ़ौजों से जंग करते हुवे शहीद हो गए।(1) (اکمال،ص۶۰۷)

करामत

कभी इन की क़सम नहीं टूटी

इन की एक मश्हूर करामत येह है कि येह जिस बात की क़सम उठा लिया करते थे ख़ुदावन्दे करीम हमेशा इन की क़सम को

1 ......الاكمال فى اسماء الرجال، حرف العين، فصل فى الصحابة، ص ٦٠٧
و اسد الغابة، عمار بن ياسر، ج٤، ص ١٤٠ـ١٤٦ ملتقطاً
و اسد الغابة، سمية ام عمار، ج٧، ص ١٦٧ ملتقطاً

पूरी फ़रमा देता क्यूंकि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के बारे में येह इरशाद फ़रमाया था :

كَمْ مِنْ ذِىْ طِمْرَيْنِ لَا يُؤْبَهُ لَهٗ لَوْ اَقْسَمَ عَلَى اللّٰهِ لَا بَرَّهٗ مِنْهُمْ عَمَّارُ بْنُ يَاسِرٍ[1] (كنز العمال، ج۱۲،ص۲۹۵)

(कितने ही ऐसे कम्बल पोश हैं कि लोग उन की कोई परवाह नहीं करते लेकिन अगर वोह किसी बात की क़सम खा लें तो अल्लाह तआला ज़रूर उन की क़सम को पूरी फ़रमा देगा और इन्हीं लोगों में अ़म्मार बिन यासिर हैं।)

तीन मरतबा शैतान को पछाड़ा

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने हज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को पानी भरने के लिये भेजा। शैतान एक काले गुलाम की सूरत में हज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को पानी भरने से रोकने लगा और लड़ने पर आमादा हो गया। हज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस को पछाड़ दिया तो वोह आ़जिज़ी करने लगा। इसी तरह तीन मरतबा शैतान ने पानी भरने से आप को रोका और लड़ने पर तय्यार हुवा और तीनों मरतबा आप ने उस को पछाड़ दिया जिस वक़्त शैतान से आप की कुश्ती हो रही थी हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी मजलिस में सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم को बता दिया कि आज अ़म्मार ने तीन मरतबा शैतान को पछाड़ दिया है जो एक काले गुलाम की सूरत में उन से लड़ रहा है।

हज़रते अ़म्मार जब पानी ले कर आ गए तो मैं ने उन से कहा कि तुम्हारे बारे में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि तुम ने तीन मरतबा शैतान को पछाड़ा है। येह सुन कर हज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहने लगे कि खुदा की क़सम ! मुझे येह मा'लूम नहीं था कि वोह शैतान है वरना मैं उस को मार डालता, हां अलबत्ता तीसरी मरतबा मुझे बड़ा ही गुस्सा आ गया था और मैं ने

[1] ......كنز العمال، كتاب الفضائل، ذكر الصحابة وفضلهم رضى الله عنهم اجمعين، عمار بن يا سر رضى الله عنه، الحديث:۳۳۵۱۹،ج۶، الجزء ۱۱، ص ۳۳۰

इरादा कर लिया था कि मैं दांत से उस की नाक काट लूं मगर मैं जब उस की नाक के क़रीब मुंह ले गया तो मुझे बहुत ही गन्दी बदबू महसूस हुई इस लिये मैं पीछे हट गया और उस की नाक बच गई।(1)

﴾57﴿ हज़रते शुरह़बील बिन ह़सना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह बहुत ही जांबाज़ और बहादुर सह़ाबी हैं। इन की वालिदा का नाम ह़सना था और इन के वालिद का नाम अ़ब्दुल्लाह बिन मताअ़ था। इन के बा'द इन की वालिदा ह़सना ने एक अन्सारी से जिन का नाम सुफ़्यान बिन मा'मर था निकाह़ कर लिया और दो बच्चे भी इन से तवल्लुद हुवे जिन का नाम जुनादा और जाबिर था। हज़रते शुरह़बील अपने दोनों भाइयों के साथ इब्तिदाए इस्लाम ही में मुसलमान हो गए थे और हिजरत कर के ह़बशा भी गए थे और जब ह़बशा से मदीना आए तो बनी ज़रीफ़ में रहने लगे। फिर जब हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त में इन के दोनों भाइयों का इन्तिक़ाल हो गया तो हज़रते शुरह़बील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बनी ज़ोहरा के क़बीले में रहने लगे और फ़ारूक़ी दौरे हुकूमत में कई एक जिहादों में अमीरे लश्कर की हैसियत से अफ़्वाजे इस्लामिय्या के किसी एक दस्ते की कमान करते रहे। सि. 18 हि. के ताऊ़ने अ़मवास में सरसठ बरस की उ़म्र पा कर विसाल फ़रमा गए। अ़जीब इत्तिफ़ाक़ है कि येह और हज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا दोनों एक ही दिन ताऊ़न में मुब्तला हुवे।(2) (اسد الغابہ، ج۲، ص۳۹۱)

करामत

क़ल्अ़ा ज़मीन में धंस गया

इस्लामी लश्कर शहर असकन्दरिय्या पर ह़म्ला आवर था। कुफ़्फ़ार की फ़ौज एक बहुत ही मज़बूत और ना क़ाबिले तस्ख़ीर

(1) شواھد النبوۃ، رکن سادس د ربیان شوا ھد...الخ، عما ربن یا سر رضی اللّٰہ عنہ، ص۲۸۳

(2) اسد الغابۃ، شرحبیل بن حسنۃ، ج۲، ص ۵۹۱۔۵۹۲

क़ल्ए में महफ़ूज़ थी और लश्करे इस्लाम क़ल्ए के सामने खुले मैदान में ख़ैमा ज़न था। बहुत दिनों तक जंग होती रही मगर कुफ़्फ़ार क़ल्ए की वजह से मग़्लूब नहीं हुवे थे। एक दिन अमीरे लश्कर हज़रते शुरहबील बिन हसना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने काफ़िरों को मुख़ातिब कर के फ़रमाया कि ऐ लश्करे कुफ़्फ़ार के सिपह सालारो ! सुन लो ! हमारी फ़ौजे इस्लाम में इस वक़्त ऐसे ऐसे अल्लाह वाले मौजूद हैं कि अगर वोह इस क़ल्ए की दीवारों को हुक्म दे दें कि तुम फ़ौरन ही ज़मीन में धंस जाओ तो फ़ौरन ही येह क़ल्आ ज़मीन में धंस जाएगा। येह कहा और जोश में आ कर आप ने अपना हाथ क़ल्ए की जानिब बढ़ाया और बुलन्द आवाज़ से ना'रए तक्बीर लगाया तो पूरा क़ल्आ दम ज़दन में ज़मीन के अन्दर धंस गया और कुफ़्फ़ार का लश्कर जो क़ल्ए के अन्दर था आन की आन में खुले मैदान में खड़ा रह गया। येह मन्ज़र देख कर बादशाह असकन्दरिय्या का दिलो दिमाग़ ज़ेरो ज़बर हो गया और वोह मारे डर के शहर छोड़ कर अपनी फ़ौजों के साथ भाग निकला और पूरा शहर मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गया। (تاریخ واقدی وسیرۃ الصالحین،ص۲۲)

तबसेरा

سُبْحٰنَ اللّٰہ औलियाउल्लाह की रूहानी ताक़तों का क्या कहना ! सच है

कोई अन्दाज़ा कर सकता है इस के ज़ोरे बाज़ू का
निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती हैं तक़्दीरें

﴾57﴿ हज़रते अम्र बिन जमूह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह मदीनए मुनव्वरा के रहने वाले अन्सारी हैं और हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फूफा हैं। येह अपाहज थे। येह जंगे उहुद के दिन अपने फ़रज़न्दों के साथ जिहाद के लिये आए तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को लंगड़ाने की बिना पर मैदाने जंग में

उतरने से रोक दिया। येह बारगाहे रिसालत में गिड़ गिड़ा कर अ़र्ज़ करने लगे : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे जंग में लड़ने की इजाज़त दे दीजिये। मेरी तमन्ना है कि मैं भी लंगड़ाता हुवा जन्नत में चला जाऊं। इन की बे क़रारी और गिर्या व ज़ारी को देख कर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़ल्ब इन्तिहाई मुतअष्षिर हो गया और आप ने इन को जंग करने की इजाज़त दे दी। येह खुशी से उछल पड़े और काफ़िरों के हुजूम में घुस कर दिलेराना जंग करने लगे यहां तक कि शहादत से सरफ़राज़ हो गए।[1]

(مدارج النبوۃ، ج۲،ص۱۲۴)

करामत

लाश मैदाने जंग से बाहर नहीं गई

लड़ाई ख़त्म हो जाने के बा'द जब ह़ज़रते अ़म्र बिन जमूह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बीवी ह़ज़रते हिन्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا मैदाने जंग में गईं तो उन की लाश को ऊंट पर लाद कर दफ़्न करने के लिये मदीनए मुनव्वरा लाना चाहा तो हज़ारों कोशिशों के बा वुजूद वोह ऊंट मदीने की त़रफ़ नहीं चला बल्कि वोह मैदाने जंग ही की त़रफ़ भाग भाग कर जाता रहा। ह़ज़रते हिन्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने जब दरबारे रिसालत में येह माजरा अ़र्ज़ किया तो आप ने फ़रमाया कि क्या अ़म्र बिन जमूह़ ने घर से निकलते वक़्त कुछ कहा था ? ह़ज़रते हिन्द ने अ़र्ज़ किया कि जी हां ! वोह येह कह कर घर से निकले थे : اَللّٰھُمَّ لَا تَرُدَّنِیْ اِلٰی اَھْلِیْ (ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ को मैदाने जंग से अपने अहलो इ़याल में वापस आना नसीब मत कर) आप ने इरशाद फ़रमाया कि येही

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، کارزارھائے...الخ، ج۲، ص ۱۲۴
و اسد الغابۃ، عمرو بن الجموح، ج۴، ص۲۱۹۔۲۲۱ ملتقطاً

वजह है कि ऊंट मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ नहीं चल रहा है लिहाज़ा तुम इन को मदीने ले जाने की कोशिश मत करो।(1)

(مدارج النبوۃ،ج۲،ص۱۲۴)

तबसेरा

अल्लाहु अक्बर ! क्या ठिकाना है इस जज़्बए इ़श्क़ और जोशे जिहाद का और क्या कहना इस शौक़े शहादत का। سُبْحٰنَ اللہ

दो क़दम भी चलने की है नहीं त़ाक़त मुझ में
इ़श्क़ खींचे लिये जाता है मैं क्या जाता हूं

खुदा की शान देखिये कि उन की तमन्ना पूरी हो गई जिहाद भी कर लिया, शहादत से भी सरफ़राज़ हो गए और मैदाने जंग ही में इन का मदफ़न भी बन गया। सच है

जो मांगने का त़रीक़ा है इस त़रह़ मांगो
दरे करीम से बन्दे को क्या नहीं मिलता

﴾59﴿ ह़ज़रते अबू षा'लबा खुशनी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ

इन का नाम जरहम बिन नाशिब है मगर कुन्यत ही मश्हूर है। येह दा'वते इस्लाम के आग़ाज़ ही में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए थे। सिलसिलए नसब चूंकि "ख़ुशीन वाइल" से मिलता है इस लिये येह खुशनी कहलाते हैं। सुल्ह़े हुदैबिय्या में हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमरिकाब थे और बैअ़तुर्रिज़्वान कर के रिज़ाए खुदावन्दी की सनद ह़ासिल की। हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इन को मुबल्लिग़ बना कर भेजा चुनान्चे, इन की कोशिशों से इन का पूरा क़बीला जल्द ही दामने इस्लाम में आ गया। मुल्के शाम फ़त्ह़ होने के बा'द येह शाम में क़ियाम पज़ीर हो गए। ह़ज़रते अ़ली और

1 ......مدارج النبوت، قسم سوم، کارزارهائے...الخ، ج۲، ص ۱۲۴

हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا की लड़ाइयों में येह बिल्कुल ग़ैर जानिबरदार रहे। रास्त गुफ़्तारी और साफ़ गोई में येह अपना जवाब नहीं रखते थे। रात के सन्नाटे में अकषर येह घर से बाहर निकल कर आस्मान पर नज़र डालते और सजदे में गिर कर घन्टों सर ब सुजूद रहते। मुल्के शाम में इक़ामत पज़ीर हो गए थे और वहीं सि. 75 हि. में वफ़ात हुई।[1] (اکمال،ص۵۸۹واسدالغابہ،ج۱،ص۲۷۶)

करामत

अपनी पसन्द की मौत मिली

येह अकषर कहा करते थे और येह दुआएं भी मांगा करते थे कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ को आम लोगों की तरह एड़िया रगड़ रगड़ कर और दम घुट घुट कर मरना पसन्द नहीं है मुझे ऐसी मौत मिले कि इस में दम घुटने और ऐड़ियां रगड़ने की ज़हमत न उठानी पड़े। चुनान्चे, इन की येह करामत है कि हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की हुकूमत के दौरान येह आधी रात गुज़रने के बा'द नमाज़ में मश्गूल थे कि इन की साहिबज़ादी ने येह ख़्वाब देखा कि इन के वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हो गया। वोह इस परेशान कुन ख़्वाब से घबरा कर उठ बैठीं और आवाज़ दी तो देखा कि आप नमाज़ पढ़ रहे हैं। थोड़ी देर बा'द दूसरी मरतबा आवाज़ दी तो कोई जवाब नहीं मिला पास जा कर देखा तो सर सजदे में था और रूह परवाज़ कर चुकी थी।[2] (اسدالغابہ واصابہ)

1 ......اسد الغابة، جرثوم بن ناشب، ج١، ص٤٠٥

و الاكمال فى اسماء الرجال، حرف الثاء، فصل فى الصحابة، ص٥٨٩

و الاصابة فى تمييز الصحابة، باب الكنى، حرف الثاء المثلثة، ج٧، ص٥١

2 ......الاصابة فى تمييز الصحابة، باب الكنى، حرف الثاء المثلثة، ج٧، ص٥١

﴾60﴿ हज़रते क़ैस बिन ख़रशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह क़बीलए बनी क़ैस बिन षा'लबा से तअ़ल्लुक़ रखते थे। इन के इस्लाम लाने की तारीख़ मुतअ़य्यन नहीं की जा सकी लेकिन येह मा'लूम है कि हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाने के बा'द येह अपने वत़न से मदीनए मुनव्वरा आए और हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रू बरू ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवे कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं हर उस चीज़ पर जो ख़ुदा तआ़ला की त़रफ़ से आप के पास आई है और उ़म्र भर ह़क़ गोई करने पर आप से बैअ़त करता हूं। आप ने फ़रमाया : ऐ क़ैस ! तुम क्या कहते हो ? मुमकिन है तुम को ऐसे ज़ालिम ह़ाकिमों से साबिक़ा पड़े जिन के मुक़ाबले में तुम ह़क़ गोई से काम न ले सको। अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसा कभी हरगिज़ हरगिज़ नहीं हो सकता। ख़ुदा की क़सम ! मैं जिन जिन चीज़ों पर आप से बैअ़त करता हूं उस को ज़रूर ज़रूर पूरा करूंगा। येह सुन कर सरकारे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने पैग़म्बराना लहजे में इरशाद फ़रमाया कि अगर ऐसा है तो तुम इत़मीनान रखो कि तुम को किसी शर से कभी भी नुक़्सान नहीं पहुंच सकता। चुनान्चे, आप उ़म्र भर अपने इस अ़हद पर अ़ज़्म व सख़्ती के साथ क़ाइम रहे।

बनू उमय्या के दौरे हुकूमत में ज़ियाद और उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद जैसे सितम कैशों और ज़ालिम गवर्नरों पर बर मला नुक्ता चीनी करते रहते थे यहां तक कि उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद ज़ालिम गवर्नर के मुंह पर खुल्लम खुल्ला येह कह दिया कि तुम लोग **अल्लाह** व रसूल पर इफ़्तिरा परदाज़ी करने वाले मुफ़्तरी हो।

करामत
जान गई मगर आन नहीं गई

उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद गवर्नर आप का दुश्मन हो गया था उस ने आप को क़त्ल की धमकी दी। आप ने उस को कह दिया कि

तू मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद ने त़ैश में आ कर जल्लादों को बुला लिया और हुक्म दे दिया कि तुम लोग क़ैस बिन ख़रशा के मकान पर जा कर उन की गर्दन उड़ा दो, जल्लाद आ गए लेकिन जब आप की गर्दन उड़ाने के लिये आप के मकान पर पहुंचे तो येह देख कर ह़ैरान रह गए कि वोह अपने बिस्तर पर लैटे हुवे हैं और इन की मुक़द्दस रूह़ परवाज़ कर चुकी है। जल्लाद उन के बदन को हाथ भी न लगा सके और ना काम व नामुराद वापस चले गए और इस त़रह़ आप एक ज़ालिम की सज़ा से बच गए।[1] (استیعاب،ج۲،ص۵۴)

तबसेरा

आप ने उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद से फ़रमाया था कि "तू मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता !" हालांकि उस ने अपनी गवर्नरी के ज़ो'म में येह चाहा कि जल्लाद से इन को क़त्ल करा कर इन्तिक़ाम ले ले मगर उस का येह मन्सूबा ख़ाक में मिल गया और जल्लाद नाकाम व नामुराद हो कर वापस चले गए। سُبْحٰنَ اللّٰہ सच है कि

जो जज़्बे के आ़लम में निकले लबे मोमिन से
वोह बात ह़क़ीक़त में तक़्दीरे इलाही है

﴾61﴿ ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

अन्सार में क़बीलए ख़ज़रज से इन का ख़ानदानी तअ़ल्लुक़ है। येह दरबारे नबुव्वत में वह्य के कातिब थे और येह उन छे सह़ाबियों में से हैं जो अ़हदे नबवी में पूरे ह़ाफ़िज़े कुरआन हो चुके थे और हुज़ूरे عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मौजूदगी में फ़त्वे भी देने लगे थे। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم इन को सय्यिदुल कुर्रा (सब क़ारियों के सरदार) कहते

1 ......الاستيعاب في معرفة الاصحاب، باب حرف القاف، ج٣، ص٣٤٨ ملخصاً

थे । हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की कुन्यत अबुल मुन्ज़िर रखी थी और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इन को अबुत्तुफ़ैल की कुन्यत से पुकारा करते थे । दरबारे नबुव्वत से सय्यिदुल अन्सार (अन्सार के सरदार) का ख़ित़ाब मिला था और ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन को सय्यिदुल मुस्लिमीन (मुसलमानों के सरदार) का लक़ब अ़त़ा फ़रमाया था । इन के शागिर्दों की फ़ेहरिस्त बहुत त़वील है ।(1)

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन इन से इरशाद फ़रमाया कि ऐ उबय्य बिन का'ब **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हारे सामने सूरह لَمْ یَکُنْ पढ कर तुम्हें सुनाऊं तो ह़ज़रते उबय्य बिन का'बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या ख़ुदा ने मेरा नाम ले कर आप से फ़रमाया है ? आप ने फ़रमाया कि हां ! येह सुन कर ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रोते हुवे येह कहने लगे ذُکِرْتُ عِنْدَ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ (या'नी **अल्लाह** तआ़ला के दरबार में मेरा ज़िक्र किया गया ।)(2)

(اکمال،ص۵۸۶وکنزالعمال،ج۱۵،ص۲۳۸وبخاری شریف)

करामात

ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام की आवाज़ सुनी

इन की एक मश्हूर करामत येह है कि इन्हों ने ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام की आवाज़ सुनी, इस का वाक़िआ़ येह है कि ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रावी हैं कि ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा कि मैं ज़रूर मस्जिद में दाख़िल हो कर नमाज़ पढूंगा और

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الھمزة، فصل فی الصحابة، ص ٥٨٦

2 ......کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، حرف الالف، الحدیث:٣٦٧٧٩، ٣٦٧٨٠، ج٧، الجزء١٣، ص ١١٦ ملتقطاً

अल्लाह तआला की ऐसी ता'रीफ़ करूंगा कि किसी ने भी ऐसी नहीं की होगी चुनान्चे, वोह नमाज़ के बा'द जब ख़ुदा की ह़म्दो षना के लिये बैठे तो उन्हों ने एक बुलन्द आवाज़ अपने पीछे सुनी कि कोई कहा रहा है :

اَللّٰھُمَّ لَکَ الْحَمْدُ کُلُّهٗ وَلَکَ الْمُلْکُ کُلُّهٗ وَبِیَدِکَ الْخَیْرُ کُلُّهٗ وَاِلَیْکَ یَرْجِعُ الْاَمْرُ کُلُّهٗ عَلَانِیَتُهٗ وَسِرُّهٗ لَکَ الْحَمْدُ اِنَّکَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ اِغْفِرْ لِیْ مَا مَضٰی مِنْ ذُنُوْبِیْ وَ اعْصِمْنِیْ فِیْمَا بَقِیَ مِنْ عُمْرِیْ وَارْزُقْنِیْ اَعْمَالًا زَاکِیَةً تَرْضٰی بِھَا عَنِّیْ وَتُبْ عَلَیَّ۔

(ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे ही लिये ता'रीफ़ है कुल की कुल और तेरे ही लिये बादशाही है तमाम की तमाम और तेरे ही लिये भलाई है सब की सब और तेरी ही त़रफ़ तमाम मुआ़मलात लौटते हैं। ज़ाहिरी भी और बातिनी भी। तेरे ही लिये ता'रीफ़ है, यक़ीनन तू हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। मेरे उन गुनाहों को बख़्श दे जो हो चुके और मेरी उ़म्र के बाक़ी हिस्से में तू मुझे अच्छे आ'माल की तौफ़ीक़ दे और तू इन आ'माल के ज़रीए मुझ से राज़ी हो जा और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा ले।)

ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ मस्जिद से निकल कर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार में ह़ाज़िर हुवे और माजरा सुनाया। आप ने फ़रमाया : तुम्हारे पीछे बुलन्द आवाज़ से दुआ़ पढ़ने वाले ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام थे।[1] (کتاب الذکر لابن ابی الدنیا)

बदली का रुख़ फेर दिया

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ एक क़ाफ़िले के साथ मक्कए मुकर्रमा जा रहे थे और मैं और ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا दोनों इस क़ाफ़िले के पीछे चल रहे थे, नागहां एक बदली उठी तो ह़ज़रते

1 ...... تفسیر روح المعانی للالوسی، سورۃ الاحزاب، تحت الآیة: ٤٠، الجزء ٢٢، ص ٢٩٧

उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम को इस बदली की अज़िय्यत से बचा ले और इस बदली का रुख़ फेर दे। चुनान्चे, बदली का रुख़ फिर गया और हम दोनों पर बारिश की एक बूंद भी नहीं गिरी लेकिन जब हम दोनों क़ाफ़िले में पहुंचे तो हम ने येह देखा कि लोगों की सुवारियां और सब सामान भीगे हुवे हैं। हम को देख कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि क्या येह बारिश जो हम पर हुई है तुम लोगों पर नहीं हुई? मैं ने अ़र्ज़ किया कि ऐ अमीरल मोअमिनीन! ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब ने बदली देख कर ख़ुदा से दुआ़ मांगी कि हम इस बारिश की ईज़ा रसानी से बच जाएं इस लिये हम पर बिल्कुल बारिश नहीं हुई और बदली का रुख़ फिर गया। येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि तुम दोनों ने हमारे लिये क्यूं दुआ़ नहीं मांगी? काश! तुम हमारे लिये भी दुआ़ मांगते ताकि हम लोग भी इस बारिश की तक्लीफ़ से मह़फ़ूज़ रहते।[1] (کنز العمال، ج۱۵،ص۲۳۲)

बुख़ार में सदा बहार

एक दिन हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि बुख़ार के मरीज़ को अल्लाह तआ़ला बहुत ज़ियादा नेकियां अ़ता फ़रमाता है। येह सुन कर ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह दुआ़ मांगी कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से ऐसे बुख़ार की दुआ़ मांगता हूं जो मुझे जिहाद और बैतुल्लाह शरीफ़ के सफ़र और मस्जिद की ह़ाज़िरी से न रोके। आप की दुआ़ मक़्बूल हुई। चुनान्चे, आप के साह़िब ज़ादगान का बयान है कि मेरे बाप ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हर वक़्त बुख़ार रहता था

---

1 ......کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، حر ف الالف، الحديث:٣٦٧٧٢، ج٧، الجزء١٣، ص ١١٥

और बदन जलता रहता था मगर इस हालत में भी वोह हज व जिहाद के लिये सफ़र करते और मस्जिदों में भी हाज़िरी देते थे और इस क़दर जोशो ख़रोश के साथ इन कामों को करते थे कि कोई महसूस भी नहीं कर सकता था कि येह बुख़ार के मरीज़ हैं।[1]

(کنزالعمال، ج۱۵،ص۲۳۴مطبوعہ حیدرآباد)

﴾62﴿ हज़रते अबुद्दरदा رضی اللہ تعالٰی عنہ

येह क़बीलए अन्सार में ख़ानदाने ख़ज़रज से नसबी तअ़ल्लुक़ रखते हैं। इन का नाम उ़वैमर बिन आ़मिर अन्सारी है। येह बहुत ही इल्मो फ़ज़्ल वाले फ़क़ीह और साहिबे हिक्मत सहाबी हैं और ज़ोहद व इबादत में भी येह बहुत ही बुलन्द मर्तबा हैं। हुज़ूरे अक़्दस صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के बा'द इन्हों ने मदीनए मुनव्वरा छोड़ कर शाम में सुकूनत इख़्तियार कर ली और सि. 32 हि. में शहर दिमश्क़ के अन्दर विसाल फ़रमाया।[2] (اکمال،ص۵۹۴وغیرہ)

करामत

हांडी और पियाले की तस्बीह

एक मरतबा आप رضی اللہ تعالٰی عنہ अपनी हांडी के नीचे आग सुलगा रहे थे और हज़रते सलमान फ़ारसी رضی اللہ تعالٰی عنہ भी इन के पास ही बैठे हुवे थे। नागहां हांडी में से तस्बीह पढ़ने की आवाज़ बुलन्द हुई फिर ख़ुद ब ख़ुद वोह हांडी चूल्हे पर से गिर कर औंधी हो गई फिर ख़ुद ब ख़ुद ही चूल्हे पर चली गई लेकिन इस हांडी में से पकवान का कोई हिस्सा भी ज़मीन पर नहीं गिरा। हज़रते अबुद्दरदा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने हज़रते सलमान رضی اللہ تعالٰی عنہ से कहा कि

---

1 ......كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، حرف الالف، الحديث:٣٦٧٦٦، ج٧، الجزء١٣، ص ١١٥

2 ......الاكمال فى اسماء الرجال، حرف الدال، فصل فى الصحابة، ص ٥٩٤

ऐ सलमान ! येह तअ़ज्जुब ख़ैज़ और हैरत अंगेज़ मुआ़मला देखो। हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि ऐ अबुद्दरदा ! अगर तुम चुप रहते तो **अल्लाह** तआ़ला की निशानियों में से बहुत सी दूसरी बड़ी बड़ी निशानियां भी तुम देख लेते। फिर येह दोनों एक ही पियाले में खाना खाने लगे तो पियाला भी तस्बीह़ पढ़ने लगा और उस पियाले में जो खाना था उस खाने के दाने दाने से भी तस्बीह़ पढ़ने की आवाज़ सुनाई देने लगी। (حلیۃ الاولیاء، ج۱، ص۲۲۴و۲۸۹)

अ़क्दे मुवाख़ात में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते अबुद्दरदा और ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को एक दूसरे का भाई बना दिया था।[(1)]

﴾63﴿ हज़रते अ़म्र बिन अ़बसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

इन की कुन्यत अबू नजीह़ है और येह क़बीलए बनू सुलैम में से थे। इस्लाम के आग़ाज़ ही में येह दौलते ईमान से माला माल हो गए थे। मुसलमान होने के बा'द हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से फ़रमाया कि तुम अपनी क़ौम में जा कर रहो और जब तुम येह सुन लो कि मैं मक्का से हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा चला गया हूं तो उस वक़्त तुम मेरे पास चले आना। चुनान्चे, येह अपनी क़ौम में मुक़ीम हो गए यहां तक कि जंगे ख़ैबर के बा'द येह मदीनए मुनव्वरा आए और इस मुक़द्दस शहर में क़ियाम पज़ीर हो गए। इन के शागिर्दों में बड़े बड़े बुलन्द पाया मुह़द्दिषीन हैं। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में इन्हों ने दुन्या से रिह़लत फ़रमाई।[(2)] (اکمال،ص۶۰۷)

1 ......حلیۃ الاولیاء، ابو الدرداء رضی اللّٰہ عنہ، الحدیث:۷۵۳، ۷۵۴، ج۱، ص۲۸۵
و اسد الغابۃ ، عویمر بن عامر، ج٤، ص ۳٤۰

2 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابۃ، ص۶۰۷

करामत

अब्र ने इन पर साया किया

हज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के गुलाम का बयान है कि एक रोज़ सफ़र में हज़रते अम्र बिन अबसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जानवरों को चराने के लिये मैदान में चले गए। मैं दोपहर की धूम और गर्मी में इन्हें देखने के लिये जानवरों की चरागाह में गया तो क्या देखता हूं कि हज़रते अम्र बिन अबसा एक जगह मैदान में सो रहे हैं और एक बादल का टुकड़ा इन पर साया किये हुवे हैं। मैं ने इन्हें बेदार किया तो इन्हों ने फ़रमाया कि ख़बरदार ! ख़बरदार ! जो कुछ तुम ने देखा है हरगिज़ हरगिज़ किसी से मत कहना वरना तुम्हारी ख़ैरिय्यत नहीं रहेगी। हज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के गुलाम कहते थे कि ख़ुदा की क़सम ! जब तक उन की वफ़ात न हो गई मैं ने किसी से उन की **करामत** का तज़्किरा नहीं किया।[1] (اصابہ،ج۳،ص۶)

﴾64﴿ हज़रते अब्दुल्लाह बिन क़ुर्त رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

इन का ख़ानदानी तअ़ल्लुक़ बनी अज़्द से है इस लिये अज़्दी कहलाते हैं। ज़मानए जाहिलिय्यत में इन का नाम "शैतान" था। मुसलमान हो जाने के बा'द नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन का नाम अब्दुल्लाह रख दिया। येह जंगे यरमूक और फ़त्हे दिमश्क़ की लड़ाइयों में बड़ी दिलेरी और जांबाज़ी के साथ कुफ़्फ़ार से लड़ते रहे। हज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन को दो मरतबा "ह़म्स" का हाकिम बना दिया। फिर हज़रते अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की हुकूमत में भी येह "ह़म्स" के हाकिम

---

1 ......الاصابة في تمييز الصحابة، حرف العين المهملة، عمرو بن عبسة رضى الله عنه، ج٤،ص ٥٤٧

बनाए गए। इन का शुमार मुहद्दिषीन की फ़ेहरिस्त में होता है और मुहद्दिषीन की एक जमाअ़त ने इन के ह़ल्क़ए दर्स में ह़दीषों का समाअ़ किया है। सि. 56 हि. में रूम की ज़मीन में कुफ़्फ़ार से लड़ते हुवे शहादत से सरफ़राज़ हो गए।[1] (اسد الغابہ،ج۳،ص۲۴۳واکمال،ص۶۰۵)

करामत

मुस्तजाबुद्दा'वात

इन की एक करामत येह है कि इन की दुआ़एं बहुत ज़ियादा और बहुद जल्द क़बूल हुवा करती थीं और इन का बयान है कि एक मरतबा मैं ब ह़ालते सफ़र ह़ज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ था मगर नागहां मेरा ऊंट इस क़दर थक गया कि चलने के क़ाबिल ही न रहा चुनान्चे, मैं ने इरादा कर लिया कि ह़ज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का साथ छोड़ दूं लेकिन फिर मैं ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ मांगी तो बिल्कुल नागहां मेरा ऊंट चाक़ो चौबन्द हो कर तेज़ी के साथ चलने लगा। (طبرانی)

﴾65﴿ ह़ज़रते साइब बिन अक़रअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह क़बीलए बनू षक़ीफ़ की होनहार और नामवर शख़्सिय्यत हैं। इस लिये "षक़फ़ी" कहलाते हैं। इन की वालिदा का नाम "मलीका" था। इन की वालिदा इन को बचपन ही में अपने साथ ले कर बारगाहे नबुव्वत में ह़ाज़िर हुई तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के सर पर अपना दस्ते मुबारक फेरा और इन के लिये दुआ़ फ़रमाई। येह बड़े मुजाहिद थे। निहावन्द की फ़त्ह़ में येह ह़ज़रते नो'मान बिन मक़रन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के झन्डे के नीचे

[1] ……الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص ٦٠٥
واسد الغابة، عبداللّٰه بن قرط رضی اللّٰه عنه، ج٣، ص ٣٧٢

ख़ूब जम कर कुफ़्फ़ार से लड़े। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन को "मदाइन" का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया था। "अस्फ़हान" में इन का इन्तिक़ाल हुवा।(1) (اسد الغابہ،ج۲،ص۲۴۹)

करामत

तस्वीर ने ख़ज़ाना बताया

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन को "मदाइन" का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया। येह एक दिन "किसरा" के मह़ल में बैठे हुवे थे तो देखा कि मह़ल में एक ऐसी तस्वीर है जो उंगली से एक मक़ाम की त़रफ़ इशारा कर रही है। चुनान्चे, आप ने उस मक़ाम को खोदने का हुक्म दिया तो वहां से एक बहुत बड़ा ख़ज़ाना निकला जो वहां मदफ़ून था। आप ने मदीनए मुनव्वरा बारगाहे ख़िलाफ़त में इस की इत्तिलाअ़ दे कर येह दरयाफ़्त फ़रमाया कि इस ख़ज़ाने को मुसलमानों ने जंग कर के ह़ासिल नहीं किया है बल्कि मैं ने इस को तन्हा बर आमद किया है तो मैं इस रक़म को क्या करूं ? ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह हुक्म सादिर फ़रमाया कि चूंकि तुम मुसलमानों के अमीर हो इस लिये इस रक़म को मुसलमानों पर तक़्सीम कर दो।(2)

(رواہ الخطیب کذافی الکنز،ج۳،ص۳۰۵)

﴾66﴿ ह़ज़रते अ़रबाज़ बिन सारियह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

इन की कुन्यत अबू नजीह़ है और इन का ख़ानदानी तअ़ल्लुक़ बनी सुलैम से है। मुफ़्लिस मुहाजिर थे इस लिये मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा के साथ रहते। आख़िर में मुल्के

---

1 ......اسد الغابة، السائب بن الاقرع رضى الله عنه ، ج ٢، ص ٣٧٢

2 ......كنز العمال ، كتاب الزكاة،من قسم الافعال،الحديث:١٦٨٩٣،ج٣،الجزء٦،ص ٢٣٣

शाम चले गए और वहीं सुकूनत इख़्तियार की। हज़रते अबू उमामा और ताबेईन की एक जमाअ़त ने इन से ह़दीषों की रिवायत की है। सि. 75 हि. में शाम में इन का विसाल हुवा।(1) (اسد الغابہ، ج۳، اکمال ص ۶۰۶)

करामत

फ़िरिश्ते से मुलाक़ात और गुफ़्तगू

एक दिन येह दिमश्क़ की जामेअ़ मस्जिद में इस त़रह़ दुआ़ मांग रहे थे कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अब मेरी उ़म्र बहुत ज़ियादा हो गई है और मेरी हड्डियां बहुत ज़ियादा कमज़ोर हो चुकी हैं लिहाज़ा अब तू मुझे वफ़ात दे दे। अचानक इन के पीछे से एक सब्ज़ पोश नौजावन जो बहुत ही ख़ूब सूरत था बोल उठा : ऐ शख़्स ! येह कैसी दुआ़ तू मांग रहा है ? तुम्हें इस त़रह़ दुआ़ करनी चाहिये कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे अ़मल को अच्छा कर दे और मुझ को मेरी अजल तक पहुंचा दे। येह नौजवान की डांट सुन कर चोंके और पूछा कि अल्लाह तआ़ला आप पर रह़्म फ़रमाए, आप कौन हैं ? नौजवान ने कहा : मैं ''रीबाईल'' फ़िरिश्ता हूं और ख़ुदा तआ़ला की त़रफ़ से मेरी येह ज़िम्मेदारी (ड्यूटी) है कि मैं मोअमिनीन के दिलों से रन्जो ग़म को दूर करता हूं।(2) (قال الہیثمی، ج۱۰، ص۱۸۴)

तबसेरा

फ़िरिश्ते का दीदार करना और उस से आमने सामने गुफ़्तगू करना बिलाशुबा येह एक नादिरुल वुजूद करामत है। जो शरफ़े सह़ाबिय्यत के तुफ़ैल में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को मिलती रही है। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم

---

1 ......الاكمال فى اسماء الرجال، حرف العين، فصل فى الصحابة، ص ٦٠٦
واسد الغابة، عرباض بن سارية السلمى، ج ٤، ص ٢٢

2 ......مجمع الزوائد، كتاب الادعية، باب ادعية الصحابة رضى الله عنهم، الحديث: ١٧٤٣٣، ج ١٠، ص ٢٩٥

﴾68﴿ ह़ज़रते ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ

इन की कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह है। येह गुलाम थे, इन को क़बीलए बनी तमीम की एक औ़रत ने ख़रीद कर आज़ाद कर दिया था इस लिये येह तमीमी कहलाते हैं। इब्तिदा ही में इन्हों ने इस्लाम क़बूल कर लिया था और कुफ़्फ़ारे मक्का ने ह़ज़रते अ़म्मार व बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا की त़रह़ इन को भी त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों में मुब्तला किया यहां तक कि इन को कोइलों के ऊपर लिटाते थे और पानी में इस क़दर ग़ोत़ा दिलाते थे कि इन का दम घुटने लगता और येह बेहोश हो जाते मगर सब्रो इस्तिक़ामत का पहाड़ बन कर येह सारी मुसीबतों और तक्लीफ़ों को झेलते रहे और इन के इस्लाम में बाल बराबर भी तज़बज़ुब या तज़लज़ुल पैदा नहीं हुवा।

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द अज़ विसाल मदीनए मुनव्वरा से इन का दिल उठ गया और येह कूफ़ा में जा कर मुक़ीम हो गए और वहीं सि. 37 हि. में 73 बरस की उ़म्र में इन्तिक़ाल फ़रमा गए।[1] (اکمال،ص۵۹۲)

करामत

ख़ुश्क थन दूध से भर गया

इन की एक करामत येह है कि येह एक मरतबा जिहाद के लिये निकले तो एक ऐसे मक़ाम पर पहुंच गए जहां पानी का नामो निशान भी नहीं था। जब येह और इन के साथी प्यास की शिद्दत से माहिये बे आब की त़रह़ तड़पने लगे और बिल्कुल ही निढाल और बे ताब हो गए तो आप ने अपने एक साथी की ऊंटनी को बिठाया और बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ कर उस के थन को हाथ

---

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الخاء، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۲
واسد الغابة، خباب بن الارت، ج ۲، ص ۱۴۱ ملتقطاً

लगाया तो एक दम उस का सूखा हुवा थन इस क़दर दूध से भर गया कि फूल कर मश्क के बराबर हो गया। उस ऊंटनी का दूध दोह कर सब साथियों ने शिकम सैर हो कर पी लिया और सब की जान बच गई।(1)

(قال الہیثمی، ج۶،ص۲۱۰)

﴾68﴿ हज़रते मिक्दाद बिन अल अस्वद कन्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

इन के वालिद का नाम अ़म्र बिन षा'लबा था। अस्वद के बेटे इस लिये कहलाने लगे कि अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूष ज़ोहरी ने इन को अपना मुतबन्नी बना लिया था। इस लिये उस की त़रफ़ मन्सूब हो गए और चूंकि क़बीलए बनी कन्दा से इन्हों ने मुहालिफ़ा कर लिया था और उन के ह़लीफ़ बन गए थे इस लिये इस निस्बत से अपने को कन्दी कहने लगे। इन की कुन्यत "अबू मा'बद" या "अबुल अस्वद" है और येह क़दीमुल इस्लाम हैं। मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से हिजरत कर के ह़बशा चले गए थे। फिर ह़बशा से मक्कए मुकर्रमा वापस चले आए मगर मदीनए मुनव्वरा को हिजरत नहीं कर सके क्यूंकि कुफ़्फ़ार ने हर त़रफ़ से नाकाबन्दी कर के मदीनए मुनव्वरा का रास्ता बन्द कर दिया था यहां तक कि जब हज़रते उ़बैदा बिन अल ह़ारिष رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक छोटा सा लश्कर ले कर मदीनए मुनव्वरा से इकरिमा बिन अबू जहल के लश्कर से लड़ने के लिये आए तो येह और हज़रते उ़त्बा बिन ग़ज़वान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) काफ़िरों के लश्कर में शामिल हो गए और भाग कर मुसलमानों से मिल गए और इस त़रह़ मदीनए मुनव्वरा हिजरत कर के पहुंच गए। येह वोही हज़रते "मिक्दाद बिन अल अस्वद" हैं कि जब रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जंगे बद्र के मौक़अ़ पर सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से मश्वरा फ़रमाया तो इन्हों ने ब आवाज़े बुलन्द येह कहा कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) हम बनी इस्राईल

1 ......مجمع الزوائد، کتاب المغازی والسیر، باب فی سرایاہ، الحدیث:۱۰۳۵۹،ج۶،ص۳۱۱

नहीं हैं जिन्हों ने अपने नबी हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से जंग के वक़्त येह कहा था कि "आप और आप का ख़ुदा दोनों जा कर जंग करें हम तो अपनी जगह बैठे रहेंगे।" बल्कि हम तो आप के वोह जां निषार हैं कि अगर ख़ुदा की क़सम ! हम को आप "बरकुल ग़म्माद" तक ले जाएंगे तो हम आप के साथ चलेंगे और हम आप के आगे, आप के पीछे, आप के दांए, आप के बाएं से उस वक़्त तक लड़ते रहेंगे जब तक कि हमारे बदन में ख़ून का आख़िरी क़त्रा और ज़िन्दगी की आख़िरी सांस बाक़ी है !

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मक्कए मुकर्रमा में सात अश्ख़ास ऐसे थे जिन्हों ने मक्कए मुकर्रमा में कुफ़्फ़ार के सामने सब से पहले अ़लल ए'लान अपने इस्लाम का ए'लान किया इन में से एक "हज़रते मिक़्दाद बिन अल अस्वद" رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी हैं। हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने हर नबी को सात जां निषार रुफ़क़ा दिये हैं लेकिन मुझ को हज़रते हक़ جل مجدہ ने चौदह रुफ़क़ा की जमाअ़त अ़ता फ़रमाई है जिन की फ़ेहरिस्त येह है :

(1) अबू बक्र (2) उ़मर (3) अ़ली
(4) हम्ज़ा (5) जा'फ़र (6) ह़सन
(7) हुसैन (8) अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द
(9) सलमान (10) अ़म्मार (11) हुज़ैफ़ा
(12) अबू ज़र (13) मिक़्दाद (14) बिलाल[1] (رِضی اللّٰہ تعالٰی عنھم اجمعین)

अह़ादीषे पाक में इन के फ़ज़ाइल व मनाक़िब बहुत कषीर हैं। येह तमाम इस्लामी लड़ाइयों में जिहाद करते रहे और फ़त्ह़े मिस्र की मा'रिका आराई में भी इन्हों ने डट कर कुफ़्फ़ार से जंग की।

1 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد...الخ، الحدیث: ۳۸۱۰، ج۵، ص ۴۳۳

सि. 33 हि. में अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त के दौरान मदीनए मुनव्वरा से तीन मील दूर "मक़ामे जरफ़" में सत्तर बरस की उ़म्र पा कर विसाल फ़रमाया और लोग फ़र्ते अ़क़ीदत से अपने कन्धों पर इन के जनाज़ए मुबारका को "जरफ़" से उठा कर मदीनए मुनव्वरा लाए और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न किया।[1] (اکمال،ص۶۱۲ واسد الغابہ،ج۴،ص۴۱۰)

करामत

चूहे ने सत्तरह अशरफ़ियां नज़्र कीं

ज़बाआ़ बिन्ते ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا कहती हैं कि येह इस क़दर तंगदस्ती में मुब्तला थे कि दरख़्तों के पत्ते खाया करते थे। एक दिन एक वीरान जगह में रफ़्ए़ ह़ाजत के लिये बैठे तो अचानक एक चूहा अपने बिल में से एक अशरफ़ी मुंह में ले कर निकला और इन के सामने रख कर चला गया फिर वोह इसी त़रह़ बराबर एक एक अशरफ़ी लाता रहा यहां तक कि सत्तरह अशरफ़ियां लाया।

येह सब अशफ़ियों को ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे और पूरा माजरा अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम्हारे लिये इस माल में कुछ सदक़ा करना ज़रूरी नहीं है। **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें इस माल में बरकत अ़त़ा फ़रमाए। ह़ज़रते ज़बाआ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का बयान है कि इन में से आख़िरी अशरफ़ी अभी ख़त्म नहीं हुई थी कि मैं ने चांदी के ढेर ह़ज़रते मिक़्दाद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर में देख लिये।[2] (ابونعیم فی الدلائل،ج۲،ص۳۹۶)

---

1 ......الاكمال فی اسماء الرجال، حرف الميم، فصل فی الصحابة، ص٦١٦
واسد الغابة، المقداد بن عمرو رضی اللّٰه عنه، ج٥، ص٢٦٥-٢٦٧

2 ......دلائل النبوة لابی نعيم، دعاؤه لمقداد بالبركة ...الخ، لاصدقة عليك...الخ، الحديث: ٣٧٦، ج١، ص٤٦٥

तबसेरा

इस क़िस्म का वाक़िआ़ दूसरे बुज़ुर्गों के लिये भी हुवा है। चुनान्चे, ह़ज़रते अबू बक्र बिन अल ख़ाज़िबा मुह़द्दिष भी रात में कुछ लिख रहे थे तो चूहे का एक जोड़ा उछलता कूदता इन के सामने आया, इन्हों ने एक को प्याले से ढांप दिया। इस के बा'द दूसरे चूहे ने बार बार एक एक अशरफ़ी ला कर इन के सामने रखना शुरूअ़ किया यहां तक कि आख़िर में एक चमड़े की थेली उठा लाया जिस में एक अशरफ़ी थी। इस से इन्हों ने समझ लिया कि चूहे के पास अब कोई अशरफ़ी बाक़ी नहीं रह गई है फिर इन्हों ने प्याला उठा लिया और चूहा निकल कर अपने जोड़े के साथ उछलता कूदता भाग निकला और इन अशरफ़ियों की बदौलत ह़ज़रते अबू बक्र बिन अल ख़ाज़िबा की तंगदस्ती का काल कट गया और वोह ख़ुशह़ाल हो गए।[1] (نفحۃ الیمن وغیرہ)

इस क़िस्म के वाक़िआ़त को रज़्ज़ाक़े मुत़लक़ के फ़ज़्ल और इन बुज़ुर्गों की करामत के सिवा और क्या कहा जा सकता है ?

اِنَّ اللّٰہَ ھُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّۃِ الْمَتِیْنُ ۝[2]

या'नी अल्लाह तआ़ला बहुत बड़ा रोज़ी रसां और बहुत बड़ी क़ुदरत और त़ाक़त का मालिक है।

---

1 ......نفحۃ الیمن، الباب الاوّل فی الحکایات، ص٦

2 ......پ٢٧، الذّٰریٰت: ٥٨

इन बुज़ुर्गों ने शरफ़े सहाबिय्यत से सरफ़राज़ हो कर ख़ुदा के महबूब की जिस जज़्बए जां निषारी के साथ ख़िदमत गुज़ारी की और इस के सिले में हक़ جَلَّ جَلَالُہٗ ने दुन्या ही में इन शम्ए नबुव्वत के परवानों को ऐसी ऐसी करामतें अ़ता फ़रमाईं हैं जो यक़ीनन महिय्यरुल उ़क़ूल हैं और अभी आख़िरत में वोह रहीमो करीम मौला अपने फ़ज़्लो करम से इन आशिक़ाने रसूल को जो अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाने वाला है इस को तो कोई सोच भी नही सकता कि उस की कमिय्यत व कैफ़िय्यत की अ़ज़्मत का क्या आ़लम होगा ? ह़दीष शरीफ़ की रोशनी में बस इतना ही कहा जा सकता है

لَا عَيْنٌ رَأَتْ وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ وَمَا خَطَرَ عَلٰى قَلْبِ بَشَرٍ (1)

(या'नी उन ने'मतों को न किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना न किसी आदमी के दिल पर कभी इस का ख़याल गुज़रा ।)

﴾69﴿ ह़ज़रते उ़र्वह बिन अबिल जा'द बारिक़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

इन के मोरिषे आ'ला का नाम "बारिक़" था । इस निस्बत से इन को "बारिक़ी" कहते हैं । इन को अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में कूफ़ा का क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमा दिया था । येह बरसों कूफ़ा ही में रहे । इस लिये कूफ़ा के मुह़द्दिषीन में शुमार होते हैं और इन के शागिर्दों में ज़ियादा तर कूफ़ा ही के लोग हैं । ह़ज़रते इमाम शा'बी इन के शागिर्दों में बहुत ही मश्हूर व मुम्ताज़ और निहायत बुलन्द पाया और नामवर मुह़द्दिष हैं ।(2)

(اکمال،ص۶۰۲وغیرہ)

---

1 ......مشکاة المصابیح،کتاب احوال القیامة...الخ، باب صفة الجنة واھلھا، الحدیث:۵۶۱۲، ج۲، ص۳۲۹

2 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص۶۰۶ واسد الغابة، عروة بن الجعد، ج۴، ص۳۰۔۳۱ ملتقطاً

करामत

मिट्टी भी ख़रीदते तो नफ़्अ़ उठाते

इन को रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दीनार दे कर हुक्म फ़रमाया कि वोह एक बकरी ख़रीद लाएं। इन्हों ने बाज़ार जा कर एक दीनार में दो बकरियां ख़रीदीं। फिर रास्ते में किसी आदमी के हाथ एक बकरी एक दीनार में फ़रोख़्त कर के दरबारे रिसालत में हाज़िर हुवे और एक बकरी और एक दीनार ख़िदमते अक़्दस में पेश कर दी और बकरी की ख़रीदारी का पूरा वाक़िआ़ भी सुना दिया। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुश हो कर इन की ख़रीदो फ़रोख़्त में बरकत की दुआ़ फ़रमा दी और इस दुआ़ए नबवी की बरकत का येह अषर हुवा कि:

فَکَانَ لَوِ اشْتَرٰی تُرَابًا لَرَبِحَ فِیْہِ (या'नी अगर वोह मिट्टी भी ख़रीदते तो उस में भी उन को नफ़्अ़ ही नफ़्अ़ होता।) येह इन की करामत थी।[1]

(مشکوٰۃ،ج۱،ص۲۵۴،باب الشرکۃ والوکالت بحوالہ بخاری)

﴿70﴾ ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ

येह क़बीलए अन्सार के ख़ानदाने बनू नज्जार में से थे। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा ह़ज़रते बीबी उम्मे सुलैम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने बेवा हो जाने के बा'द इन से निकाह़ कर लिया था। येह बहुत ही मश्हूर तीर अन्दाज़ और निशाना बाज़ थे। इन के बारे में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया था कि लश्कर में अबू त़ल्ह़ा की एक ललकार एक हज़ार सुवारों से बढ़ कर रो'बदार है। येह हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हिजरत फ़रमाने से क़ब्ल ही ह़ज के मौक़अ़ पर मिना की घाटी में अपने

1 ......مشکاۃ المصابیح، کتاب البیوع، باب الشرکۃ والوکالۃ، الحدیث:۲۹۳۲،ج۱،ص۵۴۱

सत्तर साथियों के साथ हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बैअ़ते इस्लाम कर के मुसलमान हो गए थे। फिर जंगे बद्र व जंगे उहुद और इस के बा'द की तमाम इस्लामी लड़ाइयों में इन्तिहाई जज़्बए ईमानी और जोशे इस्लामी के साथ जिहाद करते रहे और बड़े बड़े मुजाहिदाना कारनामों का मुज़ाहरा कर के और इस्लामी ख़िदमात के शाहकार पेश कर के सि. **31** हि. में सतत्तर बरस की उ़म्र में राहिये मुल्के बक़ा हुवे।[1] (اکمال،ص۶۰۱وکنزالعمال،ج۱۲،ص۲۷۷)

करामत

लाश ख़राब नहीं हुई !

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रावी हैं कि एक दिन बुढ़ापे में हज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सूरए बराअत की तिलावत कर रहे थे, जब इस आयत पर पहुंचे [2] اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا तो आप ने फ़रमाया कि ऐ मेरे बच्चो ! मुझे तुम लोग जिहाद का सामान दो क्यूंकि मेरा रब जवानी और बुढ़ापे दोनों ह़ालतों में मुझे जिहाद का हुक्म फ़रमाता है। इन के बेटों ने कहा कि आप ने हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व हज़रते उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के दौर में तमाम जिहादों में शिर्कत की सआदत ह़ासिल कर ली है अब आप बुढ्ढे हो चुके हैं इस लिये अब जिहाद में न जाइये हम लोग आप की त़रफ़ से जिहाद कर रहे हैं और करते भी रहेंगे। मगर येह किसी तरह भी घर बैठने पर राज़ी नहीं हुवे और जिहाद का सामान

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الطاء، فصل فی الصحابة، ص ٦٠١
و کنزالعمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة وفضلهم رضی اللّٰه عنهم، الحدیث:
٣٣٣٧٥، ٣٣٣٧٦، ج٦، الجزء١١، ص٣١٩

2 *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कूच करो हल्की जान से चाहे भारी दिल से* (پ۱۰،التوبۃ:۴۱)

जम्अ़ कर के जिहाद में जाने वाली एक कश्ती पर सुवार हो कर जिहाद के लिये रवाना हो गए। ख़ुदा की शान कि इस कश्ती ही पर इन की वफ़ात हो गई। इत्तिफ़ाक़ से इन की क़ब्र के लिये समन्दर में कोई जज़ीरा भी नहीं मिला, सात दिनों तक कश्ती में आप की लाश मुबारक रखी रही, सातवें दिन समन्दर में एक जज़ीरा मिला तो आप उस जज़ीरे में मदफ़ून हुवे। सात दिन गुज़रने के बा वुजूद आप के जिस्मे अत़्हर पर किसी क़िस्म का कोई तग़य्युर (बदलाव) रूनुमा नहीं हुवा था।(1) (استیعاب لابن عبدالبر، ج۱،ص۵۵۰)

तबसेरा

अल्लाहु अक्बर ! येह जज़्बए ईमानी और जोशे जिहाद, ऐ आस्मान ! बता ! ऐ सूरज ! बोल ! क्या तुम ने ज़मीन के बेशुमार चक्कर काटने के बा वुजूद ज़मीन पर इस की कोई मिषाल देखी है ? येह हैं मेरे प्यारे रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के प्यारे सह़ाबी के लाषानी शाहकार।

﴾71﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

कुरैश के एक ख़ानदान "बनू असद" से इन का नसबी तअ़ल्लुक़ है। येह ह़ज़रते उम्मुल मोअमिनीन ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के भाई हैं। येह इब्तिदाए इस्लाम ही में ईमान की दौलत से मालामाल हो गए थे और पहले ह़बशा फिर मदीनए मुनव्वरा की दोनों हिजरतों के शरफ़ से सरफ़राज़ हो कर "साह़िबुल हिजरतैन" का लक़ब पाया। जंगे बद्र के मा'रिके में इन्तिहाई जांबाज़ी और सरफ़रोशी के जज़्बे से जंग की और सि. 3 हि. को जंगे उहुद में कुफ़्फ़ार से लड़ते हुवे जामे शहादत नौश फ़रमाया।

1 ......الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، حرف الزای، زید بن سھل رضی اللّٰہ عنہ، ج۲،ص۱۲۳

इन की एक करामत येह भी है कि येह बहुत ही "मुस्तजाबुद्दा'वात" थे। या'नी इन की दुआ़ए बहुत ज़ियादा और बहुत ही जल्द मक़्बूल हुवा करती थीं।[1] (اکمال،ص۶۰۳واسدالغابہ،ج۱ص۱۳۱)

करामत

अनोखी शहादत

आप ने जंगे उहुद के एक दिन क़ब्ल येह दुआ़ मांगी कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे तेरी क़सम कि जब कुफ़्फ़ारे मक्का से लड़ने के लिये कल मैदाने जंग में निकलूं तो मेरे मुक़ाबले में ऐसा काफ़िर आए जो सख़्त ह़म्ला आवर और इन्तिहाई जंगजू हो और मैं उस से लड़ते हुवे बराबर ज़ख़्म खाता रहूं यहां तक कि वोह मुझे क़त्ल कर दे और कुफ़्फ़ार मेरा शिकम फाड़ डालें और मेरी नाक कान को काट कर मेरी सूरत बिगाड़ दें और मैं जब इसी ह़ालत में क़ियामत के दिन तेरे ह़ुज़ूर खड़ा किया जाऊं तो उस वक़्त तू मुझ से येह दरयाफ़्त फ़रमाए कि ऐ अ़ब्दुल्लाह ! किस वजह से और किस ने तेरी नाक और कान को काट डाला है ? तो मैं येह जवाब अ़र्ज़ करूं कि ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे और तेरे रसूल के दुश्मनों ने तेरे और तेरे रसूल के बारे में मुझे क़त्ल कर के मेरी नाक और कान को काट कर मेरी शक्लो सूरत बिगाड़ दी है। मेरा येह जवाब सुन कर फिर ऐ मेरे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू सिर्फ़ इतना फ़रमा दे कि ऐ अ़ब्दुल्लाह ! तू सच कहता है।

---

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص۶۰۳
و اسد الغابة ، عبداللّٰه بن جحش، ج۳، ص ۱۹۵

आप की येह दुआ़ ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ क़बूल हुई चुनान्चे, ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं ने ही इन की दुआ़ पर आमीन कही थी और मैं ने अपनी आंखों से देखा कि जंगे उहुद में कुफ़्फ़ार ने इन को शहीद कर के इन के शिकम को फाड़ डाला और इन की नाक, कान और दूसरे आ'ज़ा को काट कर एक धागे में पिरो दिया था और इसी ह़ालत में आप ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ एक ही क़ब्र में दफ़्न किये गए ।(1)

(کنزالعمال، ج۱۶،ص۹۸واسدالغابہ،ج۳،ص۱۳۱وغیرہ)

तबसेरा

अल्लाहु अक्बर ! किस क़दर इन शम्ए नबुव्वत के परवानों को शौक़े शहादत था ? इस ज़माने में इसे कोई सोच भी नहीं सकता क्यूंकि ईमानी ह़रारत की बेहद कमी हो गई है वरना ह़क़ीक़त येह है :

शहादत है मत़लूब व मक़्सूदे मोमिन
न माले ग़नीमत न किशवर कुशाई

﴾72﴿ ह़ज़रते बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह बहुत ही नामवर सह़ाबी और हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ख़ादिमे ख़ास ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भाई हैं । बहुत ही बहादुर और निहायत ही जंगजू और सरफ़रोश मुजाहिद हैं । मुसैलिमतुल कज़्ज़ाब से जंग के वक़्त जिस बाग़ में येह झूटा मुद्दइये नबुव्वत छुप कर अपनी फ़ौजों की कमान कर रहा था, इस बाग़ का फाटक किसी त़रह़ फ़त्ह़ नहीं होता था और वहां घमसान की जंग हो रही थी तो आप ने मुसलमान मुजाहिदीन से फ़रमाया कि तुम लोग मुझे उठा कर बाग़ की दीवार के उस पार फैंक दो मैं अन्दर जा कर फाटक खोल दूंगा । चुनान्चे, मुसलमान मुजाहिदों ने इन को उठा कर

1 ......اسد الغابة، عبد الله بن جحش، ج۳، ص۱۹۵۔۱۹۶ ملتقطاً

दीवार के उस पार डाल दिया और इन्हों ने बिल्कुल तन्हा दुश्मनों से लड़ते हुवे बाग़ का फाटक खोल दिया और इस्लामी फ़ौज बाग़ में दाख़िल हो गई । येह वाक़िआ हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त के दौरान हुवा मगर बाग़ का फाटक खोलने की ज़बरदस्त लड़ाई में हज़रते बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्म पर तीर व तल्वार और नेज़ों के ज़ख़्म जब गिने गए तो अस्सी से कुछ ज़ाइद ज़ख़्म थे । चुनान्चे, इन के इलाज के लिये अमीरे लश्कर हज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस जगह एक माह तक रुकना पड़ा ।

इन की ऐसी दीलेराना जां बाज़ियों की बिना पर हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में फ़ौजों को सख़्त ताकीद फ़रमाते रहते थे कि "ख़बरदार ! बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कभी फ़ौज का सिपह सालार न बनाया जाए वरना वोह सारी क़ौम को हलाकत में डाल देंगे क्यूंकि वोह अन्जाम से बेपरवाह हो कर दुश्मनों की सफ़ों में घुस जाते हैं ।" इन के बारे में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "बहुत से ऐसे लोग हैं जिन के बाल परागन्दा और वोह गर्दो गुबार में अटे हुवे मैले कुचेले रहते हैं और लोग उन की परवा भी नहीं करते मगर येह लोग **अल्लाह** तआ़ला के दरबार में इस क़दर मह़बूब व मक़्बूल होते हैं कि अगर येह लोग किसी बात की क़सम खा लें तो **अल्लाह** तआ़ला इन की क़सम को पूरी फ़रमा देगा और बरा बिन मालिक इन्हीं लोगों में से हैं ।" येह बहुत ही ख़ुश आवाज़ भी थे और बेहतरीन हुदीख़्वाह थे जिन के गीतों के नग़मों पर ऊंट मस्त हो कर चला करते थे और शुतर सुवार भी कैफ़ो निशात़ में रहा करते थे । इन की दिलेरी और जवांमर्दी के सिलसिले में येह रिवायत बहुत ही मश्हूर है कि इराक़ की लड़ाइयों में येह अपने भाई हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ दुश्मनों के एक क़ल्ए़ का मुहा़सरा

किये हुवे थे जो मौज़ए "हरीक़" में था। कुफ़्फ़ार गर्म गर्म ज़न्जीरों में लोहे के आंकड़े लगा कर क़ल्ए की दीवार से मुसलमानों पर डालते थे और इन को आंकड़ों में फंसा कर अपनी त़रफ़ खींच लेते थे। उन काफ़िरों ने ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी आंकडों में फंसा लिया और ऊपर खींचने लगे जब ह़ज़रते बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह मन्ज़र देखा तो तड़प कर उछले और क़ल्ए की दीवार पर चढ़ कर जलती हुई ज़न्जीर को पकड़ा और फिर उस रस्सी को काट दिया जिस में ज़न्जीर बन्धी हुई थी इस त़रह ह़ज़रते अनस बिन मालकि رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जान बच गई मगर ह़ज़रते बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने गर्म ज़न्जीर को जो हाथ से पकड़ा तो इन की हथेलियों का पूरा गोश्त जल गया और सफ़ेद सफ़ेद हड्डियां नज़र आ रही थी। सि. **20** हि.जंगे तस्तर में एक सो काफ़िरों को अपनी तल्वार से क़त्ल कर के खुद भी उ़रूसे शहादत से हमकिनार हो गए।(1) (اسد الغابہ، ج۱، ص۳۷۳ و اصابہ، ج۱، ص۱۴۳)

करामत

फ़त्ह़ व शहादत एक साथ

इन की एक ख़ास करामत दुआ़ओं की मक़्बूलिय्यत है। मन्क़ूल है कि "जंगे तस्तर" में जब त़वील जंग के बा वुजूद मुसलमानों को फ़त्ह़ नसीब नहीं हुई तो मुजाहिदीने इस्लाम ने जम्अ़ हो कर इन से गुज़ारिश की, कि आप अपने रब की क़सम दे कर फ़त्ह़ की दुआ़ मांगिये। उस वक़्त आप ने इस त़रह़ दुआ़ मांगी कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ को तेरी ही क़सम दे कर दुआ़ करता हूं कि तू कुफ़्फ़ार के बाज़ू हम लोगों के हाथों में दे दे और मुझे अपने

(1)......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب البراء بن مالك، الحديث: ٣٨٨٠، ج٥، ص٤٥٩ و اسد الغابة، البراء بن مالك، ج١، ص٢٥٩-٢٦٠ و الاصابة فی تمييز الصحابة، حرف الباء، البراء بن مالك بن النضر الانصاری، ج١، ص٤١٢-٤١٤

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास पहुंचा दे। फ़ौरन ही आप की दुआ मक़्बूल हो गई और इस्लामी लश्कर फ़त्ह्याब हो गया और कुफ़्फ़ार मुसलमानों के हाथों में गिरिफ़्तार हो गए और आप इसी लड़ाई में शहादत से सरफ़राज़ हो कर हुज़ूर रह्मते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार में बारयाब हो गए।(1) (اصابہ، ج۱،ص۱۴۶)

﴾73﴿ हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ

यमन के क़बीले दौस से इन का ख़ानदानी तअ़ल्लुक़ है। ज़मानए जाहिलिय्यत में इन का नाम "अ़ब्दुश्शम्स" था मगर जब येह सि. 7 हि. में जंगे ख़ैबर के बा'द दामने इस्लाम में आ गए तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन का नाम अ़ब्दुल्लाह या अ़ब्दुर्रह्मान रख दिया। एक दिन हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इन की आस्तीन में एक बिल्ली देखी तो आप ने इन को या अबा हुरैरा (ऐ बिल्ली के बाप!) कह कर पुकारा। उसी दिन से इन का येह लक़ब इस क़दर मश्हूर हो गया कि लोग इन का अस्ली नाम ही भूल गए। येह बहुत ही इबादत गुज़ार, इन्तिहाई मुत्तक़ी और परहेज़गार सहाबी हैं।

हज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि येह रोज़ाना एक हज़ार रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़ा करते थे। आठ सो सहाबा और ताबेईन आप के शागिर्द हैं। आप ने पांच हज़ार तीन सो चोहत्तर ह़दीषें रिवायत की हैं जिन में से चार सो छियालीस बुख़ारी शरीफ़ में हैं। सि. 59 हि. में अठत्तर साल की उ़म्र पा कर मदीनए मुनव्वरा में वफ़ात पाई और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हुवे।(2)

(اکمال،ص۶۲۲وقسطلانی،ج۱،ص۲۱۲وغیرہ)

---

1 ......الاصابة فی تمییز الصحابة، حرف الباء، البراء بن مالك، ج۱، ص۴۱٤

2 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الهاء، فصل فی الصحابة، ص۶۲۲
واسد الغابة، ابوهريرة، ج۶، ص۳۳۶۔۳۳۷
وارشاد الساری لشرح صحيح البخاری، کتاب الايمان، باب امور الايمان، تحت الحديث:۹، ج۱، ص۱۵۵

करामत

करामत वाली थेली

इन को हुज़ूरे अकरम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने चन्द छूहारे अ़ता फ़रमाए और हुक्म दिया कि "इन को अपनी थेली में रख लो और जब जी चाहे तुम इस में से हाथ डाल कर निकालो और खुद खाओ, दूसरों को खिलाओ मगर ख़बरदार ! इस थेली को कभी ख़ाली कर के मत झाड़ना येह छूहारे कभी ख़त्म न होंगे।"

سُبْحٰنَ الله येह थेली ऐसी बा बरकत हो गई कि तीस बरस तक ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस थेली में से छूहारे निकाल निकाल कर खाते रहे और लोगों को खिलाते रहे बल्कि कई मन इस में से ख़ैरात भी कर चुके मगर छूहारे ख़त्म नहीं हुवे यहां तक कि ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के दिन हंगामों की भीड़ भाड़ में वोह थेली कमर से कट कर कहीं गिर पड़ी जिस का उ़म्र भर ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बे इन्तिहा सदमा और रन्जो मलाल रहा। रास्तों में रोते हुवे और निहायत रिक़्क़त अंगेज़ और दर्द भरे लहजे में येह शे'र पढ़ते हुवे घूमते फिरते थे :

لِلنَّاسِ هَمٌّ وَلِى فِى الْيَوْمِ هَمَّان
فَقْدُ الْجِرَابِ وَقَتْلُ الشَّيْخِ عُثْمَان

(या'नी सब को आज एक ही तो ग़म है मगर मुझे दो ग़म हैं। एक ग़म है थेली के गुम होने का दूसरा ग़म ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत का।)[1] (الکلام المبین)

[1] ......مرقاة المفاتيح شرح مشكاة المصابيح، تحت الحديث:٥٩٣٣، ج١٠، ص٢٦٩

﴾74﴿ हज़रते उब्बाद बिन बिशर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

येह मदीनए मुनव्वरा के बाशिन्दे (अन्सारी) हैं। जो ख़ानदाने "बनी अ़ब्दुल अशहल" के एक बहुत ही नामवर शख़्स हैं। हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की हिजरत से क़ब्ल ही हज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ पर इस्लाम क़बूल किया। बहुत ही दिलेर और जांबाज़ सहाबी हैं। जंगे बद्र और जंगे उहुद वग़ैरा के तमाम मा'रिकों में बड़ी जुरअत व शुजाअ़त के साथ कुफ़्फ़ार से जंग आज़मा हुवे।

"का'ब बिन अशरफ़" यहूदी जो हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का बदतरीन दुश्मन था, आप हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा व अबू अ़बस बिन जब्र और अबू नाइला वग़ैरा चन्द अन्सारियों को अपने साथ ले कर उस के मकान पर गए और उस को क़त्ल कर डाला। अफ़ाज़िल सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ में आप का शुमार है।

हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का बयान है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते उ़ब्बाद बिन बिशर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की आवाज़ सुनी तो फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला हज़रते उ़ब्बाद बिन बिशर पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाए। सि. **12** हि. की जंगे यमामा में शहीद हो गए जब कि आप की उ़म्र शरीफ़ सिर्फ़ पैंतालीस साल की थी।[1] (اکمال،ص۶۰۵واسدالغابہ،ج۳،ص۱۰۰)

करामात

लाठी रोशन हो गई

एक मरतबा येह और हज़रते उसैद बिन हुज़ैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) दोनों दरबारे रिसालत से काफ़ी रात गुज़रने के बा'द अपने घरों को रवाना हुवे। अन्धेरी रात में जब रास्ता नज़र नहीं आया तो अचानक इन की लाठी टॉर्च की तरह रोशन हो गई और येह दोनों इस की

1 ......اسد الغابة، عباد بن بشر بن وقش، ج۳، ص۱۴۸، ۱۴۹

रोशनी में चलते रहे। जब दोनों का रास्ता अलग अलग हो गया तो हज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की लाठी भी रोशन हो गई और दोनों रोशनी में अपने अपने घर पहुंच गए।(1) (اسد الغابہ، ج۳، ص۱۰۱)

करामत वाला ख़्वाब

जंगे यमामा में जब कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का लश्कर मुसैलिमतुल कज़्ज़ाब की फ़ौजों के साथ मसरूफ़े जंग था और मुर्तदीन बहुत ही कषीर ता'दाद में जम्अ़ हो कर बहुत सख़्त जंग कर रहे थे। हज़रते उ़ब्बाद बिन बिशर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि मैं ने रात में एक ख़्वाब देखा है कि मेरे लिये आस्मान के दरवाज़े खोल दिये गए और जब मैं आस्मान में दाख़िल हो गया तो दरवाज़े बन्द कर दिये गए। मेरे इस ख़्वाब की ता'बीर येही है कि اِن شاءَ اللہ تعالٰی मुझे शहादत नसीब होगी। चुनान्चे, हज़रते अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि जंगे यमामा के दिन हज़रते उ़ब्बाद बिन बिशर ज़ोर ज़ोर से येह ए'लान कर रहे थे कि मुख़्लिस मोअमिनीन मेरे पास आ जाएं। इस आवाज़ पर चार सो अन्सारी इन के पास जम्अ़ हो गए।

फिर आप हज़रते अबू दजाना और हज़रते बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को साथ ले कर उस बाग़ के दरवाज़े पर हम्ला आवर हुवे जहां से मुसैलिमतुल कज़्ज़ाब अपनी फ़ौजों की कमान कर रहा था इस हम्ले में इन्तिहाई सख़्त लड़ाई हुई यहां तक कि हज़रते उ़ब्बाद बिन बिशर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शहीद हो गए। इन के चेहरे पर तल्वारों के ज़ख़्म इस क़दर ज़ियादा लगे थे कि कोई इन को पहचान न सका। इन के बदने मुबारक पर एक ख़ास निशान

1 ......اسد الغابة، عباد بن بشر بن وقش، ج٣، ص١٤٩

था जिस को देख कर लोगों ने पहचाना कि येह ह़ज़रते उ़बाद बिन बिशर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की लाश है।(1) (ابن سعد، ج۳،ص۳۴۱)

तबसेरा

अल्लाहु अकबर ! जिहाद में येह जोशे ईमानी और येह जज़्बए सरफ़रोशी मुश्किल ही से इस की मिषाल मिलेगी। इस क़िस्म की जांनिषारियां सिर्फ़ सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم और अहले ईमान मुजाहिदीने इस्लाम ही का तुर्रए इम्तियाज़ है। सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की इन्ही क़ुरबानियों का सदक़ा है कि आज तमाम दुन्या में इस्लाम की रोशनी फैली हुई है। काश ! **दुश्मनाने सहाबा** (रवाफ़िज़ व ख़वारिज) इन चमकती हुई हिदायत आफ़रीं रिवायतों से ईमान का नूर ह़ासिल करते।

﴾75﴿ ह़ज़रते उसैद बिन अबी अयास अ़दवी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सारियह बिन ज़नीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिन को ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मदीनए मुनव्वरा में मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मिम्बर से पुकारा था और वोह निहावन्द में थे येह उन्ही के भतीजे हैं येह शाइ़र थे और हुज़ूर नबिय्ये करीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की हिज्व में अश्आ़र कहा करते थे। फ़त्ह़े मक्का के दिन भाग कर ताइफ़ चले गए थे। येह उन इश्तिहारी मुजरिमों में से थे जिन के बारे में येह फ़रमाने नबवी था कि येह जहां और जिस ह़ाल में मिलें क़त्ल कर दिये जाएं। इत्तिफ़ाक़ से ह़ज़रते सारियह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ताइफ़ में गुज़र हुवा। जब मुलाक़ात हुई तो आप ने उसैद बिन अबी अयास को बताया कि अगर तुम बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर इस्लाम क़बूल कर लो तो तुम्हारी जान बच जाएगी।

---

1 ......الطبقات الکبری لابن سعد، طبقات البد ريين من الانصار...الخ، عباد بن بشر، ج۳، ص۳۳٦

उसैद येह सुन कर ताइफ़ से अपने मकान पर आए और कुर्ता पहन कर और इमाम बांध कर ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो गए और अ़र्ज़ किया कि क्या आप ने उसैद बिन अबी अयास का ख़ून मुबाह़ फ़रमा दिया है ? आप ने फ़रमाया कि हां ! इन्हों ने अ़र्ज़ किया कि अगर वोह मुसलमान हो कर आप की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो जाए तो क्या आप उस का क़ुसूर मुआ़फ़ फ़रमा देंगे ? इरशाद हुवा कि हां ! येह सुन कर इन्हों ने अपना हाथ हुज़ूरे अकरम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दस्ते अक़्दस में दे कर कलिमा पढ़ा और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसैद बिन अबी अयास मैं ही हूं। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़ौरन ही एक आदमी को भेज कर ए'लान करा दिया कि उसैद बिन अबी अयास मुसलमान हो गए हैं और सरकारे रिसालत ने इन को अम्न का परवाना अ़ता फ़रमा दिया है। फिर इन्हों ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मद्ह़ में एक क़सीदा पढ़ा।[1] (اسد الغابہ،ج۱،ص۸۹)

करामत

चेहरे से घर रोशन

जब येह मुसलमान हो गए तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुश हो कर अज़् राहे करम इन के चेहरे और सीने पर अपना मुनव्वर हाथ फेरा जिस से इन को येह करामत नसीब हो गई कि येह जब किसी अन्धेरे घर में क़दम मुबारक रखते थे तो उस घर में इन के नूरानी चेहरे की रोशनी से उजाला हो जाया करता था।[2]

(کنز العمال،ج۱۵،ص۲۵۳)

---

1 ......اسد الغابة، اسيد بن ابى اناس، ج ١، ص١٣٨ ملخصاً
وكنزالعمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث:٣٦٨١٩،ج٧، الجزء١٣،ص١٢٣

2 ......كنزالعمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث:٣٦٨١٩،ج٧، الجزء١٣،ص١٢٣

तबसेरा

سُبْحٰنَ اللہ ! जब तक सरकार, रहमते मदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन से नाराज़ रहे इन का ख़ून मुबाह़ था और कहीं इन का ठिकाना नहीं था। भागते फिरते थे और जान की अमान नहीं मिलती थी और जब रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन से ख़ुश हो गए तो इन को दुन्या में करामत और आख़िरत में जन्नत यूं दोनों जहान की दौलत मिल गई। येह सच है

जिस से तुम रूठो वोह सरगुश्तए दुन्या हो जाए
जिस को तुम चाहो वोह क़त़रा हो तो दरया हो जाए

﴾76﴿ ह़ज़रते बिशर बिन मुआ़विय्या बकाई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह अपनी क़ौम के वफ़्द में अपने वालिद मुआ़विय्या बिन षौर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे। इन के वालिद ने इन से फ़रमा दिया था कि तुम बारगाहे रिसालत में तीन बातों के सिवा कुछ भी न कहना :

﴾1﴿ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

﴾2﴿ या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम इस लिये ह़ाज़िर हुवे हैं ताकि हम इस्लाम क़बूल कर के आप के फ़रमां बरदार बन जाएं।

﴾3﴿ आप हमारे लिये दुआ़ फ़रमाएं। इन की इन तीन बातों को सुन कर हु़ज़ूर रह़्मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुश हो कर जोशे मह़ब्बत में इन के चेहरे और सर पर हाथ मुबारक फेरा और इन के लिये दुआ़ फ़रमाई।[1] (اسد الغابہ،ج۱،ص۱۹۰)

करामत

हाथ हर मरज़ की दवा

हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जैसे ही अपना दस्ते मुबारक फेरा इन को दो करामतें मिल गईं। एक तो येह कि हमेशा

1 ......اسد الغابة، بشر بن معاوية، ج ١، ص ٢٨٣

के लिये इन का चेहरा रोशन हो गया और दूसरी करामत येह मिली कि येह जिस बीमार पर अपना हाथ फेर देते फ़ौरन ही वोह शिफ़ायाब हो जाया करता था।(1) (کنز العمال،ج۱۵،ص۲۶۷،مطبوعہ حیدرآباد)

हज़रते बिशर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साहिबज़ादे "मुहम्मद बिन बिशर" फ़ख़्र के तौर पर इस बारे में अश्आर पढ़ा करते थे जिस का पहला शे'र येह है

وَاَبِی الَّذِیْ مَسَحَ النَّبِیُّ بِرَأْسِہٖ
وَدَعَا لَہٗ بِالْخَیْرِ وَالْبَرَکَاتِ

(या'नी मेरे बाप वोह हैं जिन के सर पर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हाथ फेर कर ख़ैरो बरकत की दुआ फ़रमाई है।)(2)

(اسد الغابہ،ج۱،ص۱۹۰)

﴾77﴿ हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आज़ाद कर्दा गुलाम मुतबन्नी "हज़रते ज़ैद बिन हारिषा" رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़रज़न्द हैं। इन की मां की कुन्यत "उम्मे ऐमन" नाम "बरका" था और हज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का लक़ब "महबूबे रसूल" है। वफ़ाते अक़्दस के वक़्त इन की उम्र सिर्फ़ बीस साल की थी मगर हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इन को उस लश्कर का सिपह सालार बनाया था जो रूमियों से जंग के लिये जा रहा था और जिस लश्कर में तमाम बड़े बड़े सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم मौजूद थे लेकिन हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वफ़ाते अक़्दस की वजह से येह लश्कर वापस आ गया मगर फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोबारा इस लश्कर को भेजा जो **फ़त्ह़याब** हो कर आया। चूंकि येह "महबूबे रसूल" थे इसी लिये अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

1 ......کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحدیث:٣٦٨٥٦،ج٧، الجزء١٣،ص١٢٣

2 ......اسد الغابة،بشر بن معاویة، ج١،ص٢٨٣

इन का बे हद इकराम व एहतिराम फ़रमाते थे। जब आप ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में मुजाहिदीन की तनख़्वाहें मुक़र्रर फ़रमाईं तो इन की तनख़्वाह साढ़े तीन हज़ार दिरहम मुक़र्रर फ़रमाई और अपने बेटे हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तनख़्वाह सिर्फ़ तीन हज़ार दिरहम मुक़र्रर फ़रमाई। साहिबज़ादे ने अ़र्ज़ किया कि ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप ने हज़रते उसामा की तनख़्वाह मुझ से ज़ियादा क्यूं मुक़र्रर फ़रमाई जब कि वोह किसी जिहाद में भी मुझ से आगे नहीं रहे ? इस के जवाब में अमीरुल मोअमिनीन ने फ़रमाया : इस लिये कि उसामा के बाप "ज़ैद" तुम्हारे बाप "उ़मर" से ज़ियादा रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मह़बूब थे और "उसामा" तुम से ज़ियादा हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मह़बूब हैं।(1)

(کنز العمال، ج۱۵، ص۲۴۱ واکمال، ص۵۰۵)

बे अदबी करने वाले काफ़िर हो गए

हुज़ूरे अकरम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने हुज्जतुल वदाअ़ में त़वाफ़े ज़ियारत को इस लिये कुछ मुअख़्ख़र कर दिया कि हज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी ह़ाजत की वजह से कहीं चले गए थे थोड़ी देर के बा'द हज़रते उसामा वापस आए तो लोगों ने देखा कि चपटी नाक और काले रंग का एक लड़का है तो यमन के कुछ लोगों ने ह़क़ारत के अन्दाज़ में येह कहा कि क्या इसी चपटी नाक वाले काले लड़के की वजह से आज हम लोगों को हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने त़वाफ़े ज़ियारत से रोक रखा था ? इस त़रह़ इन यमन वालों ने हज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बे अदबी की ! हज़रते उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाया करते थे कि हज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की

---

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الهمزة، فصل فی الصحابة، ص ٥٨٥
كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث:٣٦٧٨٩، ج٧، الجزء١٣، ص ١١٨
واسد الغابة، اسامة بن زيد، ج ١، ص ١٠٤

इस बे अदबी करने ही का वबाल था कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द यमन के येह बे अदबी करने वाले लोग काफ़िर व मुर्तद हो गए और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ौजों ने इन लोगों से जिहाद किया तो कुछ इन में से तौबा कर के फिर मुसलमान हो गए और कुछ क़त्ल हो गए।[1] (کنز العمال، ج۱۵،ص۲۴۳)

﴾78﴿ ह़ज़रते नाबग़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

"नाबग़ा" इन का लक़ब है। इन के नाम में इख़्तिलाफ़ है। बा'ज़ ने इन का नाम "क़ैस बिन अ़ब्दुल्लाह" और बा'ज़ ने "ह़ब्बान बिन क़ैस" बताया है। येह ज़मानए जाहिलिय्यत में बहुत अच्छे शाइ़र थे मगर तीस बरस के बा'द शे'र गोई बिल्कुल छोड़ दी। इस के बा'द जब दोबारा शे'र कहना शुरूअ़ किया तो इस क़दर बुलन्द मर्तबा और बा कमाल शाइ़र हो गए कि इन के हम अ़स्रों ने इन को "नाबग़ा" (बहुत ही माहिर) का लक़ब दे दिया। एक सो अस्सी बरस की उ़म्र पाई।[2] (حاشیہ کنز العمال، ج۱۶،ص۲۱۱، مطبوعہ حیدر آباد)

करामत

सो बरस तक दांत सलामत

इन्हों ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को चन्द अश्आ़र सुनाए जो आप को बहुत ही ज़ियादा पसन्द आए। आप ने खुश हो कर इन को येह दुआ़ दी : "**अल्लाह** तआ़ला तेरे मुंह को न तोड़े" इस दुआ़ए नबवी की बदौलत इन को येह करामत मिली कि तमाम उ़म्र इन के दांत सलामत रहे और औले की त़रह़ साफ़ और चमकदार ही रहे। ह़ज़रते अबू या'ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि मैं

---

1 ......كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث:٣٦٧٩٥، ج٧، الجزء١٣، ص١١٩

2 ......الاصابة فى تمييز الصحابة، حرف النون، النابغة الجعدى، ج٦، ص٣٠٨ـ٣٠٩

ने ह़ज़रते नाबग़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उस वक़्त देखा जब कि वोह सो बरस के हो गए थे मगर उन के तमाम दांत सलामत थे।(1)

(بیہقی واصابہ،ج۳،ص۵۳۹)

﴾79﴿ ह़ज़रते अ़म्र बिन तुफ़ैल दोसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह अपने बाप ह़ज़रते तुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ मदीनए मुनव्वरा में आ कर इस्लाम से मुशर्रफ़ हुवे और तमाम उ़म्र मदीनए मुनव्वरा ही में रहे। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त में जब कि मुर्तदीन से जिहाद के लिये मुसलमानों का लश्कर मदीनए मुनव्वरा से रवाना हुवा तो येह दोनों बाप बेटे भी इस लश्कर में शामिल हो कर जिहाद के लिये चल पड़े। चुनान्चे, ह़ज़रते तुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जंगे यमामा में शहीद हो गए और ह़ज़रते अ़म्र बिन तुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का एक हाथ कट गया और शदीद तौर पर ज़ख़्मी हो गए लेकिन सिह़ह़त याब हो गए।

फिर जब ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में जंगे यरमूक का मा'रिका दर पेश हुवा तो ह़ज़रते अ़म्र बिन तुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इस जिहाद में मुजाहिदाना शान के साथ गए और कुफ़्फ़ार से लड़ते हुवे जामे शहादत से सैराब हुवे।(2) (اسدالغابہ،ج۴،ص۱۱۵)

करामत

नूरानी कोड़ा

हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के घोड़ा हांकने के कोड़े के बारे में दुआ़ फ़रमा दी तो इन का कोड़ा रात की तारीकी में इस त़रह़ रोशन हो जाया करता था कि येह उसी की रोशनी में रातों

---

1 ......الاصابة فی تمییز الصحابة، حرف النون، النابغة الجعدی، ج٦، ص ٣١١

ودلائل النبوة للبیهقی، باب ماجاء فی دعائه لنابغة...الخ، ج٦، ص ٢٣٢، ٢٣٣

2 ......اسد الغابة، عمرو بن الطفیل، ج٤، ص ٢٥٨ وطفیل بن عمرو ، ج٣، ص ٧٨

को चलते फिरते थे ।[1] (کنزالعمال، ج۱۲،ص۱۶۰،مطبوعہ حیدرآباد)

﴾80﴿ हज़रते अम्र बिन मुर्रा जुहन्नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

यह ज़मानए जाहिलिय्यत में हज करने गए तो मक्कए मुकर्रमा में एक ख़्वाब देखा और एक ग़ैबी आवाज़ सुनी जिस में इन को नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने की तरग़ीब दिलाई गई । येह इस ख़्वाब से बेहद मुतअष्षिर हुवे और नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आमद के मुन्तज़िर रहे । चुनान्चे, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी नबुव्वत का ए'लान फ़रमाया तो इन्हों ने बारगाहे नबुव्वत में हाज़िर हो कर इस्लाम क़बूल कर लिया और फिर अपनी क़ौम में आ कर इस्लाम की तब्लीग़ करने लगे और इन की क़ौम के बहुत से लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया । फिर इन मुसलमानों को साथ ले कर बारगाहे नबुव्वत में दोबारा हाज़िर हुवे । बहुत ही बहादुर मुजाहिद भी थे और अकषर इस्लामी जिहादों में शमशीर बकफ़ हो कर कुफ़्फ़ार से जंग भी की । आख़िर में मदीनए मुनव्वरा से मुल्के शाम में जा कर सुकूनत इख़्तियार कर ली और हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे हुकूमत में वफ़ात पाई ।[2] (اکمال،ص۶۰۷وکنزالعمال،ج۱۲،ص۱۱۵)

करामत

दुश्मन बलाओं में गिरिफ़्तार

इन की एक करामत येह है कि मुस्तजाबुद्दा'वात थे या'नी

---

1 ......کنزالعمال،کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، عمرو بن الطفیل رضی اللّٰہ عنه، الحدیث:۳۷۴۳۷، ج۷، الجزء ۱۳، ص۲۳۸

2 ......کنزالعمال،کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، عمرو بن مرة الجهنی، الحدیث: ۳۷۲۸۹، ج۷، الجزء ۱۳، ص۲۱۴

و الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص۶۰۷

इन की दुआएं बहुत ज़ियादा और बहुत जल्द मक़्बूल हुवा करती थीं। चुनान्चे, मन्क़ूल है कि जब अपनी क़ौम को इस्लाम की दा'वत देने के लिये तशरीफ़ ले गए तो एक शख़्स ने इन की बहुत ज़ियादा हिजू और मज़म्मत की और इन की शान में तौहीन आमेज़ अल्फ़ाज़ बकने लगा और आप को झूटा कहने लगा। उस वक़्त आप ने मजरूह़ क़ल्ब के साथ इस त़रह़ दुआ़ मांगी : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस की ज़िन्दगी को तल्ख़ बना दे और इस की ज़बान को गूंगी और इस की आंखों को अन्धी कर दे। आप की दुआ़ का येह अषर हुवा कि येह शख़्स गूंगा और अन्धा हो गया और इस क़दर बुढ्ढा हो गया कि इस के दांत टूट गए और ज़बान के शल हो जाने से इस को किसी चीज़ का मज़ा मह़सूस नहीं होता था।(1)

﴾81﴿ ह़ज़रते ज़ैद बिन ख़ारिजा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह अन्सारी हैं और इन का वत़न मदीनए मुनव्वरा है। इन्हों ने क़बीलए बनी ह़ारिष बिन ख़ज़रज में अपना घर बना लिया था। येह बहुत ही परहेज़गार और इ़बादत गुज़ार सह़ाबी हैं। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त के दरमियान आप ने दुन्या से रिह़लत फ़रमाई।(2) (بیہقی، اسد الغابہ، ج۲، ص۲۲۷)

करामत

मौत के बा'द गुफ़्तुगू

ह़ज़रते नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि ह़ज़रते ज़ैद बिन ख़ारिजा सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा के बा'ज़ रास्तों में ज़ोहर व अ़स्र के दरमियान चले जा रहे थे कि नागहां

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، عمرو بن مرة الجهني، الحديث:۳۷۲۸۹، ج۷، الجزء ۱۳، ص ۲۱۵

2 ......اسد الغابة، زيد بن خارجة، ج۲، ص ۳۳۹
ودلائل النبوة للبيهقي، باب ماجاء في شهادة...الخ، ج۶، ص ۵۵ـ۵۶ ملتقطاً

गिर पड़े और अचानक इन की वफ़ात हो गई। लोग इन्हें उठा कर मदीनए मुनव्वरा लाए और इन को लिटा कर कम्बल ओढ़ा दिया।

जब मग़रिब व इशा के दरमियान कुछ औ़रतों ने रोना शुरूअ़ किया तो कम्बल के अन्दर से आवाज़ आई : "ऐ रोने वालियो ! ख़ामोश रहो।"

येह आवाज़ सुन कर लोगों ने उन के चेहरे से कम्बल हटाया तो वोह बे ह़द दर्द मन्दी से निहायत ही बुलन्द आवाज़ से कहने लगे : "ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नबिय्ये उम्मी ख़ातिमुन्नबिय्यीन हैं और येह बात अल्लाह तआ़ला की किताब में है।" इतना कह कर कुछ देर तक बिल्कुल ही ख़ामोश रहे फिर बुलन्द आवाज़ से येह फ़रमाया : "सच कहा, सच कहा अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने जो नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा हैं, क़वी हैं, अमीन हैं, गो बदन में कमज़ोर थे लेकिन अल्लाह तआ़ला के काम में क़वी थे। येह बात अल्लाह तआ़ला की पहली किताबों में है।" इतना फ़रमाने के बा'द फिर इन की ज़बान बन्द हो गई और थोड़ी देर तक बिल्कुल ख़ामोश रहे फिर इन की ज़बान पर येह कलिमात जारी हो गए और वोह ज़ोर ज़ोर से बोलने लगे : "सच कहा, सच कहा दरमियान के ख़लीफ़ा अल्लाह तआ़ला के बन्दे अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने जो अल्लाह तआ़ला के बारे में किसी मलामत करने वाले की मलामत को ख़ातिर में नहीं लाते थे न इस की कोई परवाह करते थे और वोह लोगों को इस बात से रोकते थे कि कोई क़वी किसी कमज़ोर को खा जाए और येह बात अल्लाह तआ़ला की पहली किताबों में लिखी हुई है।"

इस के बा'द फिर वोह थोड़ी देर तक ख़ामोश रहे फिर इन की ज़बान पर येह कलिमात जारी हो गए और ज़ोर ज़ोर से बोलने लगे : "सच कहा, सच कहा ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने जो अमीरुल मोअमिनीन हैं और मोमिनों पर रह़्म फ़रमाने वाले हैं।

दो बातें गुज़र गईं और चार बाक़ी हैं जो येह हैं : ﴾1﴿ लोगों में इख़्तिलाफ़ हो जाएगा और इन के लिये कोई निज़ाम न रह जाएगा। ﴾2﴿ सब औरतें रोने लगेंगी और इन की पर्दादरी हो जाएगी। ﴾3﴿ क़ियामत क़रीब हो जाएगी। ﴾4﴿ बा'ज़ आदमी बा'ज़ को खा जाएगा।" इस के बा'द इन की ज़बान बिल्कुल बन्द हो गई।[1]

(طبرانی والبدایہ والنہایہ، ج۶، ص۱۵۶ واسد الغابہ، ج۲، ص۲۲۷)

﴾82﴿ हज़रते राफ़ेअ़ बिन ख़दीज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

इन की कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह है और शजरए नसब येह है : राफ़ेअ़ बिन ख़दीज बिन अ़दी बिन जै़द बिन जशम बिन हारिष बिन अल ख़ज़रज बिन अ़म्र बिन मालिक बिन अल औस। येह अन्सारी हैं और इन का वत़न मदीनए मुनव्वरा है। येह जंगे बद्र में कुफ़्फ़ार से लड़ने के लिये आए तो इन को कम उ़म्री की वजह से हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लश्कर में शामिल करने से इन्कार कर दिया लेकिन जंगे उहुद में इस्लामी फ़ौज में शामिल कर लिये गए और ख़ूब जम कर कुफ़्फ़ार से लड़ते रहे। फिर जंगे ख़न्दक़ वग़ैरा अकषर लड़ाइयों में येह मसरूफ़े जिहाद रहे। उ़म्र भर मदीनए मुनव्वरा ही में रहे और इस्लामी लड़ाइयों में सर बकफ़ और कफ़न बरदोश हो कर काफ़िरों से लड़ते रहे और अपनी क़ौम के सरदार और मुखया भी रहे। सि. 73 हि. या सि.74 हि. में छियासी बरस की उ़म्र पा कर मदीनए मुनव्वरा में वफ़ात पाई।[2]

(اکمال، ص۵۹۴ وکنز العمال، ج۱۶، ص۵ واسد الغابہ، ج۲، ص۱۵۱)

1 ......اسد الغابة، زيد بن خارجة، ج۲، ص۳۳۹
ودلائل النبوة للبيهقي، باب ماجاء في شهادة...الخ، ج۶، ص۵۵-۵۸ ملتقطاً

2 ......اسد الغابة، رافع بن خديج، ج۲، ص۲۲۳-۲۲۵ ملتقطاً
والاكمال في اسماء الرجال، حرف الراء، فصل في الصحابة، ص۵۹۴

करामत

बरसों हल्क़ में तीर चुभा रहा !

सि. 3 हि. में जंगे उहुद में कुफ़्फ़ार ने आप के हल्क़ पर तीर मारा और येह तीर आप के हल्क़ में चुभ गया, इन के चचा इन को हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में लाए। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अगर तुम्हारी ख़्वाहिश हो तो, हम इस तीर को निकाल दें और अगर तुम को शहादत की तमन्ना हो तो तुम इस तीर को न निकलवाओ तुम जब भी और जहां कहीं भी वफ़ात पाओगे शहीदों की सफ़ में तुम्हारा शुमार होगा। इन्हों ने दरजए शहादत की आरज़ू में तीर निकलवाना पसन्द नहीं किया और इसी हालत में सत्तर बरस तक ज़िन्दा रहे और ज़िन्दगी के तमाम मा'मूलात पूरे करते रहे यहां तक कि लड़ाइयों में कुफ़्फ़ार से जंग भी करते भी रहे और इन को किसी क़िस्म की इस तीर की वजह से तक्लीफ़ भी नहीं रहती थी लेकिन सत्तर बरस की मुद्दत के बा'द सि. 73 हि. में तीर का येह ज़ख़्म ख़ुद ब ख़ुद फट गया और इसी ज़ख़्म की हालत में इन का विसाल हो गया। बिला शुबा येह इन की बहुत बड़ी करामत है जो बहुत ज़ियादा मश्हूर है।(1) (کنزالعمال وحاشیہ کنزالعمال، ج۱۶،ص۵واسدالغابہ،ج۲،ص۱۵۱)

﴿83﴾ हज़रते मुहम्मद बिन षाबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ

हज़रते मुहम्मद बिन षाबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जब अपनी वालिदा जमीला बिन्ते अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य के शिकम में थे तो इन के वालिद ने इन की वालिदा को त़लाक़ दे दी। इन की

---

1 ......كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، رافع بن خديج رضى الله عنه، الحديث: ٣٧٠٤٥، ج٧، الجزء١٣، ص ١٧٠

و اسد الغابة، رافع بن خديج، ج٢، ص٢٢٤ـ٢٢٥ ملتقطاً

वालिदा ने गुस्से में इन की पैदाइश के बा'द येह क़सम खा ली कि मैं इस बच्चे को हरगिज़ हरगिज़ दूध नहीं पिलाऊंगी इस का बाप इस को दूध पिलाने का इन्तिज़ाम करे। हज़रते षाबित बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इस बच्चे को एक कपड़े में लपैट कर दरबारे नबुव्वत में लाए और पूरा वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया। हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस बच्चे को अपनी आग़ोशे रह़मत में ले कर पहले अपना मुक़द्दस लुआ़बे दहन इस बच्चे के मुंह में डाला फिर अ़जवा खजूर चबा कर इस बच्चे के मुंह में डाली और "मुह़म्मद" नाम रखा और इरशाद फ़रमाया कि इस को घर ले जाओ **अल्लाह** तआ़ला इस बच्चे को रिज़्क़ देने वाला है।(1)

करामत

बच्चे को दूध कैसे मिला !

हज़रते षाबित बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बच्चे को गोद में लिये हुवे किसी दूध पिलाने वाली औ़रत की तलाश में सरगर्दां थे मगर कोई दूध पिलाने वाली औ़रत नहीं मिली। येह इसी फ़िक्र में हैरान व परेशान फिर रहे थे कि नागहां एक अ़रबी औ़रत इन से मिली और पूछा कि षाबित बिन क़ैस कौन शख़्स हैं ? और इन से कहां मुलाक़ात होगी ? इन्हों ने पूछा : तुम को षाबित बिन क़ैस से क्या काम है ? औ़रत ने कहा : मैं ने गुज़श्ता रात येह ख़्वाब देखा कि मैं षाबित बिन क़ैस के बच्चे को दूध पिला रही हूं येह सुन कर हज़रते षाबित बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि षाबित बिन

1 ......اسد الغابة، محمد بن ثابت، ج٥، ص٨٥

وكنزالعمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، محمد بن ثابت، الحديث: ٣٧٥١١، ج٧، الجزء١٣، ص٢٥٣

क़ैस मैं ही हूं और मेरा लड़का "मुहम्मद" येही है जो मेरी गोद में है। औरत ने फ़ौरन बच्चे को गोद में ले लिया और दूध पिलाने लगी। मुहम्मद बिन षाबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सि. 63 हि. में जंगे हुर्रा के दिन मदीनए मुनव्वरा में यज़ीद बिन मुआ़विय्या की मन्हूस फ़ौजों के हाथ से शहीद हो गए।(1)

(کنز العمال وحاشیہ کنز العمال، ج١٦،ص١٩٩ واسد الغابہ، ج٤،ص٣١٣)

﴾84﴿ ह़ज़रते क़तादा बिन मलह़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ करामत

चेहरा आईना बन गया

ह़य्यान बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते क़तादा बिन मलह़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चेहरे पर एक मरतबा अपना दस्ते मुबारक फेरा। इस के बा'द इन को येह करामत मिल गई कि येह बहुत ही बुढ्ढे हो चुके थे और इन के बदन के हर हिस्से पर ज़ईफ़ी के आषार नुमूदार थे लेकिन इन के चेहरे पर ब दस्तूर जवानी का जमाल बाक़ी था और इन का चेहरा इस क़दर चमकता था कि मैं इन की वफ़ात के वक़्त इन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो उस वक़्त एक औ़रत इन के सामने से गुज़री उस वक़्त मैं ने उस औ़रत का अ़क्स इन के चेहरे में इस त़रह़ देख लिया गोया मैं आईने में उस का चेहरा देख रहा हूं।(2)

(اصابہ، ج٣،ص٢٢٥)

---

1 ......اسد الغابة، محمد بن ثابت، ج٥، ص٨٥
و کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، محمد بن ثابت، الحدیث: ٣٧٥١١، ج٧، الجزء١٣، ص٢٥٣
والکامل فی التاریخ، سنة ثلاث وستین، ذکر وقعة الحرة، ج٣، ص٤٥٩

2 ......الاصابة فی تمییز الصحابة، حرف القاف، قتادة بن ملحان، ج٥، ص٣١٧

﴾85﴿ हज़रते मुआविय्या बिन मुक़र्रिन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ

इन के वालिद के नाम में इख़्तिलाफ़ है। बा'ज़ लोगों ने इन के वालिद का नाम "मुआविय्या" और बा'ज़ ने "मुक़र्रिन" लिखा है। इसी त़रह़ इन के क़बीले के नाम में भी इख़्तिलाफ़ है कि येह "मुज़नी" या "लैषी" हैं। हज़रते अबू उ़मर ने इस क़ौल को दुरुस्त क़रार दिया है कि येह "मुआविय्या बिन मुक़र्रिन मुज़नी" हैं। हुज़ूरे अक़्दस عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जिस वक़्त ग़ज़वए तबूक में तशरीफ़ फ़रमा थे इन का विसाल हो गया।

करामत

दो हज़ार फ़िरिश्ते नमाज़े जनाज़ा में

इन की येह मश्हूर **करामत** है कि जब मदीनए मुनव्वरा में इन की वफ़ात हुई तो हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने मक़ामे तबूक में उतर कर दरबारे रिसालत में अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुआविय्या मुज़नी का मदीनए मुनव्वरा में इन्तिक़ाल हो गया है और हमारे लिये मुनासिब है कि हम लोग इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ें। हुज़ूरे अन्वर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि हां बेशक ज़रूर हम लोग नमाज़े जनाज़ा पढ़ेंगे। फिर हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने इस क़दर ज़ोर से अपना बाज़ू ज़मीन पर मारा कि तमाम शजर व ह़जर, टीले और पहाड़ियां हिलने लगीं और तमाम हिजाबात इस त़रह़ उठ गए कि इन का जनाज़ा हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहों के सामने आ गया और जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की नमाज़े जनाज़ा पढाई तो सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ के तीस हज़ार मजमअ़ के इलावा फ़िरिश्तों की भी दो सफ़ें थीं और हर सफ़ में एक एक हज़ार फ़िरिश्ते थे। एक रिवायत में है कि हर सफ़ में साठ हज़ार फ़िरिश्ते थे। नमाज़ के बा'द हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام से

दरयाफ़्त फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला ने मेरे इस सहाबी को इतना अ़ज़ीम रुत्बा कौन से अ़मल की वजह से अ़ता फ़रमाया ? तो हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह शख़्स सूरह قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ से बेहद महब्बत रखता था और हर वक़्त उठते बैठते इस सूरह की तिलावत किया करता था ।[1] (اسد الغابہ، ج۴، ص۳۸۹)

तबसेरा

अल्लाहु अकबर ! सूरए इख़्लास (قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ) की तिलावत करने वालों की फ़ज़ीलत और इन के अज्रो षवाब और फ़ज़्लो करामत का क्या कहना ? ख़ुदावन्दे करीम جل وعلا हम मुसलमानों को ज़ियादा से ज़ियादा इस मुक़द्दस सूरह की तिलावत का शरफ़ अ़ता फ़रमाए । (आमीन)

﴾86﴿ हज़रते अहबान बिन सैफ़ी ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

इन की कुन्यत अबू मुस्लिम है । इन की साहिब ज़ादी हज़रते अ़दीसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا कहती हैं कि जब अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और हज़रते अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दरमियान जंग की नौबत आन पड़ी तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मेरे वालिद के मकान पर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि तुम इस जंग में मेरा साथ दो और अब तक तुम को कौन सी चीज़ मेरी हि़मायत से रोके हुवे है ? तो मेरे वालिद हज़रते अहबान बिन सैफ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा कि ऐ अमीरल मोअमिनीन ! बस सिर्फ़ येही एक रुकावट है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे येह वसिय्यत फ़रमाई थी कि ऐ अहबान ! जब मुसलमान आपस में एक दूसरे से जंग करने लगें तो तुम उस वक़्त लकड़ी की तल्वार बना लेना । चुनान्चे, मैं ने इरशादे नबवी के मुताबिक़ लकड़ी की

---

1 ......اسد الغابة، معاوية بن معاوية، ج٥، ص٢٢٦، ٢٢٧

तल्वार बना ली है। आप देखिये वोह लटक रही है। अब लकड़ी की तल्वार से भला मैं किस त़रह़ जंग कर सकता हूं ? येह कह कर वोह बिल्कुल ही इस लड़ाई में ग़ैर जानिबदार बन गए।

करामत

क़ब्र से कफ़न वापस

येह साहि़बे करामत सहा़बी थे। चुनान्चे, इन की एक मश्हूर करामत येह है कि इन्हों ने वसिय्यत फ़रमाई थी कि मेरे कफ़न में फ़क़त़ दो ही कपड़े दिये जाएं मगर लोगों ने इन की वसिय्यत पर अ़मल नहीं किया और इन के कफ़न में तीन कपड़े शामिल कर के इन को दफ़्न कर दिया। घर वाले जब सुब्ह़ को नींद से बेदार हुवे तो येह देख कर हैरान रह गए कि तीसरा कपड़ा क़ब्र से वापस हो कर खूंटी पर लटक रहा है !(1) (اسد الغابہ، ج۱، ص۱۳۸)

﴾87﴿ ह़ज़रते नज़्ला बिन मुआ़विय्या अन्सारी رضی اللہ تعالٰی عنہ

करामत

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के सहा़बी

ह़ज़रते नज़्ला बिन मुआ़विय्या رضی اللہ تعالٰی عنہ जंगे क़ादिसिय्या में अमीरे लश्कर ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ की मातह़ती में जिहाद के लिये तशरीफ़ ले गए। नागहां अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ का फ़रमान आया कि ह़ज़रते नज़्ला बिन मुआ़विय्या को "ह़ल्वानुल इ़राक़" में जिहाद के लिये भेज दिया जाए। चुनान्चे, ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इन को तीन सो मुजाहिदीन का अफ़्सर बना कर भेज दिया और इन्हों ने मुजाहिदाना ह़म्ला कर के "ह़ल्वानुल इ़राक़" की बहुत सी बस्तियों को फ़त्ह़ कर लिया और बहुत ज़ियादा माले ग़नीमत ले कर वहां से रवाना हुवे।

1 ......اسد الغابة، اهبان بن صيفى، ج۱، ص۲۰۷

दरमियाने राह में एक पहाड़ के पास नमाज़े मग़रिब का वक़्त हो गया। ह़ज़रते नज़्ला बिन मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अज़ान पढ़ी और जैसे ही **अल्लाहु अक्बर ! अल्लाहु अक्बर !** कहा तो पहाड़ के अन्दर से किसी जवाब देने वाले ने बुलन्द आवाज़ से कहा : لَقَدْ كَبَّرْتَ كَبِيْرًا يَانَضْلَة इसी त़रह़ आप की पूरी अज़ान के हर हर कलिमे का जवाब पहाड़ के अन्दर से सुनाई देता रहा। आप ह़ैरान रह गए कि आख़िर इस पहाड़ के अन्दर कौन है जो मेरा नाम ले कर अज़ान का जवाब दे रहा है। फिर आप ने बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया कि ऐ शख़्स ! ख़ुदा तुझ पर रह़्म फ़रमाए तू कौन है ? तू फ़िरिश्ता है या जिन्न या रिजालुल ग़ैब में से है ? जब तू ने अपनी आवाज़ हम को सुना दी है तो फिर अपनी सूरत भी हम को दिखा दे क्यूंकि हम लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नुमाइन्दे हैं। आप के येह फ़रमाते ही पहाड़ फट गया और इस के अन्दर से एक निहायत ही बुढ्ढे और बुज़ुर्ग आदमी निकल पड़े और उन्हों ने सलाम किया। आप ने सलाम का जवाब दे कर पूछा : आप कौन हैं ? तो उन्हों ने जवाब दिया : मैं ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का सह़ाबी और उन का वसी हूं। मेरे नबी ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने मेरे लिये दराज़िये उ़म्र की दुआ़ फ़रमा दी है और मुझे येह हुक्म दिया है कि तुम मेरे आस्मान से उतरने के वक़्त तक इसी पहाड़ में मुक़ीम रहना। चुनान्चे, मैं अपने नबी ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की आमद के इन्तिज़ार में यहां ठहरा हुवा हूं। आप मदीनए मुनव्वरा पहुंच कर ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से मेरा सलाम कह दें और मेरा येह पैग़ाम भी पहुंचा दें कि ऐ उ़मर ! सिराते़ मुस्तक़ीम पर क़ाइम रहो और ख़ुदा का कु़र्ब ढूंडते रहो। फिर चन्द दूसरी नसीह़तें फ़रमा कर वोह बुज़ुर्ग एक दम उसी पहाड़ में ग़ाइब हो गए।

ह़ज़रते नज़्ला बिन मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सारा वाक़िआ़ ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास

लिख कर भेजा और उन्हों ने इस की इत्तिलाअ़ दरबारे ख़िलाफ़त में भेज दी तो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम येह फ़रमान भेजा कि तुम अपने पूरे लश्कर के साथ "ह़ल्वानुल इ़राक़" में उस पहाड़ के पास जाओ अगर तुम्हारी उन बुज़ुर्ग से मुलाक़ात हो जाए तो उन से मेरा सलाम कह देना। चुनान्चे, ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने चार हज़ार सिपाहियों के साथ उस मक़ाम पर पहुंचे और चालीस दिन तक मुक़ीम रहे मगर फिर वोह बुज़ुर्ग न ज़ाहिर हुवे न उन की आवाज़ किसी ने सुनी।(1)

(ازالۃ الخفاء،مقصد۲،ص۱۶۷تا۱۶۸)

तबसेरा

वोह बुज़ुर्ग भला क्यूं कर और किस त़रह़ फिर ज़ाहिर होते ? उन से मुलाक़ात और शरफ़े हम कलामी की करामत तो ह़ज़रते नज़्ला बिन मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नसीब में लिखी हुई थी जो इन्हें मिल गई। मषल मश्हूर है कि لِكُلِّ رَجُلٍ نَصِيبٌ وَّالنَّصِيبُ يُصِيبُ

﴾88﴿ ह़ज़रते उ़मैर बिन सा'द अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

अन्सार के क़बीले औस से इन का ख़ानदानी तअ़ल्लुक़ है और इन का अस्ली वत़न मदीनए मुनव्वरा है। मुल्के शाम की फ़ुतूह़ात के सिलसिले में जितनी लड़ाइयां हुईं उन सब जंगों में इन्हों ने बड़े बड़े बहादुराना कारनामे अन्जाम दिये। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में इन को मुल्के शाम में ह़िम्स का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया था येह इस क़दर आ़बिदो ज़ाहिद थे कि इन की इ़बादत व रियाज़त और इन का ज़ोहद व तक़्वा ह़द्दे **करामत** को पहुंचा हुवा था यहां तक कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे कि काश !

---

1 ......ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء، مقصد دوم، الفصل الرابع، ج٤، ص ٩١ـ٩٣ ملتقطاً

''उ़मैर बिन सा'द'' जैसे चन्द अश्ख़ास मुझे मिल जाते जिन को मैं मुसलमानों पर ह़ाकिम बनाता।(1) (حاشیہ کنز العمال، ج۱۲،ص۱۶۲ بحوالہ ابن سعد)

करामत

ज़ाहिदाना ज़िन्दगी

इन की ज़ाहिदाना व आ़बिदाना ज़िन्दगी बिला शुबा एक बहुत बड़ी करामत है जिस का एक नुमूना मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

मुह़म्मद बिन मुज़ाहि़म कहते हैं कि जिन दिनों ह़ज़रते उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ''ह़िम्स'' के गवर्नर थे, नागहां इन के पास अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक फ़रमान पहुंचा जिस का मज़्मून येह था :

''ऐ उ़मैर बिन सा'द ! हम ने तुम को एक अहम ओ़हदा सिपुर्द कर के ''ह़िम्स'' भेजा था मगर कुछ पता नहीं चला कि तुम ने अपने उस ओ़हदे को खुश उसलूबी के साथ संभाला है या नहीं लिहाज़ा जिस वक़्त मेरा येह फ़रमान तुम्हारे पास पहुंचे फ़ौरन जिस क़दर माले ग़नीमत तुम्हारे ख़ज़ाने में जम्अ़ है सब को ऊंटों पर लदवा कर और अपने साथ ले कर मदीनए मुनव्वरा चले आओ और मेरे सामने ह़ाज़िर हो जाओ।''

दरबारे ख़िलाफ़त का येह फ़रमान पढ़ कर फ़ौरन ही आप उठ खड़े हुवे और अपनी लाठी में अपनी छोटी सी मशक और ख़ूराक की थेली और एक बड़ा प्याला लटका कर लाठी कन्धे पर रखी और मुल्के शाम से पैदल चल कर मदीनए मुनव्वरा पहुंचे और दरबारे ख़िलाफ़त में ह़ाज़िर हो गए और अमीरुल मोअमिनीन को सलाम किया। अमीरुल मोअमिनीन ने इन को इस ख़स्ता ह़ाली में देखा तो ह़ैरान रह गए और फ़रमाया : क्यूं ऐ उ़मैर बिन सा'द ! तुम्हारा ह़ाल इतना ख़राब क्यूं है ? क्या तुम बीमार हो गए थे ? या

1 ......اسد الغابة، عمير بن سعد، ج٤، ص ٣١١-٣١٣ ملتقطاً

तुम्हारा शहर बद तरीन शहर है ? या तुम ने मुझे धोका देने के लिये येह ढोंग रचाया है ? अमीरुल मोअमिनीन के इन सुवालों को सुन कर इन्हों ने निहायत ही मुतानत और सन्जीदगी के साथ अ़र्ज़ किया : ऐ अमीरल मोअमिनीन ! क्या अल्लाह तआ़ला ने आप को मुसलमानों के छुपे हुवे ह़ालात की "जासूसी" से मन्अ़ नहीं फ़रमाया ? आप ने येह क्यूं फ़रमाया कि मेरा ख़राब ह़ाल है ? क्या आप देख नहीं रहे कि मैं बिल्कुल तन्दुरुस्त व तवाना हूं और अपनी पूरी दुन्या को अपने कन्धों पर उठाए हुवे आप के दरबार में ह़ाज़िर हूं । अमीरुल मोअमिनीन ने फ़रमाया : ऐ उ़मैर बिन सा'द ! दुन्या का कौन सा सामान तुम ले कर आए हो ? मैं तो तुम्हारे साथ कुछ भी नहीं देख रहा हूं। आप ने अ़र्ज़ किया : ऐ अमीरल मोअमिनीन ! देखिये येह मेरी ख़ूराक की थेली है, येह मेरी मशक है जिस से मैं वुज़ू करता हूं और इसी में अपने पीने का पानी रखता हूं और येह मेरा प्याला है और येह मेरी लाठी है जिस से मैं अपने दुश्मनों से ब वक़्ते ज़रूरत जंग भी करता हूं और सांप वग़ैरा ज़हरीले जानवरों को भी मार डालता हूं। येह सारा सामान मेरी दुन्या नहीं है तो और क्या है ? येह सुन कर अमीरुल मोअमिनीन ने फ़रमाया : ऐ उ़मैर बिन सा'द ! ख़ुदा तुम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमाए तुम तो अ़जीब ही आदमी हो ।

फिर अमीरुल मोअमिनीन ने रिआ़या का ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाया और मुसलमानों की इस्लामी ज़िन्दगी और ज़िम्मियों के बारे में पूछगछ फ़रमाई तो उन्हों ने जवाब दिया कि मेरी ह़ुकूमत का हर मुसलमान अरकाने इस्लाम का पाबन्द और इस्लामी ज़िन्दगी के रंग में रंगा हुवा है और मैं ज़िम्मियों से जिज़्या ले कर उन की पूरी पूरी ह़िफ़ाज़त करता हूं और मैं अपने ओ़हदे की ज़िम्मेदारियों को निबाहने की भरपूर कोशिश करता रहा हूं ।

फिर अमीरुल मोअमिनीन ने ख़ज़ाने के बारे में पूछा तो उन्हों ने कहा कि ख़ज़ाना कैसा ? मैं हमेशा मालदार मुसलमानों से ज़कात व सदक़ात वसूल कर के फ़ुक़रा व मसाकीन में तक़्सीम कर दिया करता हूं अगर मेरे पास फ़ाज़िल माल बचता तो मैं ज़रूर उस को आप के पास भेज देता।

फिर अमीरुल मोअमिनीन ने फ़रमाया कि ऐ उ़मैर बिन सा'द ! तुम "ह़म्स" से मदीनए मुनव्वरा तक पैदल चल कर आए हो। अगर तुम्हारे पास कोई सुवारी नहीं थी तो क्या तुम्हारी सल्त़नत की हुदूद में मुसलमानों और ज़िम्मियों में भला आदमी कोई भी नहीं था जो तुम को सुवारी का एक जानवर दे देता ? आप ने अ़र्ज़ किया : ऐ अमीरल मोअमिनीन ! मैं ने रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह भी सुना है कि मेरी उम्मत में कुछ ऐसे ह़ाकिम होंगे कि अगर रिआ़या ख़ामोश रहेगी तो येह हुक्काम उन को बरबाद करेंगे और अगर रिआ़या फ़रयाद करेगी तो येह हुक्काम उन की गर्दने उड़ा देंगे और मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह भी सुना है कि तुम लोग अच्छी बातों का हुक्म देते रहो और बुरी बातों से मन्अ़ करते रहो वरना अल्लाह तआ़ला तुम पर ऐसे लोगों को मुसल्लत़ फ़रमा देगा जो बदतरीन इन्सान होंगे। उस वक़्त नेक लोगों की दुआ़एं मक़्बूल नहीं होगी। ऐ अमीरल मोअमिनीन ! मैं उन बुरे ह़ाकिमों में से होना पसन्द नहीं करता इस लिये मुझे पैदल चलना तो गवारा है मगर अपनी रिआ़या से कुछ त़लब करना या इन के अ़त़िय्यों को क़बूल करना हरगिज़ हरगिज़ पसन्द नहीं है।

इस के बा'द अमीरुल मोअमिनीन ने फ़रमाया : ऐ उ़मैर बिन सा'द ! मैं तुम्हारी कारगुज़ारियों से बे ह़द ख़ुश हूं इस लिये तुम अपनी गवर्नरी के ओ़हदे पर बह़ाल हो कर फिर ह़म्स जाओ और वहां जा कर हुकूमत करो। आप ने निहायत ही लजाजत के साथ गिड़ गिड़ा कर अ़र्ज़ किया : ऐ अमीरल मोअमिनीन ! मैं आप को

खुदा का वासिता दे कर अब इस ओ़हदे को क़बूल करने से मुआ़फ़ी का त़लब गार हूं और अब मैं हरगिज़ हरगिज़ कभी भी इस अहम ओ़हदे को क़बूल नहीं कर सकता लिहाज़ा आप मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये।

येह सुन कर अमीरुल मोअमिनीन ने फ़रमाया कि अच्छा अगर तुम इस ओ़हदे को क़बूल नहीं कर सकते हो तो फिर मेरी त़रफ़ से इजाज़त है कि तुम अपने घर वालों में जा कर रहो। चुनान्चे, मदीनए मुनव्वरा से तीन दिन की मसाफ़त की दूरी पर एक बस्ती में जहां इन के अहलो इ़याल रहते थे जा कर मुक़ीम हो गए।

इस वाक़िए के कुछ दिनों के बा'द अमीरुल मोअमिनीन ने एक सो अशरफ़ियों की एक थेली अपने एक मुसाहिब को जिस का नाम "ह़बीब" था, येह कह कर दी कि तुम उ़मैर बिन सा'द के मकान पर जा कर तीन दिन तक मेहमान बन कर रहो फिर तीसरे दिन येह थेली मेरी त़रफ़ से उन की ख़िदमत में पेश कर के कह देना कि वोह इन अशरफ़ियों को अपनी ज़रूरिय्यात में ख़र्च करें।

चुनान्चे, ह़ज़रते ह़बीब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अशरफ़ियों की थेली ले कर ह़ज़रते उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान पर पहुंचे और अमीरुल मोअमिनीन का सलाम अ़र्ज़ किया। आप ने सलाम का जवाब दिया और अमीरुल मोअमिनीन की ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त की और उन की हुक्मरानी की कैफ़िय्यत के बारे में इस्तिफ़सार किया। फिर अमीरुल मोअमिनीन के लिये दुआ़एं कीं।

ह़ज़रते ह़बीब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तीन दिन तक उन के मकान पर मुक़ीम रहे और हर रोज़ खाने में दोनों वक़्त एक एक रोटी और ज़ैतून का तेल इन को मिलता रहा। तीसरे दिन ह़ज़रते उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ऐ ह़बीब ! अब तुम्हारी मेहमानी की मुद्दत ख़त्म हो गई लिहाज़ा आज अब तुम अपने घर जा सकते हो। हमारे घर में बस इतना ही ख़ूराक का सामान था जो हम ने खुद भूके रह कर तुम को खिला दिया। येह सुन कर ह़ज़रते ह़बीब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ने अशरफ़ियों की थेली पेश कर दी और कहा कि अमीरुल मोअमिनीन ने आप के ख़र्च के लिये इन अशरफ़ियों को भेजा है। आप ने थेली हाथ में ले कर येह इरशाद फ़रमाया : "ऐ ह़बीब ! मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोह़बत से सरफ़राज़ हुवा लेकिन उस वक़्त दुन्या की दौलत से मेरा दामन कभी दाग़दार नहीं हुवा फिर मैं ने ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की सोह़बत उठाई लेकिन उन के दौर में भी दौलते दुन्या की आलूदगियों से मैं मह़फ़ूज़ ही रहा लेकिन येह ज़माना मेरे लिये बदतरीन दौर षाबित हुवा कि मैं अमीरुल मोअमिनीन के हुक्म से मजबूर हो कर बा दिले नाख़्वास्ता "ह़िम्स" का गवर्नर बना और अब अमीरुल मोअमिनीन ने येह दुन्या की दौलत मेरे घर में भेज दी।"

इतना कहते कहते उन की आवाज़ भर्रा गई और वोह चीख़ मार कर ज़ार ज़ार रोने लगे और उन के आंसूओं की धार उन के रुख़्सार पर मूस्लाधार बारिश की त़रह़ बहने लगी और उन्हों ने अशरफ़ियों की थेली वापस कर दी। येह देख कर घर में से उन की बीवी साहिबा ने कहा कि आप इस थेली को वापस न कीजिये क्यूंकि येह जानशीने पैग़म्बर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का अ़तिय्या है। इस को रद्द कर देने से ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन की बहुत बड़ी दिल शिकनी होगी और येह आप की शान के लाइक़ नहीं है कि आप ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन के क़ल्ब को सदमा पहुंचाएं। इस लिये आप इस थेली को ले कर ह़ाजत मन्दों को दे दीजिये। बीवी साहिबा के मुख़्लिसाना मश्वरे को क़बूल करते हुवे आप ने थेली अपने पास रख ली और फ़ौरन ही फ़ुक़रा व मसाकीन को बुला कर तमाम अशरफ़ियों को तक़सीम कर दिया और इस में से एक पैसा भी अपने पास नहीं रखा।

ह़ज़रते ह़बीब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इस मन्ज़र को देख कर ह़ैरान रह गए और मदीनए मुनव्वरा पहुंच कर जब ह़ज़रते अमीरुल

मोअमिनीन से सारा माजरा अ़र्ज़ किया तो अमीरुल मोअमिनीन पर भी रिक्क़त त़ारी हो गई और फूट फूट कर रोने लगे और देर तक रोते रहे। फिर जब इन के आंसू थम गए तो फ़ौरन ही उन की त़लबी के लिये एक फ़रमान लिखा और एक क़ासिद के ज़रीए़ येह फ़रमान उन के घर भेज दिया।

हज़रते उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमान पढ़ कर इरशाद फ़रमाया कि अमीरुल मोअमिनीन के हुक्म की इत़ाअ़त मुझ पर वाजिब है। येह कहा और फ़ौरन पैदल मदीनए मुनव्वरा के लिये घर से निकल पड़े और तीन दिन का सफ़र कर के दरबारे ख़िलाफ़त में ह़ाज़िर हो गए।

अमीरुल मोअमिनीन ने फ़रमाया कि ऐ उ़मैर बिन सा'द ! जो अशरफ़ियां मैं ने तुम्हारे पास भेजी थीं उन को तुम ने कहां कहां ख़र्च किया ? अ़र्ज़ किया : ऐ अमीरल मोअमिनीन ! मैं ने उसी वक़्त उन सब अशरफ़ियों को ख़ुदा की राह में ख़र्च कर दिया।

अमीरुल मोअमिनीन ह़ैरत व इस्ति'जाब के आ़लम में उन का मुंह देखते रह गए। फिर अपने फ़रज़न्द हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से फ़रमाया कि तुम बैतुल माल में से दो कपड़े ला कर उ़मैर बिन सा'द को पहना दो और एक ऊंट पर खजूरें लाद कर इन को दे दो। आप ने अ़र्ज़ किया : ऐ अमीरल मोअमिनीन ! कपड़ों को तो मैं क़बूल कर लेता हूं क्यूंकि मेरे पास कपड़े नहीं है मगर खजूरें मैं हरगिज़ न लूंगा क्यूंकि मैं एक साअ़ खजूरें अपने मकान पर रख आया हूं जो मेरी वापसी तक मेरे अहलो इ़याल के लिये काफ़ी हैं। फिर हज़रते उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अमीरुल मोअमिनीन से रुख़्सत हो कर अपने मकान पर चले आए और इस के चन्द ही दिनों बा'द इन का विसाल हो गया।

जब अमीरुल मोअमिनीन को आप की रिह़लत की ख़बर पहुंची तो आप बे इख़्तियार रो पड़े और ह़ाज़िरीन से फ़रमाया कि

अब तुम सब लोग अपनी अपनी बड़ी तमन्नाओं को मेरे सामने बयान करो। फ़ौरन ही तमाम हाज़िरीन ने अपनी अपनी बड़ी से बड़ी तमन्नाओं को ज़ाहिर कर दिया। सब की तमन्नाओं का ज़िक्र सुन कर आप ने फ़रमाया : लेकिन मेरी सब से बड़ी तमन्ना येह है कि काश ! उ़मैर बिन सा'द जैसे साफ़ बातिन व पाक बाज़ और पैकरे इख़्लास चन्द मुसलमान मुझे मिल जाते तो मैं उन से मुसलमानों के कामों में मदद लेता।

इस के बा'द आप ने ह़ज़रते उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत फ़रमाई और येह कहा कि अल्लाह तआ़ला उ़मैर बिन सा'द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमाए।[1]

(کنز العمال، ج١٢، ص١٢٢تا١٢٦ مختصرا)

﴾89﴿ ह़ज़रते अबू क़रसाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

इन का अस्ली नाम जुन्दरह बिन ख़ैशना है मगर येह अपनी कुन्यत "अबू क़रसाफ़ा" से ज़ियादा मश्हूर हैं। येह क़ुरैशी नस्ल से हैं। येह इब्तिदाए इस्लाम ही में यतीम बच्चे थे और इन की वालिदा और ख़ाला दोनों ने इन की परवरिश की। येह बचपन में बकरियां चराने जाया करते थे और इन की वालिदा और ख़ाला इन को सख़्त ताकीद किया करती थीं कि ख़बर दार ! तुम मक्का में कभी उन की सोहबत में न बैठना जिन्हों ने नबुव्वत का दा'वा किया है मगर येह बकरियां चरागाह में छोड़ कर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में हर रोज़ चले जाया करते और बकरियों के चराने पर ज़ियादा ध्यान नहीं देते थे। रफ़्ता रफ़्ता बकरियां लाग़र हो गईं और इन के थन ख़ुश्क हो गए।

इन की वालिदा और ख़ाला ने जब इस मुआ़मले के बारे में इन से सख़्त बाज़पुर्स की तो इन्हों ने हुज़ूरे अकरम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के

[1] ......كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، عمير بن سعد الانصارى، الحديث: ٣٧٤٤٢، ج٧، الجزء ١٣، ص٢٣٨ مختصراً

सामने इस का तज़्किरा किया तो आप ने उन बकरियों के खुश्क थनों पर अपना दस्ते मुबारक लगा दिया तो सब बकरियों के खुश्क थन दूध से भर गए जब इन की वालिदा और ख़ाला ने इस का सबब पूछा तो इन्हों ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक लगा देने का वाक़िआ और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस ता'लीम और मो'जिज़ात का तज़्किरा कर दिया।

येह सुन कर इन की वालिदा और ख़ाला ने कहा : ऐ मेरे प्यारे बेटे ! तुम हम को भी उन के दरबार में ले चलो। चुनान्चे, इन की वालिदा और ख़ाला ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो गईं और जमाले नबुव्वत देखते ही कलिमा पढ़ कर इस्लाम की दौलत से माला माल हो गईं और अपने घर पहुंच कर इन दोनों ने येह कहा कि हम ने अपनी आंखों से देखा कि जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कलाम फ़रमाते थे तो उन के दहन मुबारक से एक नूर निकलता था और हम ने हुस्ने अख़्लाक़ और जमाले सूरत व कमाले सीरत के ए'तिबार से किसी इन्सान को हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से बेहतर और खुशतर नहीं देखा।

येह आख़िरी उम्र में मुल्के शाम के शहर फ़िलिस्तीन में मुक़ीम हो गए थे और शाही मुहद्दिषीन इन के हल्क़ए दर्स में शामिल हुवा करते थे।

इमाम तबरानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इन को निस्बत के ए'तिबार से "लैषी" तहरीर फ़रमाया है और इन को "बनी लैष बिन बक्र" का आज़ाद कर्दा गुलाम लिखा है।[1] (وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم)

(کنزالعمال، ج۱۶،ص۲۲۹،مطبوعہ حیدرآباد واسد الغابہ،ج۱،ص۳۰۷)

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الكنى، ابو قرصافة، الحديث:۳۷۵۷۷، ج۷، الجزء۱۳، ص ۲۶۵

واسدالغابة،جندرة بن خيشنة، ج ۱،ص ۴۴۹

ومجمع الزوائد،كتاب المناقب، باب ابی قرصافة واهل بيته، الرقم۱۶۰۷۵،ج۹،ص۶۵۸

करामत

सेंकड़ों मील दूर आवाज़ पहुंचती थी

इन की येह करामत थी कि रूमी कुफ़्फ़ार ने इन के एक फ़रज़न्द को गिरिफ़्तार कर के जैलख़ाने में बन्द कर दिया था। ह़ज़रते अबू क़र साफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब नमाज़ का वक़्त आता तो अ़स्क़लान की चार दीवारी पर चढ़ते और बुलन्द आवाज़ से पुकार कर कहते कि ऐ मेरे प्यारे बेटे ! नमाज़ का वक़्त आ गया है और इन की इस पुकार को हमेशा इन के साहिबज़ादे सुन लिया करते थे ह़ालांकि वोह सेंकड़ों मील की दूरी पर रूमियों के क़ैद ख़ाने में क़ैद थे।[1] (طبرانی)

तबसेरा

येह करामत अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और दूसरे बुज़ुर्गों से भी मन्क़ूल है और येह करामत भी इस अम्र की दलील है कि मह़बूबाने ख़ुदा हवा पर भी हुकूमत फ़रमाया करते हैं क्यूंकि आवाज़ को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाना हवाओं के तमूज ही का काम है जिस पर पहले सफ़्ह़ात में भी हम रोशनी डाल चुके हैं।

इस क़िस्म की करामतों से पता चलता है कि ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने अपने औलियाए किराम को आ़लम में तसर्रुफ़ात की ऐसी हुक्मरानी व बादशाही बल्कि शहनशाही अ़त़ा फ़रमाई है कि वोह काइनाते आ़लम की हर हर चीज़ पर बिइज़्निल्लाह हुकूमत करते हैं।

﴾90﴿ ह़ज़रते ह़स्सान बिन षाबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह क़बीलए अन्सार के ख़ानदान ख़ज़रज के बहुत ही नामी गिरामी शख़्स हैं और दरबारे रिसालत के ख़ासुल ख़ास शाइ़र होने की हैषिय्यत से तमाम सहा़बए किराम में एक ख़ुसूसी इम्तियाज़ के

---

1 ......المعجم الصغیرللطبرانی، باب الباء من اسمه بشر، ج ١، ص ١٠٨

साथ मुमताज़ हैं । आप ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मदह़ में बहुत से क़साइद लिखे और कुफ़्फ़ारे मक्का जो शाने रिसालत में हिज्व लिख कर बे अदबियां करते थे आप अपने अश्आ़र में उन का दन्दान शिकन जवाब दिया करते थे । हुज़ूर शहनशाहे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन के लिये ख़ास तौर पर मस्जिदे नबवी عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में मिम्बर रखवाते थे जिस पर खड़े हो कर येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अक़्दस में ना'त ख़्वानी करते थे ।

इन की कुन्यत "अबुल वलीद" है और इन के वालिद का नाम "षाबित" और इन के दादा का नाम "मुन्ज़िर" और परदादा का नाम "ह़िराम" है और इन चारों के बारे में एक तारीख़ी लतीफ़ा येह है कि इन चारों की उ़म्रें एक सो बीस बरस की हुईं जो अ़जाइबाते आ़लम में से एक अ़जीब नादिरुल वुजूद अ़जूबा है ।

हज़रते हस्सान बिन षाबित رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की एक सो बीस बरस की उ़म्र में से साठ बरस जाहिलिय्यत और साठ बरस इस्लाम में गुज़रे । सि. **40** हि. में आप का विसाल हुवा ।(1)

(اکمال،ص۵۶۰ومشکوۃ باب البیان والشعر،ص۴۱۰وحاشیہ بخاری بحوالہ کرمانی،ج۲،ص۵۹۴)

करामत

हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام मददगार

इन की एक ख़ास करामत येह है कि जब तक येह ना'त ख़्वानी फ़रमाते रहते थे हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام इन की इमदाद

(1)......مشكاة المصابيح، كتاب الآداب، باب البيان و الشعر، الحديث:٤٨٠٥، ج٢، ص١٨٨
والاكمال فى اسماء الرجال، حرف الحاء، فصل فى الصحابة، ص٥٩٠
وحاشية البخارى، كتاب المغازى، باب حديث الافك، حاشية:٥، ج٢، ص٥٩٤

व नुस्रत के लिये इन के पास मौजूद रहते थे क्यूंकि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के बारे में इरशाद फ़रमाया है :

اِنَّ اللّٰہَ یُؤَیِّدُ حَسَّانَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ مَا نَافَحَ اَوْفَاخَرَ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ

(या'नी जब तक ह़स्सान मेरी त़रफ़ से कुफ़्फ़ार को मदाफ़अ़ाना जवाब देते और मेरे बारे में इज़्हारे फ़ख़्र करते रहते हैं ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام इन की मदद फ़रमाते रहते हैं ।)(1) (مشکوۃ باب البیان والشعر،ص ۴۱۰)

करामत वाली क़ुव्वते शाम्मा

जबला ग़स्सानी जो ख़ानदाने जफ़ना का एक फ़र्द था उस ने ह़ज़रते ह़स्सान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये हदिय्ये के त़ौर पर कुछ सामान ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते ह़स्सान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हदिय्या सिपुर्द करने के लिये बुलाया । जब ह़ज़रते ह़स्सान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे ख़िलाफ़त में पहुंचे तो चोखट पर खड़े हो कर सलाम किया और अ़र्ज़ किया कि ऐ अमीरल मोअमिनीन मुझे ख़ानदाने जफ़ना के हदिय्यों की ख़ुश्बू आ रही है जो आप के पास हैं । आप ने इरशाद फ़रमाया कि हां जबला ग़स्सानी ने तुम्हारे लिये हदिय्या भेजा है जो कि मेरे पास है । इसी लिये मैं ने तुम को त़लब किया है ।

इस वाक़िए को नक़्ल करने वाले का बयान है कि ख़ुदा की क़सम ! ह़ज़रते ह़स्सान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह ह़ैरत अंगेज़ व तअ़ज्जुब ख़ैज़ बात मैं कभी भी फ़रामोश नहीं कर सकता कि इन्हें उस हदिय्ये की किसी ने पहले से कोई ख़बर नहीं दी थी फिर आख़िर इन्हें चोखट पर खड़े होते ही उस हदिये की ख़ुश्बू कैसे और क्यूंकर मह़सूस हो गई ? और इन्हों ने उस चीज़ को कैसे सूंघ लिया कि वोह हदिया ख़ानदाने जफ़ना से यहां आया है ।(2) (شواہد النبوۃ،ص ۲۳۲)

1 مشکاۃ المصابیح،کتاب الاداب،باب البیان و الشعر،الحدیث:٤٨٠٥،ج٢، ص١٨٨

2 شواھد النبوۃ، رکن سادس دربیان شواھد ودلایلی...الخ،حسان بن ثابت،ص٢٩٠

तबसेरा

बिला ख़ुश्बू वाले सामानों को सूंघ कर जान लेना और फिर येह भी सूंघ लेना कि हदिया देने वाला किस ख़ानदान का आदमी है ? ज़ाहिर है कि येह चीज़ें सूंघने की नहीं हैं फिर भी इन को सूंघ लेना इस को करामत के सिवा और क्या कहा जा सकता है ?

﴾91﴿ ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिषा رضی اللہ تعالیٰ عنہ

येह हुज़ूरे अक्दस صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم के गुलाम थे लेकिन आप ने इन को आज़ाद फ़रमा कर अपना मुतबन्नी बना लिया था और अपनी बांदी ह़ज़रते उम्मे ऐमन رضی اللہ تعالیٰ عنہا से इन का निकाह़ फ़रमा दिया था जिन के बत़्न से इन के साह़िब ज़ादे ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رضی اللہ تعالیٰ عنہ पैदा हुवे। इन की एक बड़ी ख़ास ख़ुसूसिय्यत येह है कि इन के सिवा कुरआने मजीद में दूसरे किसी सह़ाबी का नाम मज़्कूर नहीं है। येह बहुत ही बहादुर मुजाहिद थे। गुलामों में सब से पहले इन्हों ने ही इस्लाम क़बूल किया। "जंगे मोता" की मश्हूर लड़ाई में जब आप तमाम इस्लामी अफ़्वाज के सिपह सालार थे सि. 8 हि. में कुफ़्फ़ार से लड़ते हुवे जामे शहादत नौश फ़रमाया।[1]

(اکمال،ص۵۹۵واسدالغابہ،ج۲،۲۲۴تا۲۲۷)

करामत
सातवें आस्मान का फ़िरिश्ता ज़मीन पर

आप की एक करामत बहुत ज़ियादा मश्हूर और मुस्तनद है कि एक मरतबा आप ने सफ़र के लिये त़ाइफ़ में एक ख़च्चर किराये पर लिया, ख़च्चर वाला डाकू था, वोह आप को सुवार कर के ले चला और एक वीरान व सुन्सान जगह पर ले जा कर

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الزای، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۵ ملتقطاً

आप को ख़च्चर से उतार दिया और एक ख़न्जर ले कर आप की तरफ़ हम्ले के इरादे से बढ़ा। आप ने येह देखा कि वहां हर तरफ़ लाशों के ढांचे बिखरे पड़े हुवे हैं, आप ने उस से फ़रमाया कि ऐ शख़्स ! तू मुझे क़त्ल करना चाहता है तो ठहर ! मुझे इतनी मोहलत दे दे कि मैं दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ लूं। उस बद नसीब ने कहा कि अच्छा तू नमाज़ पढ़ ले, तुझ से पहले भी बहुत से मक़्तूलों ने नमाज़ें पढ़ीं थीं मगर उन की नमाज़ों ने उन की जान न बचाई।

हज़रते ज़ैद बिन हारिषा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि जब मैं नमाज़ से फ़ारिग़ हो गया तो वोह मुझे क़त्ल करने के लिये मेरे क़रीब आ गया तो मैं ने दुआ़ मांगी और یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ कहा। ग़ैब से येह आवाज़ आई कि ऐ शख़्स ! तू इन को क़त्ल मत कर। येह आवाज़ सुन कर वोह डाकू डर गया और इधर उधर देखने लगा जब कोई नज़र नहीं आया तो वोह फिर मेरे क़त्ल के लिये आगे बढ़ा तो मैं ने फिर बुलन्द आवाज़ से یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ कहा और ग़ैबी आवाज़ आई। फिर तीसरी मरतबा जब मैं ने یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ कहा तो मैं ने देखा कि एक शख़्स घोड़े पर सुवार है और उस के हाथ में नेज़ा है और नेज़े की नोक पर आग का एक शो'ला है। उस शख़्स ने आते ही डाकू के सीने में इस ज़ोर से नेज़ा मारा कि नेज़ा उस के सीने को छेदता हुवा उस की पुश्त के पार निकल गया और डाकू ज़मीन पर गिर कर मर गया।

फिर वोह सुवार मुझ से कहने लगा कि जब तुम ने पहली मरतबा یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ कहा तो मैं सातवें आस्मान पर था और जब दूसरी मरतबा तुम ने یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ कहा तो मैं आस्माने दुन्या पर था और जब तीसरी मरतबा तुम ने یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ कहा तो मैं तुम्हारे पास इमदाद व नुस्रत के लिये हाज़िर हो गया ![1] (استیعاب، ج۱، ص۵۴۸)

1 ......الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، حرف الزای، زید بن حارثۃ الکلبی، ج۲، ص۱۱۷

तबसेरा

इस से सबक़ मिलता है कि ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस के अस्माए हुस्ना और मोअमिनीन की दुआओं से बड़ी बड़ी बलाएं टल जाती हैं और ऐसी ऐसी इमदाद और आस्मानी नुस्रतों का ज़ुहूर हुवा करता है जिन को ख़ुदावन्दे करीम के फ़ज़्ले अ़ज़ीम के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता मगर अफ़्सोस कि आज कल के मुसलमान मुसीबतों के हुजूम में भी माद्दी वसाइल की तलाश में भागे भागे फिरते हैं और लीडरों, ह़ाकिमों और दौलतमन्दों के मकानों का चक्कर लगाते रहते हैं मगर اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْن और اَحْکَمُ الْحَاکِمِیْن के दरबारे अ़ज़्मत में गिड़ गिड़ा कर अपनी दुआओं की अ़र्ज़ी नहीं पेश करते और ख़ल्लाक़े आ़लम جَلَّ جَلَالُہٗ से इमदाद व नुस्रत की भीक नहीं मांगते ह़ालांकि ईमान येह है कि बिग़ैर फ़ज़्ले रब्बानी के कोई इन्सानी त़ाक़त किसी की भी कोई इमदाद व नुस्रत नहीं कर सकती ।

अफ़्सोस सच कहा है किसी ह़क़ीक़त शनास ने कि :

उस तरफ़ उठते नहीं हाथ जहां सब कुछ है
पाउं चलते हैं उधर को कि जहां कुछ भी नहीं

﴾92﴿ ह़ज़रते उ़क़्बा बिन नाफ़ेअ़ फ़ह्री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ

ह़ज़रते अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने दौरे हुकूमत में इन को अफ़्रीक़ा का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया था और इन्हों ने अफ़्रीक़ा के कुछ ह़िस्सों को फ़त्ह़ कर लिया और बरबरी लोग जो उस मुल्क के अस्ली बाशिन्दे थे उन के बहुत से बाशिन्दे दामने इस्लाम में आ गए । इन्हों ने उस मुल्क में इस्लामी फ़ौजों के लिये एक छाऊनी बनाने और एक इस्लामी शहर आबाद करने का इरादा फ़रमाया लेकिन इस मक़्सद के लिये माहिरीने हरबिय्यात व

उमरानिय्यात ने जिस जगह का इन्तिख़ाब किया वहां एक निहायत ही ख़ौफ़नाक और गुन्जान जंगल था जो जंगली दरिन्दों और हर क़िस्म के मूज़ी और ज़हरीले ह़शरातुल अर्ज़ और जानवरों का मस्कन और गढ़ था। इस मौक़अ़ पर ह़ज़रते उ़क़्बा बिन नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की एक अ़जीब **करामत** का ज़ुहूर हुवा :

करामत

एक पुकार से दरिन्दे फ़रार

मरवी है कि ह़ज़रते उ़क़्बा बिन नाफ़ेअ़ फ़हरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इस लश्कर में अठ्ठारह सह़ाबी मौजूद थे। आप ने उन सब मुक़द्दस सह़ाबियों को जम्अ़ फ़रमाया और उन बुज़ुर्गों को अपने साथ ले कर उस ख़ौफ़नाक और घने जंगल में तशरीफ़ ले गए और बुलन्द आवाज़ से येह ए'लान फ़रमाया : "ऐ दरिन्दो ! और मूज़ी जानवरो ! हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा हैं और हम इस जगह अपनी बस्ती बसा कर आबाद होना चाहते हैं लिहाज़ा तुम सब यहां से निकल जाओ वरना इस के बा'द हम तुम में से जिस को यहां देखेंगे क़त्ल कर देंगे।"

इस ए'लान के बा'द उस आवाज़ में ख़ुदा ही जानता है कि क्या ताषीर थी कि सब दरिन्दों और ह़शरातुल अर्ज़ में हल चल मच गई और ग़ोल दर ग़ोल उस जंगल के जानवर निकलने लगे। शेर अपने बच्चों को उठाए हुवे, भेड़िये अपने पिल्लों को लिये हुवे, सांप अपने संपोलियों को कमर से चिमटाए हुवे जंगल से बाहर निकले चले जा रहे थे और येह एक ऐसा अ़जीब हैबत नाक और दहशत अंगेज़ मन्ज़र था जो न इस से क़ब्ल देखा गया न येह किसी के वहम व गुमान में था। ग़रज़ पूरा जंगल जानवरों से ख़ाली हो गया और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم और पूरे लश्कर ने उस जंगल को काट कर सि. 50 हि. में एक शहर आबाद किया जिस का नाम "क़ीरवान" है। येह शहर इसी लिये मुसलमानों में बहुत ज़ियादा क़ाबिले

एह्तिराम शुमार किया जाता है कि इस शहर की आबादकारी में सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के मुक़द्दस हाथों का बहुत ज़ियादा हिस्सा है और येही वजह है कि हज़ारों जलीलुल क़द्र उ-लमा व मशाइख़ इस सर ज़मीन की आग़ोशे ख़ाक से उठे और फिर इसी मुक़द्दस ज़मीन की आग़ोशे लह्द में दफ़्न हो कर इस ज़मीन का ख़ज़ाना बन गए ।(1) (معجم البلدان تذکرہ قیروان)

घोड़े की टाप से चश्मा जारी

हज़रते उ़क्बा बिन नाफ़ेअ़ फ़हरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह करामत भी बहुत ही ह़ैरत अंगेज़ और इ़ब्रत ख़ेज़ है कि अफ़्रीक़ा के जिहादों में एक मरतबा इन का लश्कर एक ऐसे मक़ाम पर पहुंच गया जहां दूर दूर तक पानी नायाब था जब इस्लामी लश्कर पर प्यास का ग़लबा हुवा और तमाम लोग तिश्नगी से मुज़्तरिब हो कर माहिये बे आब की त़रह़ तड़पने लगे तो ह़ज़रते उ़क्बा बिन नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर दुआ़ मांगी । अभी आप की दुआ़ ख़त्म नहीं हुई थी कि आप के घोड़े ने अपने खुर से ज़मीन को कुरैदना शुरूअ़ कर दिया । आप ने उठ कर देखा तो मिट्टी हट चुकी थी और एक पथ्थर नज़र आ रहा था । आप ने जैसे ही उस पथ्थर को हटाया तो एक दम उस के नीचे से पानी का एक चश्मा फूट निकला और इस क़दर पानी बहने लगा कि सारा लश्कर सैराब हो गया और तमाम जानवरों ने भी पेट भर कर पानी पिया और लश्कर के तमाम सिपाहियों ने अपनी अपनी मश्कों को भी भर लिया और उस चश्मे को बहता हुवा छोड़ कर लश्कर आगे रवाना हो गया ।(2) (معجم البلدان تذکرہ قیروان)

---

1 ......معجم البلدان، حرف القاف، القيروان، ج٤، ص١٠٦
واسد الغابة، عقبة بن نافع، ج٤، ص٦٦ـ٦٧ ملتقطاً

2 ......الكامل فى التاريخ، سنة اثنتين وستين، ذكر ولاية عقبة بن نافع...الخ، ج٦، ص٤٥١

﴿93﴾ हज़रते अबू ज़ैद अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

अबू ज़ैद इन की कुन्यत है। इन के नाम में इख़्तिलाफ़ है। बा'ज़ का क़ौल है कि इन का नाम "सईद बिन उ़मैर" है और बा'ज़ कहते हैं कि इन का नाम "क़ैस बिन सकन" है। इन का ख़ानदानी तअ़ल्लुक़ क़बीलए अन्सार से है और इन का वत़न मदीनए मुनव्वरा है। येह उन सहाबए किराम में से हैं जो हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मौजूदगी में ह़ाफ़िज़े क़ुरआन हो चुके थे।(1)

करामत

सो बरस का जवान

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक एक मरतबा इन के सर पर फेरा और इन को येह दुआ़ दी कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के हुस्नो जमाल को हमेशा क़ाइम रख ! रावी का बयान है कि येह सो बरस से कुछ ज़ाइद उ़म्र के हो गए थे लेकिन इन के सर और दाढ़ी का एक बाल भी सफ़ेद नहीं हुवा था न इन के चेहरे पर झुरियां पड़ी थीं। वफ़ात के वक़्त तक इन के चेहरे पर जवानी का जमाल बरक़रार रहा जो बिला शुबा इन की एक करामत है।(2) (دلائل النبوۃ لابی نعیم،ص۱۶۶)

﴿94﴾ हज़रते औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

इन की कुन्यत के बारे में इख़्तिलाफ़ है, बा'ज़ का क़ौल है कि इन की कुन्यत "अबू अ़ब्दुर्रह़मान" है और बा'ज़ के नज़दीक "अबू ह़म्माद" और कुछ लोगों ने कहा कि "अबू अ़म्र" है।

---

1 ......الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الزای، فصل فی الصحابۃ، ص ۵۹۵

2 ......دلائل النبوۃ للبیھقی، جماع ابواب دعوات...الخ، باب ماجاء فی شان ابی زید...الخ، ج۶،ص ۲۱۱

इस्लाम लाने के बा'द सब से पहला जिहाद जिस में इन्हों ने शिर्कत की वोह जंगे ख़ैबर है। येह बहुत ही जांबाज़ मुजाहिद सहाबी थे। फ़त्हे मक्का के दिन क़बीलए अशजअ़ का झन्डा इन्हीं के हाथ में था। मुल्के शाम की सुकूनत इख़्तियार कर ली थी और ह़दीष में कुछ सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم और बहुत से ताबेईन इन के शागिर्द हैं। शहरे दिमश्क़ में सि. 73 हि. के साल में इन का विसाल शरीफ़ हुवा।(1)

(اسدالغابہ،ج۴،ص۱۵۶)

करामत

पुकार पर मवेशी दौड़ पड़े

हज़रते मुहम्मद बिन इस्हाक़ का बयान है कि हज़रते औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को कुफ़्फ़ार ने गिरिफ़्तार कर के इन्हें तांतों से बान्ध रखा था। इन के वालिद मालिक अश्जई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हुज़ूरे अक़्दस عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुवे और माजरा अ़र्ज़ किया। आप ने इरशाद फ़रमाया : तुम अपने बेटे औ़फ़ के पास किसी क़ासिद के ज़रीए़ येह कहला दो कि वोह बकषरत لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم पढ़ते रहें।

चुनान्चे, हज़रते औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह वज़ीफ़ा पढ़ने लगे। एक दिन नागहां इन की तमाम तांतें टूट गईं और वोह रिहा हो कर कुफ़्फ़ार की क़ैद से निकल पड़े और एक ऊंटनी पर सुवार हो कर चल पड़े। रास्ते में एक चरागाह के अन्दर कुफ़्फ़ार के सेंकड़ों ऊंट चर रहे थे। आप ने उन ऊंटों को पुकारा तो वोह सब के सब दौड़ते भागते हुवे आप की ऊंटनी के पीछे पीछे चल पड़े। उन्हों ने मकान पर पहुंच कर अपने वालिद को पुकारा तो वोह सब उन की आवाज़ सुन कर मां बाप और ख़ादिम दौड़ पड़े और येह

---

1 ......اسد الغابة، عوف بن مالك الاشجعى، ج٤، ص ٣٣٣

देख कर हैरान रह गए कि ह़ज़रते औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ऊंटों के ज़बरदस्त रेवड़ के साथ मौजूद हैं सब खुश हो गए।

उन के वालिद ह़ज़रते मालिक अश्जई رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे नबुव्वत में पहुंच कर सारा क़िस्सा सुनाया और ऊंटों के बारे में भी अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि इन ऊटों को तुम जो चाहो करो, तुम्हारा बेटा इन ऊंटों का मालिक हो चुका मैं इन ऊंटों में कोई मुदाख़लत नहीं करूंगा। येह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से एक रिज़्क़ है जो तुम्हें अ़त़ा किया गया। रिवायत है कि इसी मौक़अ़ पर येह आयत नाज़िल हुई :

وَمَنْ یَّتَّقِ اللّٰهَ یَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝ وَّیَرْزُقْهُ مِنْ حَیْثُ لَا یَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ یَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ (سورہ طلاق، پ۲۸)

*और जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला से डरता है **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये मुज़र्रतों से नजात की शक्ल निकाल देता है और उस को ऐसी जगह से रिज़्क़ पहुंचाता है जहां उस को गुमान भी नहीं होता और जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला पर तवक्कुल करेगा तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये काफ़ी है।* (1)

(الترغیب والترہیب، ج۳،ص۱۰۵وتفسیر ابن کثیر، ج۴،ص۳۸۰)

﴿95﴾ ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह हुज़ूर शहनशाहे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से छोटी और सब से ज़ियादा प्यारी बेटी हैं इन का लक़ब **सय्यिदतुन्निसाइल आ़लमीन** (सारे जहान की औ़रतों की सरदार) है। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के बारे में इरशाद फ़रमाया कि फ़ातिमा मेरी बेटी, मेरे बदन का ह़िस्सा है जिस ने इस का दिल

---

1 ......تفسیر ابن کثیر، پ۲۸، سورۃ الطلاق، تحت الآیۃ:۳،۲، ج۸، ص ۱۷۰

दुखाया, उस ने मेरा दिल दुखाया और जिस ने मेरा दिल दुखाया उस ने **अल्लाह** तआला को ईज़ा दी।(1)

इन के फ़ज़ाइलो मनाक़िब में बहुत सी अहादीष वारिद हुई हैं। रमज़ान सि. 2 हि. में मदीनए मुनव्वरा के अन्दर इन का निकाह हज़रते अली बिन अबी तालिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ हुवा और ज़ुल हिज्जा सि. 2 हि. में रुख़्सती हुई। इन के बतन से हज़रते इमामे हसन व इमामे हुसैन व इमामे मोहसिन (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم) तीन साहिब ज़ादगान और हज़रते ज़ैनब व रुक़य्या व उम्मे कुलषूम (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ) तीन साहिब ज़ादियां तवल्लुद हुईं। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सिर्फ़ छे माह ज़िन्दा रहीं। 28 बरस की उ़म्र में आ़लमे फ़ानी से आ़लमे जावेदानी की त़रफ़ रिह़लत फ़रमा हुईं। हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और रात को सिपुर्दे ख़ाक की गईं। मज़ारे मुबारक मदीनए मुनव्वरा में है।(2) (اکمال،ص۶۱۳وغیرہ)

करामात

बरकत वाली सीनी

आप की करामतों में से एक करामत येह है कि आप एक दिन एक बोटी और दो रोटियां ले कर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुईं। रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी प्यारी साहिबज़ादी के इस तोह़फ़े को क़बूल फ़रमा कर इरशाद फ़रमाया कि ऐ लख़्ते जिगर ! तुम इस सीनी को अपने ही घर ले कर चलो, फिर ख़ुद हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मकान पर रौनक़ अफ़्रोज़ हो कर उस सीनी को खोला तो घर के

---

1 ......صحیح مسلم،کتاب فضائل الصحابة رضی اللّٰہ تعالٰی عنهم ، باب فضائل فاطمة بنت النبی رضی اللّٰہ عنها، الحدیث:۲۴۴۹، ص۱۳۲۹ ملتقطاً

وفیض القدیرشرح الجامع الصغیر، حرف المیم، تحت الحدیث:۸۲۶۷،ج۶،ص۲۴ملتقطاً

2 ......الاکمال فی اسماء الرجال،حرف الفاء،فصل فی الصحابیات،ص۶۱۳

तमाम अफ़राद येह देख कर हैरान रह गए कि वोह सीनी रोटियों और बोटियों से भरी हुई थी। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَنّٰی لَکِ ھٰذَا؟ (ऐ बेटी ! येह सब तुम्हारे लिये कहां से आया ?) तो हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अ़र्ज़ किया : ھُوَ مِنْ عِنْدِاللّٰہِ اِنَّ اللّٰہَ یَرْزُقُ مَنْ یَّشَآءُ بِغَیْرِ حِسَابٍ (या'नी येह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आया है, वोह जिस को चाहता है बे शुमार रोज़ी देता है।)

फिर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते अ़ली व हज़रते फ़ातिमा व हज़रते इमामे ह़सन व इमामे हुसैन और दूसरे अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को जम्अ़ फ़रमा कर सब के साथ सीनी में से खाना तनावुल फ़रमाया फिर भी उस खाने में इस क़दर हैरत नाक और तअ़ज्जुब खैज़ बरकत ज़ाहिर हुई की सीनी रोटियों और बोटियों से भरी हुई रह गई और इस को हज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अपने पड़ोसियों और दूसरे मिस्कीनों को भी खिलाया।[1]

(روح البیان، آل عمران، ص۳۲۳)

शाही दा'वत

रिवायत है कि एक रोज़ हज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शहनशाहे मदीना हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वत की। जब दोनों आ़लम के मेज़बान, हज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान पर रौनक़ अफ़्रोज़ हुवे तो हज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के पीछे चलते हुवे आप के क़दमों को गिनने लगे और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! मेरी तमन्ना है कि हुज़ूर के एक एक क़दम के इवज़ मैं आप की ता'ज़ीमो तकरीम के लिये एक एक गुलाम आज़ाद करूं। चुनान्चे,

---

1 ......تفسیر روح البیان، سورۃ ال عمران، ج۲، ص۲۹

हज़रते उषमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मकान तक जिस क़दर हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़दम पड़े थे हज़रते उषमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इतनी ही ता'दाद में गुलामों को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया।

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस दा'वत से मुतअष्षिर हो कर हज़रते सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से कहा : ऐ फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आज मेरे दीनी भाई हज़रते उषमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बड़ी ही शानदार दा'वत की है और हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हर हर क़दम के बदले एक एक गुलाम आज़ाद किया है। मेरी भी तमन्ना है कि काश ! हम भी हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की इसी त़रह़ शानदार दा'वत कर सकते। हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने शोहरे नामदार हज़रते अ़ली दिलदल के सुवार के इस जोशे तअष्षुर से मुतअष्षिर हो कर कहा : बहुत अच्छा, जाइये आप भी हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इसी क़िस्म की दा'वत देते आइये اِنْ شَاءَ اللّٰہُ تَعَالٰی हमारे घर में भी इसी क़िस्म का सारा इन्तिज़ाम हो जाएगा।

चुनान्चे, हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर दा'वत दे दी और शहनशाहे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सहाबए किराम की एक कषीर जमाअ़त को साथ ले कर अपनी प्यारी बेटी के घर में तशरीफ़ फ़रमा हो गए। हज़रते सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ख़ल्वत में तशरीफ़ ले जा कर ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की बारगाह में सर ब सुजूद हो गईं और येह दुआ़ मांगी :

"या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी बन्दी फ़ातिमा ने तेरे मह़बूब और मह़बूब के अस्ह़ाब की दा'वत की है। तेरी बन्दी का सिर्फ़ तुझ ही पर भरोसा है लिहाज़ा ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ तू आज मेरी लाज रख ले और इस दा'वत के खानों का तू आ़लमे ग़ैब से इन्तिज़ाम फ़रमा।"

येह दुआ़ मांग कर हज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हांडियों को चूल्हों पर चढ़ा दिया। ख़ुदावन्दे तआ़ला का दरयाए

करम एकदम जोश में आ गया और उस रज़्ज़ाक़े मुत़लक़ ने दम ज़दन में इन हांडियों को जन्नत के खानों से भर दिया।

हज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने इन हांडियों में से खाना निकालना शुरूअ़ कर दिया और हुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के साथ खाना खाने से फ़ारिग़ हो गए लेकिन खुदा की शान कि हांडियों में से खाना कुछ भी कम नहीं हुवा और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم इन खानों की खुश्बू और लज़्ज़त से हैरान रह गए। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को मुतह़य्यिर देख कर फ़रमाया कि क्या तुम लोग जानते हो कि येह खाना कहां से आया है ? सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने अ़र्ज़ किया कि नहीं या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप ने इरशाद फ़रमाया कि येह खाना अल्लाह तआ़ला ने हम लोगों के लिये जन्नत से भेज दिया है !

फिर हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا गोशए तन्हाई में जा कर सजदा रेज़ हो गईं और येह दुआ़ मांगने लगीं कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने तेरे मह़बूब के एक एक क़दम के इवज़ एक एक गुलाम आज़ाद किया है लेकिन तेरी बन्दी फ़ातिमा को इतनी इस्तित़ाअ़त नहीं है लिहाज़ा ऐ खुदावन्दे आ़लम عَزَّوَجَلَّ जहां तू ने मेरी ख़ातिर जन्नत से खाना भेज कर मेरी लाज रख ली है वहां तू मेरी ख़ातिर अपने मह़बूब के उन क़दमों के बराबर जितने क़दम चल कर मेरे घर तशरीफ़ लाए हैं अपने मह़बूब की उम्मत के गुनहगार बन्दों को तू जहन्नम से आज़ाद फ़रमा दे।

हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا जूं ही इस दुआ़ से फ़ारिग़ हुईं एक दम नागहां हज़रते जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام येह बिशारत ले कर बारगाहे रिसालत में उतर पड़े कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की दुआ़ बारगाहे इलाही में मक़्बूल हो गई।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि हम ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हर क़दम के बदले में एक एक हज़ार गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद कर दिया।(1) (جامع المعجزات مصری،ص۶۵ بحوالہ سچی حکایات)

﴾96﴿ उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की साहिबज़ादी हैं और हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ में सब से ज़ियादा आप की मह़बूबा हैं। इन से बहुत ज़ियादा अह़ादीष मरवी हैं। फ़िक़्ही मा'लूमात में भी इन का दरजा बहुत ही बुलन्द है। अकाबिर सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم इन से मसाइल दरयाफ़्त फ़रमाया करते थे। सौमो सलात और दूसरी इ़बादतों व रियाज़तों में भी आप अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ में ख़ुसूसी इमतियाज़ के साथ मुमताज़ थीं।

सि. 57 हि. या सि. 58 हि. में ब मक़ामे मदीनए मुनव्वरा में दुन्याए फ़ानी से आ़लमे आख़िरत की त़रफ़ इन की रिह़लत हुई और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हुईं।(2) (اکمال،ص۶۱۲)

करामात

ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام इन को सलाम करते थे

इन की एक करामत येह है कि ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام इन को सलाम करते थे चुनान्चे, बुख़ारी शरीफ़ में एक ह़दीष है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ आ़इशा ! येह ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام हैं जो तुम को सलाम कहते हैं। तो आप

---

1 ......جامع المعجزات (مترجم)، ص ۲۵۷

2 ......الاكمال فى اسماء الرجال، حرف العين، فصل فى الصحابيات، ص ٦١٢

ने जवाब में अ़र्ज़ किया : وَعَلَیْہِ السَّلَامُ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ[1] (بخاری،ج۱،ص۵۳۲)

इन के लिहाफ़ में वह्य उतरी

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि आइशा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) के सिवा मेरी किसी दूसरी बीवी के कपड़ों में मुझ पर वह्य नहीं उतरी और ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक लिहाफ़ में सोए रहते थे और आप पर खुदा तआ़ला की वह्य नाज़िल हुवा करती थी।[2]

(مشکوٰۃ،ج۲،ص۵۷۳وکنزالعمال،ج۱۶،ص۲۹۷)

आप के तवस्सुल से बारिश

एक मरतबा मदीनए मुनव्वरा में बारिश नहीं हुई और लोग शदीद क़ह़त में मुब्तला हो कर बिलबिला उठे। जब लोग क़ह़त की शिकायत ले कर ह़ज़रते उम्मुल मोअमिनीन आइशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमते अक़्दस में पहुंचे तो आप ने फ़रमाया कि मेरे हुजरे में जहां हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर है, उस हुजरए मुबारका की छत में एक सूराख़ कर दो ताकि हुजरए मुनव्वरा से आस्मान नज़र आने लगे। चुनान्चे, जैसे ही लोगों ने छत में एक सूराख़ बनाया फ़ौरन ही बारिश शुरूअ़ हो गई और अत़राफ़े मदीनए मुनव्वरा की ज़मीन सर सब्ज़ो शादाब हो गई और उस साल घास

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، باب فضل عائشۃ رضی اللّٰہ عنہا، الحدیث:۳۷۶۸، ج۲، ص۵۵۱

2 ......مشکاۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب ازواج النبی، الحدیث: ۶۱۸۹، ج۲،ص۴۴۴

وکنزالعمال، کتاب الفضائل، فضل ازواجہ الطاھرات، ام المؤمنین عائشۃ رضی اللّٰہ عنہا، الحدیث:۳۷۷۷۹،ج۷، الجزء ۱۳، ص۲۹۹

और जानवरों का चारा भी इस क़दर ज़ियादा हुवा कि कषरते ख़ूराक से ऊंट फ़रबा हो गए और चरबी की ज़ियादती से इन के बदन फूल गए।[1] (مشکوۃ، ج۲،ص۵۴۵)

﴾98﴿ हज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

इन का नाम "बरकता" है। येह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वालिदे माजिद हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बांदी थीं जो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आप के वालिदे माजिद की मीराष में से मिली थीं। इन्हों ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बचपन में बहुत ज़ियादा ख़िदमत की है। येही आप को खाना खिलाया करती थीं, कपड़े पहनाया करती थीं, कपड़े धोया करती थीं, ए'लाने नबुव्वत के बा'द जल्द ही इन्हों ने इस्लाम क़बूल कर लिया। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने आज़ाद कर्दा गुलाम हज़रते ज़ैद बिन ह़ारिषा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इन का निकाह़ कर दिया। इन के बत़न से हज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पैदा हुवे जिन से रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस क़दर ज़ियादा मह़ब्बत फ़रमाते थे कि आ़म तौर पर सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم हज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को "मह़बूबे रसूल" कहा करते थे।[2]

करामत

कभी पियास नहीं लगी

हज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का बयान है कि जब मैं मक्कए मुकर्रमा से हिजरत कर के रवाना हुई तो मेरा खाना पानी

1 ......مشکاۃ المصابیح، کتاب الفضائل و الشمائل، باب الکرامات، الحدیث: ٥٩٥٠، ج٢، ص٤٠٠

2 ......اسد الغابۃ، ام ایمن مولاۃ رسول اللّٰہ، ج٧، ص٣٢٥-٣٢٦

रास्ते में सब ख़त्म हो गया और मैं जब "मक़ामे रूहा" में पहुंची तो पियास की शिद्दत से बे क़रार हो कर ज़मीन पर लैट गई। इतने में मुझे ऐसा महसूस हुवा कि मेरे सर के ऊपर कुछ आहट हो रही है जब मैं ने सर उठा कर देखा तो येह नज़र आया कि एक पानी से भरा हुवा चमकदार रस्सी में बन्धा हुवा आस्मान से ज़मीन पर एक डोल उतर रहा है मैं ने लपक कर उस डोल को पकड़ लिया और ख़ूब जी भर कर पानी पी लिया। इस के बा'द मेरा येह हाल है कि मुझे कभी पियास नहीं लगी। मैं सख़्त गर्मियों में रोज़ा रखती हूं और रोज़े की हालत में शदीद चिलचिलाती हुई धूप में का'बए मुअ़ज़्ज़मा का त़वाफ़ करती हूं ताकि मुझे पियास लग जाए लेकिन इस के बा वुजूद मुझे कभी पियास नहीं लगती।[1] (حجۃ اللہ علی العالمین، ج۲، ص۸۷۴ بحوالۂ بیہقی)

﴾98﴿ ह़ज़रते उम्मे शरीक दोसिय्या رضی اللہ تعالٰی عنہا

येह क़बीलए दौस की एक सह़ाबिय्या हैं जो अपने वत़न से हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा चली आई थीं।

करामात

ग़ैबी डोल

येह अपने क़बीलए दौस से हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा जा रही थीं और रोज़ादार थीं। शाम को एक यहूदी के मकान पर पहुंचीं ताकि पानी पी कर रोज़ा इफ़्तार कर लें। दुश्मने इस्लाम यहूदी को जब इन के मुसलमान और रोज़ादर होने का इ़ल्म हुवा तो उस ज़ालिम ने इन को मकान की एक कोठड़ी में बन्द कर दिया ताकि इन को एक क़त़रा भी पानी न मिल सके जिस से येह रोज़ा इफ़्तार

1 ......دلائل النبوۃ للبیھقی، باب ماجاء فی ماظھر علی ام ایمن...الخ، ج۶، ص۱۲۵

कर सकें। हज़रते उम्मे शरीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बन्द कोठड़ी में लैटी हुई थीं और बेहद मुतफ़क्किर थीं, सूरज ग़ुरूब हो चुका है और कोठड़ी में खाने पीने की कोई चीज़ मौजूद नहीं है। आख़िर मैं किस चीज़ से रोज़ा इफ़्तार करूं ? इतने में बन्द और अन्धेरी कोठड़ी में अचानक किसी ने इन के सीने पर ठन्डे पानी से भरा हुवा डोल रख दिया और इन्हों ने उस पानी को पी कर रोज़ा इफ़्तार कर लिया।[1]

(حجۃ اللہ، ج۲،ص۸۷۵)

ख़ाली कुप्पा घी से भर गया

रिवायत है कि हज़रते उम्मे शरीक दोसिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास चमड़े का एक कुप्पा था जिस को वोह अकसर लोगों को आ़रिय्यतन दे दिया करती थीं। एक दिन उन्हों ने उस कुप्पे में फूंक मार कर उस को धूप में रख दिया तो वोह घी से भर गया। फिर हमेशा उस कुप्पे में से घी निकलता रहा। इस बात का पूरे शहर और दियार व अम्सार में इस क़दर चर्चा हो गया था कि लोग आ़म तौ़र पर येह कहा करते थे कि हज़रते उम्मे शरीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का कुप्पा ख़ुदा की निशानियों में से एक बहुत बड़ी निशानी है।[2]

(حجۃ اللہ علی العالمین، ج۲،ص۸۷۵بحوالہ ابن سعد)

﴾99﴿ हज़रते उम्मे साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह एक ज़ईफ़ा नाबीना सहाबिय्या थीं जो अपने वत़न से हिजरत कर के मदीनए त़य्यिबा चली आई थीं।

---

1 ......حجة اللّٰه على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة...الخ، ام شريك الدوسية، ص ٦٢٣

2 ......حجة اللّٰه على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث فى ذكر جملة جميلة...الخ، ام شريك الدوسية، ص ٦٢٣

करामत

दुआ़ से मुर्दा ज़िन्दा हो गया !

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते उम्मे साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का बेटा नौउ़म्री में अचानक इन्तिक़ाल कर गया। हम लोगों ने उस लड़के की आंखों को बन्द कर के उस को एक कपड़ा ओढ़ा दिया और हम लोगों ने उस की मां के पास पहुंच कर लड़के की मौत की ख़बर सुनाई और ता'ज़िय्यत व तसल्ली के कलिमात कहने लगे। ह़ज़रते उम्मे साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने बेटे की मौत की ख़बर सुन कर चोंक गई और आबदीदा हो गई फिर उन्हों ने अपने दोनों हाथों को उठा कर इस त़रह़ दुआ़ मांगी :

"या अल्लाह मैं तुझ पर ईमान लाई और मैं ने अपना वत़न छोड़ कर तेरे रसूल की त़रफ़ हिजरत की है इस लिये ऐ मेरे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से दुआ़ करती हूं कि तू मेरे लड़के की मुसीबत मुझ पर मत डाल।"

येह दुआ़ ख़त्म होते ही ह़ज़रते उम्मे साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का मुर्दा लड़का अपने चेहरे से कपड़ा उठा कर उठ बैठा और ज़िन्दा हो गया ![1] (ابن ابی الدنیا وبیہقی والبدایہ والنہایہ، ج٦،ص١٥٤ وص٢٥٩)

तबसेरा

इस क़िस्म की करामत बहुत से बुज़ुर्गाने दीन ख़ुसूसन ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वग़ैरा औलियाए उम्मत से बारहा ज़ुहूर में आ चुकी हैं क्यूंकि अल्लाह तआ़ला अपने महबूब बन्दों की दुआ़ओं और इन की ज़बान से

---

1 ......البداية و النهاية ، كتاب الشمائل، باب ما يتعلق بالحيوانات......الخ ، قصة اخرى مع قصة العلاء بن الحضرمى، ج٤، ص ٥٥٠

निकले हुवे अल्फ़ाज़ को अपने फ़ज़्लो करम से रद्द नहीं फ़रमाता चुनान्चे, किसी हक़ शनास ने कहा है

जो वज्द के आ़लम में निकले लबे मोमिन से
वोह बात ह़क़ीक़त में तक़्दीरे इलाही है

﴾100﴿ ह़ज़रते ज़ुनैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا करामत

अन्धी आंखें रोशन हो गईं !

येह ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घराने की लौंडी थीं। इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत इन के दिल में घर कर गई। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उस वक़्त मुसलमान नहीं हुवे थे जूंही ह़ज़रते ज़ुनैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने इस्लाम का ए'लान किया तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आपे से बाहर हो गए और उन्हों ने खुद भी इन को ख़ूब ख़ूब मारा और इन के घर के अफ़्राद भी बराबर मारते रहे यहां तक कि मक्का के कुफ़्फ़ार ने सरे बाज़ार इन को इस क़दर मारा कि ज़र्बात के सदमात से इन की आंखों की रोशनी जाती रही और येह नाबीना हो गईं !

इस के बा'द कुफ़्फ़ारे मक्का ने ता'ना देना शुरूअ़ किया कि ऐ ज़ुनैरा ! चूंकि तुम हमारे मा'बूदों या'नी लातो उ़ज़्ज़ा को बुरा भला कहती थीं इस लिये हमारे इन बुतों ने तुम्हारी आंखों की रोशनी छीन ली है। येह ख़ून खोला देने वाला ता'ना सुन कर ह़ज़रते ज़ुनैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की रगों में इस्लामी ख़ून जोश मारने लगा और इन्हों ने कहा : "हरगिज़ हरगिज़ नहीं ! ख़ुदा की क़सम ! तुम्हारे लातो उ़ज़्ज़ा में हरगिज़ हरगिज़ येह त़ाक़त नहीं है कि वोह मेरी आंखों की

रोशनी छीन सकें मेरा **अल्लाह** जो وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ है वोह जब चाहेगा मेरी आंखों में रोशनी आ ही जाएगी।” इन अल्फ़ाज़ का इन की ज़बाने मुबारक से निकलना था कि बिल्कुल एक दम ही अचानक इन की आंखों में रोशनी वापस आ गई ![1]

(حجۃ اللہ علی العالمین،ج۲،ص۸۷۶بحوالۂ بیہقی وزرقانی علی المواہب،ج۱،ص۲۷۰)

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ

وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ

अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عُفِیَ عَنْهُ
ख़ादिमुल ह़दीष दारुल उ़लूम फ़ैज़ुर्रसूल
बराऊं शरीफ़, ज़िल्अ़ बस्ती, घोसी, ज़िल्अ़ आ'ज़म गढ़ (भारत)

---

1 ......حجۃ اللّٰہ علی العالمین،الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملۃ جمیلۃ...الخ، الزنیرۃ رضی اللّٰہ عنہا، ص٦٢٣
وشرح الزرقانی علی المواھب، اسلام حمزۃ،ج١،ص٥٠٢

مآخذ ومراجع

نام کتاب	مصنف	مطبوعہ
قرآن مجید	کلام باری تعالٰی	برکات رضا ہند
ترجمۂ قرآن کنز الایمان	اعلٰی حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان ۱۳۴۰ھ	برکات رضا ہند
تفسیر الکبیر	امام محمد بن عمر فخر الدین رازی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث العربی
تفسیر ابن کثیر	امام عماد الدین اسماعیل بن عمر ۷۷۴ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
روح البیان فی تفسیر القرآن	امام اسماعیل حقی بن مصطفی الاسلامبولی ۱۱۲۷ھ	کوئٹہ
صحیح البخاری	امام ابو عبد اللّٰہ محمد بن اسماعیل بخاری ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
سنن الترمذی	امام ابو عیسٰی محمد بن عیسٰی ترمذی ۲۷۹ھ	دارالفکربیروت
سنن ابن ماجہ	امام ابو عبداللّٰہ محمد بن یزید ابن ماجہ ۲۷۳ھ	دارالمعرفۃ بیروت
سنن أبی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی
المستدرک	امام محمد بن عبداللّٰہ الحاکم النیشاپوری ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ بیروت
مشکاۃ المصابیح	امام محمد بن عبد اللّٰہ الخطیب التبریزی ۷۴۲ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
کنزالعمال	علی المتقی بن حسام الدین الھندی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابی بکر ۸۰۷ھ	دارالفکربیروت
المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی ۳۶۰ھ	داراحیاء التراث العربی
المعجم الصغیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
حلیۃ الاولیاء	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللّٰہ اصبہانی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
ارشاد الساری	امام احمد بن محمد القسطلانی ۹۲۳ھ	دارالفکربیروت
فتح الباری	امام احمد بن علی بن حجر العسقلانی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
حاشیۃ صحیح البخاری	حافظ احمد علی محدث سہارنپوری ۱۲۹۷ھ	باب المدینہ کراچی
الاکمال	امام محمد بن عبد اللّٰہ الخطیب التبریزی ۷۴۲ھ	باب المدینہ کراچی
حجۃ اللّٰہ علی العٰلمین	امام یوسف بن اسماعیل النبھانی ۱۳۵۰ھ	برکات رضا ہند
بہجۃ الاسرار	امام علی بن یوسف الشطنو فی ۷۱۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مدارج النبوۃ	امام عبد الحق بن سیف الدین(محدث دہلوی) ۱۰۵۲ھ	برکات رضا ہند

تاریخ الخلفاء	امام جلال الدین عبد الرحمان بن ابی بکر السیوطی ۹۱۱ھ	باب المدینہ کراچی
ازالۃ الخفاء	احمد بن عبد الرحیم الدھلوی (شاہ ولی اللہ)۱۱۷۲ھ	باب المدینہ کراچی
شواھد النبوۃ	امام عبد الرحمٰن بن احمد الجامی ۸۹۸ھ	مکتبۃ الحقیقۃ استنبول
المواھب اللدنیۃ	امام احمد بن محمد قسطلانی ۹۲۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
شرح الزرقانی	امام محمد بن عبد الباقی زرقانی ۱۱۲۲ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
البدایۃ والنھایۃ	امام ابوالفداء اسماعیل بن عمرابن کثیر ۷۷۴ھ	دارالفکربیروت
معرفۃ الصحابۃ	امام ابو نعیم احمد بن عبداللّٰہ ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الریاض النضرۃ	امام احمد بن عبد اللّٰہ الطبری ۶۹۴ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الاستیعاب	امام ابو عمر یوسف بن عبد اللّٰہ ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
اسد الغابۃ	امام ابو الحسن علی بن محمد الجزری ۶۳۰ھ	داراحیاء التراث العربی
الطبقات الکبریٰ	امام محمد بن سعد البصری ۲۳۰ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
دلائل النبوۃ	امام ابو بکر احمد بن الحسین البیھقی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
السیرۃ النبویۃ	امام عبد الملک بن ھشام ۲۱۳ھ	دارالمعرفۃ بیروت
الکامل فی التاریخ	امام ابو الحسن علی بن محمد ۶۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
حیاۃ الحیوان الکبریٰ	کمال الدین محمد بن موسٰی الدمیری ۸۰۸ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تذکرۃ الحفاظ	امام محمد بن احمد الذھبی ۷۴۸ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الاصابۃ	امام احمد بن علی بن حجر عسقلانی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الاعلام للزرکلی	خیر الدین بن محمود الزرکلی ۱۳۹۶ھ	دار العلم للملایین بیروت
تھذیب التھذیب	امام احمد بن علی بن حجر عسقلانی ۸۵۲ھ	دار الفکر بیروت
المستطرف	امام محمد بن ابو احمد الابشیھی ۸۵۰ھ	دار الفکر بیروت
روضۃ الشھداء	امام حسین بن علی الکاشفی الواعظ ۹۱۰ھ	چشتی کتب خانہ فیصل آباد
النبراس	امام محمد عبدالعزیز الفرھاری ۱۲۳۹ھ	دار الفکر بیروت
مثنوی مولانا روم	محمد بن محمد جلال الدین الرومی ۶۷۲ھ	مرکز الاولیاء لاھور
نفحۃ الیمن	امام احمد بن محمد الشروانی ۱۲۵۳ھ	باب المدینہ کراچی
معجم البلدان	امام ابوعبد اللّٰہ یاقوت بن عبداللّٰہ ۶۲۶ھ	داراحیاء التراث العربی

www.dawateislami.net

“मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या” की तरफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुतालआ कुतुब

शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

(1) करन्सी नोट के शरई अह़कामात :

(अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरतासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)

(अल याक़ूतितुल वासितह) (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़

(ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त

(मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) षुबूते हिलाल के त़रीक़े (तुरुक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब

(इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात : 100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ?

(विशाहुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ईद) (कुल सफ़ह़ात : 55)

(9) राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल

(रद्दिल कह़ति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़

(अल हुक़ूक़ लि त़र्हिल उ़क़ूक़) (कुल सफ़ह़ात : 125)

(11) फ़ज़ाइले दुआ़ (अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ मअ़ शर्ह़ ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़्सनिल विआ़अ) (कुल सफ़ह़ात : 326)

शाएअ़ होने वाली अ़रबी कुतुब

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74)

(13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77)

(14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़ह़ात : 62)

(15) इक़ा–मतुल क़ियामह (कुल सफ़ह़ात : 60)

(16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़ह़ात : 46)

(17) अज्लल ए'लाम (कुल सफ़ह़ात : 70)

(18) अज़्ज़म–ज़–मतुल क़–मरिय्यह (कुल सफ़ह़ात : 93)

(19,20,21) जद्दुल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़तार

(अल मुजल्लद अल अव्वल वषानी)(कुल सफ़ह़ात : 713,677,570)

शो'बए इस्लाही कुतुब

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात : 160)

(23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 200)

(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)

(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)

(26) इमतिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात : 32)

(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 39)

(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात : 152)

(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 43)

(30) निसाबे मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 196)

(31) काम्याब त़ालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़ह़ात : तक़रीबन 63)

(32) फ़ैज़ाने एह्याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)

(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात : 96)

(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़ह़ात : 50)

(35) तह्क़ीक़ात (कुल सफ़्हात : 142)

(36) अर–बईने ह्–नफ़िय्यह (कुल सफ़्हात : 112)

(37) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़्हात : 24)

(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़्हात : 30)

(39) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़्हात : 132)

(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़्हात : 48)

(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़्हात : 275)

(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़्हात : 32)

(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)

(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़्हात : 24)

(51) ग़ौषे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ह़ालात (कुल सफ़्हात :106)

(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़्हात : 100)

(53) रहनुमाए जदवल बराए मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़्हात : 255)

(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़्हात : 24)

(55) मदनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़्हात : 68)

(56) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़्हात : 220)

(57) तर्बिय्यते अवलाद (कुल सफ़्हात : 187)

(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़्हात : 62)

(59) अह़ादीषे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़्हात : 66)

(60) फ़ैज़ाने चहल अह़ादीष (कुल सफ़्हात : 120)

(61) बद गुमानी (कुल सफ़्हात : 57)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल

(अल मुत्जरुर्राबेह़ फ़ी षवाबिल अ़–मलिस्सालेह़) (कुल सफ़्हात : 743)

(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़्हात : 36)

(64) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़्हात : 74)

(65) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मु–तअ़ल्लिम त़रीक़ुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़्हात : 102)

(66) बेटे को नसीहत (अय्युहल वलद)(कुल सफ़्हात : 64)
(67) अद्दा'वति इलल फ़िक्र (कुल सफ़्हात : 148)
(68) आंसूओं का दरिया (बहरुद्दुमूअ) (कुल सफ़्हात : 300)
(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (कुर्रतुल उ़यून) (कुल सफ़्हात : 136)
(70) उ़यूनुल हिकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़्हात : 412)

शो'बए दर्सी कुतुब

(71) ता'रीफ़ाते नह़विय्यह (कुल सफ़्हात : 45)
(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़्हात : 64)
(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्ह़े नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़्हात : 175)
(74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़्हात : 121)
(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़्हात : 79)
(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़्हात : 180)
(77) वक़ा-यतिन्नह़्व फ़ी शर्ह़े हिदा-यतुन्नह़्व
(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ हाशिया सर्फ़ बनाई

शो'बए तख़रीज

(79) अ़जाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन (कुल सफ़्हात : 422)
(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़्हात : 679)
(81) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हिस्सा : 1 से 6)
(82) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 से 13)
(83) बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 से 20)
(84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़्हात : 170)
(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़्हात : 108)
(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़्हात : 59)
(87) सहाबए किराम का इ़श्क़े रसूल (कुल सफ़्हात : 274)

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

(88) सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम (कुल सफ़्हात : 49)
(89) मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़्हात : 48)

(90) इस्लाह़ का राज़ (मदनी चैनल की बहारें हि़स्सए दुवुम) (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(91) 25 क्रिस्चैन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़्ह़ात : 33)
(92) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़्ह़ात : 24)
(93) वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़्ह़ात : 48)
(94) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ सिवुम (सुन्नते निकाह़)(कुल सफ़्ह़ात : 86)
(95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़्ह़ात : 275)
(96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हि़कमत (कुल सफ़्ह़ात : 48)
(97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़्ह़ात :48)
(98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़्ह़ात : 48)
(99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़्ह़ात : 55)
(100) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़्ह़ात : 220)
(101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़्ह़ात : 33)
(102) मैं ने मदनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़्ह़ात : 33)
(103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(104) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ दुवुम (कुल सफ़्ह़ात : 48)
(105) ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़्ह़ात : 36)
(106) मुख़ालिफ़त मह़ब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़्ह़ात : 33)
(107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(108) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ अव्वल (कुल सफ़्ह़ात : 49)
(109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़्ह़ात : 33)
(110) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ चहारुम (कुल सफ़्ह़ात : 49)
(111) चल मदीना की सआ़दत मिल गई (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(114) बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(115) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़्ह़ात : 24)

(116) नूरानी चेहरे वाले बुजुर्ग (कुल सफ़्हात : 32)

(117) आंखो का तारा (कुल सफ़्हात : 32)

(118) वली से निस्बत की बरकत (कुल सफ़्हात : 32)

(119) बा बरकत रोटी (कुल सफ़्हात : 32)

(120) इग़्वा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़्हात : 32)

(121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़्हात : 32)

(122) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़्हात : 32)

(123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़्हात : 32)

(124) खुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़्हात : 32)

(125) नाकाम आशिक़ (कुल सफ़्हात : 32)

(126) नादान आशिक़ (कुल सफ़्हात : 32)

(127) हैरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़्हात : 32)

(128) नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़्हात : 32)

(129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़्हात : 32)

(130) ख़ौफ़नाक दांतो वाला बच्चा (कुल सफ़्हात : 32)

(131) फ़िल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़्हात : 32)

(132) सास बहू में सुल्ह का राज़ (कुल सफ़्हात : 32)

(133) क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़्हात : 24)

(134) फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़्हात : 101)

(135) हैरत अंगेज़ हादिषा (कुल सफ़्हात : 32)

(136) मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़्हात : 32)

(137) क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़्हात : 32)

(138) सलातो सलाम की आशिक़ा (कुल सफ़्हात : 33)

(139) क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़्हात : 32)

(140) चमकती आंखों वाले बुर्जुग (कुल सफ़्हात : 32)

(141) म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़्हात : 32)

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

www.dawateislami.net
I.T. Majlis of Dawateislami

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है. आशिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी इन्आमात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

-: मक्तबतुल मदीना की शाख़ें :-

❀... अहमदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनी बाग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदाबाद-1, फ़ोन : 9327168200

❀... मुम्बई :- 19 - 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : 022-23454429

❀... नागपूर :- सैफ़ी नगर रोड़, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 9326310099

❀... अजमेर :- 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन : (0145) 2629385

❀... हुबली :- A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 08363244860

❀... हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

MAKTABATUL MADINA

421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23284560
email : maktabadelhi@gmail.com
web : www.dawateislami.net